

निवेदन

वडोदराना म स विश्वविद्यालयनी कार्यवाहक समाण (सान्डिकेटे) मजूर करेली योजना अनुमार, आ 'प्राचीन गुजर ग्रन्थमाला' शरू थाय छे प्राचीन गुजगती माहित्यनी अप्रसिद्ध कृतिओनी समीक्षित वाचनाओनु प्रकाशन सामान्य रीते एमा थशे, परन्तु आ पहेला उपाई गयेली छता जेना शास्त्रीय संपादनो न थया होय एनी विविध रचना ओनी समीक्षित वाचनाओने तथा प्रसिद्ध के अप्रसिद्ध रचनाओमाथी जम्माननी दृष्टि करेला समुच्चयने पण एमा स्थान रहेसे प्रत्येक संपादन साथे प्रस्तावना उपरात ते ते कृतिमा प्रयोजयेल नोंघपात्र शब्दोनो एरू कोण आप्तामा आशे, जेमा ए शब्दो उपर व्युपत्ति तेम ज अथविकासनी दृष्टि सक्षिप्त टाचणो अपागे जूना गुजराती भाषासाहित्यना तुलनामक अध्ययनमा उपयोगी थाय ए प्रसारना स्वाध्यायग्रन्थोने पण प्रसंगोपात्त आ ग्रन्थमालामा अवकाश रहेसे

विक्रमना वारमा शतकमा थयेला, अपभ्रंश व्याकरणकार आचार्य हेमचन्द्रना समयथी भाडी जोगणाममा शतक सुधी जूना गुजगती साहित्यमा रचायेल सन्दी ग्रंथो हजी अप्रसिद्ध छे ए विपुल माहित्य भंडारमाथी पसद करेली, जुना जुदा साहित्यप्रसारोनी प्रतिनिधिरूप गद्यपद्यात्मक कृतिओनु प्रकाशन ते ते कृतिरूपे अगत्यनु होवा उपरात ते ते साहित्यप्रकारना विकासना अध्ययनमा घणु उपयोगी छे

शरू स ६९९ (वि स ८३४)मा 'कुशल्यमाला' नामे सुप्रसिद्ध प्राकृत कथा रचनार दाक्षिण्यार उद्योतनमूरिण गुजरोनी भाषानो एरू नानो नमूनो टाक्यो छे, पण छेला लगभग साढा आठमो वर्ष थया

प्राचीन गुजराती साहित्य बौद्ध प्रमाणमा उपलब्ध छे काठमा प्रवाहमा घण्टा पाग पाम्यु हसे, परन्तु जे बच्यु छे ते पण विपुल छे त्रिक्रमना चारमा शतक्या आ तरफ आगना एक पण शताब्दी एयी नथी, जेमा जूना गुजराती साहित्यमा त्रिक्रमना विविध साहित्यप्रकारोना प्रतिविधिरूप नमूना मज्जा १ होय गुजराती भाषानो शताब्दीगार सिलसिलाबध इतिहास उदेल्या माटे, जगतनी बोई पण भाषाने ईप्या आने एयी वेविध्यपूर्ण अने सुसंगोपित पुष्कळ माधनसामग्री बहुसत्य हस्तप्रतोग्रन्थे विद्यमा छे एने एक सद्भाग्य गणवु जोईए गुजराती भाषा माटे ऐतिहासिक सिद्धान्तानुमार रचायेला बृहद् कोशनी जरूरियात घणा समयधी ऊभेली छे—एवो कोश, जेमा बहोशो शब्दसचय के क्रमिक व्युत्पत्ति आपी होय एटलु ज नहि, पण साहित्यिक प्रमाणो अने अन्तरणोने आधारे कालानुक्रमिक अर्थविक्रम बतारवेलो होय पण एका कोशाक व्यवस्थित कायनो आरम थाय तयार रहेला केटलाक भूमिकारूप कामो—जूना ग्रन्थोनी शास्त्रीय वाचनाओ अथवा ते ते ग्रन्थना अने विशिष्ट सुगोना शब्दकोशनी रचनाना तथा विशिष्ट शब्दो के शब्दसमूहोना कालानुक्रमिक अध्ययनना कामो—थना जोईए आ ग्रन्थमालाना प्रकाशनमा आ रीतनु भूमिकारूप अध्ययन रज्जू करवानो म्याल पण रहेलो हे आ ग्रन्थमालामा प्रसिद्ध थती हतिओ तथा एना शब्दकोशो* ऐतिहासिक गुजराती शब्दकोश माटे सामग्री पूरी

* छेवन्ना केन्द्रक वर्षोमा आ देशमा तम ज परदेशमा थवेलो नव्य भारतय आयभाषाना जूना ग्रन्थोना संपादनोमा संपादित कृतिना प्रत्येक शब्दनी एव्य अपाती घणी वाग जोवामा आव छे ज्यारे छुट्ट छुट्ट रूपे एनाद कृतिनु संपादन घनु होय तयारे आ प्रसारनी सपूर्ण शब्दसूचिना उपयोगिता खरी पण एक ग्रन्थमागना क्रमेक ग्रन्थ माटे जो एम करवामा आवे तो बीजा ज प्रकाशनधी एमां विनज्जरी पुनरागतिना दोष अनिवार्य रीत आवे अने संपादकना समयनो अन् सुदणना नाणानो निरवक व्यव बधे आपी पसद करेला संपादनो कोश

महाराजा सयाजाराव विश्वविद्यालय,
वडोदरा-संचालित
प्रार्चीन गुर्जर ग्रन्थमाला

सामान्य संपादक

डॉ. भोगीलाल ज. सोनेसरा
एम. ए., पीएच. डी.
अध्यक्ष, गुजराती विभाग
म. स. विश्वविद्यालय वडोदरा



ग्रन्थ १

नेमिचन्द्र भडारी-विरचित
पाट्टिशतक प्रकरण
त्रण बालावमोघ सहित

पाठशे तथा अन्य भगिनीभाषाओना प्राचीनतर युगोना अध्ययनमा
पण उपयोगी थशे एनी आशा छे

आम साहित्य तेम ज भाषाना तुलनात्मक अने ऐतिहासिक
अभ्यासनो द्विविध उद्देश आ प्रथमालाना प्रकाशनमा छे आ विषयना
निर्धार्याओ अने अभ्यासीओने आ रीते जुग जुग दृष्टिमोग्धी उपयोगी
थाय एवा प्रकाशनो आपवा माटे अमे सतत प्रयत्नशील रहीशु योम्य
सूचनो द्वारा तथा प्रकाशनोना विवेचनो द्वारा आ कार्यमा सट्कार
आपरा तन्त्रोने त्रिनती छे

अध्यापकनिवास बडोदरा काठमाडौं, च २० ९	}	भोगीलाल जयचदभाई साडेसरा सामान्य संपादक
--	---	---

आपवानी पद्धति सामान्य रीते आ संपादनोमा रहेशे आ क सूकी तेम ज काई
एक अपेक्षाए विचिष्ट दृष्टिना संपादनमा जम्पर चणाये सर्ग शोधनो कोश न
आपा सकार्य एउे नथी

प्रस्तावना

जूनू गुजराती गद्य

जूनू गुजराती साहित्यमा गद्य रूपाणो अणठतां के 'विरल हता एरो एर सामान्य ग्याल प्रवर्ते छे, पण जूना साहित्यनी शोध थती जाय छे तेम तेम ए स्याल प्रमाणपुर मर नथी ए निश्चित थाय छे टैठ मित्रमना चादमा गनकथी माडी जूनी गुजरातीमा (अथमा डॉ ट्रेसीटरीए प्रचलित करेलेो शब्द वापरीए तो जूनी पश्चिम राज स्थानामा) * गद्यसाहित्य मळे छे ओ उत्तरोत्तर एनु वेपुल्य वधतु जाय छे अशचीन काळमा गद्य साहित्यना घणाखरा प्रकरोतु वाहन बन्यु छे

* साठमा सैकामा तथा त्वार पहलाना रामयमा 'जूना गुजराती' अने 'जूनी पश्चिम राजस्थानी' ए वने शब्दप्रयोगा वडे एर ज वस्तुनो शोध थाय छे सर्भविन बोनामनोराळी एर न सामान्य भाषा गुजरात अने राजस्थानमा—सास करीने पश्चिम राजस्थानमा—बोनानी हती आ भाषाकीय एकताना कारणमा पूर्वसाठमा राजकीय तम न सांस्कृतिक इतिहास रहैले छे जेनी बीमतमा उत्तरखु अही प्ररतुत नथी पण गुजरातनु एक वारनु पाणनगर थीमाउ अयारे राजस्थानमा गणाय छे अने गुजरातनी अनर ब्राह्मण वणिक अने कारीगर ज्ञातिजोना नामो सूचिन करे छे क एक काळ ए वधा प्रासमूढ अयारे जन पश्चिम राजस्थान कहेवामा आव छे ए प्रदेशमाथी अत्यारना गुजरातमा आवीने वस्यो हतो, एवी केन्लीक हकीकत रुभमा राखवा जंवी छे आ एतिहासिक पाठभूमिका जो त्यान्म न थाय तां जूनी गुजराता अने जूनी पश्चिम राजस्थानी' जेवा प्रयोगी चाम्तरिक अशोधमा धोण सत्रम उभो करे रासा एथी आपणा भाषानी ए प्राचीन भूमिमा माटे श्री उमाशकर जोषाए मारु-गुजर एवो शब्द सूचयो हतो आने पण राजस्थाननी भाषा एना बंधारणनी दृष्टिए दिरी करता गुजरातीने वधारे मळती छे ए वस्तु आ एतिहासिक परिस्थितिना प्रत्यक्ष समथनरूप छे आ प्राचीन गुर्जर प्रथमाग मा आपणी भाषाना आ मारु-गुजर' युगनी पण केन्लीक कृतिओ प्रसिद्ध थगे—अने आ प्रथम पुण्य ता ए युगनु न छे—ए कारणे आग्ले स्पष्टी करण के विषयांतर नस्ती गथुं छे

नेमिचन्द्र भडारी-विरचित
पट्टिशतक प्रकरण

त्रण बालावमोघ सहित

प्रस्तावना, परिशिष्टो अन् शब्दकारा साधे
संशुद्ध

डॉ. भोगीलाल ज. साडेसरा

श्रीमती हसाबहेन महेता
काश्म वासेन्ट, म. स. विश्वविद्यालय-बडोदरा
एमना आमुत्र सहित



एवु जो के ए समयमा नहोतु, गद्यनु प्रयोगक्षेत्र सीमित हतु, तो पण ए सीमित क्षेत्रमा ये थोडाक अलग अलग प्रकारो मळे छे संस्कृत के प्राकृत ग्रन्थोना अनुवाद के टीकारूप बालाबचोयो, अक्षरना रूपना मात्राना अने लयना बधनधी मुक्त छतां पद्यमा लेबानी वरी छूट भोगवता प्राप्तयुक्त गद्य—‘धोन्नी भां रचायेगं ‘पृथ्वीचद्रचरित्र’ (स १४७८) जेमा गद्यकाव्यो के ‘समाशृगार’ जेमा वर्णकसंप्रहो, अनातर्नर्तृक ‘कालकाचार्य कथा’ (स १५५० आमपास)† जेनी, क्वचित् अलफार प्रचुर अने क्वचित् सहेला रसञ्जना गद्यमां रचायेली कथाओ अने ‘कात्बरी प्रधानक’ (विना १८मा अतर्नो पृथा)† जेमा कथामंशेषो, दार्शनिक चचाओ, वादविवादो अने प्रश्नोत्तरीओ, ‘औत्तिन’ तरीके ओञ्ज्याता, गुजराती द्वारा संस्कृत शीम्ववा माटेना सख्यावध व्याकरण ग्रन्थो—जेमा समाममिहृत ‘बालशिक्षा’ (सं १३३६) अने कुल्लमडनगणित ‘मुग्धावरोध औत्तिक’ (सं १४५०) जेवां भाषाना इतिहासना सीमाचिह्नोनी समारेण थाय छे—ए जूना गद्य साहित्यना प्राप्त विविध प्रकारो छे अत्यारे उपबन्ध थतु जूनु गद्य पण एटन्नु विपुल छे के एनु प्रभाशन करवामा आवे तो ‘वृहत्काव्य दोहन’ना सुप्रसिद्ध ग्रन्थो जेवटा ओठामा ओठ सो ग्रन्थो तो सहेजे भराय जो के जुदा जुदा प्राचीन ग्रन्थभद्वारो अने समहोमा जे गद्य साहित्य माग जोशामां आव्यु छे ए विचारतां मने लागे छे के आ विधानमां सभव अयुक्तितो नहि पण अल्पोक्तितो छे

आ गद्यसाहित्यनो मात्र एक अल्प अक्ष अत्यार सुधीमा बहार आय्यो छे गायत्राद्दक्ष ओरियेन्टल सिरीशमा ए ग्रन्थमाञ्जना आद्य संपादक श्री चिमनलाल दाब्याभाई दलाले छपावेल ‘प्राचीन गुर्जर

† प्रसिद्ध मारा वड संपादित ‘प्रस्तान’ कागज क्षेत्र, स १९०८

† प्रसिद्ध, सं आचार्य चिनविश्वयनी, पुराणरत्न, पुस्तक १ अंक ४

प्रसारक

डॉ. भागीशाल ज. माडसरा,

अध्यक्ष गुजराती विभाग

म. स. विश्वविद्यालय

वनापरा

आवृत्ति पहला

प्रत ५०

वि. स. २००९

इ. स. १९५३

मुख्य पाठ्य रूपाया

प्राप्तिस्थान
प्राच्य विद्यामन्दिर,
वडोदरा

मुद्रक

रमणराठ जी षटेल व्यवस्थापक

- साधना प्रस. रावपुरा वनेदरा

કાવ્યસંપ્રદાયા તથા આચાર્ય જિનવિજયજી-સંપાદિત 'પ્રાચીન ગુજરાતી
 ગદ્યસન્દર્ભ'નાં ઉપલબ્ધ પ્રાચીનતમ ગદ્યસાહિત્યની ઉત્તમ વાનગી છે. ડૉ
 ટી. ઇન. દુવેર્. લાન્ડ યુનિવર્સિટી સમગ્ર રજૂ કરેલા પોતાના બૃહ
 ત્વિનધના (A Study of the Gujarati Language in the
 16th Century V S) સ ૧૯૨૩માં રચાયેલા 'ઉપદેશમાલા'ના
 બાલાવરોધનુ સંપાદન કરેલું છે. ત્યાર પછી બૃહત્ત્વિનધરૂપે આવા પુસ્તકો
 સંપાદનો થયા છે, પણ તે હજી પ્રસિદ્ધિ ધરાવેલી નથી. ગુજરાત તથા
 રાજસ્થાનમાંથી ઘણા પદ્ધતા સામયિકોના કેટલીક નાનીમોટી પ્રાચીન
 ગદ્યરૂપો પ્રસંગોવાત્ત પ્રસિદ્ધ થઈ છે. પ્રાચીન ગદ્યના પ્રેરક વલ્લો
 અપ્રાચીન ગદ્યના પ્રેરક વલ્લોથી વિભિન્ન છે, અને પરિણામે એ વલ્લો યુગમાં
 વિવિધ ગદ્ય-સાહિત્યપ્રકારો પણ વિભિન્ન છે. વલ્લો અપ્રાચીન યુગમાં
 સાહિત્યનું મુખ્ય વાહન ગદ્ય બન્યું છે અને એ રીતે ઇનુ મહત્ત્વ વાપર્યું છે.
 પણ જૂનામાં જૂની ઉપલબ્ધ ગદ્યરૂપોથી માંડી પ્રાચીન યુગના છેલ્લા
 પ્રતિનિધિ દયારામવૃત્ત 'સતમૈયા' ઉપરની સ્વરચિત ગુજરાતી ટીકા તથા
 સ્વામીનારાયણના 'વચનામૃતો' સુધીની ગદ્યરચનાઓ ઉપરથી જૂના
 ગુજરાતી ગદ્યના વધારણ અને શૈલીનો ઇતિહાસિક દૃષ્ટિએ કાલાનુક્રમિક
 અભ્યાસ થાય ત્યારે વિચારોની સ્પષ્ટ અને સચિત્ત અમિત્યક્તિ માટે જૂના
 ગદ્યનું સાતત્ય અપ્રાચીન ગદ્યમાં કેટલે અંશે રહેલું છે તથા કઈ અને
 કેવી નવી લક્ષણો માપમાં વિકસી છે એ ચોક્કસ સ્વરૂપે સમજી શકાય
 વલ્લો પદ્ય કરતા ગદ્ય એ બોગતી માપમાં વિશેષ નિકટવર્તી હોય, એ
 કારણે પણ અભ્યાસ માટે ઇનુ એક ન્વાસ મહત્ત્વ છે. આ દૃષ્ટિએ નેમિચન્દ્ર
 વૃત્ત પ્રાચીન 'પષ્ટિશતક પ્રકરણ' ઉપરના—અનુક્રમે સોનમુન્દરસૂરિ,
 જિત્માગરસૂરિ અને મેરુમુન્દર ઉપાધ્યાયવૃત્ત—ત્રણ પ્રાચીન ગુજરાતી
 બાલાવરોધોના સંપાદનનું આ ગ્રંથમાલાના પ્રથમ પુસ્તકરૂપે થતું પ્રકાશન
 અભ્યાસીઓને ઉપયોગી થશે એવી આશા છે.

आमुख

प्राच्य विद्यामंदिर तरफची मुम्बयतये सम्भृत हम्तलिखित पोथीओ मेळवी एमाथी योग्य पोथीनु प्रकाशन वर्षाची चाली रक्षु छे ' गायकवाड जोरियेन्टल् सिरीझ ' मा एना सो उपरात पुस्तको प्रसिद्ध थया छे जूना गुजराती साहित्यनो हम्तलिखित भंडार पण विपुल छे एमाथी योग्य साहित्यनु प्रकाशन पण इच्छना योग्य छे आ हेतु लक्ष्मा राखी, बडोदरा विश्वविद्यालयना गुजराती विभाग द्वारा प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालानी योजना तैयार करवामा आवी छे ए योजना अनुसार आ प्रथम पुस्तक बहार पडे छे, अने एवु एक पुस्तक तर ये बहार पाठ्यानी आगा रखाय छे

आ प्रकाशना सशोधननो उपयोग एकदम पहिली नजरे चढे नहि ए स्वाभाविक छे परंतु भाषानी दृष्टिए तेम ज सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए आ प्रकाशना सशोधननो पुष्कळ प्रकाश पाडे छे अने माटे ज उपयोगी छे आ पुस्तकना निरूपणमा ओ साडेसरा लये छे के - " आ ग्रन्थमालामा प्रसिद्ध थती कृतिओ तथा एना शब्दकोशो ऐतिहासिक गुणगती शब्दकोश माटे सामग्री पूरी पाडशे तथा अन्य भगिनीभाषाओना प्राचीनतर युगोना अध्ययनमा पण उपयोगी थशे पवी आगा छे " पुस्तक पाठक जे शब्दकोश आप्यो छे ते भाषानी दृष्टिए अतिशय उपयोगी थई पडशे एमा तो जरा पण शका नथी आशा छे के आ प्रकाशननो गुणगतना निद्वानो तेम ज अन्य भाषाशास्त्रीओ योग्य सन्कार करे

‘बालावबोध’ एटले शु ?

आ प्रस्तावना प्रारम्भमा कस्य छे के बालावबोध ए मूळ संस्कृत के प्राकृत ग्रन्थना अनुवाद के टीकरूप होय छे ‘बाल’ एटले वयमां नहि, पण समज के मानमा माल एना ‘अवबोध’ माटे थयेली रचनाओ ते ‘बालावबोध’ गुजरातीनु जूनामा जूनु गद्यमाहित्य जैन शास्त्रग्रन्थोना बालावबोधरूपे छे बालावबोध आम जो के जैन साहित्यनो शब्द छे, पण एनो अर्थ सहेन विस्तारीने ‘भागवत,’ ‘भगवद्गीता,’ ‘गीतागोविन्द,’ ‘चाणक्य नीतिशास्त्र,’ ‘योत्वासिष्ठ,’ ‘मिहासतनवत्रीमी,’ ‘पंचाल्यान,’ ‘गणितसार’ आदि जे बीजी अनुवादरूप रचनाओ मळे छे ते माटे पण साहित्यना इतिहासमां ए शब्द प्रयोनी शक्याय, केम के आ वधा गद्यानुवादोो उद्देश एक ज छे बालावबोधमा केटलीरु वार मूळ ग्रन्थोनु भाषान्तर होय छे, तो केटलीरु वार दृष्टान्तकथाओ के अमान्तर चचाओ द्वारा मूळनो अनेकगणो विस्तार करेले होय छे पण ‘बालावबोध’नो जे एक उत्तमकालीन प्रकार ‘स्तवक’ अथवा ‘टका’ रूपे जोड्याय छे एना मात्र शब्दमा भाषान्तर ज होय छ एना ‘स्तवक’नी पोथीओनी लेखनपद्धति कारण भूत छे बालावबोधना वाचको करता पण जेमनु शास्त्रज्ञान मयादित होय एना वाचकोने ध्यानमा राखीने ‘स्तवक’नी रचना थयेली छे एमां पोथीना प्रत्येक पृष्ठ उपर त्रय के चार पक्ति मोटा अक्षरोमां मूळ शास्त्र ग्रन्थनी लखवामा आवती अने प्रत्येक पक्तिनी नीचे शीणा अक्षरोमा एनो अर्थ लखवामा आततो, जेथी वाचकोने प्रत्येक शब्दनो भाव समजवामा सरजता थाय आ प्रकारनी लेखनपद्धतिने कारणे, प्रत्येक पृष्ठ उपर नाना अने मोग अक्षरोमा लखायेली पक्तिओनां जाणे के ‘स्तवक’ — क्षुमवा रचाया होय एम जणालु ए उपरथी आ प्रकारा अनुवादो माटे ‘स्तवक’ शब्द वपरायो, जेमाथी गुजराती ‘टयो’ व्युत्पन्न थयो

બાલાવનોવના રચનાઓ પોતાના વિષયના જાણનાર વિદ્વાનો દ્વારા, ઠ ઠ કારણે ઇમના અનુગાને ગિષ્ટ હોય છે અને શબ્દોની પસંદગી મૂકને અનુમતી તેમ જ સમુચિત અર્થની વાહર હોય છે. ઇમનો પ્રથમ ઉદ્દેશ સાહિત્યિક જાનદ આપનાનો નહિ, પણ વાચકને મૂઝ વસ્તુને જાન કરાવનાનો છે. છતાં તરગ્રમમરિટ્ટન 'પદ્માવત્યક વાલાવનોવ' (સં ૧૪૧૧) નેની કેમ્લીક રચનાઓના કથાનરોમા વર્ણકશૈલીના અલનાર પ્રચુર ગદના આગમતની વધાગીઓ વરતાય છે. સ્તરી પરંતુ મૂઝ મન્યને સાદી ભાષામા મમજાવનાનો 'વાલાવનોવ'ના સાહિત્યપ્રકારનો પ્રથમ ઉદ્દેશ છે તે તો માયે જ કોઈ વાલાવનોવમા અસપ્ત રહેને જણાને જૂના ગુનરાતી માહિત્યમા વાલાવનોવ પાચ-પચીમ નહિ પણ કુટીવધ છે, અને સમ્વૃત પ્રાટ્ટન ભાષાઓમા સવરાયેલા શાસ્ત્રજ્ઞાનત લોકમાપાઓ દ્વારા વડુનસમાન સમક્ષ સરલ સ્વરૂપમા મૂકવાની ને પ્રવૃત્તિ મધ્યકાલમા મમસ્ત ભારતવપમા નજરે પડે છે. ઇ જ આ વાલાવનોવોની વહોઠી અનુગાદપ્રવૃત્તિમા પણ ઇક વાલક વચ્ચરૂપે છે ઇમ કહેવાના માયે જ અતિગયોક્તિ ગણાશે.

ઇક જ મૂઝ મન્યના ઇક કરતા વધુ વાલાવનોવો જેમા સાધોસાધ પ્રસિદ્ધ થતા હોય ઇયુ, મને રચાલ છે ત્યાં મુઘી, આ પહેલુ જ પ્રકાશન છે. ઇક ન મૂઝ 'પષ્ટિશતક પ્રકરણ'નો ત્રણ જુદા જુદા વિદ્વાનોઇ કરેલો અનુગાદ ઇમા ઇક માને જોઈ શકાશે. ઇ ત્રણે વિદ્વાનો લગમગ ઇક જ સમયમા થયેલા છે, મોમસુન્દરમૂરિનો વાલાવનોવ વિક્રમના પદરમા શતરૂના અનમા રચાયેલ છે, જ્યારે જિનસાગરસુરિ અને મેહુસુન્દર ઉપાધ્યામના વાલાવનોવો વિક્રમના સોઠમા શતરૂના પ્રારમમા રચાયા છે. રચના ઉપરથી જણાય છે કે ત્રણેનો આશય મૂઝની અનુગાટરૂપ સમજૂતી આપનાનો છે, જો કે કોઈ કોઈ મ્યલે ત્રણે ષોડોક વિસ્તાર કરી દીધો છે. મૂઝ પ્રાટ્ટન ગાથા તથા તે ઉપરના ત્રણે ય વાલાવનોવો ઇક સાથે છાપેલ

अनुक्रम

आमुग

निवेदन

१३

प्रस्तावना

४२०

जुलु गुजराती गद्य-४ बालावबोध' एम्हे जु १-७
 पष्टिशतक प्रकरण' अने तनो कर्ता-९ पष्टिशतक ना
 बालावबोधकारो-(१) सोममुन्दरसूरि-१३ (२) जिन
 सागरसूरि-१४ (३) मेम्मुन्दर उपाध्याय-१५ 'पष्टि
 शतक ना अन्य बालावबोधो-२२ हाथप्रतो अने सपादन-
 २४ अनुलेख-२८

पष्टिशतक प्रकरण-त्रण बालावबोध महित

११६०

परिशिष्ट १ नेमिचन्द्र भडारी विरचित

जिनउल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन

१६१ ६५

परिशिष्ट २ नेमिचन्द्र भडारी विरचिन पार्श्वनाथ स्तोत्र

१५६

'पष्टिशतक' नी प्राकृत गाथाओनी सूचि

१६७-६९

शब्दकोश

१७० ९३

मुम्बपृष्ठ-उपयोगमा लेवायेली हम्नप्रतोमार्था व्रणना फोटा

હોનાથી આના સ્થાનો અનાયાસે જોઈ શકાશે કેટલાક વિમ્વૃત વાલાગ્નોમોમા આત્રે છે ઈવી અવાન્તર ચચાઓ કે દૃષ્ટાન્તો પ્રસ્તુત અનુગ્નોમો નર્થી ત્રણ સમમામયિક વિદ્વાનો* એક જ મૂલ પ્રચ્ચના કરેલા ત્રણ જુગા જુગા ગયાનુગાદો મૂલના ત્રિવિધ ભાષાન્તર ઉપરાત એક જ માત્રા વાચન ત્રિવિધ શબ્દો તેમ જ એક મૂલ શબ્દની તત્કાલીન જુદી જુદી અર્થચ્ચાયાઓ તથા ઈના રૂપભેદો—જેમા તત્કાલીન વોલીભેદોનુ પ્રતિર્નિય પળ પડ્યુ હોય ઈવો પૂરો સમય છે—જાણવામા ઉપયોગી થશે

‘પષ્ટિશતક પ્રકરણ’ અને તેનો કર્તા

ધર્મ કે તત્ત્વજ્ઞાને લગતા કોઈ એક વિષય ઉપર પ્રાહૃત પદમા રચાયેલી સંક્ષિપ્ત વૃત્તિઓને જૈન માહિત્વમા ‘પ્રચ્ચરણ’ કહે છે ‘પષ્ટિ શતક’ આનુ એક પ્રચ્ચરણ છે, અને ઈનાં ૧૬૦ ગાથાઓ છે (૧૬૧મી ગાથા કેવલ પુષ્પિપ્પા રૂપ છે), તે ઉપરથી ઈને ‘પષ્ટિશતક’ નામ આપવામા આવેલુ છે* ઈના કર્તા નેમિચન્દ્ર મટારી ગામે શ્રાવક ગૃહસ્થ છે જા વૃત્તિનુ ચોક્કમ રચનાવર્ષ મલ્લતુ નર્થી, પળ વિક્રમના તેરમા શતકમાં નેમિચન્દ્ર રિવિધમાન હતા ઈ નિશ્ચિત છે જૈન શ્વેનામર સપ્રદાયના સગ્ગર ગચ્છની ત્રિવિધ પટ્ટાવલીઓમા તેમ જ મેરુમુન્દર ઉપાધ્યાયવૃત વાલાગ્નોધ (પૃ ૨)મા ઉલ્લેખ છે તે પ્રમાણે, તેઓ મારવાડમા મરોટ

* મૂ. ‘પષ્ટિશતક’ તે ઉપરની તપોરત્ન અને ગુણરત્નની ટીકા (સં ૧૫૦૧) સહિત જૈન સત્ત્વિનય પ્રચ્ચનાગ્રાહના દૃષ્ટા પુષ્પ તરીકે અમશવાદથી ઈ સ ૧૯૨૪માં પ્રવિદ્ધ થયે* છે ગુજરાતી અનુવાદ સાથે ‘પષ્ટિશતક’ મૂ. સં ૧૯૭૬મા જામનગર શાલા પં હીરાગઝ હસરાજ છાપાવે* છે, વઝી માહનલાલજી જૈન પ્રચ્ચમાહાના ષીજા પુષ્પ તરીકે ઈ સ ૧૯૧૭મા બનારમથી ઈના મૂ. પાઠ મહાર પડે* છે ઉપર નોંધેલ તપોરત્ન આ ગુણરત્નની સમ્વૃત ટીકા ઉપરાત ‘પષ્ટિશતક’ ઉપર સહજ

મહત્વકૃત વ્યાખ્યાન ધર્મનંદનચણિવૃત ટીકા તથા કોઈ અજાત કર્તારચિત અવધૂરિ જાણવામા આવે* છે (જુઓ પ્રા વે. ગઠ્ઠકરુવ વિવાર/વકાશ . પ ૪૦૪)

शुद्धिपत्रक

पृ०	पक्ष	अशुद्ध	शुद्ध
३	०	दीक्षादि रगनी	दीक्षा दिरानी
८०	११	जाणनी	जाणनी
८९	१६	आगी गमइ	आगीगमइ
९१	८	आज्ञागदितह०	आज्ञारहितहूइ
१०१	१७	आगीगमई	आगीगमइ
"	,	ए व	ब व

गामना वननी हता ए काळे जैन संप्रदायमा चैतव्यानी यतिओनु प्राबल्य हतु अने महावीरे प्रबोधेन आकरा संयममार्गनी अपेक्षाए एमनामां ठीक ठीक शिथिलचार प्रवर्तनी हतो आधी 'द्रव्य, क्षेत्र, काल अनी भावना मेच्छयी' सदगुरुनी शीघ्र करता नेमिचंद्र पाटणमा आज्या तथा त्या म्बरतर गच्छता आचार्य जिनपतिसूरि (सं १२१०-१२७७)नी चया जोई परम मयनी गुरु तरीके एमना आचारोनु अलोकन करी, एमनो उपदेश सामग्रीने वतो म्बीक्यायां पटी पोनाने वतन पाछा आधीने पोनाना पुत्र जावने नेमिचंद्र जिनपतिसूरि पामे लई गया, एने तेमनी पासै पुत्रने मद्रोत्सवपूर्वक दीक्षा धपावी नेमिचंद्रना आ पुत्र दीक्षित थया पटी आचार्य जिनेश्वरसूरि (सं १२४५-१३३१) तरीके प्रसिद्ध थया आ जिनेश्वरसूरिनी दीक्षानु वणन निरुभना चौदमा शतकमा थयेला कवि सोममूर्तिहून 'जिनेश्वरसूनि सयमश्री विराहवर्णन' ए गामना ३३ कडीगा सक्षिप्त काव्यमा छे (प्रसिद्ध श्री जिनविजयजी संपादित 'जैन ऐतिहासिक गुर्जर काव्यसंचय'मा तथा श्री अगरचंद नाहटा संपादित 'ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह'मा)

'पष्टिशतक'नी गाथाओमा शुद्ध धर्म, मिथ्यात्व, सदाचार, सदगुरु, वृगुरु आदिनु स्वल्प कताए मुखपाठे करी शक्या एथी गाथाओमा संक्षेपमा समजाव्यु छे निरूपणमा जे अभिनिवेश ओने शिथिलचार मामेनो प्रकोर जणाय छे एनु कारण उपर सूचनी छे तेनी ए समयनी धार्मिक-सामाजिक परिस्थितिमा रहेलु छे

वली आ प्रकरणनी रचनामा नेमिचंद्रयी थोडा ज समय पूर्वें थई गयेला आचार्य जिनरत्नभसूरि (स्वर्गवास स ११६७)हृत 'पिंड निरुद्धि प्रकरण'नु वाचा पण एक प्रेरक कारण हतु जिनरत्नभसूरि पहिलें कूर्चपुरगच्छीय चैत्यवासी जिनेश्वरसूरिना शिष्य हता पण एक

વાર 'દશવૈકાલિક સૂત્ર' વાચતાં, સાવધ ઔષધ આદિ કરતા પોતાના અતિ પ્રમાદી ગુરુને જોઈ તેઓ ઉદ્વેગ પામ્યા, અને પછી શુદ્ધ ક્રિયાનિધિ, નવાગી ઘૃત્તિકાર-જેન આગમસાહિત્યના નમ્ર અગો ઉપર પ્રમાણમૂલ સમ્કૃત ટીકાઓ રચનાર-અભયદેવસૂરિ (વિક્રમના ચારમા શતકનો પૂર્વાર્ધ) પાસે જઈ શાસ્ત્રાધ્યયન કર્યું અને એમના શિષ્ય થયા, તથા 'પિંડવિશુદ્ધિ પ્રકરણ', 'સાર્ધ શતક' આદિ સંન્યાસધ્રમ ગ્રંથો રચ્યા * ત્રિનગ્નમ-સૂરિએ જે ચૈત્યો ઘઘાઘ્યા એને 'વિધિચૈત્ય' નામ આપી એમ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ કાર્ય થાય નહિ એ પ્રકારના ક્ષોભો તેમણે કોનરાઝ્યા + નેમિચન્દ્રને પોતાના અનુમત અને અપલોક્નને પરિણામે જે કહેવાનું હતું એને આ

* સ્વરતર ગદ્ય પદ્યાબલી સમ્રહ' (સ જિનવિનયજી) પૃ ૧ ૨૪

+ સામાજિક સ્તિહામની કષ્ટિએ રસપદ એવા એમાંના બે શ્લોક નીચ પ્રમાણે છે-
 અત્રોત્પન્નવનકમ્ભો ન ચ ન ચ સ્નાત્ત રજન્યાં સદા
 સાધૂનાં મમતાધ્રયો ન ચ ન ચ સ્ત્રીણા પ્રવેશો નિશિ ।
 જાતિજ્ઞાતિક્રામહા ન ચ ન ચ ધ્રાદેપુ તામ્બૂલમિ
 ત્યાજ્ઞાઙ્ગેયમનિધત્તે વિધિશૃત્તે શ્રોત્રૈનચૈત્યાલ્યે ॥

(અર્થાત્ અનિશાએ વિધિપૂત્રક ઘયેલા આ જૈન ચૈત્યમાં એવી આના છે કે એમાં ઉત્પન્ન વનનો સંચાર નથી એમ રાત્ર સ્નાત-સ્નાન નથી, સાપુઓએ એમ મમતાપૂર્વક રહેવાનું નથી એમ રાત્રે સ્ત્રીઆને પ્રવેશ નથી, એમાં જાતિ અને જ્ઞાતિનો કદાપદ નથી અને એમ ધાવસોએ તાંબૂલ ચાવાનું નથી)

इह न गतु निषेध कस्यचिद् वन्दनादौ
 धृतविधिरहुमानी त्वन्न सर्वोऽधिकारी ।
 त्रिचतुरजनपत्या चात्र चैत्यार्थवृद्धि
 व्ययविनिमयरक्षाचयकृत्यादि कायम् ॥

(અર્થાત્ અહીં કાઈને પણ વંદનાદિનો નિષેધ નથી, શાસ્ત્રવિધિને માન આપનાર સૌ કાઈનો અહીં અધિકાર છે આ ચૈત્યના ઘનની વૃદ્ધિ ત્રય વિનિમય રક્ષા તથા ધાર્મિક કાર્યો ષ્ણચાર જળની નર નીચે કરવાનાં છે)

' પદ્ધિશતક ની ૧૧૧મી ગાથામાં વિધિમાનરત મન્ય જનો માટે પાતે એ

सप्राप्य सिद्धिकारणमादेश मेरुसुन्दरस्तेषाम् ।

कुर्वे बालकमोघ विदग्धमुखमडनस्य ॥ ५ ॥

शास्त्रारम्भे शास्त्रकारो विशिष्टेष्टदेवतानमस्कारलक्षण मङ्गलाचरण करोति । इह तु धर्मदासगणि विशिष्टेष्टदेव शौद्धोदनि स्तुयन् वक्ति । तस्यायमादिश्लोकः ।

सिद्धौपधानि भवदुःखमहागदाना

पुण्यात्मना परमकर्णरसायनानि ।

प्रक्षालनैकसलिलानि मनोमलाना

शौद्धोदने प्रवचनानि चिर जयन्ति ॥ १ ॥

शौद्धोदनेर्बौद्धस्य प्रवचनानि चिर चिरकाल यावत् जयन्ति सर्वोत्कर्षेण वर्तन्ते । शौद्धोदनि बौद्धना वचन चिरकाल सीम जयन्त वर्तन्ते । किंविशिष्टानि प्रवचनानि । भवदुःखमहागदाना सिद्धौपधानि । भव सप्तरतना छद् जे दुःख तेह जि भणित रोग तेह टालिगानइ अर्थ सिद्ध औपध छद् । छ । पुन किंलक्षणानि वचनानि । पुण्यात्मना परमकर्णरसायनानि । पुण्यवतना कर्णनइ विषयि रसायन समान छद् । तथा मनोमलाना प्रक्षालनैकसलिलानि । मनोमल मनना तापरु पपालगानइ अर्थ एरु सलिल पाणी छद् । उ ।

जयन्ति सन्त सुकृतैकभाजन परार्थसम्पादनसद्ब्रतस्थिता ।

करस्थनीरोपमविश्वदर्शिनो जयन्ति वैदग्ध्यभुव कवेगिर ॥ २ ॥

सन् साधु जयन्त वर्तन्ते । किंविशिष्टा सन् । सुकृतैकभाजन । सुकृत पुण्यनू एक भाजन पात्र छद् । किंविशिष्टा सन् । परार्थसम्पादनसद्ब्रतस्थिता । पर अनेराना अर्थसम्पादन कार्यकरण तेह जि भणित सद्ब्रत तेहनइ विषयि स्थित रक्षां उद् । तथा करस्थनीरोपमविश्वदर्शिनः । कर हस्तनइ विषयि स्थित रक्षु छद् जे नार पाणी तेहनी परिइ अनित्य विश्व देयता उद् । तथा कवेगिर जयन्ति । कव्याश्वरनी वाणी जयन्त वर्तन्ते । कव्यभूता गिर । वैदग्ध्यभुव । वैदग्ध्य चतुरमानी भू उत्पत्तिस्थानक छद् । छ ।

પૂર્વેકાલીન આચાર્યના જીવનકાર્ય 'નો અધરગાઓમાંથી અનુમોદા મચ્યુ અને પરિણામે તેણે 'પટ્ટિગતક'ની ગાથા ૧૦૭-૮માં તથા ૧૨૦માં જિનવહ્નિમૂર્તિને સહુમાનપૂરેક વિગદાચ્યા છે અને 'પ્રમુ તિન વહ્નમ જૈયા તો માત્ર તિનવહ્નમ છે' (પદુ તિનવહ્નદ્સરિમો પુણો તિ જિનવહ્નો જૈય) એમ કહીને એમના પ્રત્યેકો પોતાનો અનન્ય શક્તિમાવ વર્ણાંચો છે ગાથા ૧૨૦ સ્પષ્ટ રીતે પુગ્ગાર કરે છે કે નેમિચન્દ્ર જિનવહ્નમૂર્તિને પ્રત્યક્ષ મહ્યા પદોના, પણ તિનવહ્નમા પ્રયોજ જ નેમિચન્દ્રના હૃદય ઉપર ડહી અમર કરી હતી * વિષ્ણુમના તેરમા શતકની ઉત્તરકાલીન અવગ્રામા નેમિચન્દ્રે રચેલુ 'જિનવહ્નમૂર્તિ ગુરુ-ગુણર્ણા' નામે ૩૫ કાઢીનુ કાવ્ય પણ એ જ વસ્તુ પુરવાર કરે છે (જુઓ પરિણામ ૧) નેમિચન્દ્રના ચાર્ણી એક રચના પણ અપભ્રંશ છે, અને તે નવ ગાથાઓનુ પ્રાકૃત 'પાશ્વનાથ સ્તોત્ર' આ પ્રથમા પરિ સિષ્ટ ૨ મા તે પહેલી જ વાર પ્રકાશિત આવ છે

એક પૂર્વેકાલીન પ્રવરગમ્પ્રથ, ધર્મશાસ્ત્ર ગણિત પ્રાકૃત 'અપદેગ મારા'નો+ માનભેર ઉલ્લેખ નેમિચન્દ્રે 'પટ્ટિગતક'ની ૧૬મી ગાથામાં

* 'અપભ્રંશિભવ પ્રપચ કથા (સ ૧૬૧)ના વર્ત્તા તિદ્વિધિ પાનાથી ધોરા જ સમય પૂર્વે થઈ ગદગ હરિમદ્સૂરિના રહેલ પાતાના 'ધર્મનાથકર ગુરુ સરીક કયા છ અને તેમણ સ્ત્રિગિતિમારા કૃતિ અનાગતના વિચાર કરીને પાતાને માટે જ નિર્મા દોવાનું સહુમાનપૂર્યક મોંધુ છે એક પૂર્વેકાલીન વિદ્વાન પોતાની આધ્યાત્મિક દષ્ટિને ધરાવર દરે એવી કૃતિ પ્રતી એ માટે તિદ્વિધિ એ પ્રશમના સ્વમારો છે નેમિચન્દ્રના તિનવહ્નમૂર્તિ સાધનો આધ્યાત્મિક સ ધ યગમગ એ પ્રચારનો જ ગણી શકાય

+ જૈન અગુપ્તિ પ્રમાણે, ધર્મશાસ્ત્રગણિ મહાકાવ્યના સિપ્પ હતા પરન્તુ 'અપદેશમાગ ની ભાષા તો ઉત્તરકાલિન જો મહારાજા છ એ જાતા આ અનુધુતિને કેન્દ્ર અદ્ય પ્રમાણભૂત ગાવો એ પ્રથમ છ વિષ્ણુમના દશમા સૈવા કરતા તો એ પ્રાચીનતા છે જ કમ વ એ સમયે થયેલ તિદ્વિધિ અપદેશમાગ ઉપર દીર્ઘ રચેલ છે

આક્રાન્તેવ મહોપલેન મુનિના શપ્તેવ દુર્વાસસા
 સાતત્ય વન મુદ્રિતૈવ જતુના નીતેવ મૂર્છાં વિર્ષ ।
 વદ્દેવાનુગ્મુભિ પરગુણાન્ વચ્નુ ન શક્તા સતી
 વિદ્વા લાહશલાકયા સલમુખે વિદ્ધેવ સલક્ષયતે ॥ ૩ ॥

જિદ્વા પરગુણાન્ વક્તુ અશક્ત। સતી વચ્નુમુખે વચ્નિથા સલક્ષયત ।
 જીમ પર અપેરાના ગુણ ધાલિયા અશક્ત હૂતા દુજાનઈ મુલ્લિ વહમી દીસઈ ।
 ઉપ્રેક્ષયતે । મદાપલેન મહાર્દિયગ આક્રાન્ના ઇવ । જાણાઈ મહાંત મોટઈ
 પાયાણિઈ ચારી હુઈ જિમી । ઉપ્રેક્ષયતે । દુર્વાસસા મુનિના શપ્તા ઇવ ।
 જાણાઈ વિરિ દુર્વામા શ્વર્પીશ્ચરિઈ શા ॥ હુઈ જિસી । વત ઇતિ વ્વદ । સાત ય
 નિરતર જતુના મુદ્રિતા ઇવ । જનઈ વત ઇસિઈ વ્વદિ । સદાઃ લાયઈ મૂદી
 હુઈ જિસી । તથા ત્રિપૈ મૂર્ચ્છાં નીના ઇવ । ત્રિપિ હાઝાહલિ મૂર્ચ્છા પમાડી
 હુઈ જિસી । ઉપ્રેક્ષયતે । અનુગ્મુભિવદ્વા ઇવ । જાણાઈ વિરિ માટ દોરે
 વાંચી હુઈ જિસી । ઉપ્રેક્ષયતે । લાહશલાકયા વિદ્વા ઇવ । જાણાઈ વિરિ
 વાહની શિલ્પનાઈ વાંચી હુઈ જિસી । છ ।

જ્યાં જે બાલાવવોધોમાં મૂલના શ્લોકો મમજાવતા સંસ્કૃત જો
 ગુજરાતીનું જે મિશ્રણ કરવામાં આવ્યું છે તે જ મમયે શિષ્યોને આ
 પ્રકારના મધ્યે મળાવવાની પદ્ધતિમાં સામાન્ય હોતું જોઈએ જૈન આગમ
 મધ્યે ઉપગની ચૂર્ણિઓના ગદ્યમાં કેટલીક વાર પ્રાદેશ સાથે સંસ્કૃતનો
 સ્ફુર જોવા મળે છે તે આ સાથે સરસારી શકાય જો કે ઉપર્યુક્ત
 બાલાવવોધોમાં મમ્મૂત અને ગુજરાતી વાક્યો સાથેમાથ આવતા હોવા
 છતાં પરમ્પરથી તદ્દન અલગ છે, કોઈ પણ વાચ્યમાં મિશ્રમાપામય
 (Macaronic) માથે જ જોવા મળશે

‘પષ્ટિશતક’ના અન્ય બાલાવવોધો

ઉપર્યુક્ત ત્રણ લેશ્વરો-સોમમુન્દરમૂરિ, જિનસાગરમૂરિ અને મેઠુમુન્દર
 ઉપાધ્યાય-કૃત બાલાવવોધો ઉપગત ‘પષ્ટિશતક’ના વીજા કેટલાક
 બાલાવવોધ જાણવામાં આવ્યા છે સને ૧૦૫૦માં મારા વિદ્યાગુરુ પૂ.

કર્ચો છે 'પટ્ટિશતક'ની સામાન્ય ઉપદેશામરુ ગાથાઓ ઉપર 'ઉપદેશ
માલા'ની અમર છે, અને 'પટ્ટિશતક'ના ચાલાવવોધકારો પણ ણ્માર્થી
ચમ્વતોચ્ચત અવતરણો ટાકે છે (પૃ ૧૫, ૨૨, ૫૧, ૬૧, ૭૦, ૦૬,
૦૭, ૧૧૬, ૧૨૫, ૧૩૦, ૧૪૧, ૧૫૪, ૧૫૫)

'પટ્ટિશતક'ના ચાલાવવોધકારો-(૧) સોમસુન્દરસૂરિ

સોમસુન્દરસૂરિ (સં ૧૪૩૦-૧૪૦૦) જ તપાગચ્છના સુપ્રસિદ્ધ
આચાર્ય છે પ્રકાઢ પડિન હોશ સાથે તેઓ ંકુ શિષ્ટ પ્રથકાર છે, અને
સન્કૃત તેમ જ ગુજરાતીમા પચાત્મક તેમ જ ગદ્યાત્મક ણ્મની સગ્યાનધ
રચનાઓ જાણવામા આવેલી છે 'માપ્યત્રયચૂર્ણિ,' 'કન્યાણક સ્તર,'
'સ્તલકોશ,' 'નગ્મન્તવી' આદિ ણ્મની સન્કૃત ધામિક કૃતિઓ
છે ગુજરાતી પદ્યમા 'આરાધના રાસ' અને 'નેમિનાથ નરમપાગ'
તથા ગદ્યમા 'ઉપદેશમાલા' (સ ૧૪૮૫), 'યોગશાસ્ત્ર,' 'પઢાવશ્યક,'
'આરાધના પનામા,' 'નરતત્ત્વ,' 'મક્તમાર સ્તોત્ર' આદિ ઉપર
તેમણે ચાલાવવોધો રચ્યા છે * ંમનો 'પટ્ટિશતક' ચાગવવોધ, ણ્મા
અનમા ઉલ્લેખ છે તે પ્રમાણે, સ ૧૪૦૬મા રચાયેલો છે આ પ્રતિષ્ઠિત
આચાર્યે તત્કાલીન વાર્મિક પ્રવૃત્તિઓમા હમેશા આગેગાની લીધી હતી
અને પાટણ તથા સ્વમાતના સુપ્રસિદ્ધ પ્રાચીન પુસ્તકમટારોની સુચ્યવન્ધ્યા
કરી હતી અને તાઢપત્ર ઉપર લખાયેલ પ્રાચાનતર પ્રચોનુ ઢાગઢ
ઉપર સન્કરણ દેવસુન્દરસૂરિ અને મોમસુન્દરસૂરિના મઢલ્લે કર્યું હતુ
સોમસુન્દરસૂરિના બહોઢા શિષ્યમઢઢની સાહિત્યસેવા પણ ણ્નેક દષ્ટિપ
નોંધપાત્ર છે ણ્મના કેટલા યે શિષ્યો પ્રસિદ્ધ વાદીઓ, ઉપદેશકો

* 'ઉપદેશમાલા' અને 'યોગશાસ્ત્ર'ના ચાગવવોધોમાથી કથાઓ આચાર્ય
પિત્રવિગ્નચરી-સપાદિત 'પ્રાચીન ગુજરાતી ગદ્યસન્કર્મ'મા લેવામા ગાવી છે

मुनिनी पुण्यविचयनीना मौजन्ययी मने जेमन्मेरनी पानयात्रा फग्वानो
 जमर मज्यो त्यारे त्याना विलाणा भडारमा 'पष्टिगतक'ना एक
 बालावबोधनी २४ पत्रनी पोथी जोवामां आवी हती एमा फतानु नाम
 नथी, पण आ म्रधमां समापेला उपर्युक्त त्रणे मालावबोधोधी ते मिस्त छे
 पष्टीना मारु-गुर्जर अनुग 'रह' अने 'हू' ने म्याने अही मारनाडी
 प्रत्यय 'र' (अर्वाचीन 'रो'), 'री' मळे छे, अने ए त्रणे बाला
 बोध करना आनी रचना केटलाक दसना पठीधी थई होवागो तर्क
 थाय छे लिपि उपरधी पोथी विक्रमना मत्तमा भैकामा नफल करायेनी
 ज्ञाय छे आ पुस्तकमा प्रकाशित थयेला बालावबोधो साथे तुल्या
 माटे एनो आदि-अन अही उतार छु

आदि—

प्रणम्य मारुदेवाह्य जिन निर्गिनममथम् ।

करोमि पष्टिदानके धार्ता मौल्यावबोधिर्नाम् ॥

अरिह देवो सुगुरु सुद्ध धम्म च पचनवकारो ।

घञ्जाण कयत्याण निरतर वसइ हिययम्मि ॥ १ ॥

इये गाथानइ विरइ प्यार गोल सारभूत छइ ते उहीइ । किहा ते
 प्यार गोल । अरिह देवो कइतां अरिहत देव । सुगुरु क० तीर्थगरी
 आज्ञाइ करी सहित जे गुरु २ । सुद्ध धम्म च क० सूपड वीतरागण्ड
 माध्यत धर्मइ पचनवकारो क० पांच परमष्टिनमस्कार । ए प्यार बंड
 घञ्जाण क० ज धय भाग्यन कयत्याण क० कौप्या छइ साण्ड
 जीए अर्थ एहना जे जीव तिवारइ हीयानइ विरइ निरतर क० निर
 सरा सर्वदा ए प्यारइ वाना वसइ क० वसइ ।

हिव वि गाहाइ आपणा आत्मानइ सीत कइइ छइ ;

अत—

इणइ प्रकाइ भडारी नेमिचइ क० नमिच्छ नरुड नरुड
 तणइ पुत्रइ श्रीगिनेश्वरसूरि तणइ पिताइ रह्याइ न नरुड नरुड

અને પ્રથમથી હતા અને એક શિષ્ય પ્રતિષ્ઠામોમે રચેલા સંસ્કૃત
'સાનૈભાગ્ય' મહાકાવ્યમાં એમનું જીવનચરિત્ર ગૃથેતુ છે *

(૨) જિનમાગરસૂરિ

વીજા વાલ્ક્યનોબકાજ જિનમાગરસૂરિ સ્વતંત્ર ગણની પિપ્પલક
શાસ્ત્રના આચાર્ય છે તેમણે સં ૧૫૦૧માં 'પદ્મિશતક' ઉપર વાગવ
બોધ રચ્યો હતો + ગુજરાત અને રાજસ્થાનમાં જુદે જુદે સ્થળે એમણે
કુમ્ભારની મૂર્તિઓના પ્રતિષ્ઠાવિધિના સમ્બંધ લેખો સં ૧૪૦૧થી સ
૧૧૧૦ સુધીના જુદા જુદા વર્ષના મળે છે § 'પદ્મિશતક' ના વાગવબોધ
ઉપરાંત તેમણે સંસ્કૃતમાં કેટલીક પ્રથમ રચના કરેલી છે પદ્મિશતક
ગણિના આગ્રંથી તેમણે 'હૈમન્દુષ્ટિ'ના ચાર બંધનાની દીપિકા
રચી હતી વગી એમણે 'કપૂરપ્રકરણ' ઉપર જરૂર રચેલી છે, જેનો
પ્રથમ અર્થ એમાં નિદ્ધાન શિષ્ય તથા રાજાશેશ્વરકૃત 'કપૂરમંત્રી' અને
સોમપ્રભાચાર્યકૃત 'સિદ્ધપ્રકર'ના ટીકાકાર ધર્મચંદ્રે રચ્યો હતો ‡
જિનમાગરસૂરિના હસ્તે વિશ્વામિત્તારની કેટલીક પ્રવૃત્તિ થયાં છે એમ
વળ મળે છે ઉદાહરણ તરીકે, એમના ઉપદેશથી સ ૧૪૦૨માં મેઘાદના
દેવકુલપાટકપુરમાં (જેમાં દેવવાહા ગામમાં) એક ઉદ્દેશવદીય શ્રાવકે
'આવશ્યક બૃહદ્બૃષ્ટિ' લખાવી હોવાનો નિર્દેશ મળે છે વગી એમના

* જા પ્રભાવશાળી આચાર્ય અને એમના શિષ્યમંડળની પ્રવૃત્તિઓ માટે
જુઓ શ્રી માદનલાલ દ દસાઈકૃત 'જન સાહિત્યના સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ'
પૃ ૪૧૧-૪૧

+ એ જ પૃ ૪૮૬ ઉપર શ્રી દેસાઈએ એનું રચનાવર્ષ સં ૧૪૧૧ મોખુ છે
વળ મેં ઉપવાગમાં લખેલી હાથપ્રતમાં સં ૧૦૧નો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ છે

§ જન ગુર્જર ઇતિહાસ ભાગ ૨ પૃ ૬૧૪

‡ જૈન સાહિત્યના સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ ' પૃ ૪૭૧-૫૧૫

एक गाहाउ क० गाथा १६१ प्रमाण । जि के विहिमग्गरया क०
 वीतराम देवउ भायउ मार्ग तीयइ मार्गइ चाटिया सावधानइ हया
 भव्या क० मयनीय ते पढतु क० भणतु । जाणतु क० अर्थ जाणउ
 जिन सम्पत् प्रकारइ भणता यथा गुणता यथा बली मनमाहि अर्थ भावता
 यथा अहो जाओ तुम्हे चतु सिव शाश्वता अनतो मोष्यरा सुख पामउ
 ॥ १६१ ॥

इति श्रानेमिचद्रमडारिकरिचितपष्टिशतकप्रकरणस्य बालावबोध
 समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥

आ उपरांत जेमलमेर जने बीकानेरना प्राचीन ग्रंथभंडारोमा
 'पष्टिशतक' उपरना केटलाक सवक (टया) पण जोगामा आवे छे
 क्षमारलना शिष्य धमदेवे स १५१५मा रचेल बालावबोधनी तथा
 जयसोमदहन सनमनी नोध मळे छे, पण ए वृत्तिओनी हाथप्रतो मारा
 जोगामा आवी नथी प्राय विक्रमना १९मा शतकमा थयेल मोहनदृत
 'पष्टिशतक' नो दूहामय अनुवाद जैन सत्यनिजय ग्रंथमात्र्याना 'पष्टि
 शतक' ना सम्करण साथे बहार पडेली छे

हाथप्रतो अने सपादन

आ ग्रंथना सपादनमा कुल चार हस्तलिखित प्रतोनी उपयोग
 करवामा आव्यो छे एमा सोमसुन्दरसूरिना बालावबोधनी प्रतो बे छे,
 ज्यारे जिनसागरसूरि तथा मेरुसेन्दरना बालावबोधनी एरुएक प्रत छे
 अन्येरु प्रतमा बालावबोध उपरांत मूल प्रावृत 'पष्टिशतक' नो पण ते

* 'जिनरत्नकोश' पृ ४४ मन्त्रीकमचद्रवशावनाप्रबोध ना कर्ता
 सरनरगच्छीय जयसोम विक्रमना १७मा शतकमा थइ गया तथा छ कम्मप्रथा
 उपर बालावबोध (स १७१६) रचनार तपागच्छीय जरासोम शिष्य जयसोम
 १८मा शतकमा थई गया परन्तु ए बेमाथी कथा जयसोमे आ स्तवक रच्यो छे
 त 'जिनरत्नकोश' मा जे दूकी नोध छे ते उपरही कही सकाय नहि

उपदेशायी स १४९५मां लम्बायेली 'धर्मापदेशमात्र वृत्ति'नी प्रति
लीनडीना अथमडारमा सचमायेली छे *

(३) मेरुसुन्दर उपाध्याय

जूना गुजराती साहित्यमां मेरुसुन्दर उपाध्याय बालानमोषकार
तरीके सुप्रसिद्ध छे तेओ विक्रमना सोऽमा शतकना पूर्वार्धमा थई गया
तेओ म्बरतर गच्छना आचार्य पाचमा जिनचन्द्रचूरि (स १४८७-
१५३०)मा शिष्य हता, अने 'पष्टिशतक'नो बालानमोष एमना पोताना
ज कथन प्रमाणे (पृ ३), एमणे गुरुनी आचार्यी बनारसमा रच्यो
हतो मेरुसुन्दरे 'शत्रुघ्न मत्तन'नो बालानमोष स १५१८मा तथा
तरुणप्रभमूरिकृत 'पद्मानन्दक' बालानमोष 'ने अनुमरीने ए ज अन्य
उपरनो नवो बालानमोष स १५२५मा माडवगढ (माडु)मा रच्यो
हतो बळी 'जीलोऽदेगमाला,' 'पुष्पमाला प्रकरण,' 'भक्तामर
स्तोत्र,' 'वृत्तगत्नाकर,' 'भावारिवारण,' 'करपत्रकरण,' 'कपूरप्रकर',
'योगशास्त्र,' 'पचनिप्रश्नी' आदि ग्रन्थो उपरना एमना बालानमोषनी
प्रतो आ पहला जाणवामा आवेली छे + 'पष्टिशतक'ना बालानमोषमा
रचनाएप नथी, एण उपरनी वीगतो जोता विक्रमना सोऽमा शतकना
पूर्वार्धमा एनी रचना थया विपे शका नथी मूळ ग्रन्थना भावने सरल
गुजराती गद्यमा, सश्लेषमा रजु करवानी मेरुसुन्दरनी हथोटी प्रगतापान छे,
अने एमनी 'उपाध्याय' पदवी उपरथी अनुमान थाय छे के तेओ
शिष्योने मणानवानु कार्य करता हशे अने ए कार्य करतां करतां शिष्य
हितार्थे जाटला बधा मूळ ग्रन्थोने गुजरातीमां उतारवानु एमने सूझ्यु हशे

* जैन गुजर कविओ भाग २ पृ ६९४

+ ए ज भाग १, पृ ६७१२ भाग ३, पृ १५८२ ८५ 'जैन साहित्यनो
संक्षिप्त इतिहास,' पृ ५२९

તે બાલાવમોધનને સંમત ય્યો પાઠ આપેલો છે આ ચારે હસ્તાલેખિત પ્રતો પાટળના પ્રસિદ્ધ શ્રીહેમચન્દ્રાચાર્ય નાનગન્દિરમા રાસ્વરામા આવેલો સધના મઢારની ડે ઘર્ષો જ, પ્રતો જૈન ઘાટીની ઢેવનાગરી ણિપિમા લખાયેલ છે

(૧) સોમસુન્દરસૂરિના બાલાવમોધની ઘે પ્રતો પંક્તિ પહેલી પ્રતનો અનુક્રમાંક ૧૩૪૯ છે ંનુ કદ ૧૦|| x ૪|| છે અને પત્ર ૨૫ છે પ્રત્યેક પૃષ્ઠ ડપર નિયમિત રીતે ૧૫ પક્તિઓ લખાયેલી છે આ પ્રતિની નકલ સે ૧૫૨૩ મા લખેલી છે

(૨) સોમસુન્દરસૂરિના બાલાવમોધની ઘે પ્રતો અનુક્રમાંક ૧૩૫૦ છે ંનુ કદ ૧૦|| x ૪|| છે અને પત્ર ૪૨ છે જો કે ંનુ ૧૨મુ પત્ર મટલુ નથી પ્રત્યેક પૃષ્ઠ ડપર ૧૧ પક્તિ લખેલી છે આ પ્રતિમા નકલ કર્યાનુ ઘર્ષ નથી, ંણ લિપિ ડપરથી તે સોઝમા સેકાની લાગે છે આ પ્રત પહેલીની સુલનાળ અશુદ્ધ છે મૂઝ પ્રતીક ઘાચીને લખરામા ંણ લઘિયાની ઘર્ષો મૂળે ઘયેલી છે જેમ કે—ચતુર્થી અને પઘી વિમત્તિનો અર્થ ંમ્તક 'કરતા' કૂઝ ને મ્થાને તેણે મંગેળ 'હુઢ' લખ્યુ છે ફેટનીક ઘાર તે ંઁલી પક્તિઓ લઘિયાના પ્રમાઢને રીઘે પઢી ગયેલી છે, જેનો ઘધાસ્થાન નિર્ઢેઢ ઘર્ષો છે

(૩) જિનમાગસૂરિના બાલાવમોધની પ્રતનો અનુક્રમાંક ૧૦૧૫ છે ંનુ કદ ૧૨ x ૪|| છે અને પત્ર ૧૪ છે માત્ર પહેલા પૃષ્ઠ ડપર ૨૦ પક્તિ લખેલી છે, ઘારીના ઘર્ષો પૃષ્ઠ ડપર ૧૦ પક્તિઓ છે 'પઠિશતક નો બાલાવમોધ' આ ંધીમાં ૧૨મા પત્રના પહેલા પૃષ્ઠ ડપર પહેલી પક્તિમા 'પૂરો ઘાય છે, ં પઢી ંધીના અંતમાગ સુધી 'મૌતમપૃષ્ઠા નો ઘાલાવમોધ' લખાયેલો છે, જેમાં કર્યાનુ નામ નથી આ પ્રતિમાં લિપિનો મરોઢ ઘર્ષો સુન્ઢર છે

उपर जाणवेली रचाओ उपरांत नेमिबद्धकृत एवा थे बालव बोमो जाणवामा आया छे, जेनी नोध आ पहेण कोर्द विद्वाने करी नथी एरु छे गुनराती आल्फारिक सोमपुत्र बाम्भटकर 'बाम्भटालकार' (निकमना १२मा शतकनो उत्तरार्ध)नो बालावबोध तथा धीजो बौद्ध विद्वान धमशामगणिकृत अकारग्रन्थ 'विदग्धमुखमग्ग'नो बालावबोध आ बने कृतिओ ग्रास नोधवात्र एटल माटे छे के सम्वृत अलकार ग्रन्थोना बालावबोधो जअहे ज मळे छे 'बाम्भटालकार'नो बालावबोध मेस्सुन्दरे स १५३५ मा रचेलो छे, ए ज वर्षमा लखेली एनी २७ पत्रनी शुद्ध प्रति मे लगभग अढी वष पहेला जोधपुरना महाराजाना पुस्तकालयमा जोई हती अने एमाथी थोडी जरूरी नोध करी लीधी हती 'विदग्धमुखमटन'ना बालावबोधनी जोरपुरना जेन भडारनी एक अपूर्ण हस्तलिखित बोधी उपाध्याय विनयसागरजीए उपयोग माटे मोडली हती ए प्रति लिपि उपरधी सत्तरमा शतकमा लखायेली जणाय छे आ बने कृतिओ, उपर कछु ते प्रकारे, महत्तनी होशथी एमाथी केन्लाक नमूतारप अन्तरण अर्धी आपु छु पहेला बाम्भटालकार बालावबोधनो आदिअन जोईए—

आदि—

॥ ६० ॥ ॐ नम आशुनदेवनयै ॥

सिद्ध सिद्धिदमीश्वर मधना संस्तुयमान पर
 स्फूर्जसमृतिदुस्तराब्धितरणे चञ्चत्तरीसुन्दरम् ।
 आन दामन्त्रञ्जरीप्रतिलसप्रत्यमधाराधर
 वदे नाभिनरेद्रनदनमई श्रीमधुगादाधरम् ॥ १ ॥
 अनेकमाधुसाभामि श्रानकश्राविनादिभि ।
 शूरितोऽस्ति धराटयातो गच्छ स्वतरामिध ॥ २ ॥

लेखनार्थ नथी, पण लिपि उपर्या प्रति सोऽमा शतकमां लखायेली जणाय छे

(४) मेरुमुन्दर उपाध्यायना बालावबोधनी प्रतनो अनुक्रमक ३८८२ छे एतु कद १०। x ४।।' अने पत्र १६ छे प्रत्येक पृष्ठ उपर १-१ पक्तिओ लखेगी छे प्रति शुद्ध छे लेखनवप नथी, परन्तु लिपि उपर्या ते पण सोऽमा सैनामा लखायेली जणाय छे

एम सोमसुन्दरसुरिकृत बालावबोधनी ज धे प्रतो होवारी ए ज बालावबोधना पाठान्तरो गौधी शक्या छे एमा सं १५१३ बाळी प्रतने मुख्य प्रत तरीके स्वीकारी छे अने बीजी प्रतना पाठभेदो टिप्पणमा राख्या छे पण 'धरीइ धरीइ,' 'अनइ-अनइ,' 'तीणइ-तीणइ,' 'विपइ विपइ,' ए प्रकारना पाठभेदो के जे जूनी गुजरातीमा बहु विपुल छे ते नोंघ्या नथी

'षष्टिशतक'नी मूल प्राकृत गाथानी बालावबोधकारोण करेली प्रस्तावना, पछी मूळ गाथा तथा ते पछी अनुक्रमे त्रण बालावबोधो ए प्रमाणे क्रम मुद्रणमा राखेलो छे एमां [सो], [जि] अने [मे] ए संक्षेपो बडे अनुक्रमे सोमसुन्दर, जिनसागर अने मेरुमुन्दर ए त्रण बालावबोधकारो समजगना छे

'षष्टिशतक'नी मूल गाथाबोने पाठ पण सं १५१३ बाळी प्रत प्रमाणे स्वीकारीने बीजी प्रतमा क्वचित् मळता अन्य पाठो नोंघ्या छे एमा पण 'एअ-एय,' 'सअळ-सयल,' जेवा पाठो जेमां उद्धृत स्वरनो लघुप्रयल 'य'कार थई जाय छे ए नोंघ्या नथी सोमसुन्दरसुरिना बालावबोधनी आ बीजी प्रतनो निर्देश का सो बीगतथी अथवा 'सो' एम संक्षेपथी टिप्पणमा कयो छे मूळ गाथाओना पाठान्तरो जिनसागर सुरि अने मेरुमुन्दरमां क्वचित् मळे छे त्या एमनो उल्लेख 'जि'

‘तस्मिन् बभूवुरमी नानालब्धिसमाश्रिता ।

सौभाग्यभाग्यनिलया श्राजिनभद्रसूरय ॥ ३ ॥

तेषां गुरुणामुदिते सुपद्ये नानागुणालकृतचारुवर्णन ।

प्रसन्नचित्ता जयिनस्तु सति भट्टारका श्रीजिनचद्रसूरय ॥ ४ ॥

आसाद्य तत्प्रसाद करोति सरल स्फुटार्थपररचितम् ।

इह मेरुसुन्दरगणिवर्गभट्टवालावबोधन चारु ॥ ५ ॥

इहादौ सङ्गठकल्याणमालाललितगुणसङ्गठजठधरसनिभ त्रिविधार्थ
सिद्धिनिरणवुशठममलगुणचक्रमाङ्कालिकलेख श्रायुगादीश्वरस्तुत्तमाह ।

श्रिय दिशतु वो देव श्रीनाभेयजिन सदा ।

मोक्षमार्गं सता व्रते यदागमपदावली ॥ १ ॥

श्रीनाभेयजिनो देव श्रादिनाथ । वो युष्मभ्य सदा श्रियं शिस्तु
ददातु । श्रीनाभेयजिनदेव श्रीआदिनाथ तस्मै रहइ सदा श्री लक्ष्मीं दित ।
यदागमपदानली सता सत्पुरपाणां मोक्षमार्गं व्रते । जेह जिनना व्रत
सिद्धातना पद वाक्यनी आनी श्रेणि सत्पुरप रहइ मोक्षमार्गं वेत्त ।
अयस्य कस्यचित् पदाना पडिक्कईया सती सता सत्पुरपाणां मार्गं वेत्त-
यति । अनेराइ कहि पुरुषना पद चरणनी श्रेणि दीया इती सुन्दर-
मार्गं प्रकासइ । इसिउ उक्तिलेश जाणियउ ॥ ३ ॥

साधुशब्दार्थसन्दर्भ गुणालङ्कारभूपिनम् ।

स्फुटरीतिरसोपेत काव्यं पुर्वीत कीर्तये ॥ २ ॥

कवि काव्यं पुर्वीत । कवीश्वर काव्यं जगत् । जित्तये । कीर्तये ।
कीर्त्तिनह अर्थि । किंनिशिष्ट काव्यम् । साधुशब्दार्थसन्दर्भम् । साधु दोष
रहित शोभन छद् जे शब्द नइ अर्थ तेह त्तु मन्म रचनाविशेष छद् ।
पुन किंनिशिष्ट काव्यम् । गुणालङ्कारभूपिनम् । गुण मौदर्यादिक
अष्टकार उपमादिक तेहि भूपिन अलङ्कन छद् । पुन किंनिशिष्ट काव्यम् ।
स्फुटरीतिरसोपेतम् । स्फुट प्रकट अर् जे किंनि पावाल्यादिक

तथा 'मे' ए प्रमाणेना सरोपना निर्देशपूर्वक कर्णो छे बालबोध कारोए आपेला अत्रतरणोना मूळ स्थानो ज्या खोळी शकायां छे त्या तेमनो निर्देश कौसमां कर्णो छे

श्रीहेमचन्द्राचार्य ज्ञानमन्दिरनी आ बधी हाथप्रतो उपयोग माटे मेळनी आपवा माटे पू मुनिश्री पुण्यविचयजीनो तथा पानमन्दिरना व्यवस्थापनीनो हु उपकार मानु छु

परिशिष्टो—अगाउ कहु छे ते प्रमाणे, नेमिचन्द्र भडारीनी, बे वृतिओ आ ग्रन्थना परिशिष्ट तरीके लेवामा आवी छे—एक छे उच्च कालीन अपभ्रंशमा रचायेळ 'जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन' अने बीजां छे प्राकृत 'पार्वनाथ स्तोत्र'

(१) 'जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन' जेसल्लमेरना बडा भडारामानी बे पानानी प्रतमाथी मळ्यु छे ए बे पत्र उपर पत्राक ८९९० रल्या छे, तेथी अनुमान थाय छे के ते कोई सळग मोटी हाथप्रतनो अगु छे, ९० अकवाळा पत्रना बीजा पृष्ठनो अघा करता बधारे भाग कोरो छे, तेथी लागे छे के मूळ सळग पोथीनु आ छेल्ल पत्र हरो लिपि उपरथी प्रति पदरमा सैकामां लखायेली जणाय छे एनी पुष्पिफामा खरतर गच्छना जे आचार्योनां नाम आप्या छे एमा छेल्ल नाम सागरचन्द्रसूरिनु छे, तेथी ए आचार्यना जीवनकाळमा एनी कल थई हरो एवो स्वाभाविक तरे थाय छे. सागरचन्द्रसूरि अवसान सं १४६१मां थियु हतु ('खरतरगच्छ पट्टावलीसंग्रह,' पृ ३१), एले एनाथी थोडां वर्ष पहलां प्रति लखाई हरो

श्री अगरचंद्र नाहटासपादित 'प्रतिशासिक जैन काव्यसंग्रह' (पृ ३६९-७२)मां आ काव्य छपायु छ जो क एमा उपयोगमा लेखायेली प्रति करता जेसल्लमेरवाळी प्रति निरूपणे जूनी छे श्री नाहटानी वाचनाना पाठान्तरो दिष्पणमा नोआ वे

रम गुणरादिक तर्हि उपर सयुक्त छुः । तत्र रीतिनामुदेश कल्पते ।
उक्त च ।

द्वित्रिपदा पाञ्चाला लट्ठया पञ्च सप्त वा यावत् ।
सप्त समासत्रयो भवति यथाशक्ति गौडीया ॥
असमस्तपदा वैदर्भी रीतिः । इति रीतिचतुष्टयम् ॥

इत्राणि त्रयानि यदानि यस्यां रीतौ सा पाञ्चाली । त्रि त्रिणि त्र पद
द्वय जेणइ रीतिं त पाञ्चाला रीति जाणिरी । पचभि सप्तभि पदै
लट्ठया रीतिर्ज्ञेया । पांचि अथत्रा साति पदि लट्ठया रीति जाणिरी ।
यथाशक्ति समासत्रय शब्दा गौडीया रीतिर्भवति । यथाशक्तिइ समास
सयुक्त शब्द द्वइ ते गौडीया रीति जाणिरी । असमस्तपदा पृथक्पदा
वैदर्भी रीतिर्ज्ञेया । समस्त पदि जूइ जूइ पदि वैदर्भी रीति जाणिरी ।
ईणइ परिइ रीति ध्यारे जाणिवी । ण्हि रीतिमयुक्त वाक्य धीर्त्तिनइ
आयं द्वइ । एतद्विपरीत तु काठ्य विपरीतकठमेव स्यादिति तात्पर्याय ।
एह तु विपरीतकथय विपरीतपठ द्वइ एतु तात्पर्यार्थं जाणिवु ॥ छ ॥

अन—

अथ वाभत्समाह ॥

वाभत्स स्यात् जुगुप्सात् सोऽह्वध्रवणेशणान् ।
निष्ठावनास्यभङ्गादि स्यादत्र महता न च ॥ ३० ॥

जुगुप्सात् वाभत्सस स्यात् । जुगुप्सा कुसित धम्नुनु बीभत्स रस
द्वइ । विभावादिनस्योपदिशति । स वाभत्स अह्वध्रवणेशणात् । निष्ठा
वनास्यभङ्गादि स्यात् । ते बीभत्स रस अह्वय सूगामणो साभलितानु अनइ
जाइवानु । निष्ठावन थुक्त्वि, आस्यभग मुल मोडवू इत्येवमादिक द्वइ ।
च अयत् अत्र महता निष्ठावनास्यभगादय प्रायो न वक्तव्या इति ॥ च
अनइ महान् गुरुआनइ निष्ठावन आस्यभगादिक प्राय सहाजेइ न द्वइ
॥ छ ॥

(२) नेमिचंद्र भनारीकृत 'पार्श्वनाथ स्तोत्र' अहीं प्रथम धार प्रसिद्ध थाय छे गुजरात विद्यासभा (अमण्णवाद)ना हस्तलिखित पुस्तकसंग्रहमा एक प्राचीन जैन संग्रहपोथीना ३६१ थी ३९४ सुधीना पत्र छे, जेमा प्रकीर्ण संस्कृत प्राकृत स्तोत्रादि लक्ष्मण छे एमां पत्र ३७८ ७९ उपर आ 'पार्श्वनाथ स्तोत्र' छे

आ पोथीना पत्र ३९४ उपर 'महानीर स्तुति' नी नकल पूरी थाय छे तेने अते नीचे प्रमाणे पुष्पिना छे—

श्रामहारस्तुति । कृतिरिय श्रादेयमूर्धुपावायाना सन्त् १३८७ वर्षे कार्तिक शुदि १० सोमवारे मसापुरे श्रीजिनप्रबोवमूरिशिष्येण आनद मूर्त्तना लिखिन ॥

'पार्श्वनाथ स्तोत्र' तो आनी पहिला, पत्र ३७८ ७९ उपर, लक्ष्मण छे, एले एनी नकल, पण स १३८७ ना कारतक सुद १० पहिला क्यारेक थयेली होी जोईए

अणे बालावबोधे तथा 'जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन' माना नोध पात्र शब्दोन्नो फोश पुस्तकने अते उमेर्यो छे चडोदरा विश्वविद्यालयना गुजराती विभागना श्री इन्द्रवदन अमराल दवे, एम ए, एमणे शब्दोन्नो तैयार करवामा केटलीक-सहाय करी हती ए वस्तुनी अहीं साभार नोध लेखामा आवे छे

अनुलेख

प्रस्तावना पृ २०-२२ना बीबा गोठमाई गया पछी, ऊझाना महाननना हस्तलिखित पुस्तकभंडारमाथी, पू मुनिश्री पुण्यविजयजीना सौजन्यथी 'त्रिदशमुग्रमटन'ना मेरुमुन्दर उपाध्यायकृत बालावबोधेनी सं १६७२ मा नकल थयेली एक संपूर्ण प्रति मळी छे जोधपुरवाळी

शातरसमाह ॥

सम्यग्ज्ञानसमुत्थान शान्तो नि स्पृहनायक ।

रागद्वेषपरित्यागात् सम्यग्ज्ञानस्य चोद्भव ॥ ३१ ॥

सम्यग्ज्ञानसमुत्थान शान्तो रस स्यात् । सम्यक् ज्ञानानु उपानु
शान्त रस इह । कादश । नि स्पृहनायक । नि स्पृह निराकांक्षी नायक
छइ । च अयत् रागद्वेषपरित्यागात् सम्यक् ज्ञानस्य उद्भवो भवेत् । राग
द्वेषना परित्याग छाडिवात् सम्यक् ज्ञानानु उद्भव उत्पात्ति इह ॥ छ ॥

उपसहरनाह ॥

दोषैरुज्झितमाश्रित गुणगणेश्वेतश्चमत्कारिण

नानालङ्कृतिभि परीतमभितो रीत्या स्फुरन्त्या सताम् ।

तेस्तस्मिन्मयता गत नवरसैराकल्पकाऽ कवि

अप्रारो रचयन्तु काव्यपुरुष सारस्वतध्यायिन ॥ ३२ ॥

कविस्तथा आकल्पकाल कल्यात यायत् काव्यपुरुष रचयन्तु
निष्पान्यत् । कविस्तथा आकल्प फलपान जाण काव्यपुरुष रचउ नोप
जायउ । कीदश । दोषै श्रुतिकृत्वादिभि उज्झितम् । दोष श्रुतिकृ
वादिके उज्झित त्यक्त छइ । तथा गुणगणै औदार्यादिभि आश्रितम् ।
तथा गुणना समूहे औदार्यादिक आश्रित छइ । तथा चैन चमत्कारिण ।
चित्तनइ चमत्कार कर्तु छइ । नानालङ्कृतिभि परीतम् । नानाविध
अलङ्कारे परीत युक्त छइ । तथा सतां सत्पुरुषाणा त्रिदुषां वा अभिन
स्फुरन्त्या रीत्या तैस्तै नवरसै तमयता गतम् । तथा सत विद्वांसनी
सविद्व प्रकारि स्फुरती उल्लमती रातिइ करी तेह तेह नवरसि करी तम
यतागत प्राप्त छइ । किञ्चक्षणा कवय । सारस्वतध्यायिन । सारस्वतमत्र
प्यान करता छइ ।

श्रीमत् खरतरगच्छे श्रीमज्जिनभद्रसूरीन्द्रा

तत्पद्ये विनयने णिनचडजिनीसरा गरव ॥

प्रति अपूण होगथी एमाथी आ वृत्तिनो अतभाग मळतो नहोतो, ते जामाथी मळे छे उज्ञानी प्रति अनुमार, आ गालावमोधनो अतभाग नीचे प्रमाणे छे—

सृगागतीत्यादि० । अय दीन अस्त एष्यति । ए दाप अस्त पामि मिद । कीदश । सदागनिहतोच्छ्राय सदा नित्यमेव गति गमनि करी हत हाणित उच्छ्राय उधम एइ । तमस उश्यता । तमइइ वश्यपणूउ ण । विधुरक शिवस्थित । विधुर विह्वल ता धुण शिवस्थित कल्याणत ते । अपि तु नही का । द्वि० । अय दाप अस्त एष्यति । ए दीप अस्त पामिसिद । कादश । सृगागनिहताच्छ्राय । मदागनि वायुइ हत हाणित उच्छ्राय एइ । तमसो वश्यता गत । तम अशरहइ उश्यता पामिउ उइ । एको विधु शिवस्थित । एउ विधु चद्रमा गिर श्रीमहात्मानइ विपयि स्थित उइ ॥ छ ॥ ६९ ॥

पूर्णचन्द्रेयादि । निर्मलावरा कामिना कस्य स्वान मन एकांत मदनात्तर न करोति । अपि तु सर्गस्यापि करोति । निमउ अय उत्र रसी कामिना छा काहेनु स्वान मन एकांति मदनात्तर मदनाधिक्य न रर । अपि तु सरिहुनु कइ । कादशी । पूर्णचद्रमुखी । पूर्णमाना चद्रमानत मुख ण । रम्या मनोहरा द्वि० यामिनी रात्रि कस्य स्वान एकांत मनात्तर न करोति । अपि तु सर्गस्यापि करोति । कीदशा । पूगचद्र सुडी । सूर्गचद्र जि मणित मुख एइ । रम्या रमणाया निर्मलावरा । निर्मल वर आकाश उइ ॥ छ ॥ ७० ॥ च्युतदत्ताक्षरजाति ॥ उ ॥

इति आधमगासिरचिनविदग्धमुखमदनकाव्यस्य वृत्तिरिय समाप्ता ।
प्रथम १५३४ सवत् १६७० वर्षे ।

तेषामतेवासी वाचकवरमेरुसुदुर शुचिवाक् ।
 चक्रे वाग्भटविहिताउकारस्य प्रवरत्रिवृतिम् ॥
 वाणाग्निवाणशशिरसग्ये वर्षे विशुद्धतरदिवसे ।
 प्रथमं समर्थितोऽयं नदतु यावज्जगति मेरु ॥

सप्त १९३९ वर्षे श्रीरत्नरगच्छे* श्रीमेरुसुदुरोपाध्यायै वाग्भटालकार
 बालावबोध कृतोऽयं चित्रं नदता[त्] ॥ छ ॥ छ ॥ कल्याणमस्तु ॥ आ०
 कालासुतं श्रावणसंज्ञितं ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥ सप्त १९३९ वर्षे
 द्वितीय श्रावणे सुदि पंचमा गुरुनासरे इन्द्राग्रामे ऊकेशगच्छे श्रासिद्धाचार्य
 सनाने म श्रासिद्धसुरिविजयराये प० जयरत्नानामुपदेशेन लिखापितोऽयं
 वाग्भटालकारबालावबोध ॥ द० ॥ आसवालज्ञातीय म० तारा भा०
 रमाई पु० म जगन्नेन पु० पहिराजयुतेन भा० रगूत्रेपसे ॥ शुभ भूयात्
 दायिन्त्राचकयो ॥ श्रीरस्तु ॥

* विदग्धमुखमडन 'ना बालावबोधनी जे एक मात्र प्रति जाणवामा
 आपेली छे एमा ३५ पत्र मळे छे, पण प्रति अधूरी छे जो क छेवटना
 मात्र छे श्लोको ज बालावबोध एमा १ होई प्रतिने असडितरुल्य गणी
 ग्राफाय अर्थात् मूळ प्रतिनु छेल्छे एकाद पत्र गूम थयेतु होतु जोईए
 आधी विदग्धमुखमडन बालावबोधना प्रारम्भोवी थोडो नमूतो
 जोईए—

तस्मिन् वरा श्रीजिनभद्रमूरय सिद्धांतरानिविपूर्णाचन्द्रा ।
 सरोपत्र दर्पविमुक्तनादणवाणावलीगर्भहरा बभवु ॥ ३ ॥
 तेषा महान दद्रुपा गुरुणा विशिष्टपट्टे जयिनस्तु सति ।
 सरस्वतीदत्तया अनेकशिष्याश्रिता श्रीचिनचद्रमूरय ॥ ४ ॥

* मूळ प्रतमा आ अधी पंक्ति उपर कोइए हरताळ फासेली छे

1 1 1

मूर्ख ! अनेरा देवहद प्रणमतउ हूतउ मुसिउ छइ । सम्यक्त्वरूपिउ धन तेहना हारयदतउ ॥ ३ ॥

[मे] रे जीव ! एकलु अ जि जिनमत जिनभापित धर्म आराधता हृता भव ससारना दुक्खनट फेडइ । अनइ इतर हरिहरा दिग्गनट प्रणमता थोडा सुखनइ काजि मूढ ! मूर्ख ! मुसाणउ छइ । १५ धर्म हूतउ चूकड छइ ॥ ३ ॥

[जि] जिनधर्मनउ प्रभाव कही सम्यक्त्वनतहूइ मोक्षपद प्राप्ति बोखइ छइ ।

देवेहिं दानवेहिं य सुओ न' मरणाओ रक्खिओ कोइ ।
ददकयजिणसमत्ता बहुअ रि अयरामर पत्ता ॥ ४ ॥ १०

[सो] देवदानवे जाप गेप क्षेत्रपाल आसपाल गोगा विणायग चामुडादिके को मरणनउ राखिउ किहाइ न सांभलिउ । तेहे को मरण तउ न रखाइ^१ । निमाचित कर्म कुणइ टाली न सकीइ^२ । जउ एहे को मरणतउ^३ राखिउ हुइ तउ को^४ किहाइ जीवतउ देखीइ । पुण नथी । घणाइ देवदेवता आराधी जमारउ सघणउ मिथ्यात्वना सइ^५ १५ फरीनइ मूआइ जि । आघाइ घणा ससारना जन्ममरण जि उपार्निया । ददकय० दद वीतरागनउ सम्यक्त्व पालीनइ बहु० घणाइ अनता^७ जीव अनरामरणइ पहुता । मोक्ष प्राप्या^८ । जन्मजरामरणरहित^९ ह्या ॥ ४ ॥

[जि] देवे दानवे पुण कोई लोऊ मरण हूतउ राखिउ सांभलिउ १०
अपि तु कोई न सांभलिउ । कोई अमर हूतउ सांभलिउ १ दृष्टीकृत

१ भीमी प्रलोमा नथी २ रक्खई ३ सकाद ४ मरतउ ५ कोहि ६ सई
७ अनता ज ८ प्राप्या ९ मरणा

जिनमम्यन्व हुइ ते घणाई अनरामरपद पाम्या । एतलइ सम्यकत्व
धाम्क षधलाइ अमर हुइ ॥ ४ ॥

[मे] देव दानव गोत्रन क्षेत्रपालप्रमुखे निहाई सांभलिउ ज
मरणतउ नोइ रापिउ ^१ अपि तु फो रापिउ नहीं । पणि दृढ कीधउ
5 जिन ऊपरि सूधउ मा, सम्यन्व सरउ जे जीने पालिउ ते जीन घणा
अजरामरपदि मोक्षपदि पहुना ॥ ४ ॥

[जि] हिव सम्यकजनउ प्रमाण कही मिथ्यावनउ प्रमाण
कहइ उइ ।

जह कुवि वेसारत्तो मुसिज्जमाणो वि मघ्ण हरिस ।
10 तह मिच्छवेसमुसिया गय पि न मुणाति धम्मनिहिं ॥ ५ ॥

[सो] जिन कोएक मूर्ख वेद्या अधम निखेह खी तेहनइ
यसनि वाहिउ तेहइ आपणी लक्ष्मी पूरतउ पोतउ हारतउइ
मुसितउइ तुच्छ सुखनउ लोभिइ हर्ष मानइ तिम ए अनाणी^२
जीन वूडउ धम मिथ्यात्व तेह^३ वेद्या तुच्छ मोहनइ कीधइ इहलोकना
15 चमत्कारमात्रना वाहिया हुता धर्मरूपिउ निधान गिउइ जाणइ नहीं ।
मूख इमिउ न जाणइ ईणइ मिथ्यात्व^४ करी अश्वरउ सधलउ धर्म
जाइ छइ । परलोकि जम्हे दु सिया थामिउ^५ ॥ ५ ॥

[जि] जिन कोई वेद्यामक्त पुरुष वेद्याइ मुसीतई हूतउ
हर्ष मानइ तिम मिथ्यात्वरूप वेद्याइ मुम्या हुता धर्मरूपिउ निधान
20 गिउई न जाणइ ॥ ५ ॥

[मे] जिन कोई वेद्यानइ विपइ अनुरक्त रातउ थोडास्या

विषयनइ फाजि धनादिक मुसीनउ हर्ष मानइ तिम मिथ्यात्वरूपिणी
वेदयाइ मुसीनउ जीर धर्मरूपीउ निधान गयउ न जाणइ ॥ ५ ॥

[सो] को इसिउ कहिसइ^१ । आपणइ वडानइ कुलाचारि
चालीइ । एतलउ^२ धर्म । बीजउ विचार फाई न कीजइ । ते^३
आश्री कहइ छइ ।

[जि] कुलक्रमागत भायइ तिसु धम न करिवउ । ए वात
प्रकासइ छइ ।

लोअपवाहे सकुलकमम्मि जइ होइ मूढ धम्मु त्ति^४ ।
ता मिच्छाण वि धम्मो थक्का य अहम्मपरिवाडी ॥ ६ ॥

[सो] रे मू^५ । जउ लोकनइ प्रगाहि आपणइ २ कुलाचारि^{१०}
चालना धर्म हुइ तउ कुणएक धर्मनत नहीं^१ । सधनाइ साटकी, माछी,
वेदया, घागी, मोची, ठठार प्रमुख सह आपणइ २ कुलाचारि चालइ
छइ । आगिला वडा पूरेन जे काम करता ते पाठिना^५ फरइ छइ ।
ता मिच्छाण वि धम्मो^० तउ जे पापी हिंसाना करणहार कुमार्गना
चालणहार स्नेच्छ तेहइ धर्म हूउ । तेहइ धर्मवत हूआ । थक्का^{०१५}
अधम पापनी परिपाटी परंपरानी वातउ नाठी । अधर्म किहांइ छइ नही ।
सह धमवनइ जि हूउ । एतलइ इसिउ भाव । कुलाचार जूउ ।
धर्मनउ मार्ग जूउ । कुलाचार किहनउ केनलउ पुण्यमय हुइ । किहनउ
पापमय हुइ । पुण्य धर्मनउ आचार जिहा जीवदया सत्यवचन ब्रह्म
चयादिक गुण तिहां नि छइ । अनेथि नथी । केती वारइ पूरेन दालिद्री^{२०}
हुसिइ^१ तउ सनानीइ निसिउ लक्ष्मी आवती न लेवी^२ । अथवा को
पूर्वज कूअइ पडी मूउ हुसइ तउ सनानीअइ किरिसिउ कूअइ पडी

एतां प्राणानां विवपद्या मत्राद्यनतस्तु खलु बजाडाएरुइति श्रीकानि एजलटारी विरचित पठि जान र सुविचरणकृति
 शिय श्रीचंद्रस्वतरणद्वय शोचकित श्रीमरु भुटसण॥३॥ नाम ज्वालाचक्षाषारथ ममरमज्जभरिति स्तिरितकिकि
 अणपाय ध्या धरमा सोद्यदिसावा रयद्वत्रिहितेक श्रीचिबुध्याश्रितरणा पाय भव तंबाक र्पा नो ॥ १५५ ॥ तम
 प्रयोभ्याश्रिते च्छत्या व श्रीमधस्य ॥४॥ ॥ १५६ ॥ प्रथमस्थायिक शत एण॥४॥ ॥ १५७ ॥ श्री ॥ १५८ ॥

१ १५७ ७

१५५ ४०



मेरुमुद्ररुत थालावबोधनी हस्तमतनु अंतिम पत्र

परिवउ १ एह भणी कुलाचारनउ कांइ नहीं । सूधउ धर्म जि जाण
हूतइ लेउउ ॥ ६ ॥

[जि] लोकनइ प्रवाहि करी आपणइ कुलक्रमि हे मूढ । धर्म
इमिउ जइ हुइ तउ पछइ मिच्छाण वि स्लेच्छनउ धर्म । अहम्म-
३ परिवाणी अधर्मनी परिपाटी श्रेणि याकी रही ॥ ६ ॥

[मे] रे मूर्ख ! लोकप्रवाहि आपणा २ कुलनइ आचारि
चालना जउ धर्म हुइ तउ स्लेच्छ खात्की वेश्या ते महु आपणइ २
कुलाचारि चालइ छइ । तउ तेहनइ धर्म होसिइ । एतइ अधर्मनी
परपरा नाडी । अधर्म निहाइ नयी । सह धम्मतइ जि हूउ ॥ ६ ॥

१० [जि] दृष्टानतइ बलि करी धर्महइ मोटाई देखाइ ।
लोक्यमि रायनीईनाप न कुलक्रममिमि कइया वि ।
कि पुण तिलोअपहुणो जिणद'धम्माहिगारमिम' ॥ ७ ॥

[सो] लोकइ माहि राजनीतिनउ न्याय कुलक्रम माहि नाउइ ।
राजनीतिनउ माग जूउ । कुलाचार जूउ । तउ पाधरी राजनीति माहि
१५ कुलाचार न जोइइ । तिहा रानाजाइ जि जोवी । कि पुण० त्रैलोक्य'
त्रिमुनना प्रभु ठाकुर^४ श्रीजिनेन्द्र वीतरागना धर्मनइ अधिकारि
कुलाचार न^५ जोइइ । तिहा सर्वथा जोया न आवइ । तिहा खरी
वीतरागनी आजाइ जि लेईनइ धर्म करियउ । इसिउ भाव ॥ ७ ॥

[जि] लोकइ माहि राजनीति मोटी । नाप जात दृष्टान्त ।
२० कुलक्रमि कइया वि विरइ नीति न्यायमार्गी प्रमाण नहीं । एतइ
राजनीति जिम प्रमाण तिम जिनधर्म जि प्रमाण । जइ लोकइ माहे
इसु छइ तउ त्रैलोक्यनउ स्वामी श्रीजिनेन्द्र तेहनउ धर्मनइ अधिकारि

नेमिचन्द्र भडारी-विरचित पष्टिशतक प्रकरण

त्रण मालावगोत्र सहित

- [मो] गिगिन्द्रमाणविगरग्याण निअगुरुपण य नमिऊण ।
 सट्टिमयम्म य ण्य यकमाण किंपि जपमि ॥ १ ॥
 माओक्तिमेणे न रिभच्छियुक्ति क्रियादियोगोऽपि च नो विलोस्य ।
 भासाथमार्गंरिधीयतेपा वृत्तिनया मुग्धनिबोधनाथम् ॥ २ ॥
- नेमिचन्द्र भडारी पहिले तिम्यउ^१ धर्म १ जाणतउ । ३
 पठइ श्रीजिनउह्मसूरिना गुण सांभली^२ अनइ तेहना कीधा
 पिंडविशुद्धिप्रमुन्न प्रथनइ परिचइ साचउ धर्म जाणित । तउ
 तीग^३ श्रीधर्म सपलादना मूल भगी श्रीमम्यस्त्वनी शुद्धि अनइ तेहनी
 हदनानइ वाचि १६० गाथा वीची । सारमूत तिहा पहिइ सर्व धम्म
 माहि सारतत्त्वमूत च्यारि बोळ पहिली गाहइ^४ कहि^५ छइ ॥ १०
- [जि] श्रीगुणवित फलिन सुरद्रुमदशोऽमिनो महाभान ।
 विजया मूर्धुषभाद्या अपि ददता भगळ तिन्यम् ॥ १ ॥ *
 श्रीनेमिचन्द्रविरचितचर्द्धराग्यरङ्गस्वर्षिणा ।
 श्रीजिनसागरप्रमुणा मालावबोधाख्या ॥ २ ॥
 पष्टिशताख्यप्रकरणत्याख्या प्रस्तूयतेऽत्र नख्येयम् । १५
 भव्यजनबोधहेतोराचारूपा विशुद्धा च ॥ ३ ॥

१ तिम्यउ २ संभली ३ तीणइ ४ गाहइ ५ कहइ

* आ तथा आ पड्डीनो श्लोक मूळ प्रथमां आम भडार व तत वय वे.

किमु कहिवउ ? जिम राजा ति आगलि सामान्य लोकनउ न्यून
प्रमाण नहीं तिम जिनधर्म आगलि कुलकमागत अनेक नैस्य
नहीं ॥ ७ ॥

[मे] लोकमाहि राजनीतिनउ न्याय कुलकनमाहि कहइवउ
काइ बेवइ मार्ग जूआ । तउ पठइ त्रैलोक्यनउ प्रसु उठुवु दिने
तेहना धर्मनइ अधिकारि कहिवउ किसउ ? ॥ ७ ॥

[सो] जीवहइ संसार उपरि वैराग्य आवइवउ दुहेउवउ ?
ए बात कहइ छइ ।

[जि] वली जिनधर्मनी मोयई प्रसासुद ।
जिणवयणवियन्नूण वि जीवाण जं न होइ न्वविउं ।
ता कह अविद्यन्नूण मिच्छउत्तहयाण पासम्मि ॥ ८ ॥

[सो] जे श्रीजिनवचन सिद्धान तेहना विउ वउ
तेहइ जीवहइ जउ संसारनी विरति वैराग्य नावइ । ता कह
अविज्ञ अजाण जे मिथ्याविइ की दमिउ दउं इ
कहलि संसारनी विरति निवृत्ति किम आवइ ? इउ प्रसासुद
पापनी निवृत्ति नथी आवती तउ अजाण निवृत्ति इउ
विरतिनउ आवियउ गाढउ दुहिनउ छइ । इमिउ २२/१२

[जि.] जिनवचन तणा जाणहार इउवउ इउ
संसार हतउ विरमण न हुइ । अविद्यन्नूण इउवउ इउ
अनइ [मिथ्या] इउवउ मिथ्यात्वयाप्या जीव इउवउ इउवउ
संसारनउ मेलिहवउ हुइ ? अपि तु न हुइ । इउवउ इउवउ इउवउ
१ वेइ २ मिथ्याविउ ३ 'काहिया' नही

तथा हि । श्रीपरतरगच्छि श्रीजिनेश्वरसूरिद पिताइ
श्रीनेमिचन्द्र भडारी शत्रुकि विधिपनम्वापक ए माठिमउ ग्रथ
कीपउ । तिग धुरि सर्ग विघ्नोपशान्त्यर्थ इष्टदेवतानमन्त्रारूप ताम
ग्रहणपूरुन सम्यक्वन्धापक ग्रथनाग प्रथम गाथा कहइ छइ ॥

5 [मे] सयन्सुरामुग्गमिय पासनिण पणमिटण भावेण ।

वागण बोरणथ पयट विरेमि सट्टिमय ॥ १ ॥

इहा श्रीपरतरगच्छि निरुपमगुणविधान श्रीजिनबह्मसूरि-
नइ पाटि श्रीजिनदत्तसूरि । तेइनइ पाटि श्रीजिनचन्द्रसूरि ।
तत्पट्टाकार श्रीजिनपत्तिसूरि श्रीपत्तननगरमाहि विनयवत वर्तइ ।
१०इसइ प्रस्तापि मरुदेशभडन मरोटि नगरि श्रीनेमिचन्द्र भडारी
भाया लपमिणि पुत्र आउट महित सुरिद वमइ । अन्यण प्रस्तापि
गाथा १ नेमिचन्द्र भडारीइ व्याख्यात माहि सामलि । ति किसी ।

अक्यडियचारित्तो वयगहणाउ जो भये निच्च ।

तम्म सगासे दमण वयगहण सोहिगहण च ॥ १ ॥

११ ए गाथा सामलीनइ आलोअणनी इच्छाइ वार वरस साससुगुर्नी
परीक्षा जोअतउ २ पत्तन नगरि आय्यउ । सगली पोसालद द्रव्य
क्षेत्र काल भावनइ मेलि सुगुरु जणलहतउ मनमाहि चिन्ता धरतउ हाट
एकनइ थडइ बढठउ छइ । इमइ प्रस्तापि श्रावक पाच-सात श्रीजिन-
पत्तिसूरिना गुण वणन्ता सामली पू-चा । तुम्हे केहना गुण कहउ
२०उउ ' तेहे श्रीजिनपत्तिसूरिना गुण कहा । पठइ तीह श्रावका
सधाति पोसालइ जाणी गुर्नी देसगा सामली । गुर्ना लक्षण ईयाममिति
प्रमुख जोअतउ रात्रिइ पोसालद पूणइ सूतउ २ चीतनइ । एता
दिवममाहि प्रमादनउ कारणु न दीठउ । रात्रि तउ पउजना जइणाइ
हीइइ छइ । सिध्याइ ध्यान करइ छइ । पणि वार २ महातमा द्वडीमाहि

जीवूद वैराम्य उपजइ । मिथ्यान्व लगी सामुहउ जीव ससार
वधारइ ॥ ८ ॥

[मे] जे निनयचननउ जाण मनुष्य तेहनइ वि भय समार
तेहनी विरति नथी आपती तउ कहउ न, अचाणनइ विम विरति
५ आमइ १ जे मिथ्यान्वि करी हत हृष्या जे जीव छइ तेहनइ पासइ
रहइ तेहनइ विरति आवता गाढी दोहिली छइ । इमउ भाव ॥ ८ ॥

[जि] निनयम साचउ इमु जाणी सम्यग्दृष्टिहइ मिथ्यात्वी
देखी जकाई मनमाहि उपनइ तनाई कहइ छइ ।

विरयाण अन्विरण जीवे ददृष्टूण होउ मणताचो ।

१० हा हा कह भवकृवे बुद्धता पिच्छ नघति ॥ ९ ॥

[सो] जे विरत पापनउ निगत्या जीव छइ तेहनइ
अविरत पाप करता देखी मनमाहि संनाप धाइ । हा हा० अहा !
ए अविरत जीव समारूपिआ कृआ माहि बूडता देखि किम नाबइ ?
ए गापडा पाप करी नवनवी गतिइ नवनवे प्रकारि रलिम्यइ, किम
११थासिइ इम सेइ प्रामइ ॥ ९ ॥

[जि] विरत सम्यग्दृष्टि जीवइ अविरत मिथ्यात्वी जीव
ददृष्टूण देखी करी मणताचो मनि सताप हुइ । किमु संनाप ए ।
हा हा सेने । रे जीव ! पिच्छ । जोइ संसाररूपीउ कृउ तेह माहे
बूडता गापडा किमु नाचइ छइ ? एतलइ सम्यक्की इमु जाणइ । जउ
१२ससारमाहे कोई जीव बूडइ नहीं नउ मलउ । तिणि कारणि ससारमाहे
बूडता जीव देखी मनि संनाप करइ । इमु भाव ॥ ९ ॥

१ जि भयरूपे २ निवृत्त्या ३ अविरत जीव ४ मनमाहि चित्तमाहि

जाद। तिहा काद कारण सभावीइ। पउइ पाउली रात्रिनी पोरसिइ तेहमाहि
 पहसी राप वेळ तेल देपी। थोडी थोडी वस्तु गाठिं बाधी सूतउ।
 प्रभाति पोसाल बाहिरि जई जउ जोअठ तउ वेळ राप तेल दीठा।
 निम्मय उपनइ मोलउ चेन्उ पृठिउ। ए सिइ कानि आनइ १ चेन्उ
 सर्प वात कही। वेळ बर्तवानइ काजि। रक्षा जीवन्दणाद काजि। ५
 तेर लेपनइ कानि। इम सदेह भागउ। पच्छइ प्रगट हुइ सिद्धान्तत्त
 सामली श्रीसम्यक्जमूल वार व्रत पडिनी **मरोठि** पाछउ आवी जान
 करी आवड पुत्रनइ साथि लेई गुरु समीपि आवी महामहोत्सवपूर्वक
 पुत्रनइ दीक्षादि वरावी। ते क्रमिइ २ भणता गुणता चारित्र पालता
 श्रीजिनेश्वरसूरि हया। पउठ **नेमिचन्द्र मडारीइ** श्रीजिन १०
 पत्तिसूरिनी रीति देपी। श्रीजिनबल्लभसूरिना कीधा पिड-
 विशुद्धिप्रमुख ग्रन्थ सामली ते गुरुना वचन सर्प सिद्धान्तनइ मिलता
 जाणी आम्हा उपनी। सम्यक्त्वनी दृढतानइ कानि परोपकार भणा
 साठिसउ गाथारूप ग्रन्थु कीधउ। हिब ते गाथा लोकनइ समक्षारिना
 भणी श्रीजिनचन्द्रसूरिन आवेसि **घणारीसि मेरुसुन्दरि** १५
 गणिइ वात्ता बालावबोध सक्षेपिं कीजइ। तिहा धुरि च्यारि बोल सारभूत
 कहीइ ॥

अरिह देवो सुगुरु सुद्ध धम्म च पचनवकारो ।

उन्नाण कयत्त्राण निरतर वसइ हिययम्मि ॥ १ ॥

[सो] ण्क श्रीअरिहत वीतरागदेव' बीजा सुगुरु सुद्ध^{१०}
 चारित्रिया, शुद्धमार्गप्ररूपक गुरु' श्रीनउ शुद्ध धर्म जीवन्त्यामूल कर्म
 क्षयहेतु धर्म चउयउ पचपरमेष्ठिनमम्कार सर्प सिद्धातमाहि मार सर्व
 पापशयकर महामत्र नउजार। ए च्यारि बोल सर्प जगत् अनइ सर्प
 धर्ममाहि मार कुणह एक धन्य उत्तम भव्य अनइ वृत्तार्थ भाग्यवत

[मे] जे विरत पाप हूता निवत्या छ' जीव तैही अविरतनउं स्वरूप टैपी मनमाहि किम परिताप नाण' १ काइ होइम्यइ १ सेदि । अविरत जीव संसाररूपीआ कूआमाहि बूडना, देपउ, किम मात्र छइ ॥ ९ ॥

[सो] केती वारइ बीना आरम न मूकइ १ तउ मिथ्या ३ कई ग्रहअ' नहीं १ जेह भणी मिथ्यात्वनउ मोटउ ॥ अरु छइ त कहइ छइ ।

[जि] आरम लगी जीव टुखा हुइ इमु जमवर १ ।

[मे] किवारइ बीना आरम न मूकइ तउ निव्याव ३ न छाडइ १

१३

आरभजम्मि पावे जीवा पावति तिकरदुकराइ ।

जं पुण मिच्छत्तलव' तेषं न लहति जिणशोहि ॥ १० ॥

[सो] बाहण प्रवहण क्षेत्रकगणादिइ बरम्भ व फर छइ तेइ लगइ जीव आवते भवातरि तीरण माण दुख प्राइ । उा धर्मनउ अणलहिवउ न हुइ । ज पुण० पूा ३ किम अरि द्वेष ३ फरतउ मिथ्यात्वनउ लव'शइ करइ तीणइ अरु माउ जि' नइ नि न लहइ । बोधिनीजइ जि दुप्राप बाइ । तीण परउ क' सनारि रुन्द ॥ १० ॥

[जि] आरभ पदविधजीवनिदासिनी ३ सति कीनतइ हतइ जीव अजानी तिकरदुकराइ जीव ३ क'दिम ३ दुअ २० प्राइ । जे वली जीवहइ मिथ्यात्वनउ लव'श ३ जि मिथ्यात्वनउ लेशि करी जीव जिनबोधि धीतराणन ३ न लहइ । पतलइ

आसतसिद्धि रहनिह हियह निरतर सदैव वसइ । अभागीआ अभय
दूरभव्य चीन ए फरइ बोच न प्रामइ ॥ १ ॥

[जि] सग्त धममाहे मूलिगउ सम्यक्त्व धम तिणि कारणि
सम्यक्त्व जाणाउइ । अरिहत देव ते किमु । गग द्वेष मोइ मइ मत्पर
५ अटकार प्रमुख बोच जेहे माहे न हुइ । अनरग वइरी तिणि जीता
हप्या ते अरहत कहीइ । अनइ सुगुरु सुमाधु गुरु जे नीराग ति स्पृह
कामान्न शान्त तान्त जिनिद्रिय निकाम तपि फरी दुर्बल । सम वृण
मणि लोपुडु वाचन । सम शत्रु मित्र । साचउ धर्माश्रमाउ पहणहार ।
चातुर्गतिन समार हूतउ अहर्निश सचम चारित्र अमिग्रह पालइ । ते
१० पुगुरु कहीइ । तथा चोक्त ।

अरुपर अक्यइ कपि न ईहइ । चउगइ भवसमारह धीहइ ।

सज्म नियमह भणि नवि चुरइ । ए साधभिय सुहगुरु बुचइ ॥ १ ॥

सुद्ध धम्म । जीवदयामूल धम । तथा चोक्त ।

दुख पापात मुख धमात सर्वदर्शनममनम् ।

१५ न कर्त्तव्यमत पाप कर्त्तव्यो धर्मसद्ग्रह ॥ २ ॥

ए त्रिहु मिल्पी सम्यक्त्व कहीइ । अनइ बली नउकारइ मोटाइ
देव्वालिया भणी पच नवकारो पचपरमेष्ठिनमस्कार चउद पूर्वनउ
सार कहीइ । ए च्यारइ अरहत सुमाधु गुरु जिनप्रणीत धर्मरूप
सम्यक्त्व अनइ नउकार । ऋयत्थाण कृतार्थ वृत्तहृत्य धमनाण
२० धन्य भाम्यवन पुस्पने हिय वमइ । निरतर सदैव ॥ १ ॥

[मे] अरिहत देव सुसाधु गुरु अनइ सूधउ धीतरागनउ
भापिउ धर्म पचपरमेष्ठि नयकार ए च्यारि बोरु धन्य भाम्यवन वृत्तार्थ
कीधा अर्थ ससार सगपीया जेहे तीरनइ हीइ सदाइ वसइ । पणि
बटु ससारी जीवाइ हीइ काई प्रसइ नहीं ॥ १ ॥

निर्धर्मि गढउ करी आरम वरिउ छइ । जइ ते आरम करइ तउ
दुख लहइ । निणि कारणि जीव मिथ्यात्व करइ तिणि कारणि जीव
सम्बन्ध न लहइ । निटा आरम तिहा सुख नहीं अनइ जिहा
मिथ्यात्व तिहा सम्बन्ध नहीं । बली धर्म कीजइ तउ अग्रहत देवई
५ तउ । अंगुठ धर्म न करिवउ । यत उक्त

शोनव्य सौगतो धर्म कर्त्तव्य पुनराहृत ।

वेदिको व्यवहर्तव्यो ध्यातव्य परम शिव ॥ १० ॥

[मे] आरम क्षेत्रसरसणादिकइतउ उपनउ जे पाप तेहतउ
जीव तीव्र दुख पामइ । पनि तिहा धर्मनउ अणलहिवउ न हुइ ।
१०पणि बली जे मिथ्यात्वनउ लवलेशमात्र करइ तेह स्त्री आवतइ भवि
जिनगोधि जिनधम्म न लहइ ॥ १० ॥

[सो] हिव जे गाटा तप नियम क्रिया करइ छइ पुण उत्सूत्र
प्ररूपइ छइ तेह आश्री कहइ छइ ।

[जि] सयलाई जीवहइ जिनगोधिनउ अप्राप्तिफारण कहइ
१५उइ ।

[मे] हिव जे गाढी क्रिया करइ अनइ उत्सूत्र प्ररूपइ तेह
आश्रई कहइ ।

जिणवरआणाभग' उम्मग्ग' उस्सुत्तलेसदेसणय ।
आणाभगे पाव ता जिणमयदुक्कर धम्म ॥ ११ ॥

२० [सो] उम्मार्ग' व्यवहार मामाचारी विरुद्ध उत्सूत्र
श्रीसिद्धान्तनी आज्ञा विरुद्ध जे लेशमात्र थोडु' उपदेग तेहतउ
जिणवर० वीतरागनी आज्ञानु भग हुइ । यत उक्त श्रीआयइयके—

१ भा गाथा सा नी बीवी प्रतमां खखी रही गयेकी छे २ जि अमग्ग
३ 'उम्मार्ग' सामाचारी विरुद्ध' ने स्थाने जिण' ४ थोडउ

[सो] हिव जे जीव घणु घम्म करी न सकइ तेहहुड तत्त
कहीद' छद ।

[जि] सम्यक्त्वहइ सुम्भाराध्यपणउ कहइ ।

[मे] हिव आत्मानइ सीप कहइ ।

जइ न कुणसि तवचरण न पढसि न गुणेसि देसि नो दाण । 5
ता इत्तिय न सकसि ज देवो ऽक्क' अरिहतो' ॥ २ ॥

[सो] रे जीव ! जिम जागइ घरसी छमासी मासश्रपण
आचाम्पादिन तप करता । केई हवडाइ करइ उइ । ते तउ करी न
सकइ तउ म करेमि । जिम एकि अनेक आग पूर्व प्रमुख सिद्धात
पठना गुणता हिवडाइ पढइ छइ । ते जउ पढी न सकअ' तउ 10
म पढमि । जिम आगइ चउद पूर्ण प्रमुख अम्भार आग' बिहु घडी
माहि पाधरा उपराठा गुणता हवडाइ अनेकि कोडि लाख आम्वा गणइ
छइ । तिम' जउ गुणी न सकअ तउ म गुणेसि । जिम आगइ
सांवत्सरिक' दान सात्वार कोडि सुवणादिनां दान देता हवडाइ
शक्तिमानिइ दिइ छइ तिम जउ दान देई न सकअ तउ म देमि 15
ता इत्तिय० पुण तउ एतलउ करी न सकइ 2' । ज देवो०
ज देव एक अरिहन वीतराग इति' वीचउ नहीं 3' ॥ २ ॥

[जि] अहो पुरुष ! जइ तवचरण तपश्चरण न करइ ।
नउ काई भणइ नही । आगिणउ भणिउ गुणइ नही । दानई न दिइ ।
एतला तपश्चरण भणिउ गुणिउ दान देवउ दु साध्य छइ । ता तउ 20

१ कही २ मे ष्ठु ३ जि अरहतो ४ सकइ ५ आंउ ६ तेम
७ सवच्छरिक ८ हवडा ९ सवअ १० वीतरागइ नि ११ वीची प्रतमा
आउठु वधारे छे—जउ एतलउ देवत्वइनउ मनि निशउ आगअ तउ ताहउउ
काज सरइ । ए सम्यक्त्वनउ मूउ धीप इतिउ भाव ।

उस्सुत्तमायरतो^१ उस्सुत्त चेव पत्तवेमाणो ।

एसो अ अहाउदो इच्छाछदु चि एगट्ठ ॥ १ ॥

(उपदेशमाला, गा २२१)

उम्मग्गदेमणाए चरण नासति जिणवरिदाण ।

वावत्तदमणा खल्ल न हु लब्भा तारिसा दुट्ठ ॥ २ ॥ ५

(आवश्यक, गा ११५२) इति वचनात् ।

‘पयमवि अमद्दहतो सुत्तत्थ मिच्छदिट्ठीओ’ इति सिद्धान्तवचनाच्च ।

आणाभगे० जु^२ आज्ञाभग कीधइ हूतइ महापाप । घणीइ क्रिया अनुष्ठानकष्टादिक करतउइ अनाराधिक^३ जि हुइ । ता जिण० तेह भणी श्रीजिनशासननउ धम्म आराधता गाढउ दुक्कर । गाढी क्रियाइ^{१०} करतां वीतरागनी आज्ञा पाम्वइ आराधियउ न हुइ काच न सरइ । बीजा पाधरा टाकुराइनी आज्ञा भागीइ महादोष वहीइ । ‘आज्ञाभङ्गो नरेन्द्राणामशस्त्रवधमुच्यते’ इति वचनात् । तउ त्रिभुवनस्वामी वीतरागनी आज्ञानइ भाजियइ दोषनउ सिउ फहीइ १ ॥ ११ ॥

[जि] अमार्ग कुमार्ग तेहना कहिवातउ उत्सूत्र सिद्धान्त^{१५} विरुद्ध वचन तेहनउ लत्रमात्र उपदेशतउ श्रीजिनाज्ञानउ भगालाप हुइ । आज्ञानइ भगि हूतइ पाव पाप हुइ । ता तउ पच्छइ पापनइ उदइ हूतइ जीवहूइ निनमत जिनभाषित धम दु कर दुआप हुइ ॥ ११ ॥

[मे] उन्मार्ग सेवता उत्सूत्र सिद्धान्त विरुद्ध तेहनउ लेशमात्र उपदेश देता जिनवर वीतरागनी आज्ञानउ भग हुइ । ते आज्ञाभग^{२०} लगी महापाप हुइ । तेह पाप लगी जिनधम्म गाढउ दुक्कर हुइ ॥ ११ ॥

१ आ गाथा ‘आवश्यक’मां जोवामो आवती नथी, पण ‘उपदेशमाला’मां छे २ ‘जु’ नथी ३ अनाराधक

इत्तिग एतलउ न सग्द जउ माहरउ एकु जि अगहत देव । बीजउ नही । इणि कागणि सम्यक्च पाण्ता मुटेलउ ॥ २ ॥

[मे] अहो जीव ! जउ तउ वरसा छमासा प्रमुग्ग तपु करी न सकद । साल्नाइ अनुसारि सुधउ चारित्र पाली १ सकद । सिद्धात प्रकरणप्रमुग्ग पाठ जउ पत्ती न सकद । जउ तउ आगम गुणी न सकइ । धान मुपात्र निपद देउ न सकइ । तउ तउ पत्तूअइ करी न सकइ जि देउ तउ एक अरिहतइ ति । बीना हरिहरादिक नही ॥ २ ॥

[सो] को कहिसिइ इहलोमना सुग्गनइ कानि बीजा देउ आराधीइ छउ । तेउ जाथी कहइ छइ ।

१० [जि] इमु करी चिनधर्मना करणहारइ गुण कहइ छइ ।

[मे] माइ ते न्हउ ।

रे जीव ! भवदुहाइ इक्क चिअ हरइ जिणमय धम्म ।
इयराण पणमतो सुहकजे मूढ ! मुसिओ सि ॥ ३ ॥

[मो] रे जीव ! जिन बीतरागनउ धम्म एउलउ जि एकाग्र
१५अनि आराधीतउ हुतउ भयमसारना दुग्ग केउइ । सर्व सुग्ग करइ निश्चउ । इयराण इहलोमना सुग्गनइ काजिइ इतर देउ रागद्वेषा चारान्त^१ क्षेत्रपाल^२ वाराही प्रमुग्गइ नमतउ अनेक उपायना^३ मानतउ रे मूढ ! मूढ ! मुमाअ छअ^४ । तेहे कर्म उपहरउ काई पराइ नही । मुहिया धर्म चूअ^५ छअ ॥ ३ ॥

२० [जि] रे जीव ! एकु ति चिनमत जिनभापित धम्म भव-
दुहाइ संसारना दुग्ग हरइ न्हउइ ! तिणि कारणि हे मूढ !

[सो] ग्री अट जि घात कहइ छइ ।

[जि] बली प्रजागन्तरि निधमनी प्राप्ति दुग्म कहइ छइ ।

जिणवरआणारहिअ वद्वारता' ति केवि जिणदन्व ।

बुद्धति भवसमुद्दे मूढा मोहेण अघाणी ॥ १० ॥

- १ [सो] जिणवर० वीतरागनी आगरहित देवद्रव्य वधारताइ ।
 हुता मूढ मूख केनगाइ मोहिइ धर्मनड अमि अजानी अजाण ससार
 ममुद्र माहि बूडइ । एहनउ इसिउ भाव । देवद्रव्य वधारिवानी बुद्धिइ
 घणइ लामिइ पाटकी माठी वागुरीप्रमुरा अघम' रहइ आपइ ।
 अथवा शालि दालि घन पन्वातादिक अथवा देवद्रव्य वत्तादिक जइ
 १० घणइ मूलिइ आपणइ' धरि वावरइ । अनेराइ श्रावणइ दिइ ।
 अथ' मन्नामा दर्शनी थिकु देवद्रव्य वधारी प्रासादातिके वेचइ ।
 अथवा रूडीइ घुरहूइ मइणा पापइ व्याधिइ देवद्रव्य आपइ ।
 इत्यादिकि जनेकि प्रकारि करी अविधिइ देवद्रव्य वधारताइ समार
 समुद्र माहि बूडइ । जे देवद्रव्य विधिइ सुखानकि स्थापइ रक्षा करइ
 १५ बुद्धि' लिइ तेहइ' मन्नाफल हुइ । यत उक्त दिन कृत्ये—

जे पुणो जिणदन्व तु बुद्धिं निति सुसावया ।

ताण सिद्धि परइइ किची सुख्य बल तहा ॥ १ ॥

(गा १३७)

जिणपत्रयणबुद्धिकर पभाउग नाणदसणगुणाण ।

- २० बद्धतो जिणदव्व तिथयरत्त त्थइ जीवो ॥ २ ॥

एव नाउण जिणदव्व बुद्धिं निति सुसावया ।

जरामरणरोगाण अत काहिति ते पुणो ॥ ३ ॥ (गा १४४ ४५)

१ वि मद्धारिता वि दर जिणदव्व २ अघमी ३ आपइ ४ अर्थ
 ५ बुद्धि ६ तहइइ

[जि] जे जीव विणवरेन्द्रनी अज्ञाना वृत्तवत्
 व्यापि देष्ट वधारताई हता मूढ मूर्ख भवन्तु ते मूर्ख अज्ञान
 अनाण हता वूडड । निणि कारणि ते गहइ निरुद्धे ॥ १० ॥

[मे] जिनरनी आज्ञारवि देवउ अज्ञाना वृत्तवत्
 मूर्ख अजाण समारसमुद्र गाहि वूद ॥ १० ॥

[सो] जे 'महारउ देव' अज्ञाना वृत्तवत्
 याद्या छइ ।

[जि.] अथ अयोग्यहइ ते मूर्ख मूर्ख भवन्तु
 उहेमी कहइ ।

[मे] सूधा धर्मना अमिलपात्र न भवन्तु ते
 देवउ । ते आगिली गाहइ कहइ ।

कुम्भगहगहियाण मूर्खो जो अज्ञाना वृत्तवत् ।

मो चम्मासीकुम्भवयणग्नि लिट्टे इत्ये ॥ ११ ॥

[सो] कुम्भगह० जे अज्ञाना वृत्तवत्
 छल तीण करी ग्रहिया गहिला अज्ञाना वृत्तवत्
 मूर्ख अनाण जे धर्मनउ उपदेश दिअ अज्ञाना वृत्तवत्
 सो चम्मासी० ते चापगाना छइ अज्ञाना वृत्तवत्
 मूर्खइ कपूर घातइ । रूटी वस्तु अज्ञाना वृत्तवत्
 कादवमाहि लापइ । एतलइ इत्ये ॥ ११ ॥

[जि] 'ए महारउ अज्ञाना वृत्तवत्
 दुगुरु उपरि कथाग्रह तिणि अज्ञाना वृत्तवत्

१ जि मुद्रा २ करी ३ अज्ञाना वृत्तवत्
 कथाग्रहीत उपदेश न देवउ' एतलइ ॥ ११ ॥

कुटुम्बत^१ भरणपोषण^२ करिउड तुल्यइ^३ जि छइ, सरितउइ^४
जि छइ । पुण पिच्छसु^५ आगलि फल्लनउ केवडउ बहिरउ^६
आतरउ^७ पडइ छइ । देखि । एगाण^८ एक जे मूढ पापी स्वाटकी
माछी कुशल घाची^९ प्रमुख धीजाइ अघर्मी पटनउ फारणि अनेक
जीवहिंसादिक पापकर्तव्य कुवाणिज्य कुत्यरसाय करी मरी नरकनउ^{१०}
दुःख प्रामइ छइ । अनेसिं^{११} चीजा जे धर्मवत तेहनइ^{१२} काई मूण्या
रहिता नथी, पुण रूढा जीवदया सत्य वचन सहित शुद्धा व्यवसाय
वाणिज्य करी लक्ष्मी उपार्जी उदरभरण^{१३} कुटुम्बा भरणपोषण करइ छइ ।
अनइ धर्मइ आराधइ छइ । ते आगलि शाश्वत सुख प्रामइ छइ ।
अनाण नइ जाणहूइ पवडउ आतरउ छइ ॥ २१ ॥ १०

[जि] पेटि भरिवइ सरीपइ जि हतइ कर्मविपाक जोउ, मूर्ख
मूर्ख, अमूढ पडिन ज्ञाततत्त्व तेह विहु तणउ । एगाण^{१४} एक मूर्खइ
मरकदु ख जोइ । अनेसिं^{१५} अनेरा अमूढहूइ शाश्वत सौख्य जोइ ॥ २१ ॥

[मे] पटनउ भरिवउ मूर्ख पडिन विहुनइ सरीपउ । पणि
फल्लनउ विपाक जोउ । किमउ । एक जे स्त्रीपुत्रादिक कहइ जइ^{१६}
वीसामउ लिइ तेहनइ नरकनां दुक्ख । अनेरा जे धीतरागनइ धर्म
वीसामउ लिइ तेहनइ शाश्वतां सुख ॥ २१ ॥

[सो] सामलिवाड^{१७} थिकु^{१८} धम रामइ । ए बात कहइ छइ ।
विहु गाहे करी ।

[जि] अथ निणि अनुकमि सम्यक्त्व हुइ । १०

१ कुटुम्बत २ भरण ३ तुल्यइ ४ सरितउइ ५ पिच्छसु ६ बहिरउ ७ आतरउ
८ एगाण ९ घाची १० नरकनउ ११ अनेसिं १२ तेहनइ १३ उदरभरणपोषण १४ एगाण १५ अनेसिं १६ जइ
१७ सामलिवाड १८ थिकु

भोजन सरल स्वभावि हृतउ शुद्ध धर्मोपदेश दिइ ते पुरुष चर्मासी
चर्मगण्ड कुकुम्भ वदनि मुखि कपूर क्षिपइ पालइ । जिम कुतिरानइ
मुहि कपूर णालिउ हृतउ निफउ थाइ तिम अयोग्यहइ धर्मोपदेश
दीधउ हुनउ निफल । एतावता अयोग्यहइ धर्मोपदेश न देवउ ॥ १३ ॥

५ [मे] जे कदाग्रहणीउ ग्रह तीणइ परी जे ग्रहा छल्या छइ
तेहनइ ते मूत्र अनाण धर्माउ उपदेश दिइ, सूधउ देवगुरुधर्मनउ
स्वरूप कहइ ते चर्मासी चाण्डानउ खाणहार कृतिरउ तेहनइ मुखि कपूर
घातइ । रूडी वस्तु उधानकि घातइ । एतइ कदाग्रहीनइ उपदेश न
देवउ ॥ १३ ॥

१० [सो] सुद्ध प्ररूपकनी रीसइ रूडी । उत्सूत्रभापकनी क्षमाइ
विरुई । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ गुराउ कोपई भलउ । केहीएकनी क्षमाई भली
नही । इसु जणावइ छइ ।

[मे] सूत्रा कहणहारनी रीसइ रूडी, पणि उत्सूत्रभापीनी
क्षमाइ पाइइ । ए वात कहइ ।

रोसो वि रमाकोसो सुत्त भासतयस्म धनस्स ।

उस्सुत्तेण रमा वि य दोसमहामोहआवासो ॥ १४ ॥

[सो] रोसो वि० जे धन्य उत्तम सूत्र श्रीमर्वज्ञभापित
सिद्धान्त तेह भासन बोन्ता आपणा स्वरपणइ वन्नि साचउ विचार
करता वेती वार रोस उपजइ । ते रोसइ क्षमानउ फोश भडार
जाणिवउ । ते रीस रूडी इसिउ भाव । उस्सुत्तेण० अनइ उत्सूत्र
सिद्धान्त विरुद्ध जे बोन्इ तेहनी क्षमाइ दोषइ जि कहीइ, विरुईइ जि

१ क्षरणवद २ वार ३ रोस

जिणमयकलापनयो सवेगकरो जिआण सजो वि ।
 सवेगो सम्मत्ते सम्मत्त सुद्धदेसणया ॥ २० ॥
 ता जिणलाणपरेण धम्मो सोअत्त सुगुरुपासम्मि ।
 अह उच्चिअ सङ्काओ तस्सुवणम्मस्स कट्ठाओ ॥ २१ ॥

- 5 [मो] जिणमय० निमत्त श्रीमर्त्युजा नासनी कथाउ
 प्रथम विन्नार सपलउई मय जीरहई संवेगकारी वैगमहेतु छइ ।
 अनेरे रान^१ ण्हउ गयी । तिरुं राग शृणासुद्धादि दोषमय जि छइ ।
 तेहे नाभते सवेगो कई १ उपनइ । सवेगो० ते सवेग धैराम्य
 पागर्म साचउ सम्यक्त्त इटतइ हुइ । मिथ्यात्वी रहइ जे वैराम्य ते
 10 कलत्रपुत्रादिका विगोग थकउ उपाउ^२ दुस्समोइगर्म नि^३ हुइ । ते
 सम्यक्त्त युग शुद्ध देशा साचा निरचननइ^४ साभलिउइ जि लाभइ ।
 ते निरचन सुगुरइ जि कहइ लाभइ । ता जिण आण० तेह
 मणी धर्म गुरु^५ कहइ सांभलिवउ^६ । अथना उच्चित्त योग्य जिम
 हुं तिम सङ्काओ थावक^७ कहलि^८ तस्सुवणम्मस्स निनउ
 15 सिद्धानाउ जे उपदेश तेहनउ कट्ठाएर सम्यग् जिममार्गप्ररूपक
 जे सङ्का थावक ते कन्हलि साभलियउ । मिथ्यात्वी अथना उन्मूत्र
 प्ररूपक तेह कन्हलि १ सांभलियउ ॥ २२-२३ ॥

[जि] निमत्तनउ कथाप्रथम सपलउई जीवहइ संवेग
 वैराम्यकारक हुइ । गुद्धी देसनाइ फरी सम्यक्त्त हुइ । ता० तउ
 20 जिनानापरि श्रीवीतरागनी आलाप्रतिपालकि पुरपिइ सुगुरुपासम्मि

१ सपलउ २ रहई ३ दरान ४ ऊपानुं ५ 'जि' गयी ६ प्रवचनइ
 ७ सुगुर ८ आ पक्षी बीबी प्रनमा आउके कथारे छ— इसी जे विननी आशा
 तेहनइ विषयइ तत्परिपालनइ आणि सुगुर मुसाधु पापि धर्म सांभलिवउ^६
 १ हुइ १ वेद थावक ११ कन्हलि सांभलियउ ने स्थान बीबी प्रनमा
 कन्हलि धर्म सांभलिवउ एतनुं ज छे

कहीइ, जेह भणी महामोइ महाअज्ञाणिवउ तेहनउ आवाम स्थानक छइ । चडरुद्र आचाय सरीपा मुद्ध प्ररूपरनी रीसइ रूडी । जमालि सरीपा उल्मूत्रप्ररूपरनी क्षमाइ विरुई इसिउ भाव । यत उक्त गच्छाचारप्रकीर्णके—

जीशाए वि लिहतो न भइओ जय सारणा नत्थि ।

दढेण वि ताडतो स भइओ सारणा जय ॥ १४ ॥ (गा १७)

[जि] सूत्र भापता उपदेश देता भणायता गुरुनी रोसो वि रोपई धन्नस्स धन्य पुरुषहूइ क्षमानउ भडार हुइ । जिम क्षमा भली तिम गुरुनी रीसइ परमाथवृत्तिइ हितकारिक हूती भली क्षमारूप जाणिवी । तिम चडरुद्राचार्यनी रीम ननदीक्षित महात्माहूइ^{१०} केवल ज्ञान भणी हुइ । उन्मूत्रि करी क्षमाई कीधी हूती दोष महाअज्ञान तेहनउ आवाम स्थानक हुइ ॥ १४ ॥

[मे] तेहनउ रोसु क्षमानउ फोसु जाणिवउ, जे सूत्र सिद्धान्त खरउ बोलइ, धन्य भाम्ययत हूतउ । अनइ उल्मूत्र सिद्धान्त विरुद्ध जे बोलइ तेरनी क्षमाइ दोषइ नि हेतु कहीइ, जेह भणी ते उल्मूत्र^{११} प्ररूपक महामोइ अजाणिवउ तेहनउ आवास स्थानक छइ । चडरुद्राचार्य सरीपा मुद्ध प्ररूपरनी रीसइ रूडइ । जमालि सरीपा उल्मूत्रप्ररूपरनी क्षमाइ विरुई ॥ १४ ॥

[सो] हिय' जिनधर्मनउ दुर्लभणउ कहइ छइ ।

[जि] 'भोक्षि सुख छइ कि नयी ?' ए वातनउ निश्चय^{१०} कहइ छइ ।

[मे] हिय जिनधर्मनउ दुर्लभणउ कहइ ।

सद्गुरु समीपि धर्म सोअञ्ज सामलियउ । अह् अथवा उचिअ
उचित योम्य जिम हुइ तिम सङ्गाओ श्रावकममीपि श्रीनिधर्म
सांभलिवउ । किमु छइ श्रावक । तस्सुवएसस्स कहंगाओ तेह
जिननउ सिद्धांत तणउ उपदेस तेहनउ कहणहार जिनमार्गप्ररूपक
॥ २२-२३ ॥

[मे] जिनमतनउ कथाप्रमथ सघन्डइ भन्त्य सघलाइ जीवनइ
सवेगकारी वैराम्यहेतु हुइ । अनइ सपेग वैराम्य साचइ सम्यक्क थकइ
हुइ । तेह भणी सम्यक्क सूधी देमनाइ जि रामइ । अनइ ते सुद्ध
देसना सुगुरइ जि करइ । तेह भणी निननी जाना तत्पर सावधान
जीवि धर्म सुगुरु पासि सांभलियउ । अथवा उचिन योम्य श्रावक^{१०}
कन्हलि सांभलिवउ । पणि ते श्रावक केइउ । द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव
सारी सूद्धा उपदेशनउ कथकु हुइ ॥ २२-२३ ॥

[सो] कहिवउ नइ सांभलियउ जिम मफल थाइ तिम कहइ
छइ ।

[जि] अथ सुगुरु समीपि अथवा शुद्ध श्रावक कन्हइ धर्म^{१५}
सांभलिइ हूतइ साभन्णहारहइ जिमउ गुण हुइ ।

म कहा सो उवणसो त नाण जेण जाणण जीवो ।
सम्मत्तमिच्छभाय गुरुअगुरु धम्मलोअठिई ॥ २४ ॥

[सो] ते कथा कही प्रमाण, ते उपदेश सांभलिवउ^१ प्रमाण,
ते जाणित प्रमाण, जीणइ करी नीव एतन्ना बोत्त जाणइ । सम्मत्त^{०२०}
आ सम्यक्त्व, आ मिश्र्यात्व, आ गुरु, आ कुगुरु, आ धर्मनी स्थिति,
आ लोकव्यवहारनी स्थिति कहीइ ए निहरउ जाणइ । जीणइ उपदेशइ

इक्षो वि न सदेहो ज जिणधम्मणे अत्थि सुत्तसुत्त ।
त पुण दुब्बिण्णेय अइउक्कटपुण्णरहियाण ॥ १७ ॥

[सो] इक्षो वि० एतद् थोड्ड उ ल्गासइ ए वाताउ सदेह
नथी, न तिनधर्मिद ररी मोत्तुव छइ । जीमदयामूल जिनधर्म
५ आगधता मोत्तुव लभइ ति । ए वातनउ वरासउ नथीइ ति । त
पुण० ते तिनधर्म दुब्बिण्णे० जाणता टोहिलउ । कहिहइ १
अइउक्क० जतिउक्कट गाग मोत्तु पुण्य भाग्यरहित क्काग्रही उन्मार्ग
वादी बुद्धिना धणी जीवहूइ । जति गादा भाग्यरत जीवहूइ भागानु
सारिणा बुद्धिना धणीहूइ जाणतां सोटिलउ ति छउ ॥ १५ ॥

१० [जि] जउ तिनधम्मि करी मोत्तुव सुग छइ । अथ नथी
इसु सदेह ण्णई नही । किंउ नि सदेह मोत्तुमुव छइ । नैयायिक-
वैशेषिकादिग्ने मते मोक्षि सुग नथी । आयतिका दुग्मन्निवृत्तिर्माक्ष ।
इस्या मोक्षलक्षणना कहिवातउ तुत्तानुपगिपणातउ सुगई दुग ।
तेह दुग्मस्वरूपनउ उच्छेत्त जन्यत अभाव मोक्ष । इस्या सामलवद
१५ सदेह । पुण सदेह न करिउ । किमु । जउ मोक्षमुव न हुइ तउ
कोई जाण वाळइ नही । जिम कग्णक । तिणि कारणि मोक्ष सह
वाळ । तउ मही मोक्षि सुग छइ । इति अनुमानि ररी मोक्षमुग
छइ । तथागमे प्रोक्त—

न जरा जन्म नो यत्र न मृत्युने च बाधनम् ।

२० न देहो न च म्महो नास्ति कमलत्रोऽपि च ॥

केवल केवल यत्र यत्र दर्शनमक्षयम् ।

अक्षय च सुख यत्र वीर्यं सम्यक्त्वमक्षयम् ॥

त पुण० ते पुण मोत्तुमुग अतिउक्कट पुण्यरहित पुरुषे दुब्बिण्णेय
दुत्तैय जागता टोहिलउ ॥ १५ ॥

सोभित्ति सम्पत्त्वमिध्यात्व, गुरु-अगुरु, धर्ममार्ग-लोभमार्गनउ विहरउ
म जाणइ, तीणइ सांभलिइ मिउ छइ ? काइ न हुइ ॥ २४ ॥

[जि] ते निरुद्धा प्रमाण, ते जिनोपदेश प्रमाण, ते ज्ञान
प्रमाण, जेण निणि वाइ जिणि उपदेशइ, निणि जाणिवइ करी जीव
१ सम्पत्ता जाइ मिध्याव जाणइ, गुरु अनइ अगुरु कुगुरु जाणइ, धर्म
जाणइ अनइ लोभस्थिति जाणइ ॥ २४ ॥

[मे] ते कथा कही प्रमाण, ते उपदेश साभलिउ प्रमाण, ते
ज्ञान प्रमाण जीवइ जाणिवइ करी सम्पत्त्व-मिध्यात्व, गुरु अनइ कुगुरु,
धर्ममार्ग-लोभमार्गनी स्थिति जाणइ ॥ २४ ॥

१० [सो] केतण^१ अभागीजाहूइ^२ जिनमत जाण्थाइ पृठिइ
मिध्याव न जाइ^३ । ए वात दृष्टाति करी कहइ छइ ।

[जि] केई एक अधमहइ सुगुरु कन्हइ उपदेश साभलिइ
हूतइ मिध्याव न जाइ । ए वात दृष्टाति करी कहइ छइ ।

जिणगुणरयणमहानिहि लद्वुण वि कि न जाइ मिच्छत्तं
१५ अह पत्ते वि निहाणे किवणाणं पुणो वि दारिहं ॥ २५ ॥

[सो] जिण० वीतरागना जे गुण, परमेश्वरनउ धर्म तेह
रूपीउ रत्नमारेड निधान लहीइनइ^४ निसिउ केतला अभागीआ जीव रहइ
मिध्यात्वनउ मननउ^५ परिणाम जातउ न देपौइ^६ ? ते काई न जाइ
ते अभागीजनउ कारण । तेह अपरि दृष्टांत कहइ छइ । अह पत्ते

२० अर्धवा अभागीइ कृपणि निधान लाधउ हुइ, पुण वेची वाधरी न संक
तेह भणी धली दारिद्री ति कहीइ । तिम सम्पत्त्व लहीइनइ ध

१ केतणइ २ हुइ ३ जाइइ ४ जि मे किविणाण ५ लहीन

[मे] एकइ थोटउड ए वातनउ सदेह नयी जे जिनधर्म
आराधता मोक्षना सुख छड जि । पणि ए वात जाणी न सकीइ जे
अति उत्कट पुण्यरहित जीव मोक्ष पामिस्यद ॥ १५ ॥

[सो] जिनधमना दुर्लभपणाजिनी वात कहइ छड ।

[जि] मोक्षसुख म्यापा जिनमतई नि जाणीता दुहिलउ इसु ५
प्रकट्ट छड ।

[मे] जिनधर्मना दुर्लभपणानी वात कहइ ।

सव्य^१ पि विद्याणिज्जड लब्धइ तह चउरिमाइ जणमज्जे ।
इक पि भाय दुलह जिणमयत्रिरयणसुविआण ॥१६॥

[सो] सव्य पि० वीनउ मह जाणता मोहिलउ । ससारना^{१०}
विनान कल गीत नृत्यादिक । तथा बली लोकमाहि चतुरपणउ
बोल्इ व्यवसाय वाणिज्यनइ त्रिपइ डाहण ते सह सोहिलउ^२ । इक
पि० हे भ्रात ! वाधव ! एउद नि जगमाहि दुर्लभ जिणमय०
श्रीजिनमत श्रीनीतरागना शासननी त्रिधि आचार तेह रूपीआ रलनु
सम्पक् जाणियउ । धर्मनी कुशलाई दुर्लभ । यत उक्त—

धनाण त्रिटिजोगो त्रिहिपम्पाराहगा सया धना ।

विटिबहुमाणी धना विहिपम्पजदसगा धना ॥

बली श्रीजिनरचन उसगापनादबहुल छड । तेह भणी लाभछेहनउ^३
जाणिवउ दोहिलउ । निम श्रीधमनी वृद्धि हुइ तिमड जि कीधउ
जोईड । यत उक्त श्रीउपदेगमालाया—

१ दुर्लभपणाजिनी २ कहइ छड ३ आ भाखी गाया सो नी बीजी
प्रतमायी पडी गइ छ ४ ये क ते उपरनो बालावबोध एना छे ५ ५
५ छेदानउ

माराधइ, मिथ्यात्व जि करइ ते तेह सरीपउ जाणिवउ । इसिउ भाव
॥ २५ ॥

[जि.] जिणगुण० सर्वगुण तेहरूपिउ रत्नउ महानिधान
से छहीइ कही मिथ्यात्व काइ न जाइ ? अथ जाणिवउ । निधानि
पामिइ हतइ कृपणाहइ पुणो वली दारिद्र्यइ हुइ । तथैवोक्त—

दान भोगो नादास्तिस्रो गतयो भवति रिचम्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

तिणि कारणि सम्यक्त्वरूपिउ महानिधान एही मिथ्यात्वी जीवरूपिया
कृपणाहइ मिथ्यात्वरूप दारिद्र्य न जाइ ॥ २५ ॥

[मे] जिन वीतरागना गुणरूप रत्नमरिउ महानिधान एहीनइ^{१०}
मिथ्यात्व काइ न जाइ ? जीव मिथ्यात्व नाइ न मूकइ ? अथना लाधइ
निधानि कृपणाहइ वली दालिद्र जि हुइ । काइ वेची वाररी न सकइ तेह
भणी दालिद्री कहीइ ॥ २५ ॥

[सो] जिनगासनना पर्वइ उत्तम । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनधर्मपरं प्ररूपइ ।

सो जयउ जेण विहिया सबच्छरचाउमासिअसुमब्वा ।
निद्वघसाण जायइ जेसिं पभावओ धम्ममई ॥ २६ ॥

[सो.] सो जयउ० ते जिन जयउतउ वर्तउ, जीणइ सबच्छरी
वरसी चाउम्मासी प्रमुख सुपरं रूडा परं, अमारिप्रवर्त्तन तपनियम ब्रह्मचर्य
पोसह प्रभावनादिक केरल पुण्यमय जि सुपरं रूडा पर्व कीथा ।^{१०}
निद्वघसाण० जेह पर्वना प्रभावतउ जे गाढा निद्वघस अधर्मी तेहइ

तम्हा सत्राणुया सञ्चनिमेहो ज पत्रयणे नथि ।

आय नय तु लिजा लाहाफसि व्व वाणियओ ॥ (गा ३९२)

[जि] सघळड् रिनान जाणीइ । लोकमाहे तेह तथा च वली चउरिमा चतुरिमा पडिताई लम्भड ल्हीइ । पुण हे भाय ! ५ भात अघर मंगोरने । एकइ जु जिनमत विधिळपीउ रत्ता तेहनउ लुभिनान सम्यग् प्रफारि साचउ जाणिरउ दुहेलउ । भाग्य हुइ तउ तिनधर्म जाणीइ ॥ १६ ॥

[मे] 'सघळइ जाणीइ पगीठीइ' तिम लोफमाहि चउरिमाइ बोल्तिरउइ सोहिलउ । पणि हे भाई ! एक ति दोहिलउ जे श्रीजिनमत १०वीतसागा शासननी विधि आचाररूप रत्ता तेहनउ साचउ जाणिरउ ॥ १६ ॥

[सो] स्या घमनउ जाणिवउ परह छउ । फहिणहारइ साप्रत कालि फदिचुइ दुहिलउ । ए वात फहि' छइ ।

[जि] जय साचउ सम्यक्त्व फहिरउ दृष्टाति फरी दुआप १५कहइ छइ ।

मिचउत्तबहुलयाण विसुद्धसम्मत्तकहणमवि' दुलह ।

जह वरनरवइचरिअ पावनरिंदस्स उदयम्मि ॥ १७ ॥

[सो] मिथ्यात्वनी बहुलता घणा जीउ प्राहिइ भला भला तेहइ मिथ्यात्वी जि तीगट फरी विसुद्ध^० खरा सम्यक्त्वा स्वरूपनउ २०कहिवउइ दुर्लभ । साचा सम्यक्त्वानी वात फही न सकइ । जह वर^० जिम वारू न्यायी धर्मवत आगिला रायनु चरित पावनरिंद^० पापी अन्यायी^१ अधर्मी रायनइ उदइ^२ वचनइ फही न सफीइ । बीहता

केतला रहइ धमनी मति ऊपजइ । तेहइ केतला तेहे पर्वे उपवास
दानादिक करता देखीइ ॥ २६ ॥

[जि] ते जयवतु हुइ, जिणि वीतरागि सावत्सरि चातुर्मासिक
सुपर्व मनोर परं विहिया कीधा । निहा जिनोक सावत्सरिकादिक
३ परना प्रमाय हतउ निद्वधसाण सर्ग पापशक्तई जीवहइ धम्ममई
धर्म करिवानी बुद्धि जायइ हुइ ॥ २६ ॥

[मे] ते श्रीनि जयवत वर्तउ, जीणइ ए शोभन भला पर्व
कीधा, सवत्सरी चउमासी प्रमुग्ग, निहा तपनियमप्रभायनादिक पुण्य
कीजइ । गाणइ निद्वधस अधर्मानइ पनि जेह परना प्रभावइतउ
१० धर्मनी मति ऊपजइ ॥ २६ ॥

[सो] मिथ्यात्वीना पर्व आश्री वात कहइ छइ ।

[जि] अय मिथ्यात्व परना करणहारनउ स्वरूप कहइ छइ ।
नाम पि तस्स असुह जेण निदिट्ठाइ मिच्छपब्वाइ ।
जेसि अणुसगाओ धम्मीण वि होइ पावमई ॥ २७ ॥

११ [सो] नाम पि तस्स० तेहनउ नामइ अशुम विरूउ,
नामइ तेह पापीनउ न लेवउ, लेवा नावइ, जीणइ ए होली बलेव
नवरात्र प्रमुग्ग मिथ्यात्वपर्व कीधा । जेहे पर्वे घूलिनउ उडाडिवउ,
गालिनउ देवउ, जीवहिंसादिकनउ करिवउ प्रवर्तइ । जेसि० जेह
परना अनुपग योगतउ धर्मरतइनइ मनि पापनी मति आवइ । तेहइ
२० गहिलाई करइ, मन विरूआ थाइ, वचन' यथातथा बोलइ ॥ २७ ॥

[जि] तेहनउ नामई असुभकारिउ अमाह, जिणइ मिच्छ
पब्वाइ मिथ्यात्वपर्व निदिट्ठाइ क्खा । किंसा भणी तेहनउ नाम

भणी ते राय अगमना भणी कुपित अनर्घ करइ । तिम स्वरा सम्यक्त्वनु^१ कहिवूइ^२ लोकनउइ^३ अगमतु थाइ । तेह भणी कहिवुइ दुर्घट । इसिउ भाव ॥ १७ ॥

[जि] मिथ्यात्पनी बहुलता प्रचुरता तिणि करी विगुद्ध सम्यक्त्वनउ कथनई कहिवउइ दोहिलउ । जिम पापी नरेन्द्रनइ^४ उदड वरनरवरचरिय प्रधान राजेन्द्र श्रीरामादिक तेहेनु न्यायरूप चरित्र कहिताई नोहिलउ हुइ ॥ १७ ॥

[मे] मिथ्यात्पनी बहुलता लगी भलाइ जीरनइ सूधा सम्यक्त्वनउ कहिरउइ दोहिलउ । माचा सम्यक्त्पनी वातइ कही न सकीइ । वेहनी परिइ । जिम न्याई राजानउ चरित्र पापी राजानइ^५ उदयि तेहनी ठरुलाई कही न सकीइ । काइ । ते अणगमती वातइ कोप धरइ । तिम मिथ्यात्पनी आगलि सूधा सम्यक्त्वनउ कहिवउ अरुचि उपनाइ ॥ १७ ॥

[सो] केती वारइ फो गुरइ उत्सूरभापी हुइ । तउ सिउ करिवु, ते कहइ छइ ।

१३

[जि] अथ विद्यावतई कूडानोउ मेल्हिवउ । इसु दृष्टाति करी स्थापइ छइ ।

बहुगुणविज्ञानिलओ उसुत्तभासी तहा विमुत्तव्वो ।
जह वरमणिजुत्तो वि हु विग्घकरो विसहरो लोण ॥१८॥

[सो] बहु^० घणा गुण अनई विधानउ निर्य्य घर स्थानक^६ गुरु छइ । गाढउ विद्यावत गाढउ गुणवतु^७ छइ । पुण उत्सूरभापी

१ ना सम्यक्त्वने २ कहिवउइ दुल्भ ३ साचा सम्यक्त्व नीवादिबुइ ४ लोकनइ
५ गुणवत

अमुष' जेसि अणुसगाओ जेहा मिध्यात्वना पवना सग लगी
घम्मीण वि धर्मतईहइ पाप करिवानी बुद्धि हुद ॥ २७ ॥

[मे] तेहनउ नामउ अणुभ पाइउ, जीगड मिध्यात्वीना पर्व
होली घलेय नवरात्रीप्रमुख उपदेश्या । निहा घृलि ऊडाडीइ, हिंमा
कीनइ । जे पर्वना अनुपग योगइतउ धर्मतइ मणि पापमति ५
ऊयनइ ॥ २७ ॥

[सो] समर्गिइ करी केतलानइ विहरउ पडइ, केतलानइ न
पडइ । ए बात कहइ छइ ।

[जि] अर्थ परममर्ग कही उत्कृष्ट धर्मवनहइ अनइ गाढा
पापीहइ मुसमग कुसंसगे काई न करइ । ए वाचा प्रकटइ । २०

मज्झठिई पुण एसा अणुसगेण जयति गुणदोसा ।
उक्किट्टपुण्णपात्रा अणुसगेण न धिप्पति ॥ २८ ॥

[सो] मज्झ० मध्यम पुरुषनी स्थिति ज तेह रहइ अणु-
सगेण सगतिनइ विशेषिइ गुणइ हुइ, दोषइ हुइ । गुणवतनी सगतिइ
गुणवतइ^१ थाइ । पापनी संगतिइ नोपवत थाइ । ए मध्यम जीवना विशेष । १५
उक्किट्ट० उत्कृष्ट जे पुण्यना धणी गाढा उत्तम, अनइ उत्कृष्ट पापना
धणी गाढा मिथ्यात्वी ते बे सगति^२ न लीजइ । संगतिनउ निहरउ न
पडइ । धर्मी^३ ते धर्मीइ^४ नि । पापी ते पापीइ नि । काच नइ रत्न
बरिसना सइ एकठा रहइ । साप अनइ सापनउ मणि घणउ काल एकठा
रहइ । पुण जे निसउ ते तिसिइ नि । सगतिनउ विहरउ न पडइ । २०
इसिउ भाव ॥ २८ ॥

श्रीसप्तत्रयं वान १ मान उगापद । तदा विमुक्तज्वो० ते गुरुइ
 तिम मूक्तिउ^१ छाडिउउ, निन विपधर मान वरमणि० माथठ वान
 विपापहार मणि १री मन्ति हुइ तेऊ विघ्न मरणहरणहार भणी दूरि
 मेल्हीइ निम ते गुरुइ उरुमभापी जनन संसारना मरण दहहार भणी
 ५ दूरि लखउ^२ पन्हउ ठाडिउउ ॥ १८ ॥

[जि] बहु घणा गुण निहा छठ इसी विद्या तेहनउ नित्य
 गृह एउउउ उरुमभापी हूतउ तदा वि तथापिहि मूक्तिउ । निम
 लोकमाहि प्रधान मणिसजुत्तई हनउ हु निधइ विघ्नकर मृत्युहारक
 विपधर मेल्हीइ ॥ १८ ॥

१० [मे] बहु घणा गुण विद्या तेहनउ नित्य स्थावर गुरु छट,
 पणि उरुम बचनाउ भाषणहार बोल्गहार तथापि मूक्तिउ । कहिनी
 परड । जिम वर प्रधान मणि महितइ साप विघ्नहार मरणदायक
 लोकमाहि हुइ तिम उरुमभापी गुरु पणि मोहनइ विघ्नहारक हुइ ॥१८॥

[सो] लोक प्राहइ सायण अनद लक्ष्मीदत्तिइ लोमिइ
 १३ लीजइ । धर्मनउ प्राहइ फाई न गणइ । ए मात पहइ छइ ।

[जि] अय मोरुनु प्रभाव कहइ छइ ।

सयणाण या मोहे लोआ विष्पनि अत्थलोहेण ।

नो विष्पति सुधम्मे रम्मे हा मोरुमाहप्प ॥ १९ ॥

[सो] सयणाण० लोआ० ए^१ लोक सयानइ मोहिइ
 २० अथवा लक्ष्मीनइ लोमिइ लीजइ । तेहा देउगुरु मानइ तेह सिउ
 तात्रा^३ सवध करइ । धम फाई न जोअइ । नो विष्पति० सुधम
 खरउ धर्म जे न्हउउ ते न लिइ, तिहा न राचइ । हा कहीइ अहो ।

[लि] पुण वली ए मध्यम स्थिति मध्यम पुरपनी अवस्थिति जाणिनी । १ किमी जु^२ अणुसगेण ह्वति गुणदोसा । ससर्गना दोनगुणा भगन्ति । सुससर्ग लगी गुण हुइ । कुससर्गतउ दूषण हुइ । मनुन विविग । उत्तम मध्यम अधन्यरूप । उक्किट्टपुण्णपावा
5 उत्कृष्ट पुण्यवन उत्कृष्ट पापना सुससर्गि कुससर्गिइ न विप्पति न लीन^३ ॥ २८ ॥

[मे] या मध्यम स्थिति । अनुपग कहता ससर्ग तेह लगी गुा नइ दोम ऊपनइ । अनइ उत्कृष्ट पुण्य नइ पापना धणी कुणहइनइ संसर्गि छीपइ नहीं । उत्कृष्ट पापीनइ धर्मवतनउ संसर्ग न लागइ ।
10 उत्कृष्ट धर्मवतनइ पापीनउ संसर्ग न लागइ जि ॥ २८ ॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ ।

[जि] किम जाणीइ ए वात ।

अइसयपाविद्यपावा धम्मिअपव्वेसु तो वि पावरया ।
न चलति सुद्धधम्मा धन्ना किवि पावपव्वेसु ॥ २९ ॥

15 [सो] अइसय० अतिशयप्रापितपापा गाढा पापी जीन धम्मि० धम्मय पर्व आनइ तउ पापजिनइ^१ विपइ^२ रत हुइ । पाप जि करइ । धम उपरि मन नावइ । न चलति० केतलाइ धन्य पापपविइ आविइ^३ आपणा सुद्धधम्म० बोप्य धर्मतउ चलइ नहीं, सुभइ नहीं । तेहना मन लगारइ धर्मतउ डोलइ नहीं । तेह भणी उत्कृष्ट
20 पुण्यवत अनइ उत्कृष्ट पापवतहइ संसर्गिइ काइ विशेष न हुइ ॥ २९ ॥

[जि] अतिशयप्रापितपाप । उत्कृष्ट पापवन पुष्ट धम्मिय-
पव्वेसु तो वि धार्मिक पर्वे सावत्सरादिकेइ पावरया पापवत पापइ

१ पापजिनइ २ विपइ^२ नदी ३ 'आविइ' नदी

मोहमाहृष्य० ससारनउ मोह अजाणिनउ तेहनउ ए माहात्म्य
महिमा छइ । कुणइ फाई^१ थाइ^२ ॥ १० ॥

[जि] स्वजन सगा तेहनइ मोहि घा वली अथवा द्रव्यनइ
छोमि लोक लीनइ । पण रम्य प्रधान सुधर्म जिनधम तिहा नो
धिप्पति न लीजइ । हा खेदे मोहनउ माहात्म्य प्रमाण ॥ १० ॥ ५

[मे] स्वजनादिकनइ अर्थना लोभ लगी लोक ससारनइ
व्यापारि घातइ । हाट पाटणि वणिन्त्र्यापार सीपवइ । पणि सूधा
स्वामीना भाप्या धर्मनइ मार्गि न घातइ । जे धर्म रम्य प्रधान छइ ।
हा इसइ खेदे । ते मोहनउ माहात्म्य जाणिवउ ॥ ११ ॥

[सो] अधर्मी अनइ धर्मी जीव रहइ बेई ज वीसामानाः०
स्थानक छइ । ए यात कहइ छइ ।

[जि] अथ गृहस्थहइ वीसामानउ स्थानक कहइ ।
गिहवावारपरिस्समखिन्नाण नराण धीसमणठाण ।
एगाण होइ रमणी अन्नेसिं जिणिंदवरवाणी^३ ॥ २० ॥

[सो] गिहवावार० दिन सघन्उ जे गृहस्थनउ व्यापारः५
व्यवसाय वाणिज्य काजकाम तेहनइ श्रमिइ करी जे पुरुष खिल उम्मा
छइ, तेहहइ^४ धीसमण० वीसामाना स्थानक बेइ नि छइ । एगाण०
एक जे अधर्मी संसारामिलारी^५ जीव तेहहइ रमणी स्त्री वीसामानउ
स्थानक । तेह आगलि आपणउ धानकाम मत्र गूझ कही समाधि
प्राई । उक्त च श्रीउपदेशमालाया—‘गुरु गुरुतरो अहगुरुः०
पियमाइयअवच्चपियजणसिणेहो०’ । अन्नेसिं धीजा विवेकीआ

१ फाई न थाइ २ त्रि जिणिंदवरधम्मो मे जिणदवरधम्मो ३ तेहइ
४ संसारामिलायी.

जु करइ । घन्ना किचि केई एक धन्य कृतपुण्य पुरुष पाव-
पञ्चेसु पापोत्सविइ आविइ हूतइ सुद्ध धर्म हूतउ जीवन्त्यामूल धर्म
हूतउ न चलति न डोलइ । तिणि कारणि उत्तम अनइ जघन्य संसर्गि
न लीनइ ॥ २९ ॥

[मे] उत्कृष्ट पापना घणी धार्मिक पर्युपणाप्रमुख पर्व आव्ये हूते ५
पापनइ विषद रत हुइ । केई एक धन्य कृताथ पापपर्व आव्ये हूते
धर्म हूता न चालइ न डोलइ ॥ २९ ॥

[सो] हव लक्ष्मी उपरि वात कहइ ।

[जि] लक्ष्मीना बे भेद देवालइ ।

लक्ष्मी वि हवइ दुविहा एगा पुरिसाण एवइ गुणरिद्धी ।^{१०}
एगा य उल्लसती अपुण्णापुण्णाणुभावाओ ॥ ३० ॥

[सो] लक्ष्मी वि० लक्ष्मीइ ससारमाहि विहु प्रसारि हुइ ।
एगा० एक लक्ष्मी आवती हुती पुरुषहइ गुणरूपिणी ऋद्धि क्षेपइ
नीगमइ । लक्ष्मी हुइ, पृठिइ^१ हियानउ धर्म जाइ । अनइ विनय विवेक
गामीर्य^२ दाक्षिण्यादिक पुण^३ जाइ । गवाधित धिउ हींइइ । एगा य०^४
अनइ एक माम्यवतनइ लक्ष्मी हुइ, पृठिइ विनय विवेक दाक्षिण्यादिक
गुण उल्लमइ । धर्म उपरि मन आवइ । भारेखम^५ गमीरपणउ आवइ ।
विहु रिद्धिनउ कारण कहइ छइ । अपुण्ण० जे अभागीआनइ लक्ष्मी
हुइ छइ ते पाठिलइ भवि काइ पापनउ^६ वधिउ जीवन्त्यारहित पचामि
माघन्तानादिक अनान कष्टरूप पुण्य^७ तेहनइ प्रमाविइ हुइ । तेह लगी^{१०}
पाप करी आपउ मरी दुर्गतिउ जाइ । ससारि रुलइ । अनइ जे धर्म

१ कहइ छर २ खिबइ ३ रइइ ४ पृठि ५ गामीर्यादि ६ गुण
७ भारेखमी ८ पापानुबंधिउ ९ पुण्यनइ

धमकताइ पिनेन शीततरागी घर प्रधा घागी श्रीसिद्धाते धममय
वचन तेह नि विगानउ स्थानक हुइ । सिद्धातना अध विचारता
गोना तेहनउ मन महासमाधि रहइ । इसिउ भाव ।

[जि] गृहव्यापार घरनउ व्यापार तेहनउ परिश्रम करिवउ
३ निजि नरी खिन् थाका तेह नर मनुप्यहूइ वीसामानु स्थानक हुइ । एक
संगरी आवहूइ रमणी सी विश्रामस्थानक हुइ । अनेरा कोई भय
शवाहूइ श्रीमयत्रोक्त बरधर्म वीसामास्थानक हुइ ॥ २० ॥

[सो] गृहनउ व्यापार व्यवसायादिक तेहनइ थमि जि नर
ज्मना छइ, तौइ रहइ वीसामाना स्थानक विह जि । एकनइ रमणी
१०नी वीसामानउ स्थानक । काइ ते आगलि आपणा काजकाम घात
रही समाधि पामइ । ए ससारी जीवनी स्थिति । अनइ अनेरा विवकी
जीवनइ सामायक पटिकमणा जिनपूना प्रमुख धमकार्य तेहइ जि
वीसामाना स्थानक हुइ ॥ २० ॥

[सो] धर्मवतनइ अनइ अधमवतनइ ससारना काज करताइ
१३वडउ विहरउ पडइ छइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अजाण आइ जाण ते विहुनइ पेट भरवानउ फल
फइइ ।

तुल्ले वि उअर भरणे मूढ-अमूढाण पिच्छसु विचाग ।

पणाण नरय-कुक्क अनेसि सासय सुक्ख ॥ २१ ॥

१० [सो] जे जगमाहि मूढ मूर्ख अविधेक अधर्म अनइ जे
अमूढ धर्मवत विधेकिया ते विहु रहइ उदरनउ मरिवउ, आपणा

१ प्रधान जे २ श्रीसिद्धातोकां ३ विचार ४ कहै ५ बीजी प्रतमां नशी
६ रहइ

यननद घरि लक्ष्मी हुड^१ तेह लगइ अनेक^२ तीर्थयात्रा प्रासाद सध
भक्ति दासदिक अनेक पुण्य करी मरी पग्लोकि सुगतिइ जाइ ।
आपउ संमार तरइ ॥ ३० ॥

[जि] लक्ष्मी द्विविध बचइ हुइ । एगा एक लक्ष्मी पुरुपनी
५ गुणरिद्धि दशनाक्षिप्यादिक गुणरुद्धी क्षिपावइ नीगमइ । एगा एक
लक्ष्मी गुणश्रेणि उल्लमावइ । किमातउ^३ अपुण्य अनइ पुण्य तेह बिहु
नउ अनुभाव प्रमान तेहतउ । एतलइ पापानुबधिनी लक्ष्मी पुरुपनी
गुणश्रेणि त्रिणासड । बीजी पुण्यानुबधिनी लक्ष्मी गुणश्रेणि वधारइ ॥ ३० ॥

[मे] लक्ष्मी पुणि त्रिहु प्रकारि हुइ । एक लक्ष्मी आरती
२० हूती पुरुपनइ औदायादिन गुण आइ रुद्धि त्रिहुनइ क्षपावइ नीगमइ ।
एक लक्ष्मी आरती हूती विनयत्रिनेनादिक गुणनइ उल्लमावइ । ते पाप
नइ पुण्यनउ अनुभवु जाणिउउ ॥ ३० ॥

[सो] हेर कुगुर कुश्रावमनू^४ स्वरूप^५ कहइ छइ ।

[जि] अज्ञान गुरुश्रावमनउ स्वरूप कहइ छइ ।

१५ गुरुणो भट्टा जाया सइहे युणिऊण लिंनि दाणाइ ।
दुत्ति^६ वि अमुणियसारा दूममसमयम्मि बुद्धति ॥ ३१ ॥

[सो] गुरुणो० ईणइ दुपमानलिं^७ संप्रति गुरु भाट
ध्या । निम भाट उद छप्पया^८ करी लोक रीशवी दान लिइ निम
गुरइ वदा पूरन गोत्र वणवी श्रावक रजवी आहारयखादिक्कना दान
२० लिइ । दुत्ति वि वे गुरु जनइ श्रावक अमुणिय० 'दुल्लगा' हु

१ हुइ ते पादिलइ भग्नि जीवदया सहित जिनधम आराधिउ हुइ तेह
पुण्यानुबधिया पुण्यनइ प्रभाविइ हुइ २ अनेकि ३ तु ४ स्वरूप ५ जि
दांनि ६ दुसमाकानि ७ छपाया ८ दुल्लगा एहवठं सुधीनो अंश
सा नी पहेली प्रतमायी पदी गयग होइ बीजी प्रतमायी गीधो छे

मुहानाई मुहाजीवी नि दुछटा । मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छति
मुगइ । एहवउ जिनचननउ रहस्य अजाणता बूडइ । संमारसमुद्र
माहि घणउ रुइ ॥ ३१ ॥

[जि] गुरु भाट कीत्तिपाठक जाया ह्या । सङ्ग
श्रावक स्तनीनइ दानादिक लिइ । दोन्नि वि० ते वेई लेणहार ५
देणहार अमुणियसारा अनातनिनवचनरहस्य हता वूसमयम्मि
दु पमाकालि बूडइ ॥ ३१ ॥

[मे] जे गुरु श्रावकनइ वपाणी दानादिक लिइ ते गुरु भाट
सरीपा जाणिवा । ते पिन्इ वीनरागना वचनरहस्य अजाणता हता
दुक्खमाकालमाहि बूडइ ॥ ३१ ॥

१०

[सो] हिवडा संसारना जाण, धर्मना जाण, सामल्ल्याहार
नइ फहिणहार थोडा ए वात कही छइ ।

[जि] अथ दुम्बमाफलस्वरूप कहइ ।

मिच्छपवाहे रत्तो लोओ परमत्थजाणओ थोवो ।

गुरुणो गारवरसिया सुद्ध धम्म निगूहति ॥ ३२ ॥ १५

[सो] मिच्छपवाहे० घणउ लोफ जे मिथ्यात्वप्रवाह
बूडउ गुणना विचार पागइ आपणा कुल्लमागत देव गुरु धर्मनउ प्रगहि
रातउ छइ । परमत्थ० परमार्थ गुण जोई देव गुरुधर्मनउ बोलउ
तेनउ जाण थोडउ । अनइ जे गुरु छइ तेहइ गारव० मान,
महच्च, प्रतिष्ठा, जिहाना रस, सयरना सुख एहे गारवने रसे वाहिया २०

१ संसारना जाण नही २ कहणहार जाण ३ कहइ ४ गारवरहिय
५ जि मे मग्गे ६ लेवउ ७ महुत्त

[जि.] जिम निम धर्म नूटइ । वली निम निम दुट्टाणं दुट्टाशय
हूइ इह दुपमाकालि उदओ अति प्रौढिमा हुइ तिम तिम सम्यग्दृष्टि
जीवहूइ सम्यक्त्व उल्लसइ वाघइ ॥ ४२ ॥

[मे] ईणि दुस्वमानालि निम जिम धर्म नूटइ ओठउ थाइ
तिम तिम पापी जीव दुष्टनइ उदय महत्त्व हुइ । अनइ सम्यग्दृष्टि
जीवनइ सम्यक्त्व गाणउ उल्लसइ दृढ थाइ ॥ ४२ ॥

[सो] हवत्तनइ कालि धर्मना धर्मानइ जे उदय नही । ते
कारण कहइ छइ ।

[जि] सम्यग्दृष्टि जीवहूइ सम्यक्त्व वाधतइ हूइ अति
उदय न दीमइ ।

[मे] द्विवद्वानइ कालि धर्मवनइ उदयु नही ते कहइ ।

जयजतुजणणितुल्ले अइउदओ ज न जिणमए होइ ।
त किट्टकालसभयजिजाण अइपायमाहप्प ॥ ४३ ॥

[सो] जयजतु० जगना जीव रहइ जननीं माता समान
छइ ए निमत्त सर्प जीवहूइ मुखद्रायक हितकारक भणी । एहवा
निमत्तमाहि ज जीव रहइ अतिउत्तम नही, ऋद्धि मान महत्त्व ठाकुराई
नही । त किट्ट० ते क्लिष्टकाल निरुत्त दुस्वमाकाल हुइ अनमर्षिणी
भम्मइ ग्रहनइ उदय करी सहित एवहि फालि ऊपना जे मारेकम्पी
जीव तेहना पाठिल्या मनना अतिपापनउ माहात्म महिमा जाणवउ ।
जे धर्म लहइ छइ ते मत्त जीव आगलि केनरइ कालि मोक्ष जाणहार
इसिउ जाणिवउ ॥ ४३ ॥

सूधउ धर्म सरउ माग निगूहति गोमइ । साचउ प्रकासइ
नहीं ॥ ३० ॥

[जि] मिथ्यात्वप्रवाहि रक्त लोऊ छइ । परमाथतत्त्वनउ जाण
लोऊ थोयो जोडउ छइ । अनइ गुरु गारवरसिक सुखलुपट् हूता
५ सुद्ध यग्ग सुद्धउ मार्ग महाकष्टप साध्य मार्ग निगूहति छपावइ ।
ते ट् एमाकालनउ प्रमाण ॥ ३२ ॥

[से] लोऊ प्रगाहइ मिथ्यात्वनइ प्रवाहि रातउ छइ । पणि
पमाथनउ जाण जोडउ । काइ देव गुरुना विचार जोई आस्ता आणइ
ते थोण । तेही गुरु ऋद्धिगारव, रसगारव, सातागारव रसे पूरिया हूता
१० सूधउ मार्ग धर्मनउ प्रकासइ नही ॥ ३२ ॥

[सो] देव-गुरुना स्वरूप जाणतां टोहल्या । ए वात कह
छइ ।

[जि] अथ देव-गुरुनउ स्वरूप दुर्ज्ञेय इत्तु कहइ छइ ।
सब्बो वि अरिह देवो सुगुरु गुरु भणइ नाममित्तेण ।
१० तेसि सरूव सुहय पुण्णविहूणा न पावति ॥ ३३ ॥

[सो] सब्बो वि ए सघणइ श्रावक लोक नाममात्रि
इम कहइ—' अम्हारइ अरिहत देव सुसाधु गुरु । अरिहतो मह देवो
जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो इति वचनात् ।' तेसि सरूव पुण ते
देवगुरुनउ स्वरूप सुहय शुभहेतु साचउ । पुण भाग्यरहित जीव न
१० प्रामइ । न ओखइ ॥ ३३ ॥

१ कहइ २ सुपुत्रविहूणा ३ मे पाविति ४ ए नथी ५ नाममात्र
६ सुख ७ न उलयइ

[जि] जय० जगज्जतु त्रिमुनाना जीव तेहहइ, जननी मात
 रोह समान सिगत । तेहगाहे अतिउदय ज न होइ जउ न हुइ
 छिष्टफालसंभर उपमाकालोत्पन जीमहइ पापनउ माहात्म्य जाणि
 वउ ॥ ४३ ॥

5 [मे] जगत्रयना जतुनइ जननी माता समान सुखदाय
 एवहा जे जिनमत जिनशासनाइ जे उदयु नहीं हुतउ ते छिष्टकालि
 उपना जे जीव तीया जीवना अतिपापनउ माहात्म्य ॥ ४३ ॥

[सो] केमलु^१ जीव बाह्यवृत्ति डाहउ^२ देखीद । पु
 विपरीतमुद्धि हुइ । तेह पापजिनु उदय । इसिउ जाणिउत ।

20 [जि] अथ छिष्टफालसंभवजीवमाहात्म्य प्रकामइ ।

धम्मम्मि जस्म माया मिच्छत्तगहो उस्सुत्ति नो सक्का
 कुगुरु वि ष्शरइ सुगुर विउसो वि स पावपुण्णत्ति ॥४४॥

[सो] जेह रहइ धर्म करता माया आनइ । मनि अनेक^३ हु
 देखाडइ अनेरउ । मिच्छत्तगहो अनइ मिथ्यात्व किमहइ मू
 षण्डी । उस्सुत्ति नो सक्का । उत्सूव बोल्ता करता मनि श
 पापनउ भय नहीं । कुगुरु० उगुरु भ्रष्टाचार तेहइ सुगुरु म
 मानइ यापइ । विउसो वि० ते लोकमाहि विदुष द्राहु म
 प्रसिद्ध हुइ तउ ते पापपूर्ण पापिइ मरिउ जाणिवउ । अथवा जे कु
 भर्षी मानइ ते पाप पुण्य धरी मानइ । आगलि तेह रहइ निश्चइ म
 ३०नयी । 'हवडा' पाठिल्या भनइ अज्ञान कएनइ प्रमाणि डाह
 चतुराह आवी छइ ॥ ४४ ॥

[जि] सघलउइ लोक 'अरिहत देव, सुसाधु गुरु' इसु नाममात्रि करी भणइ । तेह देवगुरुनउ स्वरूप सुहय सुखज्ञेय जाणता सुहेतलउ, पुण पुण्यरहित हूता पुण्य विणु न पावति न रहइ लोक । तेही दुपमाकालनउ प्रमाण ॥ ३३ ॥

[मे] सघलाइ लोक इम कहइ, 'अम्हारइ अरिहत देव, सुसाधु गुरु' इम नाममात्र कहइ । पणि ते देवगुरुनउ स्वरूप सुखदायक पुण्यरहित जीव न पामइ ॥ ३३ ॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ ।

[जि] अथ मूर्ध जिनाज्ञाप्रतिपालक उपरि द्वेष बहइ । इसु कहइ छइ ।

10

सुद्धा जिणआणरया केसिं पावाण हुंनिं सिरसूलं ।
जेसिं ते सिरसूलं तेसिं मूढाण ते गुरुणो ॥ ३४ ॥

[मो] सुद्धा जि० जे महात्मा सूया खरा जिन वीतरागनी आज्ञा पालइ छइ, खरउ चारित्र पालइ छइ । ते महात्मा केतलाइ पापी अष्टाचार रहइ सिरिसूल मन्तकमूल थाइ । जेसिं ते० 15 जे अष्टाचार रहइ सुविहित सिरिसूल थाइ । तेसिं० केतलाइ मूढ मूर्खलोगनइ तेह जि गुरु भणी मानीइ ॥ ३४ ॥

[जि] सुद्धा प्राजल सरलचित्त निर्मल जिणआणरया जिनाज्ञारत पुरुष केही पापियाहइ सिरिसूल मन्तकमूल समान होति हुइ । एतावता जिनाज्ञापालक पुरुष देखी द्वेष लगी माथइ त्रिसूल० चहावइ पापी जीव । जेसिं ते सिरिसूल० जेहा पापीयानइ ते मन्तकमूल हुइ तेहा मन्तकमूलधारक मूढ मूर्ख तणा ते जिनाज्ञारत

[जि] धर्मार्थ ऊपरि जेहहूइ माया कपट हुइ अनइ जेहहूइ मिथ्यात्मनउ ग्रह कदाग्रह हुइ, जे वली कुगुरु ग्रह गुरु ईसु गुरु करइ ते पुरुष पाप पुण्य जिम पुण्य करी मानइ ॥ ४४ ॥

[मे] धर्मार्थनइ विषइ जेहनइ माया अनइ मिथ्यात्मनउ जेहनइ कदाग्रह, उत्सूत्र बोलतउ जे शका नोणइ अनइ कुगुरु रहइ 5 सुगुरु करी मानइ ते विदुष टाहउ हतउ पाप पुण्य करी मानइ ॥ ४४ ॥

[सो] धर्मकर्त्तव्य वीतरागनी आज्ञाड जि कीनउ रूढउ ।
ए बात कहइ ।

[जि] अथ जिनेन्द्रनी आनाइ कीधउ धर्मकाय सफल हुइ ।
इसु कहइ ।

10

किंच पि धम्मकिंच पूआपमुह जिणिदआणाए ।

भूअमणुग्गहरहिअ आणाभगाओ दुहदाय' ॥ ४५ ॥

[सो] किंच पि० करिवा योग्य जे धर्मना कर्त्तव्य देवपूजा प्रामाद दानादिक तेहइ वीतरागनी आनाइ नि करता सफल थाइ । अन्यायनी लक्ष्मीइ करी कहइ रहइ गाउउ ऊचाट संताप करी जिहा 25 पचेन्द्रिय जीवना बध हुइ एहा मोग आरंभ करी स्पधा कीचिनइ अमिलाग्रइ जे धर्मकर्त्तव्य कीजइ ते जानारहित कहीइ । एह जि बात कहइ छड । भूअमणुग्गह० भूत बीम तेहनउ अनुग्रह अनुकपा जे धर्मइ करता नही । निर्दधमपणउइ जि हुइ । ते वीतरागनी आज्ञाना भग भणी दुस्वदाई जि थाइ । जिम मिथ्यात्वीना एवडा 30 धर्मकर्त्तव्य जीवत्यारहित दुस्वदायीआइ नि थाइ ॥ ४५ ॥

गुरु हुइ । ते मूढ इमु मानइ जु निगाशारक गुरु हुइ । जनेरा
नही । मिथ्यात्वीइ जैन गुरु माइ । इति भाव, ॥ ३४ ॥

[मे] जे सूची वीनरागनी आना पाटइ, खरउ चारित्र पाटइ
ते केनला पापीनद मस्तकि सूँ समान हुइ । जीयानइ मस्तकि ते
५ सुगुर सूँ समान हुइ, केउलांपरु भूर्सनइ तेही गुरु करी मानीइ ॥३५॥

[सो] ए वात दृढइ छइ ।

[जि] अथ मिथ्यात्वप्रवृत्ता प्रकाशइ ।

हा हा गुरुअ अकज्ज सामी न हु अतिर फस्स पुकारिमो ।
कह जिणवयण कह* सुगुरु सावया कह इअ अकज्ज ॥३६॥

१० [सो] आहा गुरुअ ए मोटु अनार्य विरुज्ज । स्वामी ठाउर
की नथी, जे शिक्षा दिइ । कस्म० कहइ आगलि पोसरि कीइइ ।
कह जिणवयण० किहा एहउ जिनवचन निष्कलक अनइ किहा
सुविहित सद्गुरु अनइ किहा उत्तम श्रावक । कह इअ० किहा ए
अकार्य । एहा भटाचार अत्रसचारी गुरुनउ आराधिवउ । ए मोटुउ
१५वरासउ । इसिउ भाव ।

[जि] हा हा इति खेदे । गुरुअ अकज्ज मोटुअ अनार्य ।
स्वामी न हु निश्चइ नथी । कस्स पुकारिमो किह आगलि पूकारा ।
ते किसु अनार्य ? कह जिणवयण० किहां जिनवचन, किहा
सुगुरु, ते श्रावक किहा, जे सुगुरु श्रावक जिनवचनरहम्य जाणइ । इसिउ
२०अकार्य । निम किसीइ अपूर्य वस्तु गमी हूतीइ ठाउर पाखइ किह

* सो नी बीजी प्रवृत्तुं १२ मुं पत्र नहीं होवापी आ स्थानकी मांडीने ४०मी
भाषागो बाळाबोधनी प्रथम पक्षिमा गिउं कीइइ शब्दो सुधीनां पागत्तर नोपी
शकाया नथी

[जि] जग० जगज्जु त्रिमुक्ताना जीव तेहहू जननी माता रोहू समान मिलत । तेहमाहे अतिउत्तम ज न होउ जउ न हुइ ते क्लिष्टकालसंभर उपाकालोपज जीवहू पापनउ माहात्म्य जाणिवउ ॥ ४३ ॥

५ [जे] जगज्जुना जनुनह जननी माता समान सुखदायक एवहा जे जिमत जिनजासन्नद जे उदयु नहीं हुतउ ते क्लिष्टकालिइ उपा जे जीव तीया जीवना अतिपापनउ माहात्म्य ॥ ४३ ॥

[सो] केरउ' जीव बाबगृतिं डाहउ' देखीइ । पुण विश्वीत्सुद्धि हुइ । तेह पापजिनु उच्य । इसिउ जाणिवउ ।

१० [जि] अथ क्लिष्टकालसंभरजीमाहात्म्य प्रकासइ ।

धम्मम्मि जस्स माया मिच्छत्तगहो उस्सुत्ति नो सका ।
जुगुरु वि करइ सुगुरु विउसो वि स पावपुण्णत्ति ॥४४॥

[सो] जेह रहइ धर्म करता माया आवइ । मनि अनेरु' हुइ, देखाडइ अनेरु । मिच्छत्तगहो अनइ मिथ्यात्व किमहई भूखइ अगही । उस्सुत्ति नो सका । उत्सूत्र बोन्ता करता मनि शका पापनउ भय नहीं । जुगुरु० उगुरु भ्रष्टाचार तेहइ सुगुरु मणी मानइ भाषइ । विउसो वि० ते लोकमाहि विदुष बाहु मणी प्रसिद्ध हुइ तउ ते पापपूर्ण पापिइ भरिउ जाणिवउ । अथवा जे उगुरु मणी मानइ ते पाप पुण्य करी मानइ । आगलि तेह रहइ निश्चइ रूद्ध १० नयी । हवहा पाठिस्या भवनइ अज्ञान कष्टनइ प्रमाणि डाहपण चतुराइ आनी छइ ॥ ४४ ॥

आगलि पुकार कीजइ । तिम इणि दुपमाकालि तिनरहस्य सुगुरु
श्रावक थोडा ॥ ३५ ॥

[मे] हा दसिइ सेदि । ए मोटउ अकार्य । स्वामी तीर्थकर
केरली नहीं । कहि आगलि पुकार कीजइ । त्रिटां ते जिनवचन सूषा ।
त्रिहा ते सुगिहित गुरु । त्रिहा ते सूषा श्रावक, जे गुरुनी परीक्षा न
करइ । ए मोटउ अकार्य ॥ ३५ ॥

[सो] कुगुरु आश्री वात कहइ छइ ।

[जि] अथ लोकप्रवाह कहइ छइ ।

[मे] हिव कुगुरु भणी वात कहइ ।

सप्ये दिट्टइ नासइ लोओ न हु किंपि कोइ अक्खेइ । १०
जो चयइ कुगुरुसप्ये हा मूढा भणइ त दुट्ट ॥ ३६ ॥

[सो] सप्ये० साप दीठइ लोक नामइ । अनद कोइ काद
न कहइ ' विरूउ कीधउ । ' जो चयइ० जो जाणीनइ कुगुरुरूपिउ
साप छाडइ । हा मूढा० अहो मूढ केनलाइ मूर्ख हम कहइ, ' ए
दुट्ट विरूउ कीधउ । आपणा गुरु मूकी अनेरउ गुरु आथियउ ' ॥ ३६ ॥ १५

[जि] सापि दीठइ लोक नासइ । पुण अनेरउ कोइ लोक
नासणहार रहइ किंपि काई न हु अक्खेइ न कहइ । जो चयइ
कुगुरुसप्ये० जे पुरप त्यजइ कुगुरुरूपिउ साप तेहहइ मूढ मूर्ख
त दुट्ट अयुक्तु भणइ जु ' इणिइ आपणउ गुरु मेल्ली अनेरउ गुरु
कीधउ, तिणि कारणि ए दुट्ट ' इसिउ कहइ । इमिउ न जाणइ जु
इणिइ कुगुरु मेल्ली सुगुरु आश्रउ ॥ ३६ ॥

[जि] कष्ट करह । आपणपउ दमइ । धमार्थी लोक द्रव्य गृह् मर्यम्बमार च्ययति त्यनइ । एतलउ पूर्वोक्त करह । पुण एक उत्सूत्रविपलव न त्यजइ, जिणि उत्सूत्रविपग्वि करी जीव ससारममुद्रि वूडइ । तिणि काणि उत्सूत्र बोलिबउ नही ॥ ४६ ॥

[मे] कष्ट करह । आपणपउ ठमइ । इद्रिय वशि करह । १ धर्मनइ कानि गत महस धन वेचइ । पनि एक उत्सूत्रनउ लवलेण न मूकइ, जेह लगी संसारममुद्रमाहि वूहइ ॥ ४६ ॥

[सो] धर्मवति सुगुह्नी संगति करिवी । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ सुसमार्गि धर्मोपराग वाधइ इत्तु कहइ ।

[मे] पुण्यवते सुगुह्नी संगति करिवी । १०

सुद्धविहिधम्मराओ वइइइ सुद्धाण सगमे सुअणा ।
सो विअ असुद्धसगे निउणाण विगलइ अणुदिअ ॥४७॥

[सो] सुद्धविहि० सूधी विधि सरु आचारु सरउ धर्म तेह ऊपरि अनुराग वाधइ । सुद्धाण स० जु सूधा भ्वरा चारित्रिया गुरु अथवा सरा श्रावकनी संगति करइ । हे सुजन ! सो विअ० तेः३ खरी विधि सरा धर्मनउ अनुराग असुद्धा गणाचारु गुरु भ्रष्ट श्रावकनी संगति करइ ते निउणाण वि डाहाड रहइ गलइ जाइ । निरतर उठउ थाइ । यत्त उक्त श्रीउपदेशमालाया—

आलानो संसामो वीसंमो सुंधवो पसंगो अ ।

हीणायारेहिं सम सन्वजिणिदेहिं पडिकुट्टो ॥ १०

१ जि मे सुवण २ 'सरा चात्रिया गुरु अथवा' एत्तु नही

३ अमद ज ४ निशतर

[मे] सापिं दीठइ लोक नासइ । तेहनइ लोक पणि कई न
 कइ जि 'विरअउ कीघउ ।' जे कुगुरुरुपाउ साप छाडई त्यजइ ।
 रा इसिइ खेदि । मू मूव केनगा इम कहइ, 'ए दुष्ट ईणइ
 विरअउ कीघउ' ॥ ३६ ॥

5 [सो] माप पाहइ कुगुर अविमउ । ए वात कहइ छइ ।
 [जि] सापई य पाहिइ कुगुरु दुष्ट । इसिउ देवालइ छइ ।
 सप्पो इक मरण कुगुरु अणताइ देइ मरणाइ ।
 तो वर' सप्प गहिअ मा कुगुरुसेवण भइ ॥ ३७ ॥

[सो] सप्पो० साप डसदतउ एक जि वार मरण दिइ ।
 10 कुगुरु० गधाचारी गुरु अनेक कुमार्ग प्ररूपतउ सेमक रहइ अनता
 मरण दिइ । घणउ ससार बधारइ । तो वर० तेइ भणी अहो भद्र !
 उत्तम साप लीघउ रूडउ । मा कुगुरु० पुण कुगुरनुउ सेविमउ
 रूइ नही ॥ ३७ ॥

[जि] सर्प इक एक मरण दिइ सेविउ हूतउ । कुगुरु
 15 सेविउ हूतउ अणता घणा मरण दिइ । तो तेणि कारणि सापनउ लेवउ
 रूडउ । पुण कुगुरुनुउ सेविमउ रूडउ नही, हे भद्र ! हे सुज ! ॥ ३७ ॥

[मे] सापु कुपिउ हूतउ एक वार मरण दिइ अनइ कुगुरु
 सेविउ अनता मरण दिइ । तेह भणी साप शालिउ, ग्रहिउ भलउ । हे
 भद्र ! कुगुरुनुउ सेविमउ रूडउ नहीं ॥ ३७ ॥

20 [मो] एहा कुगुर जीव छाडइ नहीं । किसिउ कीजइ । ए
 वात कहइ छइ ।

[ति] जिनेद्रनी आगई ति करी पूआपमुह पूजाप्रमुख
 धर्मकार्ये निरुत्तरियउ । जनेरउ किसुउ कहिवउ । जइ जिनपूजादिक
 धर्मकार्ये वीतरागनी आज्ञाइ करइ तउ सफल । अन्यथा निष्फल इति
 भाष । भूयसणुग्गरहिअ आणाभगाउ दुहदाय । जिनाज्ञा
 5 भादनउ जीवानुकुपारहित हूतउ धर्मकार्ये कीधउई सामुहु दुखदायक
 हुइ ॥ ४५ ॥

[भे] कर्त्तव्य धमना करणीय वादणां पडिकमणा पूजाप्रमुख
 तानरागनी आज्ञाइ ति करता सफल याइ । भूत प्राणी तेहनउ अनुग्रह
 अनुक्या तिणि करी रहित ईणिहि जि कारणि आज्ञानउ भग । अनइ
 10 नेइ आज्ञाभग लगी धर्मना कर्त्तव्य दुखदायक हुइ ॥ ४५ ॥

[सो] एक जीव घणाइ धर्मकर्त्तव्य करइ । पुण काई मिथ्यात्व
 7 छाउइ । एह ऊपरि फहइ छइ ।

[जि] अथ मिथ्यात्वी लोम्हइ हितमचन बोल्इ ।

कट्ट करति अप्प दमति दव्व चयति धम्मत्थ^१ ।

15 इक्कं न चयति मिच्छत्तविसल्लव जेण बुद्धति ॥ ४६ ॥

[सो] कट्ट करति० एक जीव छट्टट्टम मासक्षणणादिक अनेक
 तपना कट्ट करइ । अप्प दमति आपणपउ दमइ । शील पालइ ।
 अनेक स्वावापीमाना नियम पालइ । दव्व चयति० धर्मनइ कारण^२
 लक्ष्मी सइ सहस लप षोडिप्रमाण वेचइ । इक्कं न चयइ० पुण
 20 एउ मिथ्यात्वरूपिआ विसाउ^३ एउ न मूकइ । काई काई मिथ्यात्व
 करइ जि । जेण बुद्धति जीणइ मिथ्यात्वि^४ करी ससारसमुद्रमाहि
 ०० धूडाइ^५ ॥ ४६ ॥

१ जि धम्मत्थी २ भे चयहि ३ कारणि ४ विसाउ ५ मिथ्यात्व
 ५ धूडई

[जि] अथ लोक गङ्गुरिकाप्रवाहि पडिउ हूतउ काई न मानइ ।
इसु कहइ रइ ।

जिणआणा वि घयता गुरुणो भणिऊण ज नमिज्जति ।
ता कि फीरइ लोओ छलिओ गङ्गुरिपवाहेण ॥ ३८ ॥

[सो] जिण० जे जिन वीतरागनी आज्ञा छाडइ छइ ५
विराधि छइ, तेहइ गुरु भणी लोऊ ज नमस्करीइ चादीइ वादणां
दीजइ । ता किं० तउ सिउ थाइ । लोक गङ्गुरिकाप्रवाहि छलिउ
व्यापिउ छइ । जेहि एक गाडरी जाइ तीहि बीजी गाडरी जाइ ।
तिम एक लोक करता देखी बीजाइ ति करइ ॥ ३८ ॥

[जि] जिणआणा वि० जिननी आना त्यजता मूकनाः१०
जे हुइ तेही गुरुणो भणिऊण गुरु धरी जत् जे नमिज्जति
नमस्करीइ वादणा दीजइ । ता तउ पठइ गङ्गुरिकाप्रवाहि करी छलिउ
हूतउ लोक कि फीरइ । अपि तु लोक काइ न जाणइ । जिम गाडर
पशु गाडर केइइ जाइ, तत्त्वातत्त्वविचार काई न जाणइ, तिम
लोकई ॥ ३८ ॥

१५

[मे] जिननी आना छाडता जे छइ तेहनइ जे गुरु करी
नमइ, तउ लोक बापडउ किमउ करइ । सघलयइ गङ्गुरीप्रवाहि छलिउ ।
जिहा एक गाडर काई देपीनइ जाइ तिहां सघली गाडरी प्रवाहि पडी
जाइ तिम लोक तत्त्वार्थ अणजाणता-एकि भाहरा करीनइ जाइ ।
अनइ बीजा प्रवाहि देवावेपिं जाइ मानइ ॥ ३८ ॥

१०

[सो] कुगुरु छाडता लोक दाक्षिण्य करइ । ए वान कहइ छइ ।

[जि] लोक कुगुरु मेहहतउ दाक्षिण्य करइ । अनेरइ स्थानकि
दाक्षिण्य न करइ । इसु कहइ ।

[जि] कष्ट करइ । आपणपउ दमइ । धनार्थी लोक ड्रव
 गृह सर्ग्वमार चयति त्यनइ । एतउउ पूर्वोक्त करइ । पुत्र पद
 उत्सूत्रविपन्ध्र न त्यनइ, जिणि उत्सूत्रविपन्धि करी ज्ञान स्मरणउ
 वृत् । तिणि कारणि उत्सूत्र बोलिवउ नही ॥ ४६ ॥

[मे] कष्ट करइ । आपणपउ दमइ । इष्टेक इष्टि करइ ।
 धर्मनइ कानि श्रत सहस्र धन वेचइ । पणि पद उत्सूत्र उत्सूत्र न
 मूरइ, जेह लगी संमारसमुद्रमाहि बूढइ ॥ ४६ ॥

[सो] धर्मगति सुगुल्मी संगति करी । ए इष्ट करइ छेइ ।

[जि] अथ सुसंमर्गि धर्मोपराग कष्ट इष्ट इष्ट ।

[मे] पुण्यगते सुगुल्मी संगति करी ।

१०

सुद्धविहिधम्मराओ चइइइ सुद्धाण संगति मुक्काणा ।

सो विअ असुद्धसगे निउणाण विअउ कर्तवइ ॥ ४७ ॥

[सो] सुद्धविहि० सर्वा विधि स उच्यते स उच्यते धर्म
 तेह अपरि अनुराग बाधइ । सुद्धाण सः सुद्धाण सः चाग्नित्रा
 गुरु अथवा स्वरा श्रावकनी संगति करइ । इत्येव सो विअ० ते
 सर्वा विधि स्वरा धर्मनउ अनुगग कर्तव्य इत्येव सः उच्यते श्रावकनी
 संगति करइ ते निउणाण वि अउ कर्तव्य इत्येव । निग्न
 उच्यते थाइ । यत उक्त श्रीउपदेशकः—

आलागो संरासो वीसुमे संरासो अ ।

हीणायारेहिं सम सवर्णिइ इत्येव ॥

निदक्खिण्णो लोओ जइ कुवि मग्गेइ रुट्टिआर्यह ।
कुगुरुण संगनयणे दक्खिण्ण ही महामोहो ॥ ३९ ॥

[सो] निदक्खिण्णो० लोऊ एहउ निर्दाक्षिण्य, जइ कोई
रोटीनउ खड कटकउ मागइ तउ न दिइ । थोडड धानि दाक्षिण्य न
करइ । कुगुरुण० आइ कुगुरनउ संग एवडा अनयनउ हेतु ते
छान्ना दाक्षिण्य परइ । कानि जाणइ । ही महामोहो आहा
ए महानोह, मोटउ अजाणित, गाढउ मूर्खपणउ कहीइ ॥ ३९ ॥

[जि] लोऊ निर्दाक्षिण्य गुणरहित छइ । जइ कुवि ज
कोई रोटीनउ कटकउ मागइ, तउ दाक्षिण्य भेल्ली रोटीकुटकई न दिइ
कुगुर गट गुरनउ मसग तेहनइ भेल्लिहवइ दाक्षिण्य करइ । ही खेदे
महामोहो मोटउ अजाणिवउ ॥ ३९ ॥

[भे] लोऊ एहनउ निर्दाक्षिण्य । जइ को रोटीनउ खड माग
तउ हि नापइ । जनइ कुगुरुना संगनउ त्यनिवउ तिहा दाक्षिण्य
करइ । कहइ, ' हउ जापणा प्रियागत गुरु किम मूऊउ ' । पणि ह
उसउ खेदि ए सह महामोहनउ विलसित ॥ ३९ ॥

[सो] वली उगुरु आधी कहइ छइ ।

[जि] अथ मिथ्यात्वीनउ विलमिन देखारइ ।

कि भणिमो कि करिमो ताण हयासाण धिट्ठहुट्ठाण ।
जे दसिऊण लिग खिवति नरयम्मि मुद्धजण ॥ ४० ॥

20 [सो] कि भणिमो० सिउ बोलीइ । सिउ कीजइ । ते
हुँ हतारा अभागिया रहइ, घीठ रहइ, दुष्टचिच्छइ ।
दसिऊण० जे लिग महात्मानउ वेप आपणपामाहि 'देसांडी'

अनुन्नजपिणहि हसिउद्धसिणहिं गिप्पमाणो अ ।

पासत्थमग्गयारे ग्ग वि जई वाउली होइ ॥ (गा २२३-२४)

[जि] हे गयण स्वजा ! सुद्धाण संगमे शुद्ध गुरुन मनोगि सुद्ध विधि निर्मगचार घमानुगग राधइ । सो विअ ही १
२ शुद्धनिधिघमानुसग जशुद्ध अष्टचारित्रियानइ प्रसंगि निउणाण वि
निपुण डाहाइनउ अनुदिन प्रतिदिन गलइ विणमइ । मूपनउ घर्मानुग
कुमसंगि विणमइ । तेहनउ कित्तु ॥ ४७ ॥

[मे] सूधी वीतरागनी भापी विधि तेहनइ विपइ अनु
वाधइ । सुद्ध ररा चारिगिया तेहनइ सगमि । हे स्वजन ! ते ५
३० अमूधा उत्सूयना नेरणहार तेहनइ सगिउ निपुण डाहाइनइ वि
धम्मनी मति गलइ । अनुदिक्कम निरतर ॥ ४७ ॥

[मो] जिहा अष्टाचारनु बर हुइ तिहां धमवतिइ न वसिक्क
ए वात विहु गाहे कहइ छइ ।

[जि] मिअ्यात्तीमाहे थ्राक्कि न वसिउउ । इसु कहइ ।

१५ [मे] जिहा कुचारित्रिया बमइ रहइ तिहा धमवते वसि
नहीं । ए सअध विहु गाहे कहइ ।

जो सेवइ सुद्धगुरू असुद्धलोआण सो महामत्तू ।
तम्हा ताण सयासे पलरहिओ मा वसिज्जासु ॥ ४८ ॥

[सो] जे सुद्ध गुरु सुनिहितचारित्रिया तेहनी सेवा कर
२० असुद्धलोआण० असुद्ध मिअ्यात्ती अष्टाचार रहइ जे आश्रित
२० छइ तेह रहइ ते महावग्गरी जेह भणी ते तेहइ उच्छेदिवा जि वा

तम्हा ताण० तेह भणी मिअ्यात्ती अष्टाचाराश्रित लोक क

खियति० मुग्धजन लोला' लोकनइ कुमार्ग सीपवीनइ नरगि घालीइ'
छइ । दुगति पडइ छइ ॥ ४० ॥

[जि] तेहा हताश भनाश घेठा महादुष्ट मिथ्यात्वी तणउ
रिसु भणा । तेहहइ किमु करा । जे मिथ्यात्वी लिंग दर्शनीनउ वेरमास
देवालीनइ सुद्वजण मुग्ध लोला' लोसहइ नरकमाहे घातइ ॥ ४० ॥

[मे] किमउ भणा । केहा किसउ करा । हत हणी आश
जेहनी ते हताश तीया हताशनइ दुष्टानइ घेठानइ । ते कउण । जे
ओषउ मुहपत्ती रूप वेप देपाडीनइ मुग्ध भोग लोकनइ नरकमाहि
पेपइ ॥ ४० ॥

[सो] कुगुरु आश्री निदाम्भुति मथकार' कहइ छइ ।

[जि] भव्यलोसहइ कुगुरु देखी सुगुरु उमरि गाढी भक्ति
उलसइ । इसु जणावइ ।

कुगुरु वि ससिमो १ जेमिं मोहाड चडिमा दडु ।
सुगुरूण उवरि भक्ती अडनिविडा' होइ भव्वाण ॥ ४१ ॥

[सो] कुगुरु वि० ते कुगुरुड वपाणउ भळइ । दीठा
जेसि० जेहनी मोहादिक चेष्टा अब्रह्मचारीण्यु' अनइ शोधादिके कर
कूसणउ देखीनइ सुगुरूण० सुगुरु सुविहित चारित्रीया उपरि अरि
गागी भक्ति भय्य' रहइ उपनइ । कुमति दीठी पापइ माति ऊपरि म
न वइमइ ॥ ४१ ॥

[जि] ईहा मथकार श्रीनेमिचद्र भडारी कहइ छइ
जउ हउ कुगुरु अष्टचारित्रीया गुरुइ' ससिमो प्रसंसउ वर्णउ

श्रावकि बलरहित हुतइ न वसिवउ । जु फाई ठाउर महता प्रधाननउ
वउ हुइ तउ वसिवउ ॥ ४८ ॥

[जि] जे पुरुष सुद्ध गुरु सेवइ ते शुद्ध गुरु सेवणहार श्रावक
असुद्धलोआण मिथ्यावाश्रितहइ महासत्त् महादरी । तम्हा
निणि कारणि ताण म्गसासे तेण असुद्ध लोफनइ समीपि बलरहिओ १
नीमल हुतइ श्रावकि न विमवउ । किनु साहम्भीमाहे वसिवउ ॥ ४८ ॥

[मे] जे सूया गुरुनइ सेवइ ते अशुद्ध लोक मिथ्यात्वी
अष्टाचारीनइ ते महापयरी जेह भणी तेहनइ उच्छेदिना वाळइ । तम्हा
तेह भणी अष्टाचारी मिथ्यादृष्टि आश्रित लोक कन्हइ श्रावकि बलरहित
हुतइ वसिवउ नहीं ॥ ४८ ॥

10

[जि] एह नि अर्थु प्रमाणान्तरि कहइ ।

समयविऊ असमत्था सुसमत्था जत्थ जिणमए अविऊ ।
तत्थ न वट्टइ धम्मो पराहव' लहइ गुणरागी ॥ ४९ ॥

[सो] समयविऊ सिद्धातना जाण धर्मवत तिहा
असमथ हुइ । सुसमत्था० अनइ तिहां निमत्तना अजाण¹⁵
मिथ्यात्वी अष्टाचारी अतिममथ हुइ । तत्थ न वट्टइ० तिहा धर्मे
न वर्तइ । चालइ नहीं । तिहा पराहव० गुणनउ अनुरागी धर्मा
जीव पणि पणि परामवड' जि लहइ । अपमान नि प्रामइ ॥ ४९ ॥

[जि] जिणि म्थानकि समयविऊ सिद्धातना जाण जेन
असमथ हुइ अनइ घली जिणमए अविऊ सिद्धातना अजाण²⁰
मिथ्यात्वी लोक तिहा सुसमत्था अतिममथ सरल वमइ तिहा

जोसिं जेहा सुगुप्नी मोटादिक चडिमा कूरता दट्ट देखी फरी
सुगुरु सुनिहित ऊपरि भक्ति अतिनिविड अनिगाढी भविक जीमहइ हुइ ।
जिम उमनि दीठीइ भातिइ मा रहइ ॥ ४१ ॥

[मे] ते सुगुरु वसाणउ ह भएद दीठउ । जेहनी अत्रस
सेनादिक कुचेष्टा टेपी अनइ सुगुरु ऊपरि भक्ति अतिनिविड हुई ।
गदिक जानइ कारणि ॥ ४१ ॥

[सो] विरूउ काल देखी जाणहइ विशेष सम्यक्त्व उल्लसइ ।
ए वान कहइ छइ ।

[जि] अथ मिथ्यात्तोदयिई हूतइ भव्य जीवहइ सम्यक्त्व
उल्लसइ । ए बात कहइ ।

जह जह तुहइ धम्मो जह जह दुट्ठाण होइ अइउदओ' ।
सम्मदिट्ठिजियाण तह तह उल्लसइ सम्मत्तं ॥ ४२ ॥

[सो] ईणइ पाचमइ आरइ दु खमाकालिं जिम निम धर्म
शूटइ ओठउ' थाइ । जह जह दुट्ठाण० अनइ जिम जिम दुष्ट
पापी जीव रहइ अतिउदय ठावुराई रुद्धि मान महत्त्व हुइ ।
सम्मदिट्ठि० तिम तिम सम्यग्दृष्टि जाण जीव रहइ सम्यक्त्व गाढउ
गाढउ उल्लसइ हए थाइ । जिसिउ परमेश्वरि दु खमाकालनउ स्वरूप
कहिउ हूतउ तिसिउइ जि देखीइ छइ । इम परमेश्वरना वचन ऊपरि
आम्था आरइ । जिम ए साचउ तिम बीजाइ परमेश्वरना वचन साचा ।
उदसी परि सम्यक्त्व हए थाइ ॥ ४२ ॥

वसना श्रावकतः धर्म न वाधइ । किंतु सामुह्य धर्मानुरागी श्रावक
पराभव रहइ ॥ ४९ ॥

[मे] समय सिद्धांत तेहना जाण विना अममर्थ हुइ अनइ
जिनमतना अनाण जिहां गाढा समर्थ हुइ तिहा धर्म वाधइ नहीं ।
३ तिहा गुणागुगी धर्मवत पगि पगि पराभव रहइ । हल्लपण पामइ
॥ ४९ ॥

[सो] कुमार्गी पापी समर्थ हुतउ ज धर्मना कान माहि न
मिलइ तउ रूडउ । ए' बात कहइ छइ ।

[जि] मिथ्याली लोक धर्मवत न हुइ तउ भलउ । तेहनउ
१० कारण कहइ ।

ज न करइ अइभाय कुमगसेवी' समर्थओ धम्मे ।
ता लड्ड अइ कुज्जा ता पीडइ सुद्धधम्मत्थी ॥ ५० ॥

[सो] ज न करइ० ज अमार्गसेवी कुमार्गी मिथ्याली खुट
खरड' राजादिकि मानिउ समर्थ हुतउ धमनइ विपइ अतिभाव न
१५ करइ, धर्मना कानमाहि न मिलइ ता लड्ड तु रूडउ । जु धर्मना
काजमाहि मिलइ, माहिल्या' मम जाणइ तउ ता पीडइ० सुद्ध धमार्थी
रहइ चाडी' भाडीइ करी पीडइ । अथवा ज ते मिथ्याली समर्थ
हुतउ आपणा धर्म मिथ्यात्व' स्लेच्छादिकना मत उपरि अतिभाव न
करइ, बरड बरीगइ जि जउ हुइ तउ भलउ । जउ ते आपणा मत
२० उपरि घणउ भाव करइ तउ आपणा मतनइ कदाप्रहइ बीनाइहइ

१ 'ए छइ' नहीं २ जि उमगसेवी, मे अमगसेवी ३ खरड चाड
४ माहि'ग ५ चाडीवचाडीई ६ मिथ्याली

आपणा मत मनाविवा भणी शुद्ध धर्मार्थी रहइ पीडइ । आपणउ धर्म करावइ बलात्कारिइ ॥ ५० ॥

[जि] उन्मार्गसेवी मिथ्यात्वी समर्थ सबल हूतउ धर्म उपरि अतिमान गाढी वामना ज न करइ ता लट्ट ते भलउ । अह् अथवा मिथ्यात्वी धर्म उपरि आदर करइ ता तउ पडइ सुद्धधम्मत्थी १ निर्मल धर्मकरणहारहूइ पीडइ दृहवइ ॥ ५० ॥

[मे] जे कुमार्गनउ सेवणहार समर्थइ हूतउ धर्मनइ विपइ अतिमान न करइ धर्मना काममाहि मिलइ नही ता लट्ट तउ रूडउ । अथ जउ किमइ करइ तउ आपणा मत मनाविवा भणी शुद्ध धर्मार्थीनइ चाडीहनी करी पीडइ । आपणउ धर्म बलात्कारि करावइ १० ॥ ५० ॥



[सो] जइ सर्न श्रावकहूइ^१ एकपणु हुइ तउ धर्मनइ^२ पराभव करी न सकइ । ए बात कहइ छइ ।

[जि] श्रावकहूइ वसिवानउ प्रकार कही साहम्मीमाहे समेला होइवउ । इसु कहइ छइ । १५

जइ सब्बसावयाण एगत्त हुत मिच्छयायम्मि ।

धम्मट्ठियाण सुदर ता कइ पु^१ पराहव कुज्जा ॥ ५१ ॥

[सो] जइ सब्ब० जइ सर्न पक्षना श्रावक रहइ मिथ्यात्वना वादनइ विपइ एकमत हुइ । सविहूनउ मनु एक सरिखउ मिथ्यात्व निर्लोठवा अथवा जिनमत स्थापवा उपरि हुइ तउ २० धम्मट्ठियाण० धर्मार्थी लोकर रहइ हे सुन्दर ! ता कइ० तउ मिथ्यात्वी पराभव अपमान किम करत ? न करत । पुण काल्नाइ

निद्रा नैदी चेतना नाठी । अथवा धिक्किक्क कक्किक्क
 जेह न्हिं जिन वीतराग लाधउइ अणलाधउ । छउं ॥ ६० ॥
 वीतराग वनयोगपिउ हूउ ॥ ६० ॥

[सो] केनलइ मूर्ख पडितमन्यं हउइ हउइ कक्क
 रहइ हनइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनधर्म हाम्यसानक न्हिं ॥ ६० ॥

[मे] केनला सूधा धर्मना करणउ हउइ ॥ ६० ॥

इअराण वि उवहास तमजुत्त भाय हउइ ॥ ६० ॥

एस पुण कोवि अग्गी ज हास सुद्ध ॥ ६० ॥

[सो] इअराण० इतर अणं न्हिं न्हिं ॥ ६० ॥
 कीजइ, हे आत बाधव ! बुलीन जे पुण्यउ जेह न्हिं
 रहइ तेइ करिवा तावइ । एस पुण० हउइ न्हिं न्हिं
 विरुउ । ज हास० ज शुद्ध निरुद्ध जेह न्हिं न्हिं
 हसीइ ॥ ६१ ॥

[जि] हे भाय हे आत ! इअराण तेइह न्हिं न्हिं ॥ ६० ॥
 जे हुइ ते उपहास्य कुलप्रसूनहइ कउइ । ए अणं न्हिं न्हिं
 हासउ मूर्खइ न करइ । एप पुन कोवि न्हिं न्हिं
 जउ शुद्ध निर्मलइ धर्मि हासउं ॥ ६१ ॥

[मे] इतर पामर लोक तेइह न्हिं न्हिं प्रसून तेइह
 हे बाधव ! युक्तउ नहीं । ए कोइ न्हिं न्हिं न्हिं
 हासउ कीजइ ॥ ६१ ॥

विशेषिद् मानोनात् जि जूजूना मा । तीगट परी मिथ्यान्वी पराम
करइ ॥ ५१ ॥

[जि] जइ किइ सभे श्रावकहूइ एकमत एकधर्मीपणउ हुते
होयते ता तउ हे सुन्दर ! मिथ्यापरादमाहे धमार्थी धनक
5 श्रावकहूइ कलण फटण एक परामभ अपमान कुञ्जा करत ' ज
तु श्रावकहूइ कोइ परामभ न करत । किं तु मूढ कोइ गनन ॥ ५१ ॥

[मे] तउ किमइ मने पदाग श्रावक मिथ्यान्वी साथि मिनादि
उपाइ हुनइ एकइ मति हुइ तउ हे सुन्दर ! धमार्थी धर्मस्थित तेइनद
कहउ न, फटण परामभ करत ' जपि तु कोई न करत ॥ ५१ ॥

10 [सो] जे पुण्य महाद्वक धमनु आधार हुइ तेहनी प्रगम
करइ छंद ।

[जि] अथ श्रावकहूइ मोग श्रावकहूइ गन्धयडि देनाल्इ ।
त जयइ पुरिसरयण सुगुणहू हेमगिरिवरमहग्घ ।
जस्सामयम्मि सेउड सुविहिरओ सुद्वजिणधम्म ॥ ५२ ॥

15 [सो] ते पुण्यरूपिउ रत्न जययत वतउ । सुगुण
उत्तमगुणे करि आढ्य पूरिउ । हेमगिरि० सोनानउ' पर्वत मेर तेहन
परि महार्थ' ते पुण्य समोत्तम कहिवाइ । जस्सामयम्मि जेहन
प्राथइ जेहनइ वलि' सानिभ्यड करी सुविहिरओ सुविहिरत साच
धमनउ आगधक सूधउ निरुत्क तितधर्म सेउइ आराधइ । जेहन
20 गलि धम चालइ, जे पुरुष धर्मवतनइ आधार दिइ ते पुरुष गाव
उत्तम कहीइ ॥ ५२ ॥

[म्ने] गात्र मिथ्यात्वी पापीइ^१ रहइ उत्तम हित करिवइ^२ वीरवद^३ । प्र वात एहइ छइ । बिहु गाहे फरी ।

[जि] अथ सपुरप दुष्टईहइ हित करइ । इसु बाणावइ ।
दोसो जिणिंदवपणे सतोसो जाण मिच्छपावम्मि^४ ।
५ ताण पि सुद्धहियया परमहिअ दाउमिच्छति ॥ ६२ ॥

[सो] दोसो० जेह रहइ जिनेन्द्रना वचन ऊपरि वीतरागना धर्म ऊपरि दोष^५ अनइ मिथ्यातिव पाप ऊपरि संतोष छइ, मन तिहां बरहू छइ । ताण पि० जेहनां हियां सूधां निष्कपाय निर्मल छइ ते तेहइ रहई धर्महित देना बांछइ । धर्मनु लाभ करिवु^६ चीनवइ । बाणइ^७ किंइहइ ए^८ बापटा धर्म मिलइ तू रूडउ ॥ ६२ ॥

[जि] जाण जेहइहइ जिनेन्द्रनां वचन ऊपरि द्वेष हुइ, घरी जेहइहइ मिथ्यात्तयाद ऊपरि संतोष हुइ, एतानता जिनवचन जे न गानइ, कि तु मिथ्यात्त मानइ तेहईहइ शुद्धहृदय निर्मलचित्त सत्पुरुष परम हित देवा बांछइ ॥ ६२ ॥

१५ [मे] जेहनइ जिनेन्द्रना वचन ऊपरि द्वेष हुइ, जेहनइ मिथ्यात्त ऊपरि संतोष हुइ, तीयाइनइ शुद्धहृदय निर्मल चित्तना धणी परम हित देवा बांछइ ॥ ६२ ॥

[जि] अथ पूर्वोक्त अथ युक्तउ करी स्थापइ ।

अहवा सरलसहाया^९ सुअणा सन्वाथ हुति अविअप्पा ।
१० उडुतविसभराण^{१०} वि कुणति करुण तुजीहाण ॥ ६३ ॥

१ पापी २ चीतइ ३ मिच्छपावम्मि ४ द्वेष ५ तेहई ६ करिवउ
७ एहइ ८ मे ९ हृदय १० वि मे छाति

[जि] ते पुरुपरल जयतु हुउ । किमउ छइ पुरुपरल १
सुगुणइ सु भला परोपकारादिक गुण तेह करी आढ्य समृद्ध भरिउ
पूरिउ । वली किमु छइ २ हेमगिरिवर मेरु पर्यंत तिह सरीपउ महर्घ्य
पूज्य मानीतउ । मोटाई करी मेरुपर्यंत मरीपउ । ते पुरुपरल कउण ३
जस्सासयम्मि जेह पुरुपरलनइ आश्रयि आधारि सुविधिरत ५
सन्मार्गसेरणहार सुश्रावक सुद्धजिणधम्म निर्मलउ जिनधर्म
सेवइ ॥ ५२ ॥

[मे] ते पुरुपरल जयतउ हुउ, जे सोमन भला गुण तिणि
करी आढ्य सहित । वली ते पुरुप केवहउ ४ मेरुपर्यंत तेहनी परि
महर्घ्य । जेहनइ आश्रइ मानिय लगी सुविधि भली विधि तेहनइ विपइ १०
तत्पर हतउ सूधउ जिनधर्म सेवइ आराधइ ॥ ५२ ॥

[सो] गली एह जि वात रुटइ छइ ।

[जि] वली संधि पुरुपिहइ मोटाई प्रकासइ ।

सुरतरुचिंतामणिणो अग्घ न लहति तस्स पुरिसस्स ।
जो सुविहिरयजणाण धम्माधार सया देइ ॥ ५३ ॥ १५

[सो] कल्पद्रुम चिंतामणि लोकमाहि मनोमाठित देनहार १
भणी अति उत्तम कहीइ । पुण तेह पुरुपनउ ते अव मूल न लहइ ।
ते पुरुप तेहइ पइ २ गाढउ ३ उत्तम । जो सुविहि ० जे पुरुप
सुविधिरत खरी विधि खरी सामाचारीना आराधणहार ४ लोक रहइ
धर्माधार सदैव दिइ । कल्पद्रुम चिंतामणि एकइ ५ जि भवि इह २०
लोकनु उपकार मात्र करइ । आ पुरुप धर्मनु उपकार करतउ

[सो] अहवा० अथवा जे सुजन हुइ ते सविहु ऊपरि सरलस्वभाव हता क्रिहाइ विरल्य नाणइ । रूडा^१ नइ विरुआइ सविहु ऊपरि तित चीतवड । छडुत० जे द्विजिह्व साप विपना भर समूह छांडइ गरलइ जि^२ मूरुइ ते^३ ऊपरि उत्तम दयाइ^४ जि करइ । जे चाड दुर्जन कुबचन बोलइ ते ऊपरि उत्तम 'ए बापडउ किमइ पुण्य ५ प्रामिसिइ ?' इसी दया नि करइ ॥ ६३ ॥

[जि] अथवा सरलस्वभाव स्वजन सगा सर्वत्र अविरल्य विकलरहित हुइ । जिम रोरु आपणा लोचन ऊपरि विरल्य भेद आतरउ काई न करइ । तथा ते बली सर्पस्वरूप द्विजिह्वहइ करुणा दया करइ । जिम श्रीगार्धनाथि सर्प ऊपरि दया कीधी ॥ ६३ ॥ १७

[मे] अथवा सरलस्वभाव जे स्वजन ते सधले क्रिहाई विरल्य नाणइ । समभाव आणइ । विपना भर गरल छाडइ छई जे द्विजिह्व सर्प तीहइ ऊपरि करुणा आणइ । जे चाड दुर्जन कुनोरु दोरुइ तेहइ ऊपरि उत्तम चीतवड जि 'ए बापुडउ किमही पुण्य प्रामित्यइ ?' इसी जे दया करइ ॥ ६३ ॥ १९

[सो] सम्यक्त्व गाढ दुर्लभ छइ । ए बात कहइ छइ ।

[सो] अथ विरला केई एकहइ सम्यक्त्व छइ । न सधलाई हइ । इसु कहइ ।

[मे] सम्यक्त्व गाढ दुर्लभ छइ । ए बात कहइ ।

गिहवापारविमुक्ते बहुमुणिलोके वि नत्थि सम्मत्त । २०
आलयणनिरयाण सड्डाण भाय किं भणिमो ॥ ६४ ॥

स्वर्गमोक्षादिकं सुग दिह । तेह भणी कल्पवृक्ष चिंतामणि सरीपु
किर करि ५३ ॥ ५३ ॥

[जि] तेह पुरपहूइ सुरतरु कल्पवृक्ष चिंतामणि रत्न अर्घ पूजा
१ रहइ । तेह पुरन सरीप न हुइ । कि तु कल्पवृक्ष चिंतामणि पाहइ
५ अधिक दानारंपणातउ ते पुरप मोटउ ते नियु २ जे पुरुपरत्न सुविधिरत
जाहइ सन्मार्गनपर लोकहइ धर्मेनु अरष्टम दिह ॥ ५३ ॥

[मे] कल्पवृक्ष चिंतामणि प्रमुख पन्थाय धमाधार पुरप आगलि
५३ नूळ काई न रहइ । समवडि न पामइ । जे सुविधि भली विधि तेहनइ
रत जम लोक तेहनई सदा धर्मेनउ आधार दिह ॥ ५३ ॥

१० [सो] को कहिसिह 'ते' पुरुपनइ वर्णविनइ^१ सिउ काज
छइ २' ए वात ऊपरि कहई ।

[जि] निणि कारणि तेहा सत्पुरुषता नामग्रहण करिवउ ।
पवित्र होइवा भणी । इसुं कहइ ।

लज्जति जाणिमो ३ सत्पुरिसा निअयनामग्रहणेण ।

१५ पुण तेसिं किराणाओ अम्हाण गलनि कम्माइ ॥ ५४ ॥

[मो] लज्जति० ए वात 'जाणउ' । जे सत्पुरुष आपणा
नामनइ लेवइ, कोई तेहनउ नाम लेई वपाणइ तु 'लाजई जि । नीचु
सांहुं जीइ । पुण तेसिं० पुण तऊ तेहनु कीर्त्तन गुण बोळउ' छउ' ।
ते कारण ए तीणई करी अम्हारां कर्म गलइ पाप फीटई' । कर्मनिर्जरा
१५ हुइ । आपणाइ जि लाभ भणि कीजइ छइ । इसुं भाव ॥ ५४ ॥

१ तेह २ वर्णवइ ३ कहइ छइ ४ जाणउ छउं ५ जे ६ बोळइ

७ छइ

[सो] गिह० पर कुटुम्बा व्यापार जेहे छांढ्या छइ ते पणा मुनिलोक मरामाइ माहि सम्यक्त्त नथी । जेहनइ काजकाम काई नथी तेहना मन रोगि कष्टि आरि मिथ्यात्व करिवा लहवइ । आलस्यण० जे श्रावक गृहस्थ जेहनइ अनेक छोरु बेटा बेटी रिवाह ५ वृद्धि व्यवसाय काजकामनां आलस्यन छइ तेहनइ मिथ्यात्वनइ विपद लहवहियानू अहोभ्रात^१ ! किसिउ कहीइ ? ॥ ६४ ॥

[जि] गृहस्थव्यापार गृहभारमादिक तिणि करी विमुक्त रहित एवहा बहु प्रचुर मुनिलोक तेहइमाहे सम्यक्त्त नथी । हे भाय हे भ्रात ! आलस्यनिरत श्रावकहइ किमु भणा ? जिहां १० सवसगविनिर्मुक्त मरामाइहइ सम्यक्त्त न हुइ तिहा श्रावकहइ तिहा हतू ? इति भाव ॥ ६४ ॥

[मे] जेहे घरना व्यापार मूक्या छइ एवहा घणा जे मुनिलोक तेहनइ सम्यक्त्त नथी । ए भ्रात ! रोगि काष्टि पीढ्या हुता आलस्यनना निरस्य जे श्रावक ते जउ सम्यक्त्त थका लहवहइ तिहां सिउ कहिवउ ? २५। ६४ ॥

[सो] उत्सूत्र बोक्तउ जीव संसारमाहि पढइ । ए बात कहइ छइ ।

[जि] अथ जीव उहिसी कि उपदेम बोल्इ ।
न सय न पर कोवा जइ जिअ उरसुत्तभासण विहिअ ।
१० ना बुद्धिसि निम्भत निरत्थय तवफडाडोव ॥ ६५ ॥

[सो] न सय० आपणपइ अथवा अनेरेइ कुणहि^१ काई न याइ । कोवा० कोव लगइ अहकारि चडिउ जउ रे जीव । उत्सूत्र

[जि] हउ इसु जाणउ । सत्पुरुष धमाधारनउ दाताए पुरुष निजक नामग्रहण करी लाजइ । जइ लाजइ तउ लाजउ । पुण तेसिं किच्छणाओ पुण तेह सत्पुरुषना नामकीर्त्तनइतउ बोलिवातउ अम्हारां बुद्धिं गलइ फीटइ । सत्कर्म उदय पामइ ॥ ५४ ॥ ' ; ;

[मे] हउ इमउ जाणउ जे सत्पुरुष आपणा नामग्रहणिऽ लीजतइ लाजइ । पणि तेहनउ कीर्त्तन वपाण करता अम्हारां कर्म गलइ । एह भणी सत्पुरुषनउ नामु लीजइ ॥ ५४ ॥

[सो] धर्मइ करतां जि' धर्म न हुइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि,] जिनाना पापइ धर्म कीधउ नि फलु । इसुं कहइ ।

आणारहित कोहाडसजुअ अप्पससणत्थ च । १०

धम्म सेवताण न य किच्छी नेव' धम्म च ॥ ५५ ॥

[सो] जे धर्म आराधइ पुण वीतरागनी आणारहित निह वादिक्की परि । अनइ त्रोधादिकिइ करी सयुत धर्म करइ । यावज्जीव बरिस चउमाम ऊपहिरा क्रोध मान माया लोभ धरइ । परइ धर्मक्रिया करइ । तथा अप्पससणत्थ च । को आपणी प्रशसा भणी धर्मऽ करइ । जिम ' लोक मू रहइ वपाणइ । हु लोकरमाहि रूडउ मारउ ' इसी बुद्धिइ धर्म करइ । धम्म० ईणइ प्रकारइ धर्म करताइ अन्त' न य किच्छी० इह लोकि कीर्त्तिइ नही । परलोकि धर्मऊ न्ही । कर्मक्षय न हुइ । काज काई सरइ नहीं ॥ ५५ ॥

[जि] जिनाणारहित, क्रोध मान माया लोभद्वन्द्वुच्च-
आत्मप्रशसानइ अर्थि धर्म सेवता धर्म करता पुरुषहउ न य किच्छी०
लोकरमाहे धर्णनइ नही । अतरगमाहे धर्म नही ॥ ५५ ॥

श्रीनिवचनं विरुद्धं बोधिसिं तां तं निन्दन् विन्दन्
 समुद्रमाहि वृडिसिं । कुण्ठिं स्वादिनि न्ये । इति निन्दन्
 एतद् फाई उत्स्र्ण बोध् अतः पयः दत्तं इति निन्दन्
 दुकड दिह, आलोऽ तु वृद्ध । इति न्द । निन्दन् न्ये
 बोध्ता तप क्रिया नियम सानाचारीनु मन्त्रोऽऽ दत्तं इति
 जाणिवउ । तीणह करी संमारमादि वृत्त न न्ये ॥ ६० ॥

[जि] कोई आपणउई नही कथन क उन्ने इति न्ये ।
 रे जीव ! जइ तइ उत्स्र्णमापण कीउर न्द न्द निन्दन्
 नि संदेह वृडिसि । तपनउ सुखयोऽ अरुण इति । दूकड छे
 'तपनइ आडरि नही वूडउ' ए फोइर ह्ये । इति न्ये न्ये
 म बोले ॥ ६५ ॥

[मे] न आपणपह न पराउरि क्कं इति न्ये इति न्ये
 रे जीव ! जउ उत्स्र्णनउ भापण कीउर न्द न्द निन्दन्
 समुद्रमाहि वृडिसि । उत्स्र्ण बोध्ता तां निन्दन् निन्दन्
 आडरि निरर्थक फोरु जाणिवउ ॥ ६० ॥

[सो] साचा धर्मना धर्मो इति न्ये न्ये इति न्ये ।
 ए वात कहइ छे ।

[जि] अयं चिन्दिन्द्रनठ वचन इति न्ये इति न्ये । इमु कइ ।
 जहं जहं जिणदवयणं सम्म पणनः मुद्रहिं अजाण ।
 तह तह लोअपवाहे धम्मो पाएण नवचरिअं ॥ ६६ ॥

१ श्रीनिवचनं २ वाग्म्यं ३ इति न्ये ४ इति न्ये ५ (साचा)
 ६ पठिद न रहीदं एतन्ने पाठ छे इति न्ये ७ इति न्ये ८ (साचा)
 ते धीमीमांसी गीधो छे ९ गाथा ११ अ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

[मे] वादाइ करी रहित, क्रोधादिसयुक्त, आपणी प्रसंसानइ
अर्थि धर्म सेवता हूता कीचि पणि न हुइ । धर्म पणि न हुइ ॥ ५५ ॥

[सो] बली उत्सूत्रभापी ऊपरि वि गाह कहइ छइ ।

[जि] अथ उत्सूत्रभापी पुरुषनउ स्वरूप कहइ ।

५ [मे] बली उत्सूत्रभापी ऊपरि वि गाह कहइ ।

इअरजणससणाए धिद्धा^१ उस्सुत्तभासिए न भय ।

ही ही तणा नराण दुहाइ जइ मुणइ जिणनाहो ॥ ५६ ॥

[सो] इअरजण० इतरजन सामान्य अजाण लोक तेहनी
प्रससा करइ । 'ए भला' इम वपाणइ । तीणइ करी धीरघ्न हुता
१०अभिमानी च्छेद्या उत्सूत्र बोलता मनमाहि भयं न आणइ । भावइ तिम्यां
उत्सूत्र प्ररूपइ । ही ही० अटाटा । तेह पुरुष रहइ परलोकि दुर्गति
म्या हुता जे दुख हुसिइ ते दुखनु^२ स्वरूप चिननाथ श्रीमर्वज्ञ वि
जाणइ । अनेरउ^३ को न जाणइ । ति दुख जिह्वाए केतलीए न
बोलाइ ॥ ५६ ॥

१५ [जि] इतर जन सामान्य लोक तेहनी प्रससाइ करी हिद्धा
साहकार आपणपउ मोटा मानइ जे अनइ जेहहइ उस्सुत्तभासिए
उत्सूत्रसिद्धाते न बूडउ तेहनउ भाषण बोलिपउ तेह हतउ भय नहीं ।
बूडउ बोलता जेहहइ पापनउ भय नहीं । ही ही खेदे । तेहे सगर्व तणा
उत्सूत्रभापक नर तणा दुहाइ हउणहार दुख जइ किमइ मुणइ जाणइ
२०तउ जिणनाहो श्रीसर्वनदेव जाणइ । दुखहइ प्रचुरपणातउ अनेरउ
छप्पन्ध जाणी न सइ । जे सगव हतु उगूत्र बोलइ तेहहइ अनता
दुख हुइ । जिम मरीचिहइ उत्सूत्र भाषणतउ घणा हया ॥ ५६ ॥

१ जि मे विद्धा २ दु खनु^३ अनेर

[रणे] जहं० जिम जिम जिनेन्द्रवचन श्रीसर्वज्ञनु धर्म साचउ
 चोगा ही गण गण मनि परिणमइ तहं० तिम तिम लौकिक प्रगाहिनु
 धर्म गुण विचार पपइ ' आपणा देव, आपणा गुरु ' इत्यादि कदाग्रह
 रूप गायकजिना चरित्र सरीपु प्रतिभामइ । वाद्य मडाण जि छइ ।
 ५ लोकरजना मात्र जि छइ । अभ्यतर धर्म फाई नर्था । यत उक्त
 श्रीउपदेशामान्यां—

पहइ नडे वेरमा विविजिज्जा य बहुजणो जेण ।

पढिअण त तहं सणे जालेण जल समोअरइ ॥ (गा ४७४)

[जि] तिम जिम सुद्धहृदयने हृदयि जिनेन्द्रनउ वचन सम्यक्
 प्रकारि परिणमइ वसं तिम तिम निर्मलहृदय तणउ लोकप्रगाहि धर्म
 मिथ्याचरधर्म नटचरित्र सरीपउ पढिहाइ प्रतिभइ शोभइ । जिम
 नटर्यानु चरित्र फोकट तिम लोकप्रगाहि धर्म फोकट इमु मानइ ॥ ६६ ॥

[मै.] जिम तिम जिनेन्द्रना वचन सम्यग् प्रकारि परिणमइ
 कहिनइ सुद्ध हृदया घणीनइ तिम तिम लोकनउ प्रगाह नटावाना
 १५ चरित्र सरीपउ प्रतिभासइ । काइ ? ' ए सह वाद्य मडाण । लोकरजना
 मात्र, पपि आभ्यतरि नही ' ॥ ६६ ॥

[सो] बली एह जि वात कहइ छइ ।

[जि.] अध जिनधर्मप्रमाण बोलइ ।

[मे] बली एह जि वान कहइ ।

२० जाण जिणिदो निवसइ सम्म हिययम्मि सुद्धनाणेण ।
 ताण तिण य विरायइ समिच्छधम्मो जणो सयलो ॥ ६७ ॥

[सो] जाण० जेहनइ हीअइ साचइ जाणवइ करी सम्यग्
 दृढ श्रीजिनेन्द्र वसइ, धीतरागनु धर्म जेहनइ मति साचउ बहठउ हुइ

[मे] इतर जन सामान्य लोक तेहनी प्रसंसा सामली ह्य्ट हपित हता अहकारि चव्या उत्सूत्र बोलना भय नाणइ । भावइ तिम उन्सूत्र बोलइ । ही ही इसइ रोदि । ते पुरुषनइ परलोकि जे दुस्म्व होइस्यइ ते धीतरागइ जि आणइ ॥ ५६ ॥

[जि] अथ उत्सूत्रभाषणन फल कहइ ।

उस्सुत्तभासगाण बोहीनासो अणतससारो ।

पाणच्चण वि धीरा उस्सुत्त ता' न भासति ॥ ५७ ॥

[सो] उस्सुत्त० उन्सूत्रना बोळ्णहार' रहइ बोधिबीजनउ नाग हुइ । आउते भये सम्यक्' लइइ' नहीं । अणतउ समार वाघट । अनना भवनां दुस्म्व भोगइ । पाणच्चण वि० तेह भणी प्राणत्यागिइ' जीवतव्यनड संकटि पडइ' जे धीर धर्मरत ते उन्सूत्र न बोळइ ॥ ५७ ॥

[जि] उन्सूत्रभाषक पुरुषहूट बोधि सम्यक्त्व तेहनउ नाम हुइ । तिणि' कारणि बोधि पापइ अणतउ संसार । ता तिणि कारणि प्राणत्यागिइ' प्राणइ जातइ हुतइ धीर धर्मर साहमिक उन्सूत्र न भापइ न बोळइ । वरि प्राणइ नीगमइ । पुण कूडउ न बोळइ । तथा चोक्तः श्रीउपदेशमालाया—

जीअ काळण पण तुरुभिणि दत्तस्स कालियज्जेण ।

— अवि य सरीर चत्त न य भणियमहम्मसंजुत्त ॥ (गा १०५)

[मे] उन्सूत्रना बोळ्णहारनइ बोधिबीजनउ नाग हुइ । अनतउ संसार हुइ । ते भणी प्राणनइ त्यागिइ धर्मवते उन्सूत्र न बोळिवउ ॥ ५७ ॥

ताण० तेह रहइ मिथ्यात्वधर्म सहित लोक सघलउ तृणा सरिषउ
असार प्रतिभासइ । जाणइ ए फाई नही ॥ ६७ ॥

[जि] जाण जेहना हियामाहे निर्मलइ जानि करी सम्यक्
प्रकारि श्रीजिनेन्द्र वसइ ताण तेहाइइ समिध्यात्वि धर्मि करी सहित
मिध्यात्वी लोक सघलई तिण च तृणवत् तृण सरीषउ निःसार ३
विराचति शोभइ ॥ ६७ ॥

[मे] जेइन्ह हीयइ साचइ जाणिइइ करी सूधउ वीतरागनउ
धर्म वसइ तेह मनुष्यनइ मिथ्यात्वधर्मसंयुक्त लोक सघलउ तृणा सरीषउ
असार प्रतिभासइ । जाणइ जि ए फाई नही ॥ ६७ ॥

[सो] लोकनइ प्रवाहिइ^१ केनलाइ जाणइ^२ क्षुभइ । ए वातः^३
वहइ छइ ।

[जि] अथ सम्यक्त्व पापइ श्रावकपणउ निरर्थक ।^४ इसु
भोचइ ।

लोअपवाहसमीरणउदृढपयडचडलहरीए ।

दृढसम्मत्तमहारलरहिआ गुरुआ वि हल्लति ॥ ६८ ॥ १३

[सो] लोअपवाह० लोकनउ जे प्रवाह तेहरूपीआ
समीरण जे वायु^१ तेहनी प्रचड गाढी लहरि करी दृढ० दृढ निश्चल
सम्यक्त्व रूपाआ आराधननउ^२ जे छड महारल तीगइ करी रहित
गुरुआइ हल्लति बोचइ । घणा लोक फाई मिथ्यात्व बोख्या^३ करता^४
देपी मोडाइनां मन लइन्हइ ॥ ६८ ॥

१०

[जि] दृढ सम्यक्त्वरूप महारल तिणि करी रहित पुरुष
गुल्या वडाइ हुता हल्लति बोचइ । किसइ करी ? लोकप्रवाहरूपिउ

१ प्रवाहइ २ जाण, ३ वायुनी ४ आचारलउ ५ शीलइ ६ ब्रह्मा

[मो.] अविधि^१ वषाणउड नही । ए वात कहइ छड ।

[जि] उत्स्रभापणनिषेध^२ करी असन्मार्गनी वर्णनाइ न करिवी । इम कहइ छड ।

मुद्गाण रजणत्थ अविहिपसंस कयाइ^३ न करिजा ।

कि कुलयहुणो कत्थ वि थुणति^४ वेसाण चरिआड ॥५८॥

[सो] मुद्गाण० मुग्ध लोग^५ तेहना रजवा आवर्जवा भणी अविहि० उन्मार्गमेळ कोई करतु हुइ तेहनी प्रशसा जाणि कहीइ^६ न करिवी^७ । दृष्टात कहइ छड । किं कुल० उत्तम कुलनी वधू स्त्री मटासती ते किटाइ वेश्या अधम स्त्री असती तेहना चरित्र^८ उन्मार्गइ^९ न वषाणइ^{१०} पि । तिम^१ उत्तम उन्मार्गनी प्रशसा न करइ जि ॥ ५८ ॥

[जि] मुग्ध मूर्ख तेह रजिमानइ अर्थि कारणि अविधिप्रसंसा कुमार्गाचारनी वर्णना कयावि विचारइ सत्पुरुष न करिजा न करइ । किं कुलयहुणो कुलवधू कुलस्त्री वेसाण चरियाइ वेश्यानां चरित्र^{११} कर्त्तव्य कत्थ वि किहाइ स्तवइ वर्णउड^{१२} अपि तु न मनवइ । पुमार्गनी प्रससाई कीधी हूती घोष भणी हुइ इति भाव ॥ ५८ ॥

[मे] मुग्ध लोला लोक तेहनइ रजिमा भणी अविधिनी प्रससा कहीइ न करिवी । किमउ कुलवधू विचारइ वेश्या असतीना चरित्र^{१३} वषाणइ^{१४} अपि तु न वषाणइ । निम उत्तम उन्मार्गनी प्रशसा न करइ जि ॥ ५८ ॥

१ अवधि २ जि मे कयावि ३ पि सुवति ४ भोज ५ रजवा
६ कहीइ ७ करवी ८ ते

[सो] वीतरागनी आज्ञा पि ऊपरि वात कहइ छइ ।

[जि] किमा जीय जिनाज्ञा न भाजइ । किमा भांजइ । इसी व्यक्ति परइ ।

जिणआणाभगभयं भवसयभीआणं शेइ जीवाणं ।

भवभयअभीरुआण जिणआणाभजण कीडा ॥ ५९ ॥ ५

[सो] जिण० जिन वीतरागनी आज्ञानु भग तेहनुं भय तेह रहइ हुइ । भवभय० जे ससार बाधियानद भइ करी बीहता हुइ जीव तेह रहइ हुइ । ते इसिउ जाणइ । ' वीतरागनी आज्ञा भांजीनइ राषे घणा ससारमाहि रुलुइ । ' जे भवभय० जे ससारना भय यिहु नयी बीहता, धीरठपणु करइ तेहरइ जिन वीतरागनी० आज्ञानु, जे भाजिरउ ते श्रीडामात्र । लीराइ भाजइ । भाजता वार काई न लागइ ॥ ५९ ॥

[जि] भवसयभीयाण जन्मना शत तेह हता भीत बीहता जे जीव तेह जीवहइ जिनाज्ञानउ भग भय छइ । जन्ममरण दुख हता जे बीहइ ते जीव जिनाज्ञा न भाजइ । अनइ वली जे० जन्ममरण हता अभीरुव अभीहता तेहनी कीडा रामति जिणआणा-भजण जिनाज्ञालोपमय जि । जे दुख हता न बीहइ ते जिनाज्ञा भाजइ ॥ ५९ ॥

[मे] जिन वीतराग तेहनी आज्ञानउ भग तेहनउ मयु केहनइ हुइ जे भव ससारना भय तेहनउ विपइ बीहइ । अनइ जे ससार हता० बीहता नयी तेहनइ निनआणानउ भाजिवउ श्रीडामात्र । हेराइ भाजइ ॥ ५९ ॥

[सो] वली श्रीमन्मन्त्र रहता^१ गाढउ दुर्लम हुइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ आपणा जीउ देमहइ उपदेस दिइ छइ ।

रे जीव अनानीण^२ मिच्छद्विष्टीण नियसि किं दोस्ता^३ ।
अप्पा वि कि न याणसि नज्जइ^४ कट्टेण सम्मत्त ॥ ७० ॥ ५

[सो] रे जीव ! अनानी मूख मिथ्यात्त्वी तेहना दोष म्या भणी देखइ^५ आपणपू जि किसिउ न जाणइ^६ नज्जइ^७ सम्यक्त्व गाढइ कष्टिइ जाणइ रहइ । नेमिचद्र भडारी कहइ छइ । रे जीव ! तइ एवडइ कष्टिइ सम्यक्त्व लघउ । मिथ्यात्त्वी बापुडा किम रहइ^८ मन्मन्त्र रहता गाढउ दोहिलउ छइ । इम्यउ भाउ । १०

[जि] रे जीव ! हे आमन् ! अनानीण मूष मिथ्या-द्वष्टिना दोस्ता दोष कि नियसि किमु जोयइ^९ अप्पा वि आपहणी कि न याणसि न जाणइ^{१०} जउ कष्टिइ सम्यक्त्व नज्जइ जाणीइ । एतावना रे जीव ! मिथ्यात्त्वीना किमु दूषण जोइ^{११} आपहणी तू जाणइ ठि^{१२} जउ सम्यक्त्व जाणता गाढउ दुहेलउ ॥ ७० ॥ १५

[मे] नेमिचद्र भडारी कहइ । रे आलमन् ! अजानी मिथ्याद्वष्टि तेहना दूषण सिइ काजि जोइ छइ^{१३} अप्पा^{१४} आपणपइ तू किमु न जाणइ^{१५} जे तइ महाकष्टि करी समिक्त्व जाणित छइ । तउ मिथ्यात्त्वी बापुडा निम रहिम्यइ^{१६} ॥ ७० ॥

[सो] केतलाइ^१ मिथ्यात्व करताइ जिनधर्म वाडइ । तेह^{२०} आशय^१ कहि छइ ।

[सो] हिन फटइ छइ । मूर्खनउ^१ सिउ दोष^२, जे जाण छइ तेह अहकारि चब्बा वीतरागनी आण विराधना देखइ नही । ए वात फटइ छइ ।

[जि] निणिइ निनागु भनाइ ते कर्मपरवशता जीवनी कहइ ।

३ को असुआण दोसो ज सुअसरिआण चेअणा नट्टा ।
धिद्वी कम्माण जओ जिणो वि लद्धो अलद्ध^३ ति ॥ ६० ॥

[सो] को असुआण० अश्रुत अपद मूर्ख तेहनउ फउण दोस^४ ज सुअ० जेह भणी श्रुतसहित पाठना^५ धणी तेह^६ रहइ चेतना नाठी । जाणताइ करता ते वीतरागनी आनारहित उत्सूत्र १० प्ररूपइ । धिद्वी० पापिया कर्म जि रहइ धिग पडु जेहे कर्म इम जाणइ रोल्बीइ । जिणो वि० जीणइ करी वीतराग देव लाधु^७ अण लाधु थाइ । उत्सूत्र बोलतां परमेश्वर ओलपिउइ^८ अणओलपिउ^८ थाइ ॥ ६० ॥

[जि] असुआण० अश्रुत सिद्धातना अजाण तेहनउ किमु १५ दोष^९ अपि तु न कोई । फाइ^{१०} ज जउ श्रुतसहितनी नानवतनी चेतना नाठी, जिम वाइ हाथीयाई उडइ जइ तउ पूर्णी उडिवानउ किमु दूपण^{११} निहां पडिनई विरासीइ तिहा मूर्खनउ किमु दोष^{१२} जेह कर्म लगी श्रुतना जाणई भोल्बीइ तेह कर्महइ धिक्कार पडउ । किम^{१३} जउ जिणो वि श्रीनीतराग देव लाधुई अणलाधउ करइ । इति इसा २० फारणतउ कर्म नय ॥ ६० ॥

[मे] अश्रुत अपद तेहनउ फउण दोस^{१४} जउ किमइ श्रुत

१ मूर्खनउ २ फटइ छइ ३ एउले पाठ बीजी प्रतमांधी पदी गयेले छे
४ मे अलद्धो ५ पाठना ६ तेहइ ७ अथवा पापिया ८ लाधु ९ उलपिउइ
१० अणउलपिउ

[जि] जे मिथ्यात्त करइ सम्यक् वाळइ । तेह उद्दिता
करइ ।

मिच्छत्तमायतन वि जे' इह वळति सुद्वजिणधम्म ।
ते प्रत्यापि जरेण भुत्तु' उच्छति खीराई' ॥ ७१ ॥

5 [सो] मिच्छत्त० मिथ्यात्त करतइ हुता जे जीव
मुद्ध' धर्म वाळइ । जाणइ 'अहे सूधउ धर्म करइ ।' ते घत्था वि०
ते जाणे जरि अस्याट हुंता खीर खांड म्वाया वाळइ । ज्वर सरिप
मिथ्यात्त खीर सडे सरिपउ जिनयम । जिन जरि छनइ खीर खडादि
साधः हुता गुण न करइ, साम्हु असुग करइ तिम मिथ्यात्त
१० छन' पापधर्म गुणकारिउ न हुइ । सामहा विगधक थाइ ॥ ७१ ॥

[जि] ये श्राक मिथ्यात्त आचरतई हतउ शुद्ध निनध
उह ससारमाहे वाळइ ते घत्था वि जरेणं ते श्रावक जरिइ अस्त
हुता खीराई' क्षीर खांड घृत भुत्तु जीमिना भणी वोळइ । जि
जरिया पुरुषट्टइ घृतादिह्नउ जीमनउ विपप्राय हुइ तिम मिथ्यात्त
१५ अस्या हता सम्यक् धरइ तउ सामुहउ अतिचार दोष पामइ । ति
धारणि सपथा मिथ्यात्त मेल्ही सम्यक्त्व पालिवउ ॥ ७१ ॥

[मे] मिथ्यात्त आचरता हता केईएक जीव सूयउ जिनध
वाळइ । ते जाणे जरि अस्या हता खीर खांड घी प्रमुख भोग
निमिनउ वाळइ ॥ ७१ ॥

20 [मो] केनलाट मिथ्यात्त करताइ कहइ 'अहे असु
गुरुना श्रवक ।' तेह आशी करइ छइ ।

[जि] अथ पुगुण आशी कहइ ।

१ मे क २ पि मे भुत्त ३ मे खीराई ४ गुद्ध

जह केई सुकुलवहुणो सील मयलित्ति लित्ति कुलनाम ।
मिच्छत्तमायरन वि वहति नह सुगुरुकेरत्त ॥ ७० ॥

[सो] मि कोणक उचन कुलधू हु । सील आपणउ मडलउ फरइ विगधइ अनइ नाम कुलउ लइ । आपणइ कन्किइ करी कुलइ कन्क आप, 'अहं जमुका कुलनी ।' मिच्छत्त० तिम ३ केवलाइ मिथ्यात्त करता हुना कहइ, 'अहं जमुना मद्गुरुना श्रावक मिय ।' ते आपणइ तोपिइ गुरु रहइ दोष आणइ । इसिउ मार ॥ ७२ ॥

[जि] जह केवि निम केई सुकुलवहुणो सुदलि ऊपनी वधू मी आपणउ सील मडलउ करइ सील मानइ अनइ¹⁰ अनेइ मानसि पूतीना इती आरणा कुलउ नाउ लइ । 'अहे मोय कुलनी' इमु कहइ । तन् निगि दृष्टाति करी केटणक मिथ्यात्त समाचारताई इता सुगुरुकेरत्त सुगुरुना केणत्तणउ वइ । 'अहे जमुना सुगुरु अनई केई' इमु करता जावग सुगुरु पूरन लावइ ॥ ७२ ॥

15

[मे] निम केईएक भला कुलनी वधू सान आपणउ मडलउ फरइ अनइ ताम कुलउ लइ, 'अहे जमुनानी कुलधू' तिम जीम मिथ्यात्त आचरतउ हतउ कहइ, 'अहे जमुना सुगुरुना श्रावक ।' आपणउ तोपि गुनइ तोष आणइ ॥ ७० ॥

[सो] वली ण्ठ जि वात वइ छइ ।

20

[जि] अथ उक्तिन श्रावक उदिसी नेण्ट ।

१ म नइ २ जि मे कवे ३ ति म न गल ४ ति ललि ५ ते मिदित्त ६ सीगी ७ मडलउ ८ शणइ ९ करनाइ

ते सूया मार्ग स्वरा धर्मनइ विपइ सुखिइ चालइ । तेहनइ धर्मनु मार्ग
कुन्फमिइ जि आगइ चालिउ आवइ छइ । एह भणी तेहहइ धर्म करता
काई दोहिलु नही । जे पुण० पणि जे अमार्गि जाया विरुद्ध^१ अधर्म
कुलि उपना तेहइ केनए जे मार्गि चालइ धर्म करइ तेहन^२ कुलफमागत
धम न हुइ । ते ज धर्म कइ त चुज्ज ते आश्चर्य ॥ ८३ ॥ ५

[जि] सुद्ध निर्मलउ मार्गि जात उपना द्विनात जे हुइ ते
सुखिइ समाधिइ मली परिउ सुद्ध नि पाप मार्गि गच्छति चालइ ते
आश्चर्य नही । मला अनइ मलइ मार्गि हीडइ । चिम रोहणाचलि
रत्ननउ आश्चर्य नही । जिम रभाइ सोना हीमानउ आश्चर्य नही । पुण
जे अमार्गनात त्रिनातइ हुइ ते मार्गि मार्गि जइ चालइ तउ ते आश्चर्य ॥ १०
जिम उकरडी माहै रल उपनउ हतउ आश्चर्य भणी हुइ ॥ ८३ ॥

[मे] जे सूधइ मार्गि थारकनइ कुलि उपना सुखिइ समाधि
सूया मार्ग स्वरा धर्मनइ विपइ चालइ । पणि जे अमार्गि अधम कुलि
जाया अनइ जे धर्ममार्गि चालइ ते आश्चर्य कउनिय ॥ ८३ ॥

[सो] धर्म करता काई लगाइ विभ उपजइ । अनाण लोक^{१५}
ते लेई धर्म रहइ लगाइइ । ए बात कहइ छइ ।

[जि.] अथ पापिष्ट, मिथ्यात्वीनउ स्वरूप कहइ छइ ।

मिच्छतसेवगाण विग्घसयाह पि^१ विंति नो पावा ।
विग्घलवम्मि वि पडिण ददधम्माण पणचन्ति ॥ ८४ ॥

[सो] मिथ्यात्त्वना करन्हारन^२ अनेराइ संमारना काज-^{१०}
व्यवमाय विवाहादिकु करता विभ अंतराय दुख उपमर्गना सह पइइ ।

उत्सुत्तमायत वि ठवनि अप्प सुसायगत्तम्मि ।
ते रुद्धरोरघत्थ वि तुलति सरिस घणद्धेहिं ॥ ७३ ॥

[सो] उत्सुत्त० उत्सुत्त श्रीमर्जजपचन विरुद्ध फर्त्तव्य
आचरताट हुता आपणपउ सुथावकमाहि थापइ । 'अम्हेऊ श्रावक'
५ टम कहइ । ते निसिउ करइ । ते रुद्ध० ते रौद्र रौर' दालिद्रि ग्रम्याइ
हुता गाढा दालिद्रिइ हुता आपणपउ धनाढ्य महालक्ष्मीवत' सरीपउ
मानइ ॥ ७३ ॥

[जि] कईएउ उल्मूउ सिद्धात विरुद्ध वचन आचरता करताई
हुता धनाढ्य अप्प आपणपउ सुसायगत्तम्मि सुथावकआपणा
१०माहे ठवति स्यापइ । ते लोक रुद्धरोरघत्थ वि रौद्र दारिद्र्यइ
ग्रम्याई हुता धनाढ्य लक्ष्मीयत तेह मरीपउ आपणपउ गणइ ॥ ७३ ॥

[मे] उत्सुत्त आचरताइ हुता जीव आपणपउ थावकमाहि
थापइ । कहइ 'अम्हे पणि श्रावक ।' ते राद्र रौर दालिद्रिइ ग्रम्या
हुता आपणपउ धनाढ्य श्रीयत सार्थि तोलइ ॥ ७३ ॥

२५ [सो] लोकमार्ग अनइ धर्ममाग रहइ एवढउ विहरउ छइ ।
तेउ ते मूर्य न जाणइ । ए धात कहइ छइ ।

[जि] अथ जाण अनइ अजाणनउ आतरउ प्रकटइ ।

किवि कुलकमम्मि रत्ता किवि रत्ता सुद्धजिणवरमयम्मि ।
इअ अतरम्मि पिच्छइ मूढा नाय न जाणति ॥ ७४ ॥

२० [सो] किवि० केनगाइ आपणइ कुलममि जि राता कुला
चारनइ प्रगाहि पढ्या छइ । केनगाइ सूधउ खरउ जिनधर्म तिहा राता

१ मे पणिद्धेहिं २ रौर ३ लक्ष्मीवत ४ याणति जि मे याणात

तेउ पापी लोक ते बोलइ नही । विग्घलवग्भि० अनइ जे दृढ धर्म
 सरा धर्मना कचत्र्य करइ छद तेहइइ केती वारइ विघ्नलवलेश मात्र
 थोइअइ अतराय दुख पडइ तउ मूख लोक नाचइ, 'एहइइ धर्म
 करता आम हउ ।' इसिउ न जाणइ, 'निश्चिइ धर्म करता रुइ जि
 5 हुइ ।' धर्मइ^१ विघ्न रिळइ जाइ जिम आगि पाणी करी^२ उल्हाइ जि ।
 पुण मापु जाणिवउ । जु थोडउ अगाग्मात्र आगि हुइ तु चळइ, माग्नि
 पाणीइ ओट्टाइ । पणि दमानल ज्वलतउ हुइ तउ थोडई पाणी काई
 नही । जु मेघ बरिसइ घणउ पाणी पडइ तउ^३ ओल्हाइ । तिम थोडउ
 पाळिला भग्नु पापरुर्म थोडिइ धर्मइ विलइ जाइ । पुण कर्म घणउ हुइ
 10 अन^४ धर्म थोडउ हुइ तु तिम तीणइ धर्मइ घणउ कर्म विलइ जाइ ।
 पुण एक निश्चय जि जाणितु । ज धर्मि करी पाप विलइ जाइ जि ।
 जिम सूर्य थिरउ^५ अधारा नासइ जि । ज धर्म करताइ विघ्न नयी टलता
 ते थोडा धर्मनु कारण । एक मूख अजाणपणइ 'धर्मनइ दोषिइ' इसिउ
 कहइ, 'अम्हारइ बुलि ए धर्म सहइ नही ।' अनइ पापीहइ घणाइ
 15 दुख पडइ पणि बोलइ नहीं ॥ ८४ ॥

[जि] पावा पापिष्ट पुरुष मिथ्याच्चसेनकहाहइ विघ्न उपद्रव
 तेहना शतई पड्या नो त्रिति न बोल्इ । पुण दृढ धर्म निश्चल
 धममतहइ विघ्ननइ ल्पलेशिइ पडिंइ हतइ पणचति प्रवृत्त्येति ॥ ८४ ॥

[मे] मिथ्याच्चवना सेवणहारनइ विघ्ननां सह ऊपजइ पणि ते
 20 पापीइ मन नाणइ जि 'अम्हनेइ मिथ्याच्च सेवता विघ्न ऊपना ।' अनइ
 जे दृढधम खरउ धर्म करइ तेहनइ विघ्ननउ ल्पु मात्र उपनइ पापी लोक
 पचारइ ॥ ८४ ॥

छइ । कुलक्रम' काई नयी करता । इअ० ए विहुनइ आतरु ए एवडउ छइ । एकि कुलक्रम फरताइ नरक तिर्यचमाहि जाइ छइ । बीजा जिनधर्म आराधता देवलोकि अथवा मोक्ष' जि जाइ । एरडइ आतरइ छतइ ते मूढा मूर्ख युक्ति न्याय न जाणइ । कुलक्रमजिनु क्लामह लेई रहइ । सूधउ धर्म न करइ ॥ ७४ ॥ 3

[जि] किवि केईएक अजाण कुलक्रमि राता छइ । केईएक जाण जिणवरनइ मति राता । इअ ए आतरउ पिच्छह जोयउ । जाण अजाणनउ ए विहरउ देपउ । मूर्ध नाय न याणति न्याय न जाणइ । जे जिनमति राचइ ते युक्तायुक्तविचार जाणी जाण कहावइ अतइ मूर्ध न्यायरीति न जाणइ । कुलक्रमि रजीइ । साचउ-कूडउ न¹⁰ जाणइ ॥ ७४ ॥

[मे] केतलाइ जीव कुलक्रमि कुलचारि राता छइ । केतलाइ जीव सूधा चिनपरना मतनइ विपइ राता छइ । जाणइ छइ 'सूधा धर्म लगइ मुक्ति पामीस्यइ । पाइइ कुलक्रमि संसारमाहि भमीसिइ ।' एवडइ अनरि छतइ, जोउ, मूर्ख नाणित जे न जाणइ । कुलक्रमनउ¹⁵ क्लामहु न मूरइ ॥ ७४ ॥

[जि] अथ अजाणनी वात विहु गाथाइ करी कहइ ।
सगो वि जाण अहिओ तेसिं घम्माइ जे पकुञ्चति ।
मुत्तूण' चोरसग करति' ते चोरिअ पावा ॥ ७५ ॥

[मो] जीह मिथ्यात्वी दर्शनीनी सगतिइ अहितकारिणी²⁰ करिवा' नावइ । पुण तेहनउ' उपदेसित जे धर्म ते करइ । मुत्तूण०

१ 'कुलक्रम जाई छई' एगो पाठ सो नी बीबी प्रतमांधी परी गयेल छे
२ मोक्षि ३ जि मोक्षण ४ जि करति मे करिति ५ करिवा ६ तेहु

[सो] धर्म सहित दुःखरू रूडत । मिथ्यात्वसहित सुखइ विरूड । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ सम्यक्त्वधारकनी दृष्टाई त्रिहु गाथा करी बोल्इ ।
सम्मत्तसजुआण विग्घ पि हु होइ उच्चवम्मरिच्छ' ।
परमुच्छव' पि मिच्छत्तसजुअ अइमहाविग्घ ॥ ८५ ॥ १

[सो] सम्मत्त० जे सम्यक्त्वइ करी सहित छइ, खरउ धर्म आराधइ छइ तेहइ केती वाग्ग विघ्न दुःख पडइ ते दुःख उत्सव सरीपु हुइ । ते तीणइ दुःखिइ करी पाठिणा भवना पापकर्म क्षपीनइ खरा । धर्मनइ प्रमादिइ आगलि मनुष्यना देवलोचना सुख प्राप्तइ । तेह भणी उत्सव समान । परमुच्छव पि० मिथ्यात्वि० करी जे सहित छइ तेहइ केतीवारइ परम उत्सव हुइ । राज्य ऋद्धि लक्ष्मी भोगमुख प्राप्तइ । तेहइ अतिमहाविघ्न जाणियु' । तेह' ऋद्धिनइ प्रमाणि ते मिथ्यात्व आरभ पाप करी आगलि नरकतिर्यंकादिक दुःगतिइ जाइ । ससारमाहि रुइ । तेह भणी तेहनु उत्सव महाविघ्न समान कहीइ ॥ ८५ ॥ २

[जि] सम्यक्त्वसंयुक्त पुरपणइ विघ्नइ हु निश्चइ उत्सव सदस्य महोत्सव सरीपउ हुइ । परमुच्छवमि प्रष्ट महोत्सवमाहे मिथ्यात्वसंयुक्त हतउ अइमहाविघ्न अतिमहाविघ्न हुइ । एतणइ सम्यक्त्वधारकहुइ सम्यक्त्वइ जु तत्त्व । माया काई नही ॥ ८५ ॥

[मे] सम्यक्त्वइ करी जे सहित तेहनइ किवारइ विघ्न० उपजइ तउ उत्सव करी मानइ । काई कहइ ? ' भजातरि कर्म क्षय गया बली नही आणइ ।' तेह भणी उत्सव समान मानइ । बली जे

ते चोर अन्यायी पापानउ ससर्ग मेल्हीनद आपणइ जि चोरी करइ ।
 पार्पाया जे मिथ्यात्वीनू समग न करइ, पुण मिथ्याचन करइ ते जाणे
 चोग्नी संगति न करइ, पुण आपणपइ ति चोरी करइ छइ ॥ ७५ ॥

[जि] अजाण जेहानउ ससर्ग जहित विख्याकारण हुइ तेसिं
 तेहना जहितनारकना उपदिम्या जे पुरुष धर्म करइ ते पुरुष पावा
 पापिष्ट हता चोरानउ ससर्ग मेल्ही आपटणी चोरी करइ ॥ ७५ ॥

[मे] जेहानउ ससर्गद जहितकारीउ हुइ अनइ तेहना भाप्या
 धर्म जे करइ ते केवडा जाणिस ? चोरानउ ससर्ग मूनीनद आपणइ
 डीलि पापि चोरी करइ । ते एवडा जाणिस ॥ ७५ ॥

१० जत्त पसुमहिसलकरा पव्ने होमति पावनयमीण ।
 पूअति तपि सद्दा हा हीला वीयरायस्स ॥ ७६ ॥

[मो] जीगई पर्वि आमो चेत्रनी पापमय महानउमिइ पशु
 बोकडा भइस्ताना लक्ष होनइ मिथ्यात्वी राजादिक । पूअनि० केनलइ
 श्रामइ हुई ते पर्व पूजइ मानइ । गौरजपूजनादिक करइ । ते पर्वना
 १५ करणहार ब्राह्मणादिक रहइ पुण पूनइ । दागादिक दिइ । हा
 हीला० जहो ! केवडी ए हीला अरना आशातना वीतरागइइ । एर
 जीनदयामूल वीतरागनू धम आराधीइ अनइ परइ महाहिसामय पर्व
 मानीइ । ए आनालोप मणी अरनाइ कही ॥ ७६ ॥

[जि] जत्त जिणि पर्वि पापनयमीइ दिअसि सामाय
 २० देहाडीनइ दिनि पशु ठाला महिमु भडमा तेहना लक्ष हम्मनि होमी
 विणासीइ । तिणि दिहाअ श्रावक जइ पूनइ तउ श्रीवीतरागनी ही

१ पुण मिथ्याचन न करइ एउने पाठ सोनी धीजी प्रतमाधी पडी
 गयेन छ २ जि मे हम्मात ३ वीतरागन ४ ए नडी ५ अवरु

मिथ्यात्वि करी सति उद्देश्ये एव उन्मवद् अतिविज्ञ करी
मानिर । काद् ' तीग उन्मये मिथ्यात्त्वना कारण वतां हुद् । अन्व
ते मिथ्यात्त्वना प्रमाणि नती उद् । तेद् भणी उन्मय विज्ञ मन्त
गिगाड ॥ ८७ ॥

५ [सो] जेद्द पमना दृगड हुद् तेद्दद् देवद् प्रमाण करद् ।
ए वात उद् उद् ।

उद्दे वि नाण पणामद् हीनो निययरिद्विवित्थार ।
मरणते वि हु पत्ते मन्मत्त जे न छडुनि ॥ ८६ ॥

[सो] इद् तेद्दद् प्रमाण करद् । हीनो० आनी देवता
' नान्यत्त्वना' विन्तार निन्तड हुनड' । जाणद् ए अदि' कर्द् करी ।
ईणी' अदि' मोगण काद् नदी । मरणते वि० मरणतिद् पडुन
जे गान्द संरति पडिड आणउ सम्यक्त्व न छाद्, मिथ्यात्त्व न
करद् तद्दद् इद्दिक् देवद् मन्मत्त ॥ ८६ ॥

[जि] निययरिद्विवित्थार आपणी लक्ष्मीनउ विन्तार
' हीनउ निन्तड हुनउ इद् तद् मन्मत्त्वधारक पुरपद्द प्रानद् ।
तेद्द देहाद् : मणान्द पामिद् हुतद् जे सम्यक्त्व हु निश्च न
छाद् । ताणेन्यत्र द्वितीयाद् प्राहुनवात् ॥ ८६ ॥

[मे] इद्द तीग पुरुषानद् प्रमाण करद्, आनी विद्विनउ
विन्तार अवहेलनउ हुनउ । पणि ते जीव केवहा छद् : जे मरणति
मन्मत्त्व छाद्द नहीं ॥ ८६ ॥

[सो] वली एह जि वात कहद् छद् ।

१ विद्विन २ हुनउ नदी ३ विदि ४ इण्ड ५ पद्द

खेदे हीन्हा । जे श्रावक श्रीवीतरागदेवनद मानइ अनइ मिथ्यात्त्व पुण साचइ ते श्रावक श्रीवीतरागनी अवहेला करइ । तिणि कारणि ते श्रावक केई अनाण जाणिवा ॥ ७५ ॥

[मे] जिहा आसोजी चैत्री पावनरमीड पशु छाला महिस भइसा तेहना लग लग हणीइ अनइ तीणइ दिहाटइ श्रावक हुउनइ ५ गोत्रनी पूण कइ तउ हा इसइ खेदि तीण वीतरागनी हीला कीधी । परमेश्वर अरहेल्या ॥ ७६ ॥

जो गिहकुटुबसामी सनो मिच्छत्तरोवण^१ क्कुणइ ।
तेण सयलो वि असो पस्सित्तो भवसमुद्दम्मि ॥ ७७ ॥

[मो.] जे कुटुबनायक^१ मूलाउ हुई काइ मिथ्यात्वनउ बो^२ १० धरि रोषइ थापइ । पाठिनाइ सनानीजा सघला तेहना आप्या भणी मूकी न सकइ । तेण तीणइ आपणउ सघलुइ केडिउ वस ससार समुद्रमाहि घातिउ पाड्या^५ भणी ॥ ७७ ॥

[जि] जे गृहकुटुबनउ स्वामी धणी सनो हतउ मिथ्यात्त्व रोवण करइ । तेण तिणि गृहकुटुबसामीइ सयलो वि सघलउइ वस^३ १५ भव समार तेहन्पिउ समुद्र तेहमाहे पस्सित्तो प्रक्षिपउ घालिउ ॥ ७८ ॥

[मे] जे पुरुष गृहस्थ कुटुबनउ स्वामी होईनइ आपणा सनानीयानइ मिथ्यात्वनउ आरोगण करइ तीणइ सघलुइ वसु समार समुद्रमाहि प्रक्षेपिउ घातिउ ॥ ७७ ॥

कुडचउत्थी नवमी नारसी पिंडदाणपमुहाइ ।
मिच्छत्तभावगाइ क्कुणति तेसि न सम्मत्त ॥ ७८ ॥

[सो] कुडचउत्थी० विणायगचउत्थि महानउमि वत्सवारसि
 बीगइ एन सीअम्मत्तमि द्रोणदुमि शिवरत्ति नागपचमि काजलीत्रीत्र
 आमलीइयारसि अबिलोअपाचमि' अमास पट्टीजागरण नरमती पितर
 पिंडदान नरोदकि पीपलजलान अनावस जमाई भोजनप्रमुत्त
 5 मिच्छत्त० अनेक एहवा' मिथ्यात्त्वपोषण परं करइ करावइ ।
 तेसिं तेहहइ इसिउ जाणिवउ । सम्यक्च नथी ॥ ७८ ॥

[जि] जे श्रावक कुडचतुर्यी महानवमी अनइ वारसि तेहना
 पिंडदानप्रमुत्त मिथ्यात्त्वधर्मता भावक पोषक मिथ्यात्त्व कइ तेसिं
 तेहां श्रावकहूइ सम्यक्त्व हीं । लगाइ मिथ्यात्त्वनउ टालेश करइ तु
 10 अजाण इति भाव ॥ ७८ ॥

[मे.] कुडचउथि कहता विणाइगचतुर्यी महणिमनीं नवमी
 वत्सवारसि सीयलसप्तमी द्रोणदुमी शिवरात्रि नागपचमी काजलीत्रीत्र
 आमलीइयारमि अबिलोआपचमी अमास पट्टीजागरण प्रमुत्ते पिंडदान-
 प्रमुत्त जे मिथ्यात्त्वाइ भावक उपनावणहार जे करइ तेहनइ सम्यक्त्व
 15 नही ॥ ७८ ॥

[सो] केतलाइ उत्तम आपणउ कुडव मिथ्यात्त्वतउ काइ ।
 ए वात कहइ छइ ।

[मे] अथ गणनी वात कहइ ।

जह अइकुलम्मि रुत्त सगड फड्ढति केवि धुरधवला' ।
 20 तह मिच्छाओ कुडव अह विरला केवि कड्ढति ॥ ७९ ॥

[सो] जिम कादमना गाढा कलमाहि गाडउ खूतउ हुइ ते

रागविहवा' वि सविहवा' सहिआ सम्मत्तरयणराएण ।
सम्मत्तरयणरहिआ सते वि घणे दरिहत्ति' ॥ ८८ ॥

[सो.] गयविहवा० गतविभव लक्ष्मीरहित दालिद्रीइ' छता
तेइ सविहवा सद्रव्य मलक्ष्मीन जाणिवा, जे श्रीमय्यक्व
५ रूपिइ रत्नराजि महाग्नि अमूव्यक रनि करी सहित हुइ, तरउ
सम्यक्व पालइ । सम्मत्त० जे रायवचरूपिइ रनि करी रहित
छ, जेइइ हीयइ सम्यक्व गयी, मिय्यान्वीइ नि छइ सते वि०
ते लक्ष्मी' घणीइ हती गान्धि' जि' जाणिवा । गालिद्रीइ जु सम्यक्व
पालउ तउ आवतइ भवि इन्द्रादिक' महर्द्धिक देवादिकपदवी प्रामइ ।
१० आइ चक्रत्यादिक महर्द्धिक जु मिय्यात्वी हुइ तु आवतइ भवि
भरुत्तिर्यन्वादिक हीनगतिइ ग्यउ हतउ दुखीउ थाइ, महानालिद्री'
थाइ । इसिउ भान । एइ न भणी इम कहिउ धीहेमाचार्य—

जिनामविनिर्मुक्तो मा भूय चक्ररत्नपि ।

म्याक्केठोऽपि धरिद्वोऽपि निनधमाधिवासित ॥

१५ [जि] गतविभवइ निर्द्रव्यइ हूता सविभव सद्रव्य हुइ, जे
सम्यक्वरत्नराज तिणि करी सहित हुइ । एनाउता जे पुरुष सम्यक्व
रूपिउ रत्नराज चिन्तामणि धरइ ते पुरुष निर्द्रव्यइ सद्रव्य हुइ
अनइ जे सम्यक्व रत्न तिणि करी रहित हुइ ते पुरुष सते वि घणे
छतइ धनि दरिद्री कहीइ । तिणि कारणि सम्यक्व मोटउ रत्न ॥ ८८ ॥

२० [मे] ते पुरुष निर्द्धनइ यका धनउत जाणिवा जे सम्यक्व
रूपीइ रत्नराजिइ सहित हुइ । अनइ जे सम्यक्वरत्न तिणि करी

१ गदविहवा २ जि सुविहवा ३ दरिहत्ति ४ दारिद्रीइ ५ सम्यक्व
लक्ष्मीवंत ६ लीकृमी ७ दालिद्री ८ जि' नयी ९ जाणिवी १० 'इन्द्रादिक
महर्द्धिक ११ आवतइ भवि एग्लो पाठ भीमी प्रतमांभी पही गयेने के ११ महा
दारिद्री

केतलाद् धोरी धरल मूलगा वृषभ तेह जि फादड । बीने वृषभे न फादई ।
तह० तिम मिथ्यात्वरूपिआ फादममाहि कलिउ आपण^१ कुटुब
विरला० के एक समय उत्तम जाइ फरी फादड । मिथ्यात्व छडावी
साचद धमि लगाटद^२ ॥ ७० ॥

[जि] निम केईएक धरल धोरी मूलगा मवरल अनिष्टमना
कलामाहे खुत्त खूतउ हतउ सगड गाडउ फादद तह तिम इह
संमागमाहि मिला केईएक पुरुष मिच्छाओ मिथ्यात्व हतउ कुटुब
परिवार फादड । माचड जिनधम लगाटउ ॥ ७१ ॥

[मे] निम अनिष्टण फादममाहि खूतउ गाडउ केईएक धोरी
वृषभ हुद तेही नि फादी मरइ, सामान्य वृषभ फादी न सकड तिम^३
मिथ्यात्वरूपीया कलामाहे कुटुब खूतउ थरउ इहा निरला फोईएक
फादड ॥ ७२ ॥

[सो] केतलाएक धीतराग सजन सगडदेवने लक्षणे^४ सहितइ
न ओल्यइ^५ । ए वान कदइ छइ ।

[जि] अथ श्रीसर्वदेवनी अप्राप्तिकारण कहइ ।
जह बहलेण सूर महियलपयड पि नेय पिच्छति ।
मिच्छत्तस्म^६ य उदण तहेव न निअति जिणदेव ॥ ८० ॥

[सो] निम वानलि आडइ छतइ पृथ्वीमडलमाहि प्रकट^७
सूर्य न देखीइ तिम मिथ्यात्वरूपिद^८ वानलि आडइ छतइ तिनदेव
श्रीसर्वदेव विश्वमाहि प्रकट प्रमाणड छनु न निअति न देपइ ॥ ८० ॥

[जि] जह जिम वारलिड करी महियलपयड पि
जगत्रयहइ प्रत्यक्षइ हतउ सूर सूर्य नेय पिच्छति न देपइ तहेव

१ आपणु २ लागई ३ लक्षण ए ४ उरगइ ५ मिच्छित्तस्म ६ प्रकट
७ मिथ्यात्वतइ उदना मिथ्यात्वरूपिइ

रहित धनि करी सहितइ हता ति दालिद्रीड जिं जाणिया । कांड १
 । मिध्यात्वनइ प्रनाणि संमारमाहि रलित्स्वई ॥ ८८ ॥

[सो] जिनधर्मना जाण लक्ष्मीइ पाहि धर्म अधिकउ देखइ ।
 ए वात कहइ छउ ।

[जि] अथ श्रीवीतरागनी पूजा साची वणवइ ।

जिणपूअणपत्थावे जइ फो' मङ्गलाण देइ धणकोडि ।
 मुत्तुण त असार सार विरयति जिणपूअ ॥ ८९ ॥

[सो] जिणपूअण० गाढा धर्मना जाण श्रावकहइ चेउमांस
 पजूसणादिकु पर्वि आविइ जिन वीतरागनी पूजा स्नात्र पडिकमण
 पोसहादिकनइ प्रस्तावि अरसरि जइ फो धन द्रव्यनी कोडि दिइ, इम^{२०}
 कहइ 'ए मूकीनइ अमकइ थानकि आवि, अमुकउ व्ययसायादिक
 कात्र करी तुहुइ लक्ष्मीनी कोडिनउ लाभ हुम्यइ ।' मुत्तुण० तउ ते
 जाण थावक ते द्रव्य असार जाणता मूकीनइ सार जिनपूजाइ जिं
 करइ । जिनधर्मइ चि आराधइ । इसिउ जाणइ 'ईण द्रव्यइ एकइ
 भव सुखिया थदसिइ । अथना नहीं थईइ । पुण वीतरागनी पूजाइ^{२०}
 जिनधर्म आराधतां निश्चइ आगटि अनत सुख लाभिसिइ जि' ॥ ८९ ॥

[जि] जइ कोईएक जिनपूजननइ प्रस्तावि श्रीवीतरागदेव
 पूजानी वेलाइ श्रावकहइ धननी कोटि दिइ, त असार निम्नार ते
 धननी कोडि मेल्ही सार प्रधान अनती धनी कोटि देणहारि जिनपूजा
 विरचइ करइ ॥ ८९ ॥

[मे] जिन वीतरागनी पूजानइ अधिहारि जे कोई श्रावकइ
 धननी कोडि दिइ अनेक लाभ दिपावइ, पणि ते थावक असार धन

तिम जि मिथ्यात्वनइ उदइ जिनदेन श्रीसर्गेनदेव न नियति १
 पश्यन्ति न देखइ । मकल्लोरुप्रत्यक्ष सूर्य सरीपउ सर्गेज्ञेन । आइ
 वादलमरीपउ मिथ्यात्त्व छइ । तिणि कारणि मिथ्यात्त्व्यापिउ जीय
 श्रीसर्गेज्ञदेव सकल आराध्यपणइ न देखइ ॥ ८० ॥

5 [मे] जिम वात्ल फरी सूर्य पृथ्वीमडलमाहि प्रगट जाणीतउ
 हूतउ पणि दीमइ तहीं तिम मिथ्यात्त्वरूपीइ वात्लि आइइ हूतइ जिन
 धीतरागदेव न देखइ ॥ ८० ॥

[सो] मिथ्यात्त्वीनउ जन्म वृथा । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ मिथ्यात्त्वीना जन्मनी निरथरुता कहइ ।

10 किं सो वि जणणिजाओ जाओ जणणीइ कि गओ बुद्धिं ।
 जइ मिच्छरओ जाओ गुणेसु तह मच्छर वहइ ॥ ८१ ॥

[सो] कि सो० ते पुरुष माइ का जाइउ ? अथवा जु
 जाइउ तउ वृद्धिइ का गिउ ? जइ० जउ मिथ्यात्तरत कूडा देवगुरु
 धर्मनइ विपइ आस्थात हुउ । अनइ गुणवत साचा धर्मना आराधक
 15 तेह ऊपरि वली मच्छर वहइ । पंतलइ तेहनउ जन्म निरर्थक ।
 'सुहिआ' पृत्री रहइ मारइ जि करणहार । तेहनी वृद्धिविस्तार सहइ
 अफजे इसिउ भाव ॥ ८१ ॥

[जि] ते पुरुष काइ जणणिजाओ माताइ जणिउ ?
 जउ माताइ जमिउ कि गओ बुद्धिं तउ वृद्धि का गउ ? मोटउ
 20 फां हउ ? पहिलउ जन्मीतउई नही । जइ विचारइ जणिउ तउ
 वधारिउ काइ ? इति भाव । काइ ? जइ मिथ्यात्तरत जाओ हउ

मूलीगइ मार पशान एकड जि चिननी पूजा करइ । काइ २ धन लगी एकइ
जि मनना सुख हुइ । आ' जिनपूजा लगी अनता सुख पामीइ । ए
भावु जाणियउ ॥ ८० ॥

[सो] धीतरागनी पूजा' साचइ भाविइ' नि कीजती गुणहेतु'
१ हुइ । ईष्टइ न हुइ । ए वात कइइ छइ ।

[जि] अथ जिनपूजानउ गुण कहइ ।

तित्थयराण पूजा सम्मत्तगुणाण कारण भणिआ ।
सा वि य मिच्छत्तयरी जिणसमए देसिअ अपूजा ॥ ९० ॥

[सो] तित्थयराण० तीर्थकरदेयनी पूजा साचा परमेश्वरा
१० गुण जाणी । परमतत्त्व भणी देपतउ, इहलोक परलोकना फल अण
वाडनउ, कर्मक्षयजिनी बुद्धिइ एनामचिचिइ करइ तउ सम्यक्त्वनउ
करण' थाइ । सम्यक्त्व निम' करइ अनइ अनत सुखहेतु' हुइ । सा
वि य० अनइ तेह नि धीतरागनी पूजा, 'परमेश्वर ! तु मुझहइ
साजउ करिजे । अथमा अद्धि पुत्रादिक' संतानादिक देने । एतलाणक
२३ द्रव्यनी पूजा तुझहइ करिमु । ' ज' जिणवर इम मानी ईंठी करइ । जे'
पूजा चिनशासनि मिथ्यात्त्वनी करणहार कहीइ ते देवगत मिथ्यात्त्व
कहीइ ॥ ९० ॥

[जि] तीर्थकरनी पूजा सम्यक्त्वना गुणनउ कारणरूप भणी
निम जिम चिनपूजा कीनइ तिम तिम सम्यक्त्वना गुण उपनायइ । सा
२० वि य ते जिनपूजाइ जिणसमए श्रीजिनशामनि मिथ्यात्त्वसहित
हती अपूजा देसिअ कही । जइ जिनपूजा मिथ्यात्त्वमहित करइ तउ

१ पूजाइ २ भावि ३ जि' नही ४ गुणहेत ५ अणगच्छिनउ
६ कारण ७ पुत्रसंतानादिक ८ जं जिणवर' नही ९ त

तह तिम जि गुणवत ऊपरि मात्मर्य सद्धेपभाय वहइ । जइ जन्मिउ न हुत, जइ मोटउ न थाउ तउ आगलि जातउ मिथ्यात्त्वी न हुत । अनइ वली गुणवत ऊपरि मात्सय न वहत । तिणि कारणि विद्वेपी भणी मिथ्यात्त्वीना जन्मनउ फाई नही ॥ ८१ ॥

[मे] ति पुरुष जननी माताइ काइ जायउ ? अनइ जउ 5 जायउ तउ वृद्धिइ फाइ गयउ ? जइ मिथ्यात्त्वाइ विपइ रत आम्थावत हउ तिम गुणवत धर्मवत ऊपरि मत्सय वहइ । एतइ तेहनउ जन्म फोरु ॥ ८१ ॥

[सो] जिम जिम मिथ्यात्त्वि वाहिउ जापर सेपलनी पूजा फरइ तिम तिम ते घणउ^१ घणेरडउ व्यापीइ । अनइ हठ धर्म जे हुइ^{१०} तेइ रहइ फाई करी न सकइ । ए वात फहइ छइ ।

[जि] अथ नीचानउ म्वरूप कहइ छइ ।

वेसाण घदियाण य माहणहुयाण जकरसिस्साण ।
भक्ता भक्खट्टाण विरयाण जति दूरेण ॥ ८२ ॥

[सो] वेसा० वेस्या नगरनायिका^१ बदी भट्ट ब्राह्मण^{२५} कुन्नुत्प्रमुन्व डुब गायन जापरसेपर गोत्रज पितरप्रमुन्व देहरडा एतला ऊपरि जे भक्ता हुइ तेहहठ द्रव्य पूरइ । पूजा जिमण लपसी^३ बली बाकुनादिक करइ । ते लीक वेस्या^४ भट्टादिक रहइ भक्ष्यम्यानरु सदैव थाइ । बलि बलि वरसि वरसि पवि पवि सदैव वाउद । बलात्कारिइ, लि^५, दापउ थापद, लक्ष्मी नीगमइ । विरयाण० अनइ जे विरत हुइ,^{२०}

१ घणउ^१ नथी २ नाइका ३ पालसी ४ तीइ बेरया ५ पवि पवि नथी

कीचीइ अणकीची, जेह भणी सम्यक्त्वगुण न उमजावद । मिथ्यात्त्व-
सहितपणातउ तिहा जिहा मिथ्यात्त्व तिहा, तिहा सम्यक्त्व नही,
जिम संगमादेवमाहे । अनइ जिहा जिहा सम्यक्त्व तिहा तिहा मिथ्यात्त्व
नही, जिम श्रेणिकमहाराजमाहे । तिणि कारणि मिथ्यात्त्व मेल्ही तिनपूजा
करिची, जिम सम्यक्त्वगुण उमजावद ॥ ९० ॥

[मे] तीर्थकरनी पूजा सम्यक्त्वना गुणनइ कारणि भणी । बली
तेहइनि पूजा जिनसमय-अनुपदिष्ट अदेणित अविधि कीची मिथ्यात्वनइ
कारणि हुइ ॥ ९० ॥

[सो] परमेश्वरनी आज्ञाइ जि तत्त्व । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनतत्त्वनउ जाणणहारनी वात कहइ । १०

ज ज जिणआणाण न चिय मच्चउ' न मच्चण सेस ।

जाणइ' लोअपवाहे न हु नत्त सो य नत्तविऊ ॥ ०१ ॥

[मो] ज ज जिण० जे उत्तम, जे जे बोल धीनरागनी
आनाइ करी सहिन हुइ तेह नि मानद । न मच्चण० धारुतउ धीजउ
काइ न मानइ । जाणइ लोअ० इसिउ जाणइ, 'लोअप्रवाहमाहि'
काइ नथी ।' यतो लोकेऽप्युक्त—

गतानुगतिको लोको न लोक पारमार्थिक ।

पश्य ब्राह्मणमूर्खेण हारित ताम्रभानम् ॥

एहनु' अर्थ । एक मूर्ख ब्राह्मण नदीइ पुण्यहेतु स्नान करिवा लागउ ।

१ जि मन्नेइ २ गाथानो आ उत्तराप जि मां नधी लक्षियानी मूलची पची
गयने छ ३ 'एनु' अर्थ 'धी मांवी' णिग धीवा' सुधीनो पाठ धीवा प्रतमा नीच
प्रमाणे प्रकारातरे छे—एक मूर्ख ब्राह्मण नदीइइ गुणहेतु स्नान करिवा
त्रिभाणउ घुलिनउ दग अहिनाण करी नदीनइ तां सातिउ । नदीमाहि

जे ब्रह्मचारी त्रिपयनिवृत्त' हुइ, ते' आपणा कीर्ति न याउइ, जे इद
सम्बन्धना घणी हुइ, जे ट.सिड आनर' फातर न हुइ, एहा इद
धर्मना घणी'हूँ ँ वेद्यादिकु मधगइ दृग्गि जाइ । आपणु लाग फाई
देखइ नहीं । एह भणी तेहहूँ उचाटइ पुण फाई न करइ । माम्हा
प्रमत्त थाइ ॥ ८२ ॥

[जि] वेद्या तणा, वदी भाट तणा, माहण ब्राह्मण तणा,
डुन तणा, यक्षभूतादिकु तणा, भक्ता भक्तिकरणहारइ नि पुरुष
भक्तरपट्टाण मत्स्यम्यानन । एतहूँ जे वेद्यादिकहूँ भक्ति करइ तेह
नि भक्तिकरणहारहूँ देणहारहूँ वेद्यादिक पाइ । विरयाण निरत
दूता जणमानता पुरुष हता दूर वेगला जाइ नामइ । विरयाणमित्यत्र
पचम्यर्थे पक्षी प्राट्टतत्वात् ॥ ८२ ॥

[मे] वेद्या वदी भाट ब्राह्मण इव यक्ष सेप धारणा
गोत्रन पितर प्रमुग ऊपरि जे भक्ता हुइ, बलि बाकुलि लापसीइ करी
भक्ति करइ एतला भक्तिना करणहारजाइ साइ । वरसि वरसि ते
चाउ करइ । आइ ईया हता जे निरता छइ ते हता वेद्यादिक दृग्गि
जाइ । तेहनइ फाई पाइउ करी न सकइ ॥ ८२ ॥

[मो] अकुलीन धम करइ ते आश्चर्य । ँ याते कहइ छइ ।

[जि] अथ कई एकरूपर्मा जीवनउ स्वरूप प्ररूपइ ।

सुद्वे मग्गे जाया सुद्वेण गच्छति सुद्धमग्गम्मि ।

जे पुण अमग्गजाया मग्गे गच्छति त चुज्जं ॥ ८३ ॥

[सो] सुद्वे० जे उद्धि मार्गि उत्तम सुधायननइ कुलि जाया

१ निवृत्ति २ जे आपणी घणी हुई' एहो पाठ सो नी बीनी
प्रतमाथी पदी गयो छ ३ आविइ

पृष्ठि बीजा लोम्ना सहस्र लम्ब आवता हता तीणइ धूलि डिग करतउ
 दीठउ । तीण लोके चातविउ ' धूलिनउ दग करी नाहीइ तउ घणउ
 पुन्य हुइ ।' मविहु लोके धूलिना डिग कीया । ते मूर्ख ब्राह्मण नदीमाहि
 नाही आपाइ अहिनाणि त्रिमाणु जोग लागउ । देखइ तउ दिगला
 ५ महस्र लम्ब हुआ । त्रिमाणू लम्ब नही । इतिउ भाव । जे इम जाणइ
 सो य तत्तविऊ तत्त्वनु' जाण कहीउ ॥ ९१ ॥

[जि] शेष थाकतउ जिनाजारहित धर्म न मानइ । वली
 लोकरुप्रवाहि तत्त्व नही इसु जे जाणइ सो य तत्तविऊ ते श्रावक
 तत्त्ववित् तत्त्वनउ जाण ॥ ९१ ॥

१० [मे] जे जे वचन वीतरागनी आज्ञाइ सहित हुइ तेईइ जि
 मानइ, शेष थाकतउ कोई न मानइ । इसउ जाण जि लोकरुप्रवाहमाहि
 तत्त्व कोई नही इम जाणइ ते तत्त्वनउ जाण ॥ ९१ ॥

[सो] वली एह जि बात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनानाम्बरूप कहइ ।

१५ जिणआणाण धम्मो आणारहिआण फुड अहम्मु ति ।
 इअ मुणिऊण' तत्त जिणआणाण फुणाह धम्म ॥ ९२ ॥

[सो] जिणआणाण० वीतरागनी आज्ञाइ ति' चारता

अगाठ । पृष्ठि बीजा लोम्ना सहस्र लम्ब आवता हता तीणइ धूलिनउ डिग करतउ
 दीठउ । तीणइ गकिइ चातविउ । धूलिनउ डिग करी नाहीइ तउ घणउ पुन्य
 हु' । सवे लोके धूलिना डिग कीया ।

१ ते तत्त्वनु २ जि नी प्रतमां चेम गाथानो उपराय नथी तेम ते उपरना
 बागवबोधनी पण एक धंकि पधी गयेने छे एम्हे गाथानो पूर्वाधनो पूरो अनुवाद
 मळतो -थी ३ मणिऊण जि मे मुणिऊण य ४ 'जि' नदी

धर्म हुइ । आज्ञारहितपणइ स्फुट' प्रकटपणइ' अधर्म हुइ । उक्त
मुणिऊण० इसिउ तत्त्व जाणीनइ वीतरागनी आनाइ जि हे न
जीव' । धम करउ ॥ ९२ ॥

[जि] श्रीचिनानाइ जिनधर्म छइ । आज्ञागठिनइ न्हि उक्त
अधर्म पापइ ति हुइ । इअ इसु तत्त्व रहम्य मुणीन' ह्य' न्हि
भविक लोकी ! जिननी आनाइ धर्म करउ ॥ १२ ॥

[मे] जिननी आज्ञा पालता' धर्म हुइ । उक्त' न्हि
कता' स्फुट प्रकट अधर्मइ जि हुइ । इसउ जाणीनइ उक्त' न्हि
वे जिननी आज्ञाइ धर्म करउ ॥ ९२ ॥

[सो] जे गुरनइ जोगि' छतइ धर्म न्हि करत' न्हि
कहीइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] तत्त्वना जाणनी वात कही न्हि करत' न्हि
छइ ।

साहीणे गुरुजोगे जे न हु निसुणति न्हि करत' ।
ते दुष्टचिह्नचित्ता अडसुहडा भवन्ति ॥ १३ ॥

[सो] -साहीणे० सद्गुरुगोप' न्हि करत' न्हि करत'
आपणइ भाग्यइ करी लागउ छइ । तीस' इअ' न्हि न्हि' न्हि' न्हि' न्हि'
सुणइ न साभलइ सरा धर्मनउ विरु' न्हि' न्हि' न्हि' न्हि' न्हि'
पूडी परीडी लिह मही ते दुष्ट' ते दुष्ट' न्हि' न्हि' न्हि' न्हि'
सुभट समासनइ भइ करी रहित त' न्हि' न्हि' न्हि' न्हि'—

१ न मे दिष्टे परे लोप कक' न्हि' न्हि' ।

द्वयागया इमे कथा' न्हि' न्हि' न्हि' न्हि' ॥

पुण्ड्र' तोल' तेहहूइ सरीपइ' वि थिया । एहइ माहि रूडउ विरूड
कहता मध्यम्यपणउ जासिइ । तेह भणी इसिउ जाणियउ ए अजाणियु
जि, कहीइ, पुण मध्यम्यपणउ न कहीइ' । इसिउ भाव ॥ १०२ ॥

[जि] जे पुरुष अमुनिन अनात गुण अनइ दोष छइ ते
अमुनितगुणदोष पुरुष मूर्ध मध्यम्य हुइ, पडितमाहे गणाइ ता तउ ५
पठइ विम अनइ अमृतहूइ तुल्यत्व सरीपा हुई । एतहूइ विस सरीपउ
मिय्यात्ती मूर्ध अनइ अमृत सरीपउ तत्त्वन पडित जाणियउ । इणि
फारणि ए निहुहूइ घणउ आतरउ ॥ १०२ ॥

[मे] जीण गुण नइ दोष नहीं जाण्या ते किम बुध पडितमाहि
मुख्यपणउ ल्हइ' अथवा तेहइ गुणतोपना अनाण जु मध्यम्य १०
विद्वानमाहि मुख्यपणउ ल्हइ तउ विप नइ अमृत विहुनइ तुल्यपणउ
हउ ॥ १०२ ॥

[सो] धर्मइ जि आपणउ, बीजउ फई नही । ए घात कहइ
छइ ।

[जि] अथ, सम्यक्त्व विग्रह । २५

मूल जिर्णिददेवो तन्वयण गुरुजण महासयण ।

सेस पावट्टाण परमप्पाण च वज्जेमि ॥ १०३ ॥

[सो] मूल० पहिलेउ चिन्द्र वीतरागदेव जीण धर्म
देपाडिउ । अनइ परमेश्वरनउ वचन सिद्धात । बीजउ' ते सिद्धातना
प्रकासणहार श्रीगुरुजन पूज्य आचार्य साधु श्रावक । ए त्रिणिइ महा ३०
म्वजन गाढा सगा । सेस० बीजउ सह धर्मरहित । आपणउ पुत्र

१ एह जि २ बोल ३ सरीपा ४ कहइ ५ जिणद मे जिणद
६ जि परमप्ययण ७ अनइ बीजउ ते ८ श्रीहू ९ आचार्य उपाध्याय

को नाण्ड परे लोद नथि वा नथि वा पुणो ।

एणेण सद्धि होमनामि इय थाले पगम्भई ॥

(उत्तराध्ययन सूत्र, अध्याय ५)

सत्तमियाओ अत्ता अट्टमिया नत्थि नरयपुत्तवि चि इत्यादि

५ बोलना मरी दुर्गतिइ जाइ । यत्त उक्त श्रीउपदेशमालाया—

जन्स गुरुग्नि परिमणो माहसु अणायरो समा तुच्छा ।

धम्मे य अणहिलामो जहिलासो दुग्गईण उ ॥ (गा २६३)

[जि] सुगुरुनइ जोगि स्वाधीन स्वयसि हूतइ जे पुरुष शुद्धउ

निर्मल धर्मनउ अथ हु निश्चइ न निस्तुणति सामलइ नही ते पुरुष

१० प्रेठा जाणिना । किमा छइ ? दुष्ट सदोष निर्दय घृष्ट निर्लज्ज चित्त मन

जेना हुइ ते दुष्टघृष्टचित्त कहीइ । बली किमा छइ ?— संसारनउ

मय तिणि करी रहिन हता अतिसुमट-छइ । ते परमाथवृत्तिइ

जमागिया ॥ ९३ ॥

[मे] गुरुनइ योगि स्वाधीन मिलिइ हूतइ जे इहा संसारमाहि

२५ सुधउ धमनउ अर्थ न सामलइ ते जीव दुष्टचित्त हूता अति गात्ता सुमट

जे समार हूता न बीहई ॥ ९३ ॥

[सो] केतलाइ उत्तम गुरुनउ जोगि प्रामी मोक्ष लहई,

सधलाइ यान सार्धइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ गुणवत्तनउ स्वरूप बोलइ ।

३० सुद्धकुलधम्मजा अवि सुंणिणो न रमति लिंति जिणदियरं ।

तत्तो वि य परमतत्त तओ वि उचयारओ मुक्क्य ॥ ९४ ॥

[सो] सुद्ध० केतलाइ सुद्ध खरउ धर्म जिहा वापरइ एहइ

कुलि उपनाइ हूता गुरुनइ योगि विनय विवेक वैराम्यादिक गुणवत्

बलत्रमिगादिक पर अनेराइ लोक मिथ्यात्वी भणी पापस्थानक' भणी
बजू त्यजु। तेउ ऊपरि मोह न करउ ॥ १०३ ॥

[जि] मूल पहिलउ जितेन्द्रदेव । बीजउ तब्वयण
तेह जिनेद्रनउ पचन, जिनप्रणीत धम । त्रीनउ गुरुजन सुसाधु गुरु ।
५ ए तिहइ महास्वजन मोटा सगा । सेस पाचट्टाण शेष थाकतउ
म्यान पापस्थानक पापनउ कारण हूतउ पारकउ अनइ आपणउ
वज्जउ ॥ १०३ ॥

[मे] मूलि ता पहिलउ जितेन्द्रदेव । पठइ तेहनउ वचन ।
वली गुरुजन सुसाधु गुरु । ए तिहइ महामोटा सगा । सेप थाकता
३०२ अनेरा मिथ्यात्वी अनइ जानदर्शनचारित्ररहित आपणपउ त्यजउ
॥ १०३ ॥

[सो] वली गुरुनउ स्वरूपु' कहइ छइ ।

[जि] अथ प्रकारान्तरि गुरुपरीक्षा बोलइ, विहु गाथाइ करी
अम्हाण रायरोसो' कस्सुवरिं नत्थि' इत्थ गुरुविसए ।
३५ जिणआणरया गुरुणो धम्मत्थ सेस' वोसिरिमो ॥ १०४ ॥

[सो] अम्हाणो' कनि कहइ छइ । ईहां गुरुनइ' विप
अम्हइइ रागरोस' कहि' ऊपरि नयी' । आ गुरु' रूढउ, आ गुरु
विहउ' इम फाई रागद्वेष नयी । जिण० जे गुरु जिन वीतरागर्न
खरी आजा पालइ छइ, खरउ' चारित्र आराधइ छइ ते गुरु धर्मेन
३०५ जिइ कर्मक्षय निमित्त सेवु । तेहइ इहलोकनइ कारणि न सेवउ
सेस० सेप बीजा गुरु सघलाइ वोसिगवउ छाट्टु ॥ १०४ ॥

१ पापस्थान २ स्वरूप ३ जि म रायरोस ४ नत्थि अत्य जि इ
नत्थि ५ रागद्वेष ६ कहइ ७ नयी ८ खरु ९ छाट्टु

धाड । न रमति० संसारना विषयमुष्यनइ विपड न राचइ । लिंति०
जिन वीतरागनी दीक्षा लिइ । ते दीक्षामाहि । परम तत्त्व पाच महाव्रत
पाच समिति त्रिणि गुप्तिरूप आराधइ । ते आराधी स्व-परलोक नासई
हुइ । धर्मनउ उपकार कइ । उपकारक^१ केवलज्ञान प्राप्ती मोक्ष रहइ ।
यत उक्त श्रीउपदेशमालासिद्धान्ते—

आमन्नकालभ्रसिद्धियन्स जीवन्म लक्षण इणमो ।

विमयमुहेमु न रज्जद मन्वथामेमु उज्जमइ ॥ (गा २००)

[जि] मुद्ध निमल भोग ने कुळ धमलक्ष्मीवत कुळ तिहां
जात उप्पजाई हता गुणवन न रमइ । संसारना भोग न भोगइ । किंतु
निनोक शीशान्त रिइ । तेह जिनदीक्षानउ किमु प्रमाण ? तत्तो वि^{१०}
य परमतत्त । तेह जिनदीक्षा हूतउ परम तत्त्वज्ञान उपजइ । तओ
वि तेह परमतत्त्व हूनउ उपगार लोकरूहइ उपगार हुइ । अथवा
आपणपाहइ उपगार हुइ । भला धर्मानुष्ठान करइ । अनेरा पाहइ
कारावइ । मुक्ख तेह उपगार हूतउ मोक्ष हुइ । मोक्षि अनिर्नचनीय
अप्रतिपातिया शाश्वता सुख छइ । तेह भणी गुणवन दीक्षा लिइ ॥ ९४ ॥^{१५}

[मे] जीणइ सुलि वीतरागनउ धम वापरइ तीणइ कुलि
उपना हूता विनयविनेकादिह गुणमहितइ हूता समाारना सुखनइ विपइ
न राचइ । अनउ जिनदीक्षा लिइ । तिवार पठइ परम तत्त्व ओळखइ ।
ते आराधता हूता नमिहि मोन पामइ ॥ ९४ ॥

[जि] अथ नारकी कहइ । [१५] २०
वनेमि नारयाओ जेसिं दुक्खाउ सभरताण ।
भव्वाण जणइ हरिहररिद्धिसमिद्धी वि उद्धोस ॥ ९५ ॥

[जि] इत्थ संसारमाहे गुरुनइ विपइ कस्सुवरिं वही ऊपरि अम्हाण अम्हइइ राग अनइ रोपई नथी । एक गुरु ऊपरि राग द्वेष इमु नही । किं तु अम्हे धर्मनइ अर्थि जिनानारत जिनानाप्रति पालई ज गुरु सेवां । सेप थाक्ता अनेरा जिनाज्ञा थोडी पालइ ते गुरु वोसिरां मेल्हा ॥ १०४ ॥

[मे] कवि कहइ । अम्हनइ कुणही गुरु ऊपरि रागरोस नथी इहा गुरुनइ विपइ । जे जिननी आज्ञानइ विपइ तत्पर तेहइ जि धर्मनइ काजि गुरु । सेप थाक्ता वोसिरउ छाडउ ॥ १०४ ॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ ।

[जि] मेरिहवानउ कारण कहइ ।

नो अप्पणा पराया गुरुणो कइया वि हुति मइहाण ।
जिणवयणरयणमंडणमडिय सव्वे रि ते सुगुरु ॥ १०५ ॥

[सो] नो अप्पणा० श्रावकनइ 'आ आपणां गुरु, आ पिराया' गुरु' ए वात कहीइ नथी । ए वात अजाण मिथ्यात्वीनी 'आ माहरउ गुरु ।' जेइ भणी मातग म्लेच्छ ठठार चमार वेश्यादिक १५ इनइ एकेकउ गुरु' छइ । ते अजाणपणइ 'माहरउ ए गुरु' इम कहइ, पणि मोक्षार्थी श्रावक इम न कहइ । तेहनइ जिणवयण० जिनरचन सिद्धात तेहरूपिउ रत्नमडन रत्नमय आभरण तीण कगी जे मडित छइ, जे वीतरागनी आत्ता सिद्धात साचउ जाणइ नानइ प्रकासइ, आपणी शक्ति अणगोपवता करइ आराधइ ते नन्द्य २० सुगुरु कहीइ । ते गुरु भणी आराधिग ॥ १०५ ॥

[सो] यत्नेमि० ते नारकीइ वर्णवउ, जे नारकीनां दुःख
 सिद्धान्तइ बकिइ जाणीनइ स्मरता हुना भञ्जाण भय जीवहूइ
 हरिहर विष्णु ईश्वरान्विना मरीपीइ ऋद्धिनउ विन्तार उद्धोस
 उक्काटउ करइ । जाणइ एह रिद्धि लगइ जीव पाप ऊपनीं नरगिं
 ५जाइ । एहा दुःख प्रामइ । इम नीनवता भय लगइ मयर धूनइ ।
 संसारना सुख उपरि वैराम्य ऊपनइ ॥ ९५ ॥

[जि] नारकीइ वर्णवउ हउ, जेहां नारकीना दुःख संभारता
 स्मरता हुता भञ्जाण भय जीवहूइ हरि विष्णु हर ईश्वर तेहनी
 ऋद्धि समृद्धि लक्ष्मीनउ विन्तार उद्धोस उद्धर्पण रोमाच जणइ
 १५करइ । एतलइ एउहा कई नारकीहूइ दुःख छइ, जे दुःख संभारताई
 ज हुता अति भय लगी कप ऊपजावइ । कप लगी रोमाच ऊपजइ ।
 धनइ ति को संभारता दुःख हूतउ धीहइ ति ए न करइ । तिणि कारणि
 धम्हे नारकीना दुःख संभारता हुतां पाप न करा । तिह भणी नारकी
 प्रणया । निम चोरनां बधमरणादिक दुःख देखी साधु माणसु लगाई
 २५चोरी छन्याय न करइ ॥ ९५ ॥

[मे] ते नारकीइ वर्णवीइ, जे नारकीनां दुःख संभारतां हुतां
 भय जीवहूइ हरिहरादिक देवतानी ऋद्धिनउ विस्तार उद्धोस कहतां
 रोमाच उक्काटउ करइ । जाणइ एह रिद्धि लगी नरगि दुःख पांमीस्यइ
 ॥ ९५ ॥

२० [सो] केतलाइ उपदेशमालानु^१ अध मानइ, पुण करइ
 नहीं । तेह आथी कहइ छइ ।

[जि] अथ विहुं गाथेइ श्रीउपदेशमाला वर्णनइ ।

[जि] शुद्ध धावकहूइ कदापिहि आपणा अनइ. पारका गुरु न हुइ । किं तु धावकहूइ ते सघलाई सुगुरु हुइ । ते कुल २ जिनचन रूपिया रत्न तेहनउ मडन अलकार तेहे करी मडित अलक्या । एतलइ जे महात्मा जिनचन मानइ ते सुगुरु ॥ १०५ ॥ - - -

५ [मे] धमार्थी धावकहूइ 'गुरु आपणा पारका' ए वात कहिवा नावइ । काइ २ जे जिनचनरूप रत्न तेहे करी मडित सूधउ प्रकपद, सूधउ चारित्र पालइ ते सघनाइ सुगुरु करी मानिग ॥ १०५ ॥

[सो] जेहनी संगतिउ धर्म लाभइ तेह^१ सुगुरु^२ जि जाणिवु । ए वात कहइ छइ ।

१० [जि] अथ सज्जन वणवइ ।
बलि किज्जामो सज्जनजणस्स सुविसुद्धपुन्नमुत्तस्स ।
जस्स^१ लहु सगमेण चिं सुधम्मबुद्धिं समुल्लसइ ॥ १०६ ॥

[सो] बलि० अहे ते सज्जन जन उत्तम लोकहूइ, बलि कीजउ, उत्तारणउ कीजउ । सुविसुद्ध० जे सुविसुद्ध निर्मल पुण्यइ १५ करी युक्त सहित छइ । जस्स० जेहनइ संगमि सयोगिइ करी लहु तन्काल सुधम्म० मरा धमनी बुद्धि उल्लसइ उपजइ । जेह थिकउ साचा धर्मनी बुद्धि आवइ तेहनइ^१ ज गुरु कहीइ । इसिउ भाव । यत उक्त श्रीसिद्धान्ते—

जे जेण सुद्धधम्ममि ठारिओ सत्तण गिहिणा वा ।

२० सो चेय तस्स जायइ धम्मगुरु धम्मदाणाओ ॥

[जि] सुविसुद्ध अतिनिर्मल पुण्य तेहे करी युक्त सज्जन लोकहूइ अहे बलि किज्जामो बलिहारइ कीजा, उत्तारणइ कीजा ।

सिरिधम्मदासगणिणा रइय उपदेसमालसिद्धंत' ।
 सव्वे वि समणसइद्धा मन्नति पढति पाढति ॥ ९६ ॥
 त चेव केवि' अहमा छलिया अहिमाणमोहभूणण' ।
 किरियाण हीलता ही ही दुस्साइ न गणति ॥ ९७ ॥

[सो] सिरिधम्मदास० श्रीधर्मदासगणिआचार्य ५
 श्रीमहावीर निर्देया छता श्रीउपदेशमालासिद्धांत' रचिउ कीधउ,
 अनेक महात्मा श्रावक आथी उपदेश विचाररूप । सव्वे वि० ते
 अथे' सविहु गच्छना महात्मा श्रावक मानइ पढइ पढावइ ॥ ९६ ॥

त चेव० पुण तेह जि माहि वेतलाइ अधम अमिमान अहकार
 अनइ मोह अज्ञान तेहरूपिड भूति छरया, अहकार अजाणिबाना वाछा^{१०}
 तेह नि श्रीउपदेशमालाहूइ क्रिया करी हीलइ । अवज्ञाइ' फरइ ।
 ही ही० आहा । ते बापडा आगलि आपणपाहूइ दुस्व आवता गणता
 नयी । ते मूर्ख इतिउ नयी जाणता जे ईण सिद्धातनी अज्ञाइ करी
 अनत संसारमाहि रुन्स्यु । अनता दुस्व प्रामिस्यउ ॥ ९७ ॥

[जि] श्रीधर्मदासगणि नामाचार्यइ रचउ कीधउ^{१५}
 श्रीउपदेशमालासिद्धात सव्वे वि सघलाई श्रमण महात्मा सइद्ध
 श्रावक मानइ पढइ पढावइ ॥ ९६ ॥

केईएक अधम पुरुष अतिमान मोह रूपिया भूत प्रेत तेहे उल्या
 हता ही ही खेदे आपणपाहूइ दुस्वई न गणइ न चीनइ । निता
 छइ अधम । त चेव श्रीउपदेशमालामिद्धात अगणइ ते अधम^{२०}
 भूते छल्या पुरुष सरीषा जाणिना । निम भूतत्र्यापिउ लौक मायउ पेट

१ जि उवएममाल' मे उवएसमालसम्मसं २ जि छिवि ३ जि 'भूणण'
 ४ 'माल' ५ अहीषी मारी ९७ भी मायाना बालावबोधना 'अहकार अनइ मोह
 सुधीनो पाठ सो नी बीजी प्रतमाथी पदी गयेले छे ६ अवज्ञा

अस्स जेह सज्जन जन तणइ सगामि सयोगमात्रइ जि लघु उतावली
सुधर्मबुद्धि समुल्लसइ प्रकट हुइ ॥ १०६ ॥

[मे] ते सज्जन उत्तम जननइ बलिहारी धीनउ । पणि ते
केवहा छइ १ निर्मल पुण्य करी युक्त छइ । जेहनइ समगि लघु शीघ्र
भली धर्मनी बुद्धि ऊपजउ उल्लसइ ॥ १०६ ॥

[सो] तीणइ १ कानि ए कविनइ मनि श्रीजिनवल्लभसूरिइ
जि मरा भणी वदथा हुता । तेइ २ आश्री वि गाह कहइ छइ ।

[जि] अथ विहु गाथाइ श्रीजिनवल्लभसूरि वर्णवइ ।
अज्ज वि गुरुणो गुणिणो सुद्धा दीसति तदयडा केवि १ ।
पहु २ जिणवल्लहसरिनो पुणो वि जिणवल्लहो चेव ॥ १०७ ॥ १०
वयणे वि सुगुरुजिणवल्लहस्त केमि न उल्लसइ सम्म ।
अह कइ दिणमणितेय उल्लयाण ३ हरइ अघत्त ॥ १०८ ॥

[सो] अज्ज वि० अर्जी केनलाइ सुगुरु गुणवत तपि नियमि
करी कटकडता ४ देसीइ । पुण पहु प्रसु श्रीजिनवल्लभसूरि
सरीपउ गुरु श्रीजिनवल्लभइ जि हुइ । धीजउ एवउ ५ शुद्धप्ररूपण ६
चारित्रीउ न हुइ ॥ १०७ ॥

वयणे० श्रीजिनवल्लभसूरि गुरुइ १ वचनि २ केनलाइ
अभागिआनइ सम्यक्व न ऊपजइ ३ अह ० अथवा सूर्यनउं तेन उल्लक
घूअटइ ४ अधण ५ निम पेडइ ६ जिम सूर्यइ उगिइ घूअड न देसइ
तिम एहइ ७ गुरनइ वचनि धर्म न जोलसइ ८ । इसिउ भाव ॥ १०८ ॥ १०

१ तीण २ तेह भणी तह आश्री ३ मे केई ४ जि पर, मे पुण
५ अनुयाण ६ कटकडता ७ एहवउ ८ गुरनइ ९ वचनइ १० अधपणउ
११ एवाइ १२ उल्लसइ

आहणतउ मरणपीडादिक दुख न चीतउइ निम मिद्धातनिंदक पुण्य
अट्कारि हूतउ दुखीउ गइ ॥ ०७ ॥

[मे.] श्रीघर्मदासगणेश श्रीमहावीर जीवताई जि
श्रीउपदेशामालाप्रकरण मिद्धात जाइउ रचिउ सव्ये वि सधलाइ
५ महात्मा गान्ध मानद पदइ पणउइ ॥ ०६ ॥

तेह नि उपदेशामाला केईएक अधम अभिमान अनइ मोह
रूपीइ भूति छरया हता क्रियाइ करी अवहेलना हूता ही ही इसिइ
सेति आगामिया नरकना दुग गणइ नहीं । ते मूर्ख जाणना नथी नि
संसारमाहि रुलीम्यइ ॥ ०७ ॥

१० [सो] वीतरागनी आनामगि मोटउ पाप । ए वात फहइ छइ ।
[जि] अथ जिनेन्द्रनउ आज्ञाप्रताप वर्णवइ ।

इयराण' ठकुराण' आणाभगेण होइ मरणदुख ।
कि पुण तिलोयपहुणो जिणिंददेवाहिदेवस्स' ॥ १८ ॥

[सो.] इयराण० इतर, सामान्य ठाकुराईनी' आज्ञाभगि
५ तेहना आदेशनइ लोपि मरणदुख प्रामीइ । ते रीसाचिउ ठाकुरु' मारइ ।
किं पुण० तिलोम्यनउ प्रभु ठाकुर जे जिनेन्द्रदेवाधिदेव सविहूनउ
नायक तेहनी आज्ञानइ लोपि एक मरणदुखनउ सिउ फहीइ ? अनना
मरणदुख प्रामइ ॥ १८ ॥

[जि] इतर पाधरा ठाकुरनी आज्ञा भाजिउट मरणादिक दुख
१० हुइ, तउ पछ' त्रिलोकप्रभु त्रिलोकनायक श्रीचिनेन्द्रदेव तेहनी आज्ञा
भाजिउट करी महादुख हुइ तेहनउ सिउ फहिवउ ? ॥ १८ ॥

१ जि मे इयराण २ नि मे ठकुराण ३ आज्ञा मे जिण
४ ठाकुरनी ५ ठाकुर -

[जि.] अद्यापि आन लग्ग तडयडा फडरडा शुद्ध निर्दोष गुणवत् ईश्वर गुरु दीसइ । पर केवल प्रभु श्रीजिनवल्लभसूरि सरीपउ बली शिववल्लभसूरिइ जि । अनेगना अभावहतउ अन्वोन्योपमा छान्द ॥ १०७ ॥

5 गुरु श्रीजिनवल्लभसूरिनइ वचनइ कहीएकहूइ सम्म सम्यक्त्व नउ उल्लसइ १ प्रकट हुइ । अथ पउइ दिनमणितेन सूर्यनां किरण उल्लस घूयड तेहाउ अधव अधपणउ किमउ हरइ ? अपि तु न हइ । सूर्या तेज सरीपउ विश्वप्रकासक श्रीजिनवल्लभसूरिनउ वचन उमागिया पुरुपरुपिया घूयड तेहनउ अनानरुपिउ अधपणउ न फेडइ 10उउ ते अमागिया घूयडा कर्मइजिनउ दूषण ॥ १०८ ॥ । । ।

[मे ।] अनी एवहइ तीर्थशालि द्रव्य क्षेत्र फाल भासनइ मेलि गुरु गुणवत् मूधा क्रियावत् आकरा दीसइ । यणि श्रीजिनवल्लभसूरि सरीपा बली श्रीजिनवल्लभसूरि जि ईणइ फालि दीसइ ॥ १०७ ॥

श्रीजिनवल्लभसुगुरुने वचने बहिनइ सम्यक्त्व उल्लसइ नहीं । 15अपि तु भव्य जीव सेवाकारक सघलाइनइ सम्यक्त्व उल्लसइ । अथवा बली सूर्यनउ तेज घूअडनइ अधपणउ किमइ फेडइ ? अपि तु न फेडइ । तिम जे अमव्य दुरभव्य छइ ते गुरुने वचने सम्यक्त्व न ओलसइ । इसउ भाव ॥ १०८ ॥

[सो] संसारनउ मरणादिक स्वरूप देसीनइ केतलाइहइ^१ वैराम्य न ऊपजइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अर्थ तेह ज अमागियानउ स्वरूप कहइ ।

तिहुअणजण मरत दट्टण निअति जे न अप्पाण ।

विरमति न यावाओ धिद्धी धिट्टत्तण ताण ॥ १०९ ॥

१ 'केतलाई हई' नहीं

[मे] इतर पाधरा ही ठाजुरनी आज्ञानइ भगि मरणादिक दुख उपनइ । पठइ त्रेलोस्यनउ प्रभ चिनमरेद्र देसाधिदेय तेहनी आज्ञानइ भगि जे दुक्ख उपनउ ते किम कही मकीइ ? ॥ ०८ ॥

[सो] ग्ली णं जि वात कट्टइ छइ ।

[जि] अथ चिनयचननउ गुण कहइ ।

जगगुरुजिणस्स^१ वयण मयलाण जियाण होइ त्रियकरण^२ ।
ता तस्स विराहणया कह धम्मो कह^३ णु जीवदया ॥ ०९ ॥

[सो] जगगुरु० जगत्प्रयनउ गुरु श्रीजिनेद्र वीतराग तेहनउ वचन सर्व जगना जीवहइ हितकारिउ छइ । ता तस्स० तउ तेहनी विराधना जउ करइ, तेहाउ वचन १ मानं, अप्रमाण करइ^४ तउ कह धम्मो तेहहइ धर्म रिहा छउ^५ । कह णु जीवदया अनइ तेहहइ जीवत्या किहा छउ^६ । तेह भणी वीतरागनइ वचनइ जीव ओन्वाइ^७, जीवदयानु प्रहार पुण जाणाइ । वीतरागना वचनउ जि उपरि जाग्था नही तउ किम जीव आइ जीवत्या जाणीइ ? ॥ ९० ॥

[जि] जगत्प्रयनउ गुरु जे चिन श्रीवीतरागदेव तेहनउ वयण^१ वचन मयलाण जियाण सघलाई जीवहइ हितकारक हुइ । ता तिणि कारणि तस्स तेह जिनवचन तणी विगधनाइ आशातनाइ करी कह किमु धर्म हुइ ? अपि तु न हुइ । णु प्रश्ने । कह किमु जीवत्याइ हुइ ? जीवदया पुण न हुइ । तिणि नि कारणि जिनवचननी विराधना १ करिबी । कि तु पालना करिबी, जिम जानहइ रूठउ हित^२ हुइ ॥ ९० ॥

[सो] तिहुअण० त्रिमुवननउ ह्येक म्पद न्पद न्पद
छइ । को रहिउ नहीं, रहिसिइ नही । एहउ म्पद देहउ म्पद
न जोइ, 'अम्हेइ मरण आवइ छइ, धर्म कः ।' किन्हे कः
थिकउ निरमइ नही, उहटइ नही । धिद्वी० देहउ म्पद न्पद
धिग् पडउ, जेह भणी लगारइ मरणमउ म्पद न्पद ॥ १०८ ॥

[जि] जे पुरुष त्रिमुवननउ ह्येक म्पद देहउ म्पद
न निअति न चीतनइ, वैराम्य न पामइ म्पद इ इउ केहउ न
तेहा पुरुषा तणउ घेठपणउ तेहइइ धिग् नि ॥ १०९ ॥

[मे] त्रिमुवनना लोक मरता देहउ म्पद न्पद न्पद
'अम्हेइ मरिम्पउ ।' एवहउ देपी जे पाम इउ केहउ न्पद
घेठपणानइ धिग् धिकार पडउ ॥ १०९ ॥

[सो] वली पहे नि वान इहइ इहइ इहइ

[जि] अथ कुत्सित म्पदपणउ न्पद देहउ म्पद

सोणण कदिऊण कुटेऊण सिर व उअर व ।

अप्प खिवति नरण त पि हु विदी कुत्तन ॥ ११० ॥ १५

एग पिअमरणदुहं अन्न अप्पा वि निरण नरण ।

एग च मालपडण अन्न लउहउ मित्र राजा ॥ १११ ॥

[सो] को सगउ मर ता म्पद देहउ म्पद न्पद
करइ अनइ माथउ पेट कूइ । म्पद ह्येक म्पद मोहनीन कर्म
ऊपार्जीनइ आपणपउ नरणि पाम । न पि देहउ कुम्पेड विरुम्प
स्नेह प्रतिइ धिग पडउ ॥ ११० ॥

[मे] जगगुरु जिनेधर तेहनउ वचन सघगाइ जीवनइ सुख
कारक हुइ । तउ ते परमेश्वरना वचननी विराधनाइ कीधीइ रिहां धर्म,
किहा जीम्या १ ॥ ९९ ॥

[सो] केतलाइ शुद्धा^१ चारित्रियानी अवज्ञानइ काजिइ जमलउ
५ नाह्य क्रियाडर माडइ । ते वात कहइ छइ ।

[जि] अथ सिद्धांत हतु विरुद्ध अधिक क्रियाडर जे धरइ
ते उदिसी कहइ ।

किरियाइफडाटोव^२ अरिय सायति^३ आगमविहृण ।
मुद्राण रजणतथ सुद्राण हीलणट्टाण ॥ १०० ॥

१० [सो] किरियाइ० केतलाइ^४ बाह्य तप क्रियादिकनउ
फटाटोप आडर^५ चारित्रियाइ पाहइ अधिकउ कहइ दिपाइइ, आगम
सिद्धातनी आज्ञारहित आपणी बुद्धिइ कल्याणइ मुद्राण० मुग्ध भोला
लोकने^६ रचविमानइ काजिइ । सुद्राण० शुद्धचारित्रिया तेहहइ
अपमाननइ काजिइ, तेहे ठउडवा^७ इम करइ । पुण जाण हुइ ते तेहे
१५न वाहीइ ॥ १०० ॥

[जि] आगमविहृण सिद्धात जे नथी कहिउ तेह क्रिया
दिग्गनउ स्फुटाटोप प्रकृत आडर अधिक साधइ करइ । किसा भणी^८
मुग्ध भोला सिद्धातरहस्यना अजाण तिहहइ रनिषा भणी अनइ
वली मुद्ध सदाचारी पुरुष तेहइ हीलनार्थि अरहेलनानिमिति । एतावता
२ सिद्धांत पापइ क्रिया तपनउ आडर घणउ करइ । तेहहइ मुग्धजन
मात्र फल छइ । सामुहउ सदाचारीनी अरहेलाइ करी पाप हुइ । ए

१ शुद्ध २ जि मे फुगाटोव ३ सायति ४ केतल ५ 'आडर'
नथी ६ लोक से ७ ठउडवा

एगं० एरु तां प्रिय अर्माष्ट मूड ते दुःख । वीजउ बली शोक
करी पाप उपावी नरगि जाइ । वीजउ ते दुःख । दृष्टोत कहइ छइ ।
एक तां चचा माला धकउ पडिउ । वीजउ लडइ करीइ माधइ
अदृष्टिउ । ए लोकिण दृष्टोत ॥ १११ ॥

- 5 [जि] अजानी लोक शोकि करी प्रंदी रोई सिर माथउ
उअर येदइ पुण कूटीनइ आपणपउ नरगि विपद घालइ । त पि०
ते सुभित स्नेहपणाहूड धिक्कार पडउ ॥ ११० ॥

एरु तउ प्रिय धालहुउ तिहनउ मरणदुःख आगइ छइ अनड
मीतउ आपणपउ नरगि क्षिपद घालीइ । एरु तउ माल हंतउ पडण
००पटिदउ । अनेरउ बली ऊपरि माधइ लउडानउ घाउ । इणि कारणि
शोक ७ करिवउ, जिम नरगि न पीढाइ ॥ १११ ॥

[मे] स्वजनादिकनइ मरणि शोक आक्रद करीनइ, शिर
कूटीनइ, हीउ ताडीनइ आपणपउ नरगनइ विपद क्षिपई । तउ तेहइ
कुम्नेहनइ धिगू धिक्कार हुउ ॥ ११० ॥

- 15 एरु ता प्रियतम बालहा तेहना मरणनउ दुःख । वीजउ आपणपउ
नरगनइ विशइ क्षेपइ । तउ ए घात साची हुई । एक माला हतउ
पडिमउ । बली एकुटनउ घाउ माथइ बाजइ ॥ १११ ॥

[सो] साचा धर्मना धणी गुठ नइ श्रावकइ दुर्लभ । ए
यान कहइ छइ ।

- 20 [जि] 'स्नेहमूलानि दुःखानि' इसु स्थापी साप्रत दुःखमा
कालनउ म्बख्य कहइ ।

कष्टई करइ अनठ आगलि पापइ जु उपाजई । एहां एह जु उपाणउ
साचउ हुइ-एग च मालपदण अन्न लउडेण सिरि घाओ ॥ १०० ॥

[मे] कियानउ फटाटोप बाह्य तपनउ फरिवउ चारित्रिया
पाहति अधिउ देषाडइ । आगमविहीन सिद्धांतनी आनाइ रहित
आपणी बुद्धिइ मुग्ध भोला लोक्रनइ रजिवानइ काजि अनइ सुद्ध ५
चारित्रिया तेहना अपमाननइ काजि, हीलानइ हेति ॥ १०० ॥

[सो] जे धर्मनउ उपदेश दिइ ते गाढउ हितूउ । ए घात
कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनधर्मनउ देणहार पुरुषनउ म्वरूप कहइ ।
जो देइ सुद्धधम्म सो परमप्पा जयम्मि न हु अतो । १०
कि कल्पद्रुमसरिमो डयरतरू होइ कहया वि ॥ १०१ ॥

[सो] जो देइ० संसारना काजकाम व्यग्रमाय वाणिज्यनइ
विषइ प्रेग्णा सहइको मा बाप सगा सणीजा करइ । पुण जे सूषउ
खरउ धर्म उपदेशिइ^१ देत्ताडइ ते परमात्मा जगमाहि परमहितूउ^२ कहीइ ।
अनेरउ न कहीइ । किं कल्पद्रुम० तिम बीजा धय खडर पलासादिका^३
घणाइ वृक्ष हुइ, पुण मनोवाठित पूरणहार कल्पद्रुम मरीसउ एके
वृक्ष न हुइ । तिम कल्पद्रुम सरीखउ धर्म दिणहार^४ । इह^५ लोक्रना
काजना प्रेरणहार बीना वृक्ष सरीषा जाणिना ॥ १०१ ॥

[जि] जे सुद्धउ साचउ धर्म दिइ सीखवइ ते पुरुष परमात्मा
गाढउ मोटउ जयम्मि जगत्माहे । तेह सरीखउ न हु अतो^{२०}
अनेरउ मोटउ कोई नही । किंसु^१ कल्पद्रुम सरीषउ अपर वृक्ष

सपह दूसमकाले घम्मत्थी सुगुरु मन्त्रो दुष्ट ॥
 नामगुरु नामसङ्घा सरागदोमा यद् अन्दि ॥१२०॥

[सो] सपह० हवदा दुश्मा इति नन्त इत्यु इत्यु
 निष्केरल धर्मार्थी सुगुरु अनह सुश्रावक दुर्लभ इति ते इत्यु
 पिरायु कई न जोअह । एकलउ धर्म त्रि जेटे वन्दे इति अंग ।
 नामगुरु० नामिद करी गुरु । नामिद इति इत्यु । मगप
 जेहहइ आपणा विरुआ उमरि राग, कीज दुश्च उगी इति
 यद् अत्थि एहा घणा छद् ॥ ११२ ॥

[जि] संप्रति हिवडा दु पमाकात्ति धर्मार्थी धर्म इत्यु
 सुगुरु श्रावक दुर्लभ छद् । तिणि कारणि मगगदोमा एगोपदि
 हता नामगुरु नामधारक घणाइ छद् । ते दुश्मा इत्यु प्रत्य
 ॥ ११२ ॥

[मे] साप्रत दुश्मा कालि धर्मार्थी सुगुरु नद धारक धरिय
 पामीद । पनि नामि गुरु, नामि श्रावक एगोपदि पद
 दीसद् ॥ ११२ ॥

[सो] धम छद् भय्याधीन । ए. अत पद इति

[जि] अय धन्य अनह लचन्यतउ सरु कण्ड

कहिअ पि सुद्धघम्म काहि वि घसाण जलु कण्ड
 मिच्छत्तमोहिआण होइ रहं मिच्छधम्मेषु ॥ ११३ ॥

[सो] कहिअ पि० केन्दे पव ज इत्यु
 धर्म कहिउ सामलि इति इत्यु । इति इत्यु

१ वि मे इत्यु २ इत्यु ३ इत्यु ४ इत्यु ५ इत्यु ६ इत्यु ७ इत्यु ८ इत्यु ९ इत्यु १० इत्यु

फडया वि कदापि किगरे हुइ ? अपि तु न हुइ । कर्पट्टुम
मरीपउ गुद्ध धर्मशायक जाणिउउ ॥ १०१ ॥

[मे] सम्यक्कम्मूल गार वतनउ सूधउ धर्मनउ । उपदेशं जणे
दिउ तेउठ नि परमारमा । नगात्रयमाहि परमपुएप अनेरउ कोई नहीं ।
5 किसउ ? कल्पवृक्ष मरीपउ इतर वीनउ को वृक्ष हुइ कहीइ ? अपि
तु नहीं ॥ १०१ ॥

[सो] जे गुणवतना गुण अनइ दोपवतना दोप न ओलखइ^१
ते आश्री कहइ छइ ।

[जि] अथ पडित जनइ मूर्खइ गालउ जातरउ कहइ ।
10 जे अमुणिअगुणदोसा ते^२ कह विबुहाण हुति मज्झत्था ।
अह ते वि हु मज्झत्था ता तिसअमिआण तुहत्त ॥ १०२ ॥

[सो] जे अमुणिअ० जे गुणवतनइ गुणवत मणी
जोखसइ^३ अनइ दोपवतनइ दोपवत मणी न जाणइ । गुणवत अनइ
दोपवतइ निहइ सरीपाइ जि देखइ । इम कहइ ' अम्हारइ सघलाइ^४
15 देव, सघलाइ गुरु सरीम्माइ नि । अम्हारइ रागद्वेष नहीं । अम्हे
मध्यस्व ।' ते जाणइ नहीं मध्यस्व मणी किम बइसइ^५ ते गाढा
अनाणइ नि महीइ । जेह मणी तेहहइ वि दोप लागइ, जेह मणी
गुणवतना गुण छताइ^६ अउता करइ । दोपवतमाहि^७ अउता गुण
आरोपइ छइ । ए णि दोप तेहहइ लागइ । अह ते० जउ तेह
20 मध्यस्व कहवसइ ता वि० तउ विस अनइ अमृत तथा रत्न अनइ
' काच, ओवउ अनइ लीन, साप अनइ फूलमाल, अघारउ अनइ अजूआले

१ उलपइ २ तह विबुहाण ३ उलपइ ४ सपग ५ नहीं ६ छता
७ दोपवतना ८ 'छइ' नहीं ।

मिच्छत्त० ये निविड मिथ्यात्वि करी मोद्या वाद्या छइ तेहहइ साचउ धर्म साभलिउ दीठउ^१ हर्ष^२ न करइ । तेहहइ मननी रति मिथ्यात्वधर्मइ जि ऊपरि हुइ । ते आपणा आपणा कर्मनउ विशेष । ते अभव्य दूरभव्य तीहनु कारण^३ ॥ ११३ ॥

५ [जि] केईएक धन्यहइ सुद्ध निमल धर्म कथितमात्र हतउ आणद जणइ ऊपजावइ । अनइ अधन्यहइ मिथ्यात्वइ मोहित-हता मिथ्यात्वधर्मनइ विपइ रति सतोष हुइ ॥ ११३ ॥

[मे] कहिउइ हतउ सुधउ धर्म केतलाइ भाग्यवतनइ आणद ऊजावइ अनइ मिथ्यात्वमोहित जीवनइ मिथ्यात्वधर्मनइ विपइ रति हुइ ॥ ११३ ॥

[सो] केतलाइ जीव धर्मनी बुद्धिइ पाप करइ छइ । ते आश्री कहइ छइ ।

[जि] अथ निनधर्मनउ म्वरूप बिहु गाथाइ करी कहइ ।
इक पि महादुक्ख जिणसमयविऊण सुद्धहिययाण ।
१५ ज मूढा पावाइ घम्म भणिऊण सेवति ॥ ११४ ॥

[सो] इक पि० जिनचनना जाण निर्मल मनना धणी तेहनइ मनि एह जि एक महादुक्ख, ज मूढा० ज मूढ मूखे बापडा मिथ्यात्वी धर्म भणी^४ धमनी बुद्धिइ पाप सेवइ । यागादिक करइ । पापइ पुण्य भणी मानइ । एहउ असमजस देसी जिनधर्मना जाणनइ^५ भनि असमाधि ऊपनइ ॥ ११४ ॥

[जि] निमलहृदय अनइ जिनसिद्धांतना जाण तेहाहइ एकू ज मोटउ दुक्ख जे मूढा मिथ्यात्वी धर्म भणी धर्मबुद्धिइ पापहिंसादिक

सेवइ । एतळुज जि एकु दयाळपणइ दुःख । बीजउ लगारई दुःख नही ।
जितेंद्रपणातउ ॥ ११४ ॥

[मे] तिनसमयना वेत्ता सूधा हीयाना घणीनइ ए मोटउ दुःख ।
ए क्रिसिउ ' जे मूर्ख लोक पापनइ धर्म करीनइ सेवइ । मुखि कहइ
' अम्हे धर्म करउ छउ ' अनइ करइ पाप ॥ ११४ ॥

[सो] सम्यक्त्वना पालणहार थोडाइ जि हुइ । ए वात कहइ
छइ ।

थोडा महाणुभावा जे जिणवयणे रमति सविग्गा ।
तत्तो भवभयभीया सम्म सत्तीइ पालति ॥ ११५ ॥

[सो] थोवा० ते महानुभाव गुरुवा भाग्यवत थोडा, जे०
जिनवचननइ^१ विपइ संगे वैराग्यवता हूता रमइ । रात्रिदिवस^२
श्रीसिद्धातनी आम्हा मनि आणड । तत्तो० तेहइ पालइ जे संसार
माहि पडिवानइ भय^३ बीहता हुता सम्यग् साचउ तिनवचन आपणी
शक्तिनइ मानिइ स्वस्त्र क्रिया करी पालइ । पद्दा ते अति थोडा ॥ ११५ ॥

[जि] जे जिनधर्मी थोडा महानुभाव गरिष्ठ हूता श्रीजिनवचन १५
नइ विपइ सविग्ग सावधान थिका रमइ, स्नेह करइ । तिणि कारणि
जिनवचनकारक पुरुष संसारना भय हूता बीहता सक्तिइ करी सम्यक्त्व
पालइ ॥ ११५ ॥

[मे] ते महानुभाव थोडिला, जे जिनना वचन तेहनइ विपइ
संवेगी थका रमइ । तिनार पडा ते भय संसारना भय थका बीहता १०
सम्यक्त्व यथागर्कि करी पालइ ॥ ११५ ॥

ताण फहं जिणधम्मो' फह नाण फह दुहाण घेरग्ग ।
कूडामिमाणपडियनडिया बुद्धति नरयम्मि ॥ १२४ ॥

[सो] ता० तु जइ ण्हं मरीचिनउ उम्पू वचननउ
म्वरूप वली वली सांभली दोसेण० द्वेष लगइ ते अगणीनइ' जे
उम्पूपत्त सेवइ, श्रीमरिञ्जनी आज्ञा विरुद्ध बोळ फहइ घापइ, जे ५
अभिमानना वाद्या ण्हं उम्पू वोलइ तेहहइ निनधर्म किहा' छइ २
अनइ' दुस्सनउ वैगम्य किहा छइ १ जेह भणी संमारनउ दुस्स आगमी
नइ उम्पू प्ररूपइ छइ । कूडामिमाण० कूड आपणा पडितपणाना
अभिमान तीण करी नड्या वाद्या नरगइ जि माहि बूडइ छइ
॥ १२३-२४ ॥ १०

[जि] ता नउ पच्छइ जइ निमइ समयम्मि सिद्धातमाहे
इम पि चयण उम्पूवचन पूर्वोक्त वचन वार वार सुणी सांभलीनइ
पठइ बूटइ दोषि करी सिद्धाननउ वचन अगणीनइ ते अथम उम्पूवचन
सेवइ । तेहा उम्पूवचनसेरणहारइ फह किमु जिनधर्म हुइ १ अपि
तु न हुइ । अनइ तेहाहइ नाण तत्त्वानन किमु हुइ २ वली दुस्सनउ १५
वैगम्य किमु हुइ १ आइ ते अथम बूडउ अभिमान अहकार तिणि
करी पडिन तेहे नटिन नचाव्या हता नरकमाहे बूटइ । वृडी पडिताई
करी नरगि पड' ॥ १२३-२४ ॥

[मे] तउ जइ किमइ मरीचिनउ उम्पूवचननउ म्वरूप
वार वार सांभलीनइ सिद्धानमाहे फहउ हंतउ ते वचन द्वेष ल्प्री १०
अपहेलीनइ उम्पूवचन पद म्यानव मेवइ, सिद्धान विरुद्ध बोळइ,
तीर्यानइ जिनधर्म किहा, पान किहा १ तेहनइ दुस्सनउ वैगम्य किहा २

१ मे शिष्यधर्म २ एहं ३ अवगुण नइ ४ किहाइ ५ बीबी प्रथमा अत्रु
वपारे ध— अनइ माननउ जाणवते किहा छइ

[सो] सम्यक्त्व पापइ श्रीधर्म खरउ न हुइ । ए वात कहइ उइ ।

सव्वगं पि हु सगड जह न चलइ इक्षवडयलारहिये ।
तह धम्मफटाटोव न चलइ सम्मत्तपरिहीण ॥ ११६ ॥

१ [सो] सव्व० जिम सगड गाडउ धुरी घूसर समइल प्रमुक्क सर्व आगे करी सहित हुइ, पुण एक बडइल न हुइ तु न चालइ । तह धम्म० तिम धर्मनउ फटाटोप मढाण घणुइ करइ, तप नियम क्रिया दान सील कष्टानुष्ठानादिकु करइ । पुण सम्यक्त्व नयी तउ फाई चालइ नही । अल्प फल थाइ । अनान कष्टइ ति थाइ । जिम तामलि २०रिपिनइ घणउ तप कष्ट कीघउ, अल्प फल हुउ ।

सट्ठि वाससहम्सा तिमवज्जुतो दयण धोएण ।
अणुच्चिन्न तामलिणा अत्राणनवुचि अप्यफलो ॥ (उपदेशमाला, गा ८१)

[मे] सधले अगे संयुक्त हतउ दारुट एक बडहिल-रहित न चालइ । तिम धमनउ म्पगाटोप एक सम्यक्त्व रहित फलदायन न २५हुइ ॥ ११६ ॥

[सो] जे जीव सिद्धात न सामलइ, हित-अहित-न जाणइ ते आश्री कहइ छइ ।

[जि] अथ तत्त्वज्ञ पुरुष मूर्ध उपरि रीस न धरइ । ति वात कहइ ।

२० न मुणति धम्मत्त सत्थ परमत्थगुणहिअ अहिअं ।
पालाण ताण उवरिं कह रोसो मुणिअत्तत्तार्ण ॥ ११७ ॥

१ आ गाथा तथा तेनो बालावबोध जि मां नथी २ मे बडहिला ३ मे फलइ ४ अगे ५ म्पगाटोप ६ जि थाई नथी ७ मे परमत्थ ८ जि मुणिधम्मार्ण मे मुणिअधम्मार्ण

जेर मणी ससारत दुक्ख आगमी कूडइ अग्निमानि, वृडी पढिताईइ
नञ्जा इता नरग माहि बूढइ ॥ १२३ २४ ॥

[सो] कर्मबहुल जीवहइ हितोपदेश दीधउ काई कान नाउइ ।
ए रात कहइ छड ।

३ [जि] एवहा निराचितकर्मी जीवहइ, उपदेमनी अयोम्यना
करइ ।

मा मा जपह बहुअ जे बद्दा चिक्खणेहिं कम्मेहिं ।
सन्वेसिं तेसिं जायइ हिओवणसो महादोसो ॥ १२५ ॥

[सो] मा मा० घणउ काई म बोलिम्यउ । बीना काई
१० कारण म कहिस्यउ । ज केतराइ जीवहइ हितोपदेश काई न लागइ ।
जे जीव चीरुणे कर्म करी बाधा छड गाढा कमबहुल छइ, तेह सबिहु
जीवहिइ हितोपदेश दीधउर महानोपहेतुइ जि थाइ । काई गुणि न
आयइ । यत उक्त—

अप्रशान्तमतो शास्त्रसद्भावप्रतिपादनम् ।

३५ दोषायामिनमोदीण क्षमनीयमिव ज्वरे ॥ १२५ ॥ ।

[जि] एहो उपदेशना देणहारो पुम्पो । बहुअ घणउ मति
बोम्उ । जे जीव चिक्खण चीरुणां अउश्यभोक्तय कर्म तेहे बाधा
व्याप्या हुइ ते सघलाई जीवहइ हितोपदेश धर्मनउ कहिवउ महादोष
रूउ, मुसहइ धूरु सोम जि मणी हुइ । काई लागइ नही । ति निकचित
१० नमनउ प्रमाण । जीवना चतुर्विध कम छइ । एक स्पष्ट कर्म । बीनउ
बद्ध कर्म । ग्रीजउ निधत्त कर्म । चउथउ निकचित । जिम छोहि दीधी
मीतिइ सामुही चूनानी डली मूकी राखीइ । अनइ त्या चूनानी सूकी

१ चिक्खणिहि २ जीवहइ

[सो] न मुर्णति० जेहमाहि धर्मनउ तत्त्व कहिउ छइ तेहउ सिद्धातशास्त्र न जाणइ अनइ जे परमार्थगुणिइ हित अनइ अहित वस्तु, रूडउ विरूड, पुण्यपाप न जाणइ, घालाण० ते बापडा मूर्ख अनाणपणइ पाप करता उपरि मुणिअ० जाततत्त्वइ रोपे निम्न हु० ' ए बापडा अनाण धर्म न जाणइ, तु सिउ जाणइ ' इम तेह ५ उपरि करणाइ जि आवइ । इम कहइ, ' सुच्चा ते जिअलोए जिणयण जे नरा न याणति ' इत्यादि ॥ ११७ ॥

[जि] ने मूर्ख धर्मतत्त्व न जाणइ अनइ चली परमार्थगुणि करी हितकारीउ सत्य शास्त्र, अहिअ अहितकारीउ न जाणइ । ताण घालाण तेहा बालकां उपरि मूर्ख ऊपरि मुणिअतत्ताण जाततत्त्व० तत्त्वना जाणहार पुठपइइ किमउ रोस ? अपि तु कोई रोस नही । बाल शब्दइ मूर्खइ कहाइ अनइ आचलि धावणउ बालइइ कहीइ । तेह मणी जिम बालक तत्तातत्त्वविचार न जाणइ, हित-अहित न जाणइ । तेह बालकां उपरि डाहीयार लोक रीस न करइ ॥ ११७ ॥

[मे] जे न जाणइ धर्मनउ रहस्य अनइ शास्त्र, जे पर-आपनइ^{२५} हित नइ अहित, पुण्य नइ पाप तेहनइ अधिक गुणकारक न जाणइ ते बाल मूर्ख ऊपरि धर्मना जाणनइ रोम किम करिवउ आवइ ' ॥ ११७ ॥

[सो] जे आपणउ हित न करइ ते पर रहइ किम हितूआ हुसिड ? ए बात कहइ छइ ।

[जि] मूर्ख दयावत न हुइ । ए बात स्थापइ ।

२०

१ ' हित न जाणइ ' ए पाठन स्थाने बीजी प्रतमां नचे प्रमाणे छे—
' हित अनइ अहित न जाणइ । अपना परमण्य इतिइ पाठि आपणपा अनइ परइइइ गुणकारीउ हित वस्तु अनइ अहित वस्तु रूडउ-विरूडउ पुण्यपाप न जाणइ '

दली भीतिइ लागी पात्री पडइ । भीतिमाहि फाई न रहइ । तिम मृष्ट
 कर्मनउ स्वरूप जाणियउ । स्मारएक लागइ ते तन्काळ विल्इ जाइ ते
 मृष्ट फम । वली तिम सूकी छोइपनिन भीति । तेह उपरि नीली
 चुनानी दली लारीइ । पठइ कौडिणक सूरी पृठइ भीति हुंती उरौली
 लावइ । भीतिइ सूकी भणा गगार्इ १ रहइ । तिम बद्धकर्म पीरइ कर्म ३
 लागइ, नेतलीणक वला रहइ । पठइ उपकमि करी फाटइ । त बद्धकम ।
 वगी तिम नीली भीतिनी छोइ माहे सूकउ चुगानउ स्वड घालीयइ ।
 पठइ फालातरि दोहिलउ नीकलइ । तिम निवत्त फम । जीवइइ फम
 लागइ । जीव भोगवइ । कालानरि गाइ उपकमि जे कर्म फीइ ते
 फम निवत्त नाम जाणिवउ । अनइ तिम नीली छोहि मउ भीति चिर्णाः१०
 हुइ अनइ भीतिनी छोहि सूकी पृठइ वज एरपणउ हुइ तिम
 निराचित कर्म । जीव नइ फम एर हया । जूजूया न धाइ । जा जीवइ
 जीव ता ते फम भोगवइ । गाइ जनते उपकमे कीरे १ जाइ । संपूर्ण
 फम भोगवीइ ते निराचित फम । तथा चोक्त—

कृतकर्मभयो गाम्नि कल्पकोटिशतैरपि ।

१५

अशक्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥

इत्यादि फमस्वरूप कर्मग्रन्थशास्त्रनउ जाणियउ । एतलइ जे चीरणे
 कर्म लीप्या तेहा जीवइइ उपदेश १ लागइ । यदुक्त श्रीउपदेश-
 मालाया—

उपणममहम्सेहि त्रि बोहिज्जनो न सुज्जइ फीई ।

१०

जह चभदत्तराया उदायिनिरमारओ चेर ॥ १२५ ॥ (गा ३१)

[मे] मा मा० षणउ षणउ षणउ म बोलउ । जे जीव
 चीरणे कर्म बाध्या छइ तीयां सघलानइ रिपइ हितोपदेश महादोष
 समान हुइ ॥ १२५ ॥

[सो] सम्यक्त्व पापइ श्रीधर्म खरउ न हुइ । ए वात कहइ छइ ।

सव्यगं पि हु मगड जह न चलइ इक्ष्वाकुयलारहिष' ।
तह धम्मफटाटोव न चलइ' सम्मत्तपरिहीण ॥ ११६ ॥

१ [सो] सव्य० जिम सगड गाडठ धुरी घूमर समइल प्रमुस्य
सर्व आगे' करी सहित हुइ, पुण एक बडइल न हुइ तु न चालइ ।
तह धम्म० तिम घमनउ फटाटोप भटाण घणइ करइ, तप नियम
क्रिया दान सील कष्टानुष्ठानादिकु करइ । पुण सम्यक्त्व नथी तउ काई
चालइ नही । अल्प फल थाइ । अत्तन कष्टइ जि' थाइ । जिम तामलि
२०रिपिनइ घणउ तप कष्ट कीधउ, अल्प फल हुउ ।

सद्धि वासमइस्सा तिसत्तवुत्तो दपण धोएण ।

अणुचिन्न तामलिणा अत्ताणतवुत्ति अप्पफलो ॥ (उपदेशमाला, गा ८१)

[मे] सघले अगे संयुक्त हतउ शकट एक बडहिल रहित न
चालइ । तिम धर्मनउ स्फटाटोप एक सम्यक्त्व रहित फल्दायन न
२५हुइ ॥ ११६ ॥

[सो] जे जीव सिद्धान न मांभइ, हित अहित न जाणइ ते
आशी कहइ छइ ।

[जि] अथ तत्त्वज पुरुष मूर्ध उपरि रीत न धरइ । ति वात
कहइ ।

३०न मुणति धम्मत्त सत्य परमत्थगुणहिअ अहिअं ।
यालाण ताण उवरिं कह रोसो मुणिअत्ताण' ॥ ११७ ॥

१ आ गाथा तथा तेनो बालावबोध जि मां नथी २ मे षडहिला ३ मे
फउइ ४ अंगी ५ स्फटाटोप ६ जि थाई नथी ७ मे परमत्थ ८ जि
मुणिधम्मार्ण मे मुणिअधम्मार्ण

[मो] वली ष्ट्र जि वात करइ छइ ।

[जि] पह नि वात प्रमागतरी करी वली कहइ ।

हिअपग्नि जे कुसुद्धा ते किं युज्जति धम्मवपणेहिं ।
ता ताण क्ख गुणिणो निरत्थय दमहिं^१ अप्पाण ॥ १२६ ॥

५ [सो] हिअपग्नि० जे जीव हिअइ बुद्धा अघर्म
मायाविया हुइ ते धमने वचने किम बूझइ^२ घणाइ धर्मोपदेश दिउ,
पणि ते न^३ बूझइ । ता० तेह मणी तेहहूइ बूझवयानइ कारणि जे^४
सप करइ ते आपणपउ निरवक दामइ^५, झेस करइ । तेह^६ अयोम्यहूइ
सप कीची निरर्थक थाइ । कई गुण न करइ । यत उक्त—

१० ये वैनेया विनयनिपुणंस्ते क्रियन्ते विनीता
नावैनेया विनयनिपुणं शक्यते संविनेतुम् ।
दाहादिभ्य समलममल स्यात्सुगुणं सुगुणं
तायम्पिण्डो भवति कनक छेददाहभ्रमेण ॥ १२६ ॥

[जि] जे पुरुष हियामाहे कुसुद्ध दुष्ट हुइ ते किम धमने
१५ वचने करी प्रतिबूझइ^१ सरलचिहई ज धर्माक्षरे करी प्रतिबूझइ । ता
तउ पछइ गुणवत परोपकारी पुरुष ताण क्ख तेहां दुष्टाने कीधइ
निरर्थक आपणपउ दमइ खेतावइ ॥ १२६ ॥

[मे] जे मनुज हीयामाहि कुसुद्धा छइ ते धमने वचने किम
प्रतिबूझइ^२ ते ते जीव प्रतिबूझयानइ कारणि गुणवत निरर्थक आपणपउ
२० दमइ, झेस करइ । तिहा क्षप कीची वृथा थाइ ॥ १२६ ॥

१ जि युज्जति २ दमइ ३ न बूझइ
प्रतमांशी वनी गया छे ४ जि ५ दमइ ६ तेह

सदहई^३ एअने पाठ बीजी

[मो] न मुणति० जेहमाहि धर्मनउ तत्त्व केंहिउ छइ तेहउ सिद्धातशास्त्र १ जाणइ अनइ जे परमार्थगुणिइ हित^१ अनइ अहित वस्तु, रूडउ विरूडउ, पुण्यपाप न जाणइ, घालाण० ते बापडा मूर्ख अनाणपणइ पाप करता उपरि मुणिअ० ज्ञाततत्त्वइ रोप किम हुइ ? ' ए बापडा अजाण धर्म न जाणइ, तु सिउ जाणइ ? ' इम तेह ५ उपरि करुणाइ नि आवइ । इम कहइ, ' सुचा ते जिअलोए जिणयण जे नए न याणति ' इत्यादि ॥ ११७ ॥

[जि] जे मूर्ख धर्मतत्त्व न जाणइ अनइ बली परमार्थगुणि करी हितकारीउ सत्य शास्त्र, अहिअ अहितकारीउ न जाणइ । ताण घालाण तेहां बालका उपरि मूर्ख उपरि मुणिअनत्ताण ज्ञाततत्त्व^{१०} तत्त्वना जाणहार पुरुषइ किमउ रोस ? अपि तु कोई रोस नही । बाल शब्दइ मूर्खइ कहाइ अनइ आचलि धावणउ बालइ कहीइ । तेह भणी जिम बालक तत्त्वातत्त्वनिचार न जाणइ, हित-अहित न जाणइ । तेह बालकां उपरि टाहीयार लोक रीस न करइ ॥ ११७ ॥

[मे] जे न जाणइ धर्मनउ रहस्य अनइ शास्त्र, जे घर-आपनइ^{११} हित नइ अहित, पुण्य नइ पाप तेहनइ अधिक गुणकारक न जाणइ ते बाल मूर्ख उपरि धर्मना जाणइ रोस किम करिवउ आव^{१२} ॥ ११७ ॥

[सो] जे आपणउ हित न करइ ते पर रहइ किम हितूआ हुसिइ ? ए बात कहइ छइ ।

[जि] मूर्ख दयावत न हुइ । ए बात स्थापड ।

१०

१ ' हित न जाणइ ' ए पाठने स्थाने ' बीमा प्रथमा न के प्रमणे छे—
हित अनइ अहित न जाणइ । अपना परमप्य इतिइ पाठि आपणपा अनइ परइइइ गुणकारीउ हितु वस्तु अनइ अहित वस्तु रूडउ-विरूडउ पुण्यपाप न जाणइ

[સો] ધમની આસ્યા' જીવહૂદ પાપ ફેડઈ' । એ વાત વહઈ છઈ ।

[જિ] જઈ દુષ્ટ ભારેકમા જીવને હિયયઈ જિનધર્મોપદેશ ન લાગઈ તડ પઠઈ તિમુ જિનધર્મ પ્રમાણ' ઈસી શકા ફેડિવા મળી જિનધર્મનડ પ્રમાણ ચોલઈ ।

દૂરે કરણ દૂરમ્મિ સાહ્ણ તહ પમાવના દૂરે ।
જિણધમ્મસદ્દહ્ણ પિ તિમ્મવદુક્કયાઈ નિટ્ઠવઈ ॥ ૧૨૭ ॥

[સો] દૂરે૦ શ્રીજિનધર્મનડ કરિવડ આરાધિવડ તે દૂરિ પરહડ છઈ અનઈ જિનધર્મનુ સાહ્ણ કહિવડ, થાપિવડ, અનેરાનઈ હિઅઈ આણિવડ તેહઈ પરહડ છડ । તથા શ્રીનિનશામનની પ્રમાવના ૧૦ લોકમાહિ રૂડડ મવાટિવડ, બાણ લોઠઈ પાહિ વગ્વણાવિવુ તેહઈ પરહડ છડ । તેહ ઈકે જીવ તીર્થકરપદવી ગણધરપદવી ફેવલજાન મોક્ષ લગઈ અર્જાઈ । જિણધમ્મ૦ વીનડ ફાઈ મ કરિમ્યડ । જિનધર્મનડ સદ્દહ્ણ માત્ર કરઈ, આમ્થાઈ તિ મનિ આણઈ તેડ તિમ્મવદુક્કયાઈ તીક્ષ્ણ ગાઢા પોનના પાપ નીઠવઈ ક્ષપઈ, હલ્લઅર્મ્મનડ થાઈ ॥ ૧૨૭ ॥ ૧૫

[જિ] જિનધર્મનડ કરણ કરિવડ દૂરિ વેગલડ હુડ અનઈ જિનધર્મનડ માધન તપશ્ચરણાદિ પ્રમાણિ ચઢાવણ પુણ દૂરિ હડ । તહ તથા જિનધર્મની પ્રમાવના દ્રવ્ય વેચી જિનગ્રાસનિ પ્રોત્સર્પણા તેહીઈ વેગલી છઈ । શ્રીજિનધર્મ સાચડ રૂડડ સ્વરડ । ઈમુ જિનધર્મનડ શ્રદ્ધાનઈ તીક્ષ્ણ તીવ દુકગ્વહૂદ નિરાકરઈ નિટ્ઠવઈ ફેડઈ ॥ ૧૨૭ ॥ ૨૦

૧ આસ્યાઈ ૨ આ 'ફેડઈ શ'દથી માથી બાકીનો બાલાવબોધ કે ૧૨૭ મી ગાથા સો ની ધીજી પ્રતમાં નથી માત્ર આ ગાથા ઉપરના બાલાવબોધના છેવળે કે શબ્દો 'હલ્લઅર્મ્મનડ થાઈ' તેમા છે અર્થાત્ ૧૨૭ મી ગાથા અને તે ઉપરના બાલાવ બોધને સ્થાને સો ની ધીજી પ્રતમાં માત્ર આટલુ છે— ધમની આસ્યાઈ જીવહૂદ પાપ [વચ્ચેનો વધો પાઠ પછી નામો છે] હલ્લઅર્મ્મનડ થાઈ' ।

अप्पा वि जाण वइरी तेसिं कह होइ परजिए करुणा ।
चोराण वदियाणं य दिट्टतेण मुणेअञ्च ॥ ११८ ॥ -

[सो] अप्पा० जेहनइ आपणउ आत्माइ वइरी । आपणा जीवइनु हित नथी करता तेहो पाप करइ छइ । जेहा^१ आपणउ^२
५ आत्माइ गाढउ संसारमाहिं ठरइ । तेहइइ अनीरा^३ जीवनइ विपइ
करुणा किम हुइ । चोराण० जिम चोर अथवा जे माणस यदि धरइ
तेहनइ दृष्टातिइ जाणिवु । जिम ते चोरी करता, यदि धरता, परइइ
अनथ करता आपणउ न चीतवइ । 'अहो धरीसिउ, मारीसिउ, अनर्थ
प्रामिम्यउ' ए वात कई विमासइ नहीं । तिम तेहइ पाप करता
१० चीतवइ नहीं ॥ ११८ ॥

[जि] जाण० जेहां पुरुषइइ आपणउ आत्मा वइरी,
आपणा जीवइइइ हित न करइ तेसिं तेहा पुरुषइइइ परजिए
पारका जीव उपरि किमु करुणा दया हुइ ? अपि तु न हुइ । ए वात
चोराण चोरनइ दृष्टाति, वदियाण य वदी बदोर बादि शाल्या लो^४
५० ते बिहुने दृष्टाति जाणिवी । जिम चोर आपणा जीवइ उपरि दया
अणकरतउ हूतउ पारका जीव उपरि दया न करइ । जइ चोर आपणाई
जीवइइ बिरुउ चीतनी लोकरइइइ परद्रव्य लेता मारइ । अनइ जे जे
आपणा जीवइइ हित न करइ ते ते पारका जीव उपरि दयाई न करइ ।
जिम चोर । अनइ जे जे पारका जीव उपरि दया करइ ते ते आपणाइ
१० जीवइइ हित करइ । जिम सुसाधु लो^४ । इसु प्रमाणिकनउ वचनई
जाणिवउ ॥ ११८ ॥

[मे] जेहनइ आपणउ आत्मा वइरी, आपणा आत्मा उपरि
दया न उपजइ तेहनइ अनेरा जीव उपरि करुणा दया किम हुइ ?

[मे] वीनरागना धर्मनउ फरिवउ दूरि रहउ । क्रियानउ साधियउ दूरि रहउ । तिम शासननी प्रभावगा पणि दूरि रहउ । एक ले जिनधमनउ सहहिबउ ते तीक्ष्ण गाढा पोवना पाप धनी जे दुक्क तेहनइ नीटवड ॥ १२७ ॥

5 [सो] धर्म सामलियागा मनोरथ फहइ छइ ।

[जि] अथ सुश्रामनी धमचिन्ता कइइ ।

कइया होहि दिवसो जइया सुगुरुण पायमूलम्मि ।
उस्सुत्तलेसविसलवरहिओ' निसुणेमि' जिणधम्मं ॥ १२८ ॥

[सो] कइया० ते दिहाडउ मज्झइ कहिइ हुसिइ, जहीइ १०हु उत्तम चारित्रिया सुगुरुनइ पन्मूलि उस्सुत्तलेदा ल्गारइ उत्सूत्ररूपिउ निपन्न मिसनउ लेस तीण करी रहित सरउ श्रीजिनधर्म सामलिसु । जेइ भणी निनवचननउ सामलियइ जीवहइ मोटउ गुण उपजइ । यत उक्त—

नवि त करेइ देहो न य सयणा नेय वित्तसवाओ ।

15 निणवयणसयणजणिया ज संवेगाइया लोण ॥ १२८ ॥

[जि.] कइया कदा निगारइ दिवसो दिहाडउ होहि होसिइ, जइया यदा निगारइ सद्गुरुनइ पादमूलि चरणमलि निनधम निसुणिमु सामलिसु । कियउ हतउ । उत्सूत्रनउ लेस तेह रूपिउ निपलय तिणि करी रहित हनउ । एतलइ ते दिहाडउ किहीइ २०होसिइ । जिणि दिहाडइ गुरुनइ पदकमलसमीपि जिनधर्म सामलिसु ते दिन वृताथ ॥ १२८ ॥

१ रिहिउं २ निगुणेमु जि निगुणेमु मे निगुणेमु

इहा चोर नइ बदीना दृष्टात, जाणिवा । जिम चोरु चोरीइ पदसइ अनइ
मरिवाइतउ बीहइ नहीं । बदिद्याण बदि झालिवा पदसइ तिम जाणिवउ
॥ ११८ ॥

[सो] जीव उत्तम, मध्यम, अधम त्रिहु प्रकारे हुइ । ए वात
त्रिहु गाहे कहइ छइ । 3

[जि] अथ सुश्रावकि दयावति मोटा पापव्यापार न करिवा ।
इसु कहइ ।

जे रज्जधणार्ण कारणभूआ हवति वाचारा ।
ते वि हु अइपावजुआ घन्ना छडुति भवभीया ॥ ११९ ॥

[सो] जे धन्य उत्तम छइ ते जेहे व्यापारे राज्य लाभइ, धन^{१०}
धान्य समृद्धि मान महत्त्व लाभइ ते वि हु^० तेहइ व्यापार अति
पापमय^१ जाणी छाडइ । ससारना दुस्वभए बीहते दीक्षा ऐई आपणा
काज साधइ ॥ ११९ ॥

[जि] जे व्यापार राज्यधनादिकहइ कारणभूत हुइ, जेह
व्यापार हता राय धन धान्य सुरर्ण रूप्य रत्नादिक ऊपार्जीइ ते वि^{१५}
तेहई व्यापार हु निश्चइ अतिपापसंयुक्त हुइ । तउ धन्य वृत्तपुण्य
संसार हता बीहता ते व्यापार छाडइ ॥ ११९ ॥

[मे] जे राज्यधनादिक ऊपार्चिबानइ कारणभूत व्यापार हुइ
तेहइ अतिपापयुक्त व्यापार भव ससार हता बीहता छाडइ । तेही धन्य
जाणिवा ॥ ११९ ॥

[मे] कहीइ ते दिहाडउ मुशनइ होइसिइ, जहीइ सुगुरु मुद्ध
प्ररूपरुनइ पादमूलि उख्खुलेमरूप विपलव तिणि करी रहित हतउ
जिनधर्म सामन्सि १ ॥ १२८ ॥

[सो] वली गुर आधी' कहइ छउ ।

[जि] अउ गुरचिन्ना आधी कहइ छउ ।

३

दिट्ठा वि केवि गुरुणो हिआण न रमति मुणिअतत्ताण ।
केवि पुण अदिट्ठ चिय रमति जिणवह्खुत्तो जेम ॥ १२० ॥

[सो] टिट्ठा^० वेनगइ गुरु माभात् दीठाइ हुता तत्ता
जाणनइ मनि रमइ नही । हीमइ हप न करइ । केवि^० अनट
वेनगइ पुण गुरु अणदीठाइ हुता हीइ रमइ वमड' । तेहना' गुण'^{१०}
सामलीनइ हीइ हप ऊपनइ । तिम श्रीजिनवह्खुभसूरि । ते
जिनवह्खुभसूरि नेमिचद्र भडारीथा पहिला ह्जा मणी अट्टइ
हुता नेमिचद्र भडारीनइ मनि तेहना कीथा पिण्डविशुद्धि
आदिक प्ररुण देपतां वम्या । इमिउ भाउ ॥ १२८ ॥

[जि] मुणिअतत्ताण ज्ञाततत्ताने हियइ केईण्क गुरु^{१५}
दीठाई हुता न रमइ, न वमइ, न गमइ । अनइ वली केईण्क अदीठाई
गुरु हीयइ रमइ । किन्नी परि १ श्रीजिनवह्खुभसूरिनी परि । तिम
श्रीजिनवह्खुभसूरि अणदीठाई हुता श्रीनेमिचद्र भडारी प्रमुन्न
ज्ञातनत्त्व श्रावकने हीए सुगुरुपणइ करी वम्या तिम केईण्क सुगुरु
हीइ अणदीठाई वमइ । एतारना श्रीजिनवह्खुभसूरि पहिलु हउ^{१०}
तिणि कारणि श्रीनेमिचद्र भडारीइ न दीठा । पुण तउ हीइ जाणे
फिरि दीठाई ज छइ । जइ हियामाहे वमइ छइ ।

[जि] उत्कृष्ट पुरुषनी वात कही मध्यमनी वात कहइ ।

पीयां य सत्तरहिजा घणसयणाईहि मोहिआ लुद्धां ।
सेवति पावकम्म वावारे उयरभरणठे ॥ १२० ॥

[मो] बीया० बीजा जे मध्यम पुंस्य घरवार छाडी दीक्षा
५ लेवाइ साहमि करी रहित धन लक्ष्मी आइ पुत्रकन्यादिक स्वजन
घरादिकनइ मोहिइ मोक्षा लोमि वाक्षा पेट भरवानइ कारणि पापव्यापार
व्यसय वाणिज्य क्षेत्रादिकनउ व्यापार करइ, काई काई गृहस्थधर्म
आराधता हता । ए बीजा मध्यम पुरुष कहीइ ॥ १२० ॥

[जि] बीजा मध्यम पुरुष सत्त्वरहित घण द्रव्य अनइ स्वजन
१० पुत्र तेहे मोक्षा लुद्धा लोमिया हता व्यापारमाहे उदरभरणार्थि पट
भरिवा भणी पावकम्म पापर्म सेवइ समाचरइ । ते मध्यम पुरुष
जाणिवा ॥ १२० ॥

[मे] बीजाइ चली सत्त्वि करी रहित धनस्वजादिके मोहित
हता लोमिया हता पापर्म सेवइ । स्या भणी उदर भरिवानउ
१५ व्यापार तेहनइ अर्थि ॥ १२० ॥

[जि] अथ अधम पुरुष कहइ ।

तईयां अहमाण अहमा कारणरहिआ अनाणगच्चेण ।
जे जपति उसुत्त तेसि धिद्धी त्थु पडित्त ॥ १२१ ॥

[सो] तईया० बीजा ए अधम पाहि अधम फाजनाम
२० पापइ आपणइ अजाणवइ गर्वि पूरिया जे जपति० उत्सूत्र बोल्इ,

१ विद्या मे बीयाइ २ मे लुद्धा ३ मे पावकम्मे ४ भरणा
५ पापव्यापार नइ ६ जि तईयाहमाण अहमा, मे तईया अहमाणहमा ७ मे
पडित्ते ८ एक

[मे] वीतरागता धर्मनउ करिउउ दूरि रहउ । क्रियानउ साधिउउ दूरि रहउ । निम शासानी प्रभावना पणि दूरि रहउ । एउ वे निधर्माउ सद्विउउ ते तीक्ष्ण गाढा पीता पाप धर्मी जे दुक्क तेनइ नीठइ ॥ १२७ ॥

5 [सो] धर्म सामलिवाा मोरय कहइ छइ ।

[जि] अथ सुश्रावकनी धर्मचिन्ता कहइ ।

कइया होहि दिउसो जइया सुगुरुण पायमूलमि ।
उत्सुत्तलेसत्रिसलवरहिओ' निसुणेमि' जिणधम्मं ॥ १२८ ॥

[सो] कइया० ते दिहाडउ मझइ कहइ हुसिइ, जहीइ उत्तम चारित्रिया सुगुरुनइ पदमूलि उत्सूत्रेश लमारइ उत्सूत्ररूपिउ त्रिपल्य त्रिसनउ लेम तीण करी रहित मरउ श्रीचिनधर्म सामलिसु' जेह भणी जिनचननउ सामलिउइ जीउइ मोटउ गुण ऊपइ । यत उक्त—

नवि त करेइ देहो न य सयणा नेउ वित्तसघाओ १

15 जिणयणसरणजणिया ज सपेगाइया होए ॥ १२८ ॥

[जि] कइया कदा किनारइ दिउसो दिहाडउ होहि होसिइ, जइया यदा निवारइ सदगुरुनइ पादमूलि चरणकमलि जिणधर्म तिसुणिसु सामलिसु' किमुउ हूतउ' उत्सूत्रनउ लेस तेह रूपिउ त्रिपल्य तिणि करी रहित हूतउ । एतइ ते दिहाडउ किहीइ होसिइ' जिणि दिहाडइ गुरुनइ पकमलममीपि जिणधर्म सामलिसु तै दिन वृताथ ॥ १२८ ॥

१ सिद्धिउ २ तिसुणेसु त्रि तिसुणेसु मे तिसुणेसु

सिद्धात विरुद्ध भाषण । तेसिं० तेहना पडितपणाहूई^१ धिग् धिग् हउ ।
ते आपणइ मनि डाहा थई बोळ्ट छइ, पुण उतसूत्र भाषणइ आगलि
आपणइ^२ घणउ समारमाहि रणिसिड ॥ १२१ ॥

[जि] तईया त्रीना अधमाधम कारणरहिआ कारण
विणु फाज पावइ अनाणगळेण अनानगर्ग करी, कृडइ अहमारि ५
करी जे पुरुष उतसूत्र सिद्धात विरुद्ध वचन जपनि बोळ्ट तेसिं तेहा
अधमाधम पुरुष तणा पाडियहूई धिगस्तु धिकार हु । ते पारकइ
पीठणइ आपणा^३ गाल तोडड ॥ १२१ ॥

[मे] हिन त्रीजा अधमहट्ट पाहति अधम कारण पापड अजान
गर्वि गर्वित हूता जे उतसूत्र बोळ्ट तेहना पडितपणानइ धिग् धिकार १०
पडउ ॥ १२१ ॥

-[सो] गली^४ एह ति वात ऊपरि मरीचिनउ दृष्टात फहइ
छइ ।

[जि.] अथ ते अधमाधम उतसूत्र भाषकहूई सरीपउ दृष्टात
देखाणइ ।

१३

ज वीरजिणस्स जीओ मरिई^५ उतसूत्तलेसदेसणओ ।
सागरकोटाकोडिं हिंडइ अइभीमभवगणणे ॥ १२० ॥

[मो] ज वीर० श्रीमहाराीरनु जीव मरीचिनइ भवि
लगारएक उतसूत्र कपिल क्षत्रियहूई, 'ए त्रिदडियापणाइ^६ माहि फाई
धम छइ कि नथी ?' इम पूउना 'कविला ! इत्यपि इह्य पि' इसिउ^७
उतसूत्रमात्र उपदिसीनइ कौवाकोडि सागरोपम ज समाररूपीआ अति

^१ पडितपणाहूई ^२ आपणपइ ^३ वली नथी ^४ मिरिद जि मिरिईभवे
मे मिरिद ^५ भवरने ^६ त्रिदडीयापणा

[मे] कहीइ ते दिहाइउ मुस्ताइ होरमिइ, जहीइ सुगुरु मुद
प्रत्यकनइ पादमूनि उन्त्यलेमरुप विगन्त्र निणि कगी रहिन हूतउ
जिनपम सांमन्सि १ ॥ १२८ ॥

[मो] रनी गुरु आधीं पणइ छइ ।

[जि] अथ गुरन्तिता आधीं कहइ छइ ।

दिट्ठा वि केवि गुरुगो रिअण न रमति मुणिअनत्ताण ।
केवि पुण अदिट्ठ चिय रमति जिणयह्णणे जेम ॥ १२० ॥

[मो] दिट्ठा० कन्याइ गुर साम्भाव दीठाइ हुना तत्तया
जाणइ मनि रमइ नही । हीयइ ह्य ३ करइ । केचि० जाइ
केन्याइ पुण गुर अणदीठाइ हुना हीइ रमइ वमइ । तेहना^१ गुग^{१०}
सांमलीनइ हीइ ह्य ऊपणइ । जिन श्रीजिनवह्णभसूरि । ते
जिनचह्णभसूरि नेमिचद्र भडारीथा पहिला हूआ भगी बहइइ
हूता नेमिचद्र भडारीइ मनि तेहना^१ कीथां पिण्डविशुद्धि
आदिक प्रकरण देपनां वम्या । इसिउ भाव ॥ १२८ ॥

[जि] मुणिअनत्ताण पानतत्तयाने हियउ केईणक गुर^{१३}
दीठाई हूता न रमइ, न वमइ, न गमइ । जाइ वली केईणक अदीठाई
गुरु हीयइ रमइ । किहनी परि^२ श्रीजिनवह्णभसूरिनी परि । जिन
श्रीजिनवह्णभसूरि अणदीठाई हूता श्रीनेमिचद्र भडारी प्रमुण
पाततत्तय आयवने हीप सुगुरुपणइ करी वम्या तिम केईणक सुगुरु
हीइ अणदीठाइ वसइ । एनायना श्रीजिनवह्णभसूरि पहिल हउ ।^{१०}
तिणि वारणि श्रीनेमिचद्र भडारीइ ३ दीठा । पुण तउ हीइ जाणे
किरि दीठाई ज छइ । जइ दियामाहे वमइ छइ ।

वीर्यमगा अरण्यानादि भमइ । असख्यातउ काल नगने भयतरे रुन्इ ।
तेह भणी उत्सूत्रप्ररूपणा विन्ई । यन उक्त श्रीजीरस्तुतौ—

अहह सयल तावेहिं निरहपत्रयणमणुमनि दुरत ।

ज मरिइभवअज्जिअदुक्कयअवसेसलेमवमा ।

5 सुरयुयगुणो वि तिथफरो वि तिहुअणअतुल्लमहो वि ।

गोवार्इहि नि बहुमो कयत्थिओ तिनयपहु । त सि ॥

थीगोवभणमूणतगा नि केनि इह दढपहाराई ।

बहुपाया नि पसिद्धा सिद्धा निर तम्मि चैव मने ॥ १२२ ॥

[जि] ज जिणि नारणि श्रीमहावीरदेवनउ जीव मरीचि
१० नइ भनि, श्रीआदिनाथनउ पोत्रउ, श्रीभरतचक्रवर्तिनउ वेटउ
मरीचि उस्सुत्तलेसदेसणओ ' अन्हई कन्हइ काई थोडउ धर्म
छइ ' इसु उत्सूत्रनउ लयलेमना कहियातउ अइभीमभवगहणे
अतिरीद्र ससाररूपिउ गहन धन तेह माहि सागरोपमनी कोडाकोडि
हिंइइ भमइ । ते उत्सूत्रनउ प्रमाण ॥ १२२ ॥

15 [मे] जे श्रीमहावीरदेव तणउ जीव मीरीचि नामिइ
उत्सूत्रनउ लेस एन तेहनी देसनाइ करी एक कोडाकोडि सागरोपम
भीम रौद्र समागन्धप उन गहनमाहि हीडिउ भमिउ ॥ १२२ ॥

[जि]-तेह जि उत्सूत्रभाषक भारेकमउ । इसु विहु गाथाइ
प्रकासइ ।

20 ता जे इम पि वयण बारवार सुणित्तु समयम्मि ।
दोसेण अवगणित्ता उस्सुत्तपयाउ सेवति ॥ १२३ ॥

१ साहाइ २ जइ वि मे जइ ३ सुणिणु वि सुणिण

दूरस्थोऽपि रामीपस्थो यो यम्य हृदि वर्तते ।
चन्द्र कुमुदखण्डाना दूरस्थोऽपि प्रबोधक ॥ १२९ ॥

[मे] दीठाइ हता केतला गुरु धर्मतत्त्वना जाण छइ तेहनइ
हीयइ रमइ नहीं, गमइ नहीं । अनइ केतलाइ गुरु अणदीठाइ हता
5 जाणना हीयानइ रुचइ । श्रीजिनउद्धमसूरिनी परिइ । किम
श्रीजिनउद्धमसूरिना कीथा पिटविशुद्धिप्रमुख प्रकरण दीपीनइ
जिम नेमिचद्र भडारीनइ मनि अट्टाएँ हप ऊपनउ ॥ १२९ ॥

[सो] हव कुगुरु ऊपरि वात कइइ छइ ।

[जि] अब धर्मनाथ पुरुषनी वान कहइ छइ ।

10 अजया अइपाविट्टा सुद्वगुरू जिणवरिंदतुल्ल ति ।
जो इह एव मन्नड सो विमुहो सुद्वधम्मस्त ॥ १३० ॥

[सो] अजया० जे गुरु अजयणान् छइ, जीमनी विराधन
करइ छइ ।

दगाण पुण्णफण्ण अणेमणिज्ज गिइरवकिंघाइ ।

15 अजया पटिसेमति जइवेसविडमगा नवर ॥

(उपदेशमाला, गा ३४९)

ईण श्रीउपदेशमालानी गाहा जे कहिया छइ, अइपाविट्ट
अतिपापिष्ठ पाप बौन्ता फरताइ जेहइइ शका नथी एव्हाइ गुरु शुद्ध
चारित्रिया गुरु भणी मानइ, ' ए अम्हारइ जिनउद्ध तीर्थकर समान ।
20 जो इह० जे अजाणइ डम मानइ ते सूवा धर्मइइ निमुख ऊपराठ
जाणिउउ । तेहइइ धर्म केहाइ ह्कडउ' नथी ॥ १३० ॥

[जि] अजया इन्द्रियनयरहित अनइ पापिष्ठ आरम
करणहार हुइ एवहा अनइ एवहा जाणइ जु ' ए गुरु शुद्धचारि

हता जिनरेन्द्र तुल्य श्रीजिनरेन्द्र सरीपा' इति । जे श्रावक अथवा जे महात्मा अथवा अनेरजई कोई इह संसारमाहे एव इसु पूर्वोक्त मानइ ते पुरुष सुद्ध धमहूइ विमुख ऊपराठउ बाह्य ॥ १३० ॥

[मे] जयणारहित, अति पापिष्ट, पापमइ वचन बोलनां संकाइ नहीं एवहाइ गुरु सुद्धचारित्रिया कही मानइ । कहइ 'अम्हारइ ए ५ तीर्थंकर समान ।' जे अनाण इम मानइ ते सूधा धर्मनइ सर्वज्ञा वचननइ रिपइ विमुख ऊपराठउ जाणिवउ ॥ १३० ॥

[सो] एह जि बात ऊपरि कहइ छइ ।

[जि] तेही ज धर्ममाह्य अजाण श्रावकनइ उपदेश दिइ छइ ।

जइ' त वदसि पुञ्जसि वयण हीलेसि तस्स रागेण । १०
ता कह वदसि पुञ्जसि जणवायठिइ' पि न मुणेसि ॥१३१॥

[सो] जइ त० रे बापडा जीन । जइ' तू तीर्थंकर देन वांदइ छइ, पूजइ छइ, स्तवइ छइ, तु तू ते परमेश्वरनउ वचन 'सुमाहुणो गुरुणो पचिंदिअसंरणो० पचमहव्वयजुचो'० ?' इत्यादिक काइ अवगणइ' ? दृष्टिरागि' वाहिउ तेहेतेहवा आपणा गुरुनइ अनुरागि १५ वाहिउ हूतउ । परमेश्वरि कहिउ छइ । 'एहवा अष्टाचारनु आलावो सनासो वीसंभो संथवो पसंगो य० एतलां वानां न करिवा' इसिउ परमेवरनु वचन' जइ हीलइ छइ, अवगणइ छइ, मानतु नथी ता कह० तू परमेश्वरहूइ वांदइ काइ, पूजइ काइ ? जणवाय लोक व्यवहारइनी स्थिति न जाणइ छइ ॥ १३१ ॥

२०

१ जि जा, मे जो २ जि मे जिणवायठियं पि ३ जउ ४ पंचमहुव्वय
५ अवगुणइ ६ दृष्टिरागि ७ 'वचन नथी

सिद्धांतनी रीतिद करी, बली चउथउ कालनइ अनुमानि करी, वषाकाल टाली अनेइ सीपालइ उन्हाल्द कालि विहार करिमाइ अनुमानि करी, बली पाचमइ क्षेत्रनइ अनुमानि करी, तिणइ क्षेत्रिद वइतालीम दोषविर्निन शुद्ध आहार लाभइ तिणइ क्षेत्रि विहार करिमानइ देपिइ करी एह पाच परीभाउ करी परीक्षित हूतउ सुगुरु जाणित ५ मानित ॥ १३४ ॥

[मे] निज आपणी मनिनइ अनुयागि, व्यवहारनइ नाइ करी, सिद्धांतना वचननइ अनुयागि, द्रव्य क्षेत्र ना भावनइ अनुमानि परीपीनइ सुगुरु जाणिवउ ॥ १३४ ॥

[जि] तग्हीउ गुरु मोटइ पुण्यइ लाभइ । इसी बात कहइ ॥१०
तए वि हु' नियजडयाए कम्मगुरुत्तस्स नेव वीससिमो ।
घन्नाण रुपत्थाण सुद्धगुरू मिलइ पुण्णेहिं ॥ १३५ ॥

[सो] तह० तऊ आपणउ जडता मूर्खपणउ । कम्मगुरु०
अनइ आपणा भारेकमीपणानु वीमास न कराइ । पुण जाणइ केतीवारइ
गुरुइ परीपनउ बरासित हउ^१ । जेह मणी सुद्ध० सुद्ध मरउ^{१५}
गुरु धन्य धन्य कृतार्थ भाग्यवतइ जि रहइ, मोटा पुन्यनइ उदइ^१
मिलइ ॥ १३५ ॥

[जि०] तथापि हिं नियजडयाए निज आपणी जडता मूर्ख
पणउ तिणि करी कर्मगुरुत्तहइ भारेकमी जीवइ सुगुरु जाणियानउ
विश्वास नही । पुण धन्य भाग्यवन अनइ कृतार्थ कृतपुण्य पुरुषइ पुण्य^{२०}
करी सुद्ध गुरु चारित्री आचार्य मिलइ ॥ १३५ ॥

दूरस्थोऽपि समीपस्थो यो यम्य हृदि वर्तते ।

चन्द्र उमुत्खण्डाना दूरस्थोऽपि प्रमोघक ॥ १२९ ॥

[मे] दीठाइ हता केनला गुरु धर्मतत्त्वा जाण छइ तेहनइ
हीयइ रमइ नहा, गमइ नहीं । अनइ केनलाइ गुरु अणदीठाइ हता
५ चाणना हीयानइ रुचइ । श्रीजिनवल्लभसूरिनी परिइ । किम ?
श्रीजिनवल्लभसूरिना कीया पिंडविशुद्धिप्रमुख प्रकरण दीपीनइ
निम नेमिवद्र भंडारीनइ मणि अदृष्टि हप ऊपनउ ॥ १२९ ॥

[सो] हव उगुरु उपरि जात कहइ छइ ।

[जि] अब धर्मशास्त्र पुरपनी बात कहइ छइ ।

१० अजया अइपाविष्टा सुद्धगुरू जिणवरिंदतुल्ल ति ।
जो इह एव मन्नइ सो त्रिसुतो सुद्धधम्मस्स ॥ १३० ॥

[सो] अजया० जे गुरु अजयणाम्नु छइ, जीमनी विरायण
करइ छइ ।

दगपाण पुष्पाफल अणेमणिज्ज गिहत्थनिचाइ ।

१५ अजया पस्सेमति जइवेसनिटणगा नरर ॥

(उपदेशमाला, गा ३४९)

ईण श्रीउपदेशमालानी गाहा जे कहिया छइ, अइपाविष्ट
अतिपापिष्ट पाप बोळता करताइ जेहहइ शका नथी एवहाइ गुरु शुद्ध
चारित्रिया गुरु भणी मानइ, ' ए अम्हारइ जिनवरेंद्र तीर्थकर समान ।
२० जो इह० जे अजाणइ इम मानइ ते सूधा धर्महइ विमुग्ग ऊपराट
जाणिवउ । तेहहइ धम केहाइ इकडउ' नथी ॥ १३० ॥

[जि] अजया इन्द्रियनयरहित अनइ पापिष्ट आरम
करणहार हुइ एवहा अनइ एवहा जाणइ जु ' ए गुरु शुद्धचारि

[जि] दूममि दुग्धमात्रलिद दद्वे दडिद लोकि हूतद । वरी
 स्वदुग्धसिद्ध आपणा दुग्ध न्नीपनउ दुग्धनउ उदय तिणि । हूतद ।
 एतद्द एतउ दुग्धमात्रलि लोक दडिउ । वली दुग्ध अपरि दुग्ध
 एते रिदु हूते जेहा पुरुपानउ धर्म हूतउ सम्यक्त्व न चालइ तेहां
 ९ भाग्यवना पुरुपानउ हउ नेमिचन्द्र भडारी सम्यक्त्व प्रणमउ नम
 स्करउ ॥ १३३ ॥

[मे] ईणइ दुग्धमात्रलि लोक दडिद हूतद शिष्ट उचम
 लोके गाढे दुग्धीए हूते अनइ दुग्धनइ उदइ हइ हूतद । एवहइ छतइ
 धन्य ते जेहना चिच हूतउ सम्यक्त्व न चालइ तेहनइ हउ प्रणाम
 १० करउ ॥ १३३ ॥

[सो] वनी गुरु आश्री वान कहइ छइ ।

[जि] अथ गुरुपरीक्षारूप कहइ ।

निअमइअणुसारेण व्यवहारनण्ण समयसुद्धीण^१ ।

कालखित्ताणुमाणेण परिक्रियओ जाणिओ सुगुरू ॥१३४॥

११ [सो] वनि कहइ छइ । आपणी बुद्धिइ अनुसारि, व्यवहार
 नयइ करी, सिद्धातगा वचननइ अनुमारि, कालक्षेत्रनउ अनुमानि, कालक्षेत्र
 संघयणादि जिस्सा छइ तेहनइ मानिइ चारित्र क्रियानी सर्व शक्ति^१
 खप करइ छइ । तेहनइ अनुमानिइ परीपी गुरु लीघउ अनइ मानिउ
 छइ ॥ १३४ ॥

१० [जि] निचमतिनइ अनुमारि करी आपणाइ बुद्धिप्रागल्भ्यनइ
 प्रमाणि करी, वली व्यवहार लोकाचार तेहनउ नय न्यायरीति तिणि
 करी अनइ वली त्रीजउ समयबुद्धीण सिद्धातनी बुद्धिइ करी

१ जि बुद्धीए २ शक्तिइ

हृता चिनारेन्द्र तुल्य श्रीजिनारेन्द्र सरीषा ' इति । जे श्रावक अथवा जे महात्मा अथवा अनेरउई कोई इह संसारमाहे एव इसु पूर्वोक्त मानइ ते पुरुष सुद्ध धर्महइ त्रिमुख ऊपराठउ बाह्य ॥ १३० ॥

[मे] जयणारहित, अति पापिष्ट, पापमइ वचन बोलता सकाड नहीं एवहाइ गुरु सुद्धचारित्रिया कही मानइ । कहइ 'अम्हारइ ए ५ तीर्थंकर समान ।' जे अजाण इम मानइ ते सूधा धर्मनइ सर्पचना वचननइ विपइ त्रिमुख ऊपराठउ जाणियउ ॥ १३० ॥

[सो] एह जि वात ऊपरि कहइ छइ ।

[जि] तेही ज धर्मबाह्य अजाण श्रावरुनइ उपदेश दिइ छइ ।

जइ' त वदसि पुज्जसि वयण हीलेसि तस्म रागेण । १०
ता कह वदसि पुज्जसि जणवायठिड' पि न मुणेसि ॥१३१॥

[सो] जइ त० रे थापडा जीव ! जइ' तू तीर्थंकर देव वादइ छ', पूजइ छइ, स्तवइ छइ, तु तू ते परमेश्वरनउ वचन 'सुमाहुणो गुरुणो पार्चिदिअसरणो० पंचमहव्ययजुचो'०' इत्यादिक काइ अजगणइ २ दृष्टिरागि' वाहिउ तेहतेहवा आपणा गुरुनइ अनुरागि १५ वाहिउ हतउ । परमेश्वरि कहिउ छइ । 'एहवा अष्टाचारनु आलावो संवासो वीसंभो सयवो पमंगो य० एतला वाना न करिवा' इसिउ परमेश्वरनु वचन' जइ हीलड छइ, अजगणइ छइ, मानतु नथी ता कह० तू परमेश्वरहइ वादइ काइ, पूजइ काइ २ जणवाय लोक व्यवहारइनी स्थिति न जाणइ छइ ॥ १३१ ॥

२०

१ जि जा, मे जो २ जि मे जिणवायठिय पि ३ जउ ४ पंचमहुवय'
५ अवगुणइ ६ दृष्टिरागि ७ 'वचन' नथी

[जि] अथ जिनधर्म तणउ जाणियानउ प्रसार कहइ ।

जिणधम्म दुन्नेअ अइसयनाणीहि नज्जए^१ सम्म ।

तह वि हु^२ समयट्ठिइए^३ चवहारनण्ण नायव्व ॥ १३७ ॥

[सो] जिण० जिनधर्म जाणता गाढउ^४ दोहिलउ छइ ।

अइसय० अतिशयजानी जे मनोगत भाव जाणइ, मम्यग् एहे^५ जि ५

जाणइ ज 'एहमाहि धर्म छइ ।' नह वि हु० तऊ बीजे छद्मस्थे

सिद्धातमाहि निसी परीक्षा कही छइ तिसी स्थितिइ करी व्यवहारनयइ^६

धर्म जाणी लेउ । सर्वथा अनाम्या न करिवी ॥ १३७ ॥

[जि] जिनधर्म दुर्ज्ञय जाणता दुहेलउ, पुण अतिशय ज्ञानवत

पुरुषे सम्म सम्यक् प्रसारि साचउ जाणीइ । तह वि तउहीइ^{१०}

निश्चइ ममयट्ठिइए सिद्धातनी स्थितिइ अनइ चवहारनण्ण

लोकव्यवहारनइ न्यायि करी लोके जिनधर्म जाणियउ । 'अहो सिद्धातनी

रीतिइ धम जाणीइ ते प्रमाण, पुण लोकव्यवहारइ धर्म जाणीइ ते किम

प्रमाण ?' इसु म कहे । 'लोगविरुद्धचाओ' इना सिद्धातना वचन

इतउ । जिम सिद्धातस्थिति प्रमाण तिम लोकव्यवहारइ प्रमाण । तथाः^{११}

चोक्त—

लोक म रूसउ, लोक जि तूसउ, लोक लेई परमारथि पइमउ ।

जइ तू जोगी त्रिभुवनसार, तइ तू न मेल्हे लोकचार ॥ १३७ ॥

[मे.] जिनधर्म जाणता गाढउ दोहिलउ । जे अतिशयवत

जानी हुइ तेह नि सम्यक्त्व जाणीइ जु 'एह माहि धम छइ ।'^{१०}

तथापि व्यवहारनइ ज्ञाइ सिद्धातनी परीक्षाइ मम्यग् करी जाणी लेउ ।

अनास्या न करिवी ॥ १३७ ॥

१ मे निजए २ मे ह ३ समयट्ठिइए, जि मे. समयट्ठिइए, ४ गा^{१०}उ.

५ एह ६ नयई करी

दूरस्थोऽपि समीपस्थो यो यम्य हृदि वर्तते ।

चन्द्र कुमुत्त्वण्डानां दूरस्थोऽपि प्रमोषक ॥ १२० ॥

[मे] दीठाइ हता केनला गुरु धर्मतत्त्वा जाण छइ तेनह
हीयइ रमइ नहीं, गमइ नहीं । अनइ केनलाइ गुरु अणदीठाइ हता
5 जाणना हीयाइ रुवइ । श्रीजिनवल्लभसूरिनी परिइ । किन ।
श्रीजिनवल्लभसूरिनां कीषा पितृविशुद्धिप्रमुख प्रकरण देपीना
निम नेमिचद्र भडारीनइ गी अट्टाए हर्ष ऊपाउ ॥ १२० ॥

[सो] हव उगुठ ऊपरि वान कइइ छइ ।

[जि] जय धर्मनाथ पुरुपनी वात फहइ छइ ।

10 अजया अडपाविट्टा सुद्धगुरू जिणवरिंदतुल्ल त्ति ।
जो इह एव मत्तइ सो त्रिमुहो सुद्धयम्मस्म ॥ १३० ॥

[सो] अजया० जे गुरु अजयणाअन छइ, जीवनी विराधना
करइ छइ ।

दगपाण पुण्णफल अणेमणिज्ज गित्थकिच्चाइ ।

15 अजया पट्टिसेवति जइयेसमिट्टणा नररं ॥

(उपदेशमाला, गा ३४९)

ईण श्रीउपदेशमालानी गाहा जे कहिया छइ, अडपाविट्टा
अतिपापिष्ठ पाप बोलता करताइ जेहहइ शका नथी 'एवहाइ गुरु शुद्ध
चारित्रिया गुरु भणी मानइ, 'ए अम्हारइ जिनवरेंद्र तीर्थकर समा ।'
20 जो इह० जे अजाणइ इम मानइ ते सूधा धर्महइ विमुख ऊपराठउ
जाणिवउ । तेहहइ धम केहाइ इकडउ' नथी ॥ १३० ॥

[जि] अजया इन्द्रियजरहित अनइ पापिष्ठ आरंभना
करणहार हुइ एवहा अनइ एवहा जाणइ जु 'ए गुरु शुद्धचारित्री

[मे०] तथापि हि आपणी जटना मूषाई तिणि करी अनइ वमाउ गुड भारीपणउ तिणि करी वेमास न करियउ । पणि ते धन्य वृत्तार्थ जे रदइ पुण्यनइ योगि सूधउ गुरु मिलइ ॥ १३५ ॥

[जि०] इणी नि कारणि सुगुरुप्राप्ति दुर्लभ कहइ ।

५ अहय पुणो अहन्नो ता जट, पत्तो अह न पत्तो य ।
तह वि हु सो मह सरण सपइ सो जुगप्पहाण' गुरू ॥ १३६ ॥

[सो०] अहय० हु पुण अपुण्य अभागीउ छउ । ता जइ० तु जइ मह गुरु प्राप्तिउ छइ अथवा नयी प्राप्तिउ, तउ निश्चिइ' मू रहइ तेह जि प्रमाण ॥ १३६ ॥

१० [जि०] श्रीनेमिचंद्र भंडारी गामि गामि नगरि नगरि गुरुपरीक्षा करतउ हूतउ फिरइ, पुण सुगुरु न रहइ । तिवारइ सु कहइ ' अहयं पुणो अहन्नो० । अहय हउ पुण अधन्यपुण्य छउ । ता तउ पठइ जइ किमइ सुगुरु पामिउ तउ पामिउ । अह न पत्तो य अथवा न पामिउ । तह वि-तथापि तउहीइ हु निश्चिइ मह मूहइ सो तेह जि सुगुरु शरण आराध्यपणइ आधार । जे गुरु संप्रति हिमडानइ कालि जुगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरि युगप्रधान गुरुना पण शरण । इति भाव ॥ १३६ ॥

[मे०] हउ तउ अकृतपुण्यीयउ । जेउ मई ते सूधउ गुरु पामिउ छइ अथवा नहि पामिउ । तथापि जे युगप्रधान गुरु छइ ते मूमुसनइ शरणि ॥ १३६ ॥

हृता निनरेन्द्र तुल्य श्रीजिनरेन्द्र सरीपा' इति । जे थावक अथवा जे महात्मा अथवा अनेरउई कोई इह संमारमाहे एव इमु पूर्वोक्त मानइ ते पुरुष सुद्ध धर्महूइ विमुख ऊपराठउ बाह्य ॥ १३० ॥

[मे] जयगारहित, अति पापिष्ट, पापमड वचन बोलतां संनाइ नहीं एवहाइ गुरु सुद्धचारित्रिया कही मानइ । कहइ 'अम्हारइ ए ५ तीर्थंकर समान ।' जे अजाण इम मानइ ते सूधा धर्मनइ मर्मज्ञना वचननइ विपद विमुख ऊपराठउ जाणिउउ ॥ १३० ॥

[सो] एह जि वात ऊपरि कहइ छइ ।

[जि] तेही ज धर्मबाह्य अजाण थावरुनइ उपदेश दिइ छइ ।

जइ' त वदसि पुज्जसि वयण हीलेसि तस्म रागेण । १०
ता कह वदसि पुज्जसि जणवायठिइ' पि न मुणेसि ॥१३१॥

[सो] जइ त० रे वापडा जीव । जइ' तू तीर्थंकर देव वांदइ छइ, पूजइ छइ, स्तनइ छइ, तु तू ते परमेश्वरनउ वचन 'सुमाहुणो गुरुणो पचिंदिअसरणो० पचमहव्यजुत्तो०' इत्यादिक फाइ अवगणइ' ? दृष्टिगि' बाहिउ तेहतेहना आपणा गुरुनइ अनुरागि १५ बाहिउ हतउ । परमेश्वरि कहिउ छइ । 'एहवा अष्टाचारनु आलावो संगासो वीसभो संघवो पमगो य० एतला वाना न करिवा' इसिउ परमेश्वरनु वचन' जइ हीलइ छइ, अवगणइ छइ, मानतु नथी ता कह० तू परमेश्वरहूइ वादइ काइ, पूजइ काइ ? जणवाय लोक व्यवहारइनी स्थिति न जाणइ छइ ॥ १३१ ॥ १०

[जि] अध जिनधर्म तणउ जाणिगणउ प्रकार कहइ ।

जिणधम्म दुत्तेअ अइसयनाणीहि नज्जण^१ सम्म ।

तह वि हु^२ समयट्ठिइण^३ ववहारनण्ण नायन्व^४ ॥ १३७ ॥

[सो] जिण^० जिनधर्म जाणता गाढइउ^१ दोहिलउ छइ । अइसय^० अतिशयज्ञानी जे मनोगत भाव जाणइ, सम्यग् एहे^२ जि^३ जाणइ ज 'एहमाहि धर्म छइ ।' तह वि हु^० तऊ बीजे छन्नस्थे सिद्धातमाहि निसी परीक्षा कही छइ तिसी स्थितिइ करी व्यवहारनयइ^४ धर्म जाणी लेउउ । सर्वथा अनास्था न करिवी ॥ १३७ ॥

[जि] जिनधर्म दुर्ज्ञय जाणता दुहेलउ, पुण अतिशय जानयत पुरुषे सम्म सम्यक् प्रकारि साचउ जाणीइ । तह वि तज्हीइ^{१०} निश्चइ सम्यग्द्विइण सिद्धातनी स्थितिइ अनइ ववहारनण्ण लोकव्यवहारनइ न्यायि करी लोके जिनधर्म जाणियउ । 'अहो सिद्धातनी रीतिइ धर्म जाणीइ ते प्रमाण, पुण लोकव्यवहारइ धर्म जाणीइ ते किम प्रमाण ?' इसु म कहे । 'लोकविरुद्धञ्चाओ' इसा सिद्धातना वचन इतउ । जिम सिद्धातस्थिति प्रमाण तिम लोकव्यवहारइ प्रमाण । तथा^{१३} चोक्त—

लोक म रूसउ, लोक जि तूसउ, लोक लेई परमारथि पइसउ ।

जइ तू जोगी त्रिभुवनसार, तइ तू न मेल्हे लोकाचार ॥ १३७ ॥

[मे.] जिनधर्म जाणता गाढउ दोहिलउ । जे अतिशयवत ज्ञानी हुइ तेइ जि सम्यक्त्व जाणीइ जु 'एह माहि धर्म छइ ।'^{१०} तथापि व्यवहारनइ चाइ सिद्धातनी परीक्षाइ सम्यग् करी जाणी लेउउ । अनास्था न करिवी ॥ १३७ ॥

[जि.] अथ जिनेन्द्रनइ वचनि निनधर्म जाणिवानउ फल कहइ ।

जम्हा जिणेहिं भणिअ सुअवहार विसोहगतस्स' ।
जायइ विमुद्धबोही जिणआणाराहगत्ताओ' ॥ १३८ ॥

5 [मो] जम्हा० जेः भणी जिन श्रीमर्जइ इम कहिउ छइ ।
श्रुतव्यवहार सिद्धातनउ मार्ग जोईनइ देवगुहर्म लिइ, जायइ० तु
विशुद्ध बोधि निमउ सम्यक्कारी प्राप्ति हुइ । जिण० जिननी आचानो
आराधक भणी । यदुक्त श्रीआजश्यके सामाचार्या—

निच्छयओ दुन्नेअ को माये कम्मि वड्डए समणो ।

10 व्यवहारओ उ कीइ जो पुनट्टिउ चरित्तम्मि ॥

व्यहारो वि हु वरव ज छउमत्थ पि वदई अरहा ।

जा होइ अणामितो जाणतो धम्मय एय ॥ (गा ७१६-७१७)

सिद्धांतउ व्यवहार प्रमाण करतउ केवलइ जे छद्मस्थि सिद्धांतइ
व्यवहारि जोई चाही मरउ निर्णेप भणी आणित हु, पुण ते आहार
15 उइ आधाकर्मी । तउ ते जिमइ । केवली इम न कहइ, 'ए आधाकर्मी
छइ' । इम कहिता सिद्धांतना व्यवहार ऊपरि अनास्था थाइ । तेइ
भणी न कहइ ॥ १३८ ॥

[जि] जम्हा यम्मात् जिणि कारणि जिने इसु कहिउ ।
सुअवचहार श्रुतव्यवहार सिद्धांतनी स्थिति विशोधता समाचरता
20 पुरुषइ विशुद्ध निमली बोधि निमम्यक्त्वप्राप्ति जायइ हुइ । किंता
हेतुइतउ' निनाजाराधकत्वात् । जिननी आचानउ आराधकपणातउ ।
कोई निगानाप्रतिपालक पुरप देपी बोधिफल प्रतिइ सदेह करइ । तेइ
पुरुष प्रतिइ जिणआणाराहगत्ताओ इसु पद हेतुरूप थाइ ।

१ मे विसोहियतस्स २ मे राहगुत्ताओ

[जि] अहो मोल श्रावक ! लोकमाहे इसु न सोभलित-
जो आराहिज्ज सो न कोविज्जा ? जे आराधीइ ते न कोपवीड ।
लोर्ड इसु कहइ । तिणि कारणि मन्निज्ज तस्स वयण तेह
आगघ्यनउ वचन मानीइ मानियउ, जइ किमइ वाठित करिवा लहिवा
वांछइ ॥ १३३ ॥

[मे] लोकमाहि इसउ सामलीइ । जे आराधीयइ ते विराधीयइ
नहीं, कोपवियइ नही । केवलउ तेहनउ वचन मानियउ । जउ क्रिमइ
आत्मानइ ईप्सित वाठिन करिवा वांछइ ॥ १३३ ॥

[सो] वली मय्यग्गनी द्वाइ ऊपरि कहइ छइ ।

[जि] अथ सम्यक्त्वीनी सम्यक्त्वनिश्चलता घोसट । 10

दूसमदडे' लोण सुदुक्खसिद्धम्मि' दुट्टउदयम्मि ।
धन्नाणं जाण न चलइ सम्मत्त ताण पणमामि ॥१३३॥

[सो] दूसम० ईणइ दुग्गमाकाणि पाचमा आराक्खपिइ ढडि
पडीइ हुतइ सुदुक्ख० शिष्ट उत्तम धर्मजन गाण दुग्गिया थिया' ।
दुट्ट० दुष्ट पापी अधमी चाडादिक तेह रहइ' उदय मान महत्त्वः
लक्ष्मी हुई । एहइ निरुजइ ऊपरठड कालि । अथवा सुदुक्ख-
सिद्धम्मि सुदुक्खउदयम्मि इमिइ पाठि सु अनिशयइ दुखिइ
पूर्वभय उपार्नीट सीधउ नीफनउ जे दुग्गनउ ज्य तीणइ छतइ जे
धन्य भाग्यवननु सम्यक्त्वन चलइ नही, धर्म ऊपरि लगारइ अभावडि
न थाइ, धर्मतु मन डोल् नही, ए' तेहना उत्तम रहइ पणमउ
नमस्करउ ॥ १३३ ॥

१ सम्यक्त्व'दाइ २ जि दूसमदडे मे दूसमत्तिय ३ जि मे सुदु ख'
४ जि धन्नाउ ५ थाय ६ रई ७ ते

किमु ? श्रुतव्यवहार समाचरता पुरुषहूइ विसुद्ध बोधि हुइ । इसी प्रतिज्ञा
 विसातउ ? जिननी आज्ञानउ आराधकपणातउ । एहे तु जे जे जिननी
 आनाना आराधक हुइ तेहा तेहा पुरुषहूइ विसुद्ध बोधि हुइ । इसी
 अन्वयव्याप्ति । जिम श्रीश्रेणिक महाराजहूइ । इसु दृष्टात । तिम एही
 जिनाज्ञाराधक । ए उपनय । तिणि कारणि विसुद्ध बोधि हुई ज । बली 5
 अप्रत्यक्ष बोधिफल प्रतिइ सदेहकारक पुरुष वादी इसु कहइ, 'अहो
 प्रतिवादिन् ! हेतु हुउ, साध्य म हुउ । विपक्षि किमु बोध ?' इसिइ
 कहिइ हूतइ प्रतिवादी उतर दिइ, 'अहो वादिन् ! जेहाहूइ विसुद्ध बोधि
 न हुइ तेहाहूइ जिनाज्ञाराधकपणउई न हुइ, जिम मिथ्यात्वीहूइ ।
 तेहनी परि ए नही । तिणि कारणि श्रुतव्यवहार समाचरता पुरुषहूइ 10
 विसुद्ध बोधिफल हुइ जि ।' इसिइ पचावयवरूप अन्वय-व्यतिरेकी
 अनुमानप्रमाणि करी जिनमार्गप्रवर्त्तक जीरहूइ बोधिफल स्थापइ ॥ १३८ ॥

[मे] जेह मणी वीतरागदेवे कहिउ श्रुतसिद्धात तेहनउ
 व्यवहारमार्ग साधता हूता विसुद्ध सूची जिनधर्मनी प्राप्ति हुइ । तउ जइ
 जिननी आज्ञाना आराधकपणातउ ॥ १३८ ॥ 15

[सो] श्रीगुरु आश्री वीतरागनी आज्ञा कहइ छइ ।

[जि] अथ सुगुरु-दुर्लभता कहइ ।

! जे जे वीसति गुरु समयपरिस्त्राइ ते न पुञ्जति ।

१ पुणमेग सद्वृण दुप्पसहो जाव ज चरण ॥ १३९ ॥

[सो] जे जे० कवि कहइ छइ । हिवडानड कालि जे जे 20
 गुरु देखीइ ते ते सिद्धातनी परीक्षाइ न पहुचइ । कहिमाहि सधलाइ
 गुरुना गुण देखीइ नही । पुणमेग० पुण एक वातनु निश्चिइ
 सद्विबु जाणिवु ज परमेश्वरि इम कहिउ छइ । पांचमा आरानइ

[जि] अहो ध्रावंक जगाण ! जइ किमइ तू जिनहइ वादइ नमन्दरि धरि पूनइ अनइ बली मिथ्यात्वीनि रागिइ करी तस्स तेइ जिनउ वचन अहेलिसि अवगणिसि न मानइ ता तउ अहा श्रावक मुग्ध ! तउ तू जिनहइ फाइ वादइ ? काइ पूजइ ? जिनमाइ 5 जिनवचन तेहनी स्थिति आचारई किमु न जाणइ ? सिद्धांतमाहे इमुं कहिउ, ' श्रायकि जिनवचन मानियउ, अवहेलियउ नही । ' इसु जिन वचनई न जाणइ तू ॥ १३१ ॥

[मे] जइ तउ देवनइ वादइ पूजइ अनइ बली तेहइ जि तीर्थकरना वचनइ हीलइ राग लगी तउ तउ तेह परमेश्वरनइ काइ 10 वादइ, काइ पूजइ ? किमउ लोकव्यवहारनी स्थिति न जाणइ ? ॥ १३१ ॥

[जि] सिद्धांतरीतिइ अजाण श्रावकहइ उपदेश देई बली ' गेहरीतिइ उपदिसइ ।

लोक वि इम भणिअ जो आराहिज्ज^१ सो न कोविज्जा^२ ।
मन्निज्ज तस्म वयण जइ उच्छसि इच्छिअ^३ काउ ॥ १३२ ॥

15 [मो] लोक० लोकरुमाहि इसिउ फहीइ । जे आराधीइ ते कोविज्जु नही, अवगणियउ नही । तेह भणी मन्निज्ज० तेहनु वचन मानियउ, जउ तेहना मननउ गमलु करिवा वाळइ । जउ तेहनु वचन आराधियउ, तु ते मानियउ पूजियउ । जउ तेहनु वचन न मानीइ तउ वास पूजिइ फाई न तुम्हा । सामहु^४ कृपइ । लोकइ ए बात 20 कहइ ॥ १३२ ॥

१ जि मुणिय मे मुणिय २ आराहिज्जइ ३ कुपिज्जा ४ इच्छिअ
५ ' मानियउ तेहनु वचन न एउथे पाठ सो भी भीती प्रतमाथी पढी गया छे
६ सामहु

[जि] अथ जिनेन्द्रनइ वचनि जिनधर्म जाणिवानउ फल
करइ ।

जम्हा जिणेहिं भणिअ सुअववहार विसोह्यतस्स' ।
जायइ विसुद्धबोही जिणआणाराहगत्ताओ' ॥ १३८ ॥

३ [सो] जम्हा० जेइ भणी जिन श्रीसर्वज्ञइ इम कहिउ छइ ।
श्रुतग्रन्थहार सिद्धातनउ मार्ग जोईनइ देवगुरुधर्म लिइ, जायइ० तु
विशुद्ध बोधि निर्मल सम्यक्त्वनी प्राप्ति हुइ । जिण० जिननी आज्ञान
आराधक भणी । यदुक्त श्रीआवश्यके सामाचार्या—

निच्छयओ दुन्नेअं को भात्रे कमि वट्ठए समणो ।

१० वनहारओ उ कीरइ जो पुग्गट्ठिउ चरित्तमि ॥

वनहारो वि हु वग्ग ज छउमत्थ पि वरई अरहा ।

जा होइ अणामित्तो जाणतो धम्मय एय ॥ (गा ७१६-७१७)

सिद्धाताउ व्यवहार प्रमाण करतउ केवलइ जे छद्मस्थि सिद्धातन
व्यवहारि जोई चाही सरउ त्रिषे भणी जाणित हुइ पुण ते आह
१३ उइ आधार्मी । तउ ते जिमइ । केवली इम न कहइ, ' ए आधार्मी
छइ' । इम कहिता सिद्धातना व्यवहार ऊपरि अनास्था थाइ । ते
भणी न कहइ ॥ १३८ ॥

[जि] जम्हा यम्मात् जिणि धारणि जिने इसु कहिउ
सुअववहार श्रुतग्रन्थहार सिद्धांतनी स्थिति विशोधता समाचर
१३० पुरुषइ विगुद्ध निर्मली बोधि निमम्यक्त्वप्राप्ति जायइ हुइ । कि
हेतुइतउ' विनाआराधकत्वात् । जिननी आज्ञानउ आराधकपणातउ
कोई जिगानाप्रतिपालक पुरुष देयी बोधिफल प्रतिइ संदेह करइ । ते
पुरुष प्रतिइ जिणआणाराहगत्ताओ इसु पद हेतुरूप थाइ

१ मे वित्तीदियंनस्स २ मे रादगुणाओ

[जि.] अहो भोग्य श्रावक ! लोकइमाहे इसु न सांभलिउ-
जो आराहिज्ज सो न कोविज्जा ? जे आराधीइ ते न कोपवीइ ।
लोमई इसु कहइ । तिणि कारणि मन्निज्ज तस्स वयण तेह
आराध्यनउ वचन मानीइ मानियउ, जइ किमइ वाठित करिवा रहिवा
वांठइ ॥ १३३ ॥

[मे] लोकइमाहि इसउ साभलीइ । जे आराधीयइ ते विगधीयइ
नही, कोपवियइ नही । केवलउ तेहनउ वचन मानिवउं । जउ किमइ
आत्मानइ ईप्सित वाठित करिया वाठइ ॥ १३३ ॥

[मो] वली सम्यक्त्वीनीं दृढाई ऊपरि कइ छइ ।

[जि] अथ सम्यक्त्वीनी सम्यक्त्वनिश्चलता बोल्इ । १०

दूसमदडे' लोण सुदुक्खसिद्धम्मि' दुट्टउदयम्मि ।
धन्नाणं जाण न चलइ सम्मत्त ताण पणमामि ॥१३३॥

[सो] दूसम० ईणइ दु खमाकाठि पाचमा आराखपिइ दडि
पडीइ हुतइ सुदुक्ख० शिष्ट उत्तम धर्मगत गाढा दु खिया थिया' ।
दुट्ट० दुष्ट पापी अधमी चाडादिक तेह रहइ' उण्य मान महत्त०
लक्ष्मी हुई । एइवइ विरुअइ ऊपराठइ कालि । अथवा सुदुक्ख-
सिद्धम्मि दुक्खउदयम्मि इमिइ पाठि सु अतिशयइ दु खिइ
पूर्वभव ऊपार्जीइ सीधउ नीपाउ जे दुग्गनउ उण्य तीणइ छतइ जे
धन्य भाम्यवननु सम्यक्त्व चाइ नही, धर्म ऊपरि लगाइ अभाउडि
न थाइ, धमतु मा डोळइ नही, ण' तेहना उत्तम रहइ पणमउ०
मगस्करउ ॥ १३३ ॥

१ सम्यक्त्वाडाइ २ जि दूसमदडे मे दूसमदडिय ३ जि मे सुदु-
४ जि धम्माउ ५ पाय ६ रई ७ ते

किमु ? धुनव्यमहार समाचरता पुरुषहू विमुद्ध बोधि हुड । इसी प्रतिना
 किमातउ ? निननी आनानउ आराधकपणातउ । एहे तु जे जे जिननी
 आनाना आराधक हुइ तेहा तेहा पुरुषहू विमुद्ध बोधि हुइ । इसी
 अन्वयव्याप्ति । जिम श्रीश्रेणिक महागजहू । इसु दृष्टात । तिम एही
 जिनाजाराधक । ए उपनय । तिणि कारणि विमुद्ध बोधि हुई ज । बली ५
 अप्रत्यक्ष बोधिफल प्रतिइ सदेहकारक पुरुष वादी इसु कहइ, 'अहो
 प्रतिवादिन् ! हेतु हुउ, साध्य म हुउ । विपक्षि किमु बोध ?' इसिइ
 कहिइ हतइ प्रतिवादी उत्तर दिइ, 'अहो वादिन् ! जेहाहू विमुद्ध बोधि
 न हुइ तेहाहू जिनाजाराधकपणउई न हुइ, निम मिथ्यात्वीहू ।
 तेहनी परि ए नही । तिणि कारणि धुनव्यमहार समाचरता पुरुषहू १०
 विमुद्ध बोधिफल हुइ जि ।' इसिइ पचावयनरूप अन्वय-व्यतिरेकी
 अनुमानप्रमाणि करी निनमार्गप्रवर्चक जीहूइ बोधिफल म्थापइ ॥ १३८ ॥
 । [मे] जेह भणी वीतरागदेवे कहिउ धृतसिद्धांत तेहनउ
 व्यवहारमार्ग साधता हता निमुद्ध सूधी जिनधर्मनी प्राप्ति हुइ । तउ जइ
 जिननी आजाना आराधकपणातउ ॥ १३८ ॥

१५

[सो] श्रीगुरु आश्री वीतरागनी आज्ञा कहइ छइ ।

[जि] अथ मुगुरु-दुर्लभता कहइ ।

'जे जे दीसति गुरू समयपरिक्रमाइ ते न पुत्रति ।

पुणमेग मद्दरण दुप्पसहो जाव ज चरण ॥ १३९ ॥

[सो] जे जे० करि कहइ छइ । हिवडानइ कालि जे जे०
 गुरु देखीइ ते ते सिद्धातनी परीक्षाइ न पहुचइ । कहिमाहि सपल्यइ
 गुरुना गुण देखीइ नही । पुणमेगं० पुण एउ वातनु निधिइ
 सहैवु जाणिवु ज परमेशरि इम कहिउ छइ । पांचना आरानइ

[जि] दूसमि दुम्भमाकालि दडे दडिइ लोकि हूतइ । वली
 स्वदु वसिद्ध आपणा दुखइ नीपनउ दुम्भनउ उदय तिणि हूतइ ।
 पनइ एकनउ दुपमाकालि लोक दडिउ । वली दुम्भ ऊपरि दुम्भ
 एहे विहु हूते जेहा पुरुषानउ धर्म हूतउ सम्यक्त्व न चालइ तेहा
 5 माग्यना पुरुषानउ हउ नेमिचद्र भडारी सम्यक्त्व प्रणमउ नम
 स्करउ ॥ १३३ ॥

[भे] ईणइ दुक्खमाकालि लोक दडिइ हूतइ शिष्ट उत्तम
 लोके गाढे दुक्खीए हूते अनइ दुष्टाइ उदर हइ हूतइ । एवहइ छतइ
 धन्य ते जेहना चित्त हूतउ सम्यक्त्व न चालइ तेहनइ हउ प्रणाम
 10 स्करउ ॥ १३३ ॥

[सो] वली गुरु आश्री वात कहइ छइ ।

[जि] अथ गुरुपरीक्षारूप कहइ ।

निअमडअणुसारेण व्यवहारनण्ण समयसुद्धीण' ।
 कालखित्ताणुमाणेण परिन्तिओ जाणिओ सुगुरू ॥ १३४ ॥

15 [सो] कवि कहइ छइ । आपणी बुद्धिअड अनुसारि, व्यवहार
 नयइ करी, सिद्धातना वचननइ अनुसारि, कालक्षेत्रनउ अनुमानि, कालक्षेत्र
 संघयणादि जिम्मा उइ तेहनइ मानिइ चारित्र क्रियानी सर्व शक्ति
 सप करइ छइ । तेहनउ अनुमानिइ परीपी गुरु लीघउ अनइ मानिउ
 छइ ॥ १३४ ॥

20 [जि] निअमतिनइ अनुसारि करी आपणाइ बुद्धिप्रागल्भ्यनइ
 प्रमाणि करी, वली व्यवहार लोकाचार तेहनउ नय न्यायरीति तिणि
 करी अनइ वली ग्रीनउ समयसुद्धीण सिद्धातनी बुद्धिइ करी

[जि] अथ जिनेन्द्रनइ वचनि जिनधर्म नाणिवानउ पउ कहइ ।

जम्हा जिणेहिं भणिअ सुअववहार विसोहयतस्स' ।
जायइ विसुद्धबोही जिणआणाराहगत्ताओ' ॥ १३८ ॥

5 [सो] जम्हा० जेह भणी जिन श्रीसर्जजइ इम कहिउ छइ ।
श्रुतव्यवहार सिद्धातनउ मार्ग जोईनइ देवगुरुधर्म लिइ, जायइ० उ
विशुद्ध बोधि निर्मल सम्यक्कानी प्राप्ति हुइ । जिण० जिननी आशाना
आराधक भणी । यदुक्त श्रीआजश्यके सामाचार्या—

निच्छयओ दुन्नेअ को भावे कम्मि वट्ठा समणो ।

20 व्यवहारओ उ कीरइ जो पुञ्जट्टिउ चरित्तमि ॥

वनहारो पि हु वलय ज छउमत्थ पि वदर्ई अरहा ।

जा होइ अणामितो जाणतो धम्मय एय ॥ (गा ७१६-७१७)

सिद्धातनउ व्यवहार प्रमाण करतउ केवलइ जे छद्मस्थि सिद्धातनउ
व्यवहारि जोई चाही गरउ निर्णेप भणी आणिते हुइ पुण ते आहो
25 छइ आधाकर्मी । तउ ते जिमइ । केवली इम न कहइ, 'ए आधाकर्मी
छइ' । इम कहिता सिद्धातना व्यवहार उपरि अनास्था थाइ । तेह
भणी न कहइ ॥ १३८ ॥

[जि] जम्हा यम्मात् जिणि कारणि जिने इसु कहिउ ।
सुअववहार श्रुतव्यवहार सिद्धातनी स्थिति विशोधता समाचरता
30 पुरुषन्द विगुद्ध निर्मली बोधि जिनसम्यक् प्राप्ति जायइ हुइ । कित्त
हेतुइतउ : जिनाशाराधकत्वात् । जिननी आशानउ आराधकत्वात् ।
कोई जिनानाप्रतिपालक पुरुष देपी बोधिफल प्रतिइ सदेह करइ । तेह
पुरुष प्रति, जिणआणाराहगत्ताओ इसु पद हेतुरूप थाइ ।

१ मे विज्ञादियंतस्स २ मे राहगत्ताओ

[सो] जह० अहो भय्य जीर ! तू जउ इसिउ जाण छ-
 ' जिननाथ श्रीभर्मन लोकिर आचार थिकउ विपक्षभूत अलगउ छड ।
 लोकाचार जूउ अनट श्रीसर्वगनउ' आचार जूउ उड ।' ता त त०
 तेह भणी तु ते श्रीवीतरागनइ मानउ हूतउ लोकनउ आचार धम
 भणी काई मानअ छअ ? जे ' लोगविरुद्धचाओ ' इसिउ कहिउ छड ५
 ते प्रसिद्ध लोफनउ आचार धम सिउ अगिद्ध अणकरना लोक पाप
 उपार्नइ । ते छाटा' आमोपादिक करिखु । पणि तेहड धर्म भणी काई
 न मानिवउ ॥ १४८ ॥

[जि] लोफाचारनइ पक्खइ हउ हनउ मानतउ जइ जिननाथ
 जाणइ, मनमाहि धरइ, तउ पउइ तू ते जिन मानतउ हतउ लोफाचारः^{१०}
 काइ मानइ ? ॥ १४८ ॥

[मे] अरे जीर ! जउ तउ इम जाणट छइ जि ' जगन्नाथ
 वीतराग लोफना आचारनइ विपक्षभूत अलगउ छड । लोफाचार जूउ,
 वीतरागनउ आचार जूउ ।' तउ तउ वीतरागनउ मानतुड हतउ
 लोकनउ आचार धम भणी काइ मानइ ? ॥ १४८ ॥ १५

[सो] वली सम्यक्त्वड जि ऊपरि ४^१ गाह कहइ छइ ।

[जि] अथ जिन मानीनउ पउइ अन्य देव मानइ तेह उद्दिसी
 रहट ।

जे मन्नेवि जिणद पुणो वि पणमति इअरदेवाण ।

मिच्छत्तसन्निपायगत्थाण नाण को विज्जो ॥ १४० ॥^{२०}

[सो] जे मन्नेवि० जे जिनेद्र श्रीमज्ज साचउ देव

१ आसवणमाचार २ मानइ छ' ३ छाट ४ आधी ५ नि सन्निवाइग,
 मे मुनिवार्य

छंदहर^१ श्रीदुःप्रसह आचार्य युगप्रभा हुसिह । तेह लगह भक्तभेत्त्रि
चारित्र वर्धसिह । तीणह सिउ^२ जाणीह^३ निधिह को को चारित्रीउ
गुरु भरतक्षेत्रमाहि छह, जि हुं उल्लसतउ गयी ॥ १३९ ॥

[जि] जे जे गुरु दीसह ते ते सत्य सिद्धान तेहनी परीक्षाई
१० १ पूनह न पहुचह । पुण एक अदधान आम्ना छह । किमु अदधान
ते^४ दुःप्रसह जाय ज चरण । ज जउ दुःप्रसहाचार्य
छह चरण चारित्र भोउउ थोडेउ होसिह जि । इसी आम्ना छह । पुण
जुगप्रभा गुरु शनी बीजउ कोई गादउ सुगुरु दीसह नही । इति
भाउ ॥ १३० ॥

१० [मे] कवि करह । हिवडानह कालि जे जे गुरु दीसह ते ते
सिद्धाननी परीक्षाह न पहुचह । काई^५ आपणपानह सूधा ज्ञानउ
अवबोउ गही । अनह असूधा घणा, सूधा थोडा ते भणी जाणी न
सकीह । पनि एक बातनी सदहणा करिषी । जां दुःप्रसहसुरि तां
सीम चागिउ छह ॥ १३० ॥

११ [जि०] तिणि कारणि ते जुगप्रधान गुरु जाणिवानउ उपाय
कहह ।

ता एगो जुगपवरो मज्झत्यपणेहिं समयदिट्ठीए ।

सम्म परिक्खियन्वो मुत्तूण 'पवाहल्लबोल ॥ १४० ॥

[सो] ता एगो^६ तेह मणी एह भरतक्षेत्रमाहि एक को
२० युगप्रवर युगमाहि उच्छृष्टउ चारित्रीउ मयस्य मन भईनह परीक्षितउ ।
समय० सिद्धातनी रीतिह सम्यग् जोई लेवु । मुत्तूणा० लोकनउ
प्रवाह कल्लक 'आ माहरउ, आ ताहरउ गुरु' इस्यउ लोकनउ प्रवाह

वीनगग मानी तेहनी आज्ञा पट्टिगजीनइ पुणो वि० वली इतर देव
 वीजा सगारिऊ देव तमइ मिथ्यात्तरूपिइ सन्निपात^१ रोगिइ करी
 प्रसिया अचेत जणिमा । तेहहइ कुण वैद्य हुइ^२ तेहहइ कुण
 साजा फरइ^३ जे ज्मृत पीईनइ मिम पीई तेहहइ मिउ प्रतिकार
 सुइ^४ ॥ १४० ॥

[जि] जे पुरुष निनेद्र मानी पठइ इतर देव^२ हरिहरादिक
 प्रगमइ तउ मिथ्यात्तरूपिउ सन्निपातक रोग तिणिइ घत्थ प्रम्या
 व्याप्या हूता ताण तेहा पुरुषहहइ कुउण वैद्य ह^३ अपि तु न
 कोई ॥ १४१ ॥

१० [मे] जे सत्रेन साचउ देव मानी तेहनी आज्ञा पट्टिगजीनइ
 इतर वीजा ससारिक देवनइ मानइ ते मिथ्यात्तरूपीइ सन्निपाति रोगि
 प्रम्या हूता अचेत हुइ । तेहनइ कउण वैद्य साजा फरइ^४ ॥ १४२ ॥

[सो] वनी सम्पकपइ नि ऊरि कहइ छइ ।

[जि] एक श्रावक गुरु नानाविध चैत्यद्रव्य माहोमाहि न
 १५पेचावइ ।

एगो^१ सुगुरू एगा वि सार्वगा चेईयाणि विप्रिहाणि ।
 तत्थ य ज जिणदन्व परुप्पर त न विचति ॥ १५० ॥

[सो] एगो० गुर एकइ नि अनइ श्रावक एकइ जि छइ ।
 पुण चैत्य देहरा जूआ जूआ अनेरा अनेराना^२ करान्या छइ । तिउ^३ जे
 २०द्रव्य छइ ते परस्परिइ न वेचइ । पेला^४ देहरानु उलिइ देहरइ, ओल्या
 देहरानु पलइ देहरइ न वेचइ । मनि भेद आणइ ॥ १५० ॥

१ सन्निपाति २ आ गायानी प्रथम पंक्ति जि मा नथी ३ अनेरा
 ४ पेला देहरानु न वेचइ एगो पाठ सो नी वीजी प्रतमाधी पदी मयो छ

तेदरूपिआ हलाबोरु ड्रहबोड मेन्ही करी । निम द्रहबोड्माहि वस्तु
पडी न लाभइ तिम लोरुप्रनाहि तत्त्वातत्त्वविचार न लाभइ । तेह भणी
ते छांडीनड तत्त्ववृत्तिइ गुरु जोईनद लेनु ॥ १४० ॥

[जि] ता तउ पठइ एरु अद्वितीय युगप्रवर युगप्रधान गुरु
मध्यम्यनतोमि मध्यम्य उदासन पुरुषे नमय सिद्धात तेहनी दृष्टि जोइवउ
तिणि करी । अथवा सिद्धांतरूपिणी दृष्टि लोचन तिणि करी सम्म
सम्यक साचउ परिक्खिबधब्बो परीस्सिउ । किमु फरी ' प्रगाह
लोकप्रवाह तेदरूपिउ द्रहबोड मेल्ही करीनद । जिम द्रहबोड्माहि
वस्तु पडी न लाभइ तिम लोरुप्रनाहि तत्त्वातत्त्वविचार न लाभइ ।
तिणि कारणे लोरुप्रगाह मेल्ही मध्यम्येई जि पुरुषे सुगुरु परीस्सिउ,
न तु आमहवते पुस्से । यदुक्त—

आमही बत निनीपति युक्तिं तत्र यत्र मतिरम्य निविष्टा ।

× × × 'युक्तियत्र यत्र मतिरेति निवेश ॥

सिद्धांतनी दृष्टि किनी ।

पडिब्वो तेयस्सी जुगप्पहाणागमो महुरब्वो ।

गमीरो धीमत्तो उयणसपरो य आयरिओ ॥

अप्परिम्सावी सोमो सगहसीणे अभिगहमई य ।

अविस्सथणो अचउलो पसंतहियओ गुरू होइ ॥

(उपदेगमाला, गा १० ११)

इत्यादि सिद्धांतदृष्टिइ जुगप्रधान उरुपी आदरिउ ॥ १४० ॥

[मे] तेह भणी एह भरतक्षेत्रमाहि एकेरुउ युगप्रधान
अनुवमिइ दुप्पहसुरिसीम विसहस चढोत्तर होसिई । एह भणी

[जि] एक जि सुगुरु । एकइ चि सघला श्रावक । चैत्य
निनदेवगृह विविध नानाप्रकार छड । नत्थ तेहे विविध चैत्ये ज जे
जिनद्रव्य रूपजइ ते चिनद्रव्य देवद्रव्य परम्परइ एक चैत्यनउ द्रव्य
बीजइ चैत्यि जे सुगुरु श्रावक न वेचारइ ॥ १५० ॥

[मे] एक सुगुरु, एफ श्रावक छइ अनइ देहरा जूजूआ ५
छइ । अनइ तिहां जे द्रव्य छइ ते परम्परइ न वेचइ । मनि भेद
आणइ ॥ १५० ॥

ते न गुरु नवि सङ्गा न पूइओ तेहिं होइ जिणनाहो ।
मूढाण मोहठिई सा नज्जइ ममयनिउणेहिं ॥ १५१ ॥

[सो] ते न० ते गुरु नहीं, ते श्रावक नहा, ते दम देहरानी १०
जूजूआई करइ । एक ना' गणइ तेहे वीतराग देवड' पूजिउ नही ।
साचउ वीतराग पूजिउ तु कहीइ, जउ वीतरागना प्रामादविंए एकइ
चि देपइ । जे जूजूउ देखिउ ते मूढनी मोहस्थिति अजाणियु जि
जाणीइ ॥ १५१ ॥

[जि] ते गुरु नहीं । ते श्रावक नहीं । तेहे गुरु-श्रावके १५
चिननाथ वीतराग देव किवारइ न पूजिउ । काइ ? तेहे गुरु-श्रावक
ममयनिउणेहिं समय सिद्धात तेहना निपुण जाण एवहई सा ते
चैत्यद्रव्यनी परम्परइ अणवेचिगानी रीति ते मूढ मूर्खनी मोहस्थिति
नज्जइ जाणीइ । नाना चैत्यपदनउ द्रव्य भावइ तिद चिनचैत्यि
वेचियउ । दूषण नहीं, मामुह महाधम । इसी सिद्धातरिति न जाणइ, २०
किंतु पूर्वोक्त मूपस्थिति जाणइ तेह भणी ते अनाण ॥ १५१ ॥

[मे] ते गुरु नहीं, ते श्रावक नहीं, जे देहरा एफ न गिणइ ।

रागद्वेष मूर्ति मध्यस्थपणइ समय मिद्धाननी दृष्टिं सम्यग् प्रकारि गुरु
परीधी लेवउ, पणि लोकनउ प्रनाह कलकल 'ए माहरउ, ए ताहरउ'
एवहउ हल्लोल् मूर्तिनइ ॥ १४० ॥

[सो] ईणइ लोकप्रवाहिइ हिबडा जाणइ कुमइ छइ । ए वात
३ कहइ छइ ।

[जि] अथ पूर्वोक्त लोकप्रवाहनउ स्वरूप फटइ ।

सपइ^१ दसमच्छेरयनामायरिणहिं जणिअजणमोहा ।

सुयधम्माओ^२ निउण^३ वि चलति बहुजणपवाहाओ ॥१४१॥

[सो] सपइ० हिबडा अम्संजयाण पूआ इसिउ दसमु अठेरु
१० प्रवत्तइ^४ छइ । ईण करी गुणरहित नामिइ आचार्य घणा यिया । तीणइ
करी जणिअजण० लोरु रहइ मोह कहीइ अम वरासउ पडिउ^५ । न
आणीइ केहउ गुरु । इसिइ छतइ जे निपुण डाटा चतुर तेहइ घणा
लोकना प्रनाहमाहि पडिआ हुता साचा धर्मतउ चूकइ चलइ छइ,
साचा गुरुनइ अणलहिबइ ॥ १४१ ॥

१३ [जि] सप्रति हिबडा दसमइ आश्वर्यि उपना नामायरिणहिं
नामधारक आचार्य तेहे जनित उपजाविउ जन अज्ञाततत्त्व लोरु तेहना
सरीपउ मोरु अज्ञानपणउ जेहा निपुणाहइ छइ ते जनितजनमोह ।
एवहा हुता निउण वि निपुणइ ज्ञाततत्त्वइ सुमधर्म हुता चालइ ।
किसा प्रमाणइतउ^६ बहुजणपवाहाओ बहु घणा जण लोक तेहना
२० प्रनाहइतउ । एक नामधार आचार्य मोह उपजावइ । लोकप्रवाह
पुण शुभधर्म इतउ डाहाइ मोरुइ । तिणि कारणि लोकप्रवाह
मेरिहवउ ॥ १४१ ॥

तेहे वीतराग पृथित न्हीं । जे प्रागाद विंन आपणा पाग्ना करी देपड ते
मूर्खनी मोग्धिवति अजाणिवड ममय मिद्वानने निपुणे ॥ १५१ ॥

[सो] वली ण् नि वात कहइ छइ ।

[जि] ण्ह ज वान प्रमारांतरि वली कहइ ।

५ सो न गुरु जुगपवरो जस्स य त्रयणम्मि वट्ठण भेओ
चिअभवणसङ्कगाणं साहारणदच्चमार्हण ॥ १५० ॥

[सो] सो न० ते गुरु युगप्रधान न कहीइ, जेहनइ वचनि
उपदेशि ण्तणनु भेद थाइ । चैत्यभमन देहरा अनइ थायक तय
साधारण द्रव्य देवद्रव्यादिकनी जूजूआई थाइ, माहिमाहि विरोध
१०पडइ ॥ १५० ॥

[जि] जे गुरु जुगप्रमर नही, जस्स य जेह गुरुनइ वचनि
चैत्यभमन देगृह तेन्ना द्रव्यहइ अनइ थायफना द्रव्यहइ वली
साधारण द्रव्यहइ भेद मितता वर्तइ ॥ १५१ ॥

[मे] ते गुरु युगप्रधान न कहीइ, जेहनइ वचनि ण्तलानउ
१५भेद थाइ । चैत्य देहरा, थायक निम साधारण द्रव्य देवद्रव्यादिकनी
जूजूआई थाइ, माहिमाहि विरोध पडइ ॥ १५१ ॥

[सो] वली कवि गुरुनी भक्तिइ कहइ छइ ।

[जि] अथ मिथ्याचरनउ माहात्म्य बोळइ ।

सपइ पहुवयणेण वि जाय न उल्लसइ विहिविवेअत्त^१ ।
२०ता निविडमोहमिच्छउत्तगटिआदुट्टमाहप्प ॥ १५३ ॥

१ भुवण २ जि वियणेण ३ जि विहिविवेगत

[मे] साप्रत दममा अच्छेरा जे वखा तहनुदि दमन कच्छग-
नद प्रस्तानि नामाचार्ये लोकनद जे व्यामोइ ऊकाविइ तह छी कन
लोचना प्रवाहमाहि पठ्या हता निपुग गहाइ लोक नुद धन हउ
चान्द मष्ट हुइ, माचा गुरु अणलहता यका ॥ १११ ॥

[मो] जे लोकनद प्रवाहि पडिआ तेहु जगन हउ कृत
कुधर्म भेवइ । तेइ आथी कहइ छइ ।

[जि] अथ मिथ्यात्नी सम्पत्नी विदुषा छन छइ ।

जागिज्ज मिच्छदिट्ठी जे पडणालंगणाइ गिगहनि ।

जे पुण सम्मदिट्ठी तेसि मणो चहगपयहा ॥ ११२ ॥

[सो] जागिज्ज० निश्चयनपनी अरु त गिगहताइ वि०
कहीइ, जे पडयाना आलन लिइ । 'अनुइ कन कनकोइ इइ
छइ, हुइ करु' इम तेना आलन गि । जे कच्छ सम्पत्ति
माचा सम्यक्त्वना धणी तेहुन मन बगवानी कर्षइ हुइ । ज सरउ
धर्म कग्ता हुइ तेहुन आलन हउत आलन सख वि करइ ।
यदुक्त श्रीआचर्यके चदनरुगिगुपै-

आलवणाण लोओ मरिओ बीस्य बजमानम् ।

ज ज पिच्छइ लोए त त अन्नन कुम् ॥

जे जत्थ जयाजईया बहुमुअ वनइ मन्महा ।

ज ते समायरति आलवा नपुताइ ॥

जे जत्थ जयाजईया बहुमुअ नदरगमात्ता ।

ज ते समायरति आलव निरुसण ॥ ११२ ॥

१३

[सो] सपइ० हिवडा प्रमु श्रीजिनवल्लभसूरिः
 वचनिद जा धमेनी धनी विधि अनइ साचा विवेकनउ^१ जाणिवउ^२ न
 उलमई न ऊपनड ता निविड० त विविड मोह अजाणिवउ अनइ
 मिथ्यात्त्वनी अयि तेहनउ गाढउ माहात्म्य गाढउ महिमा । ते गाण
 अजाण अनड गाढा मिथ्यात्त्वी कहीड ॥ १५३ ॥

[जि] सप्रति हिवडा प्रमु श्रीजिनवल्लभसूरि तेहनउ
 वचनिई जउ विधिविप्रेक्षणउ न उलमड, विधि जिनमिद्वान कसंय
 तेहनउ विप्रेक्षणउ, पापपुण्याउ जाणियापणउ जउ न ऊपड ना
 तउ पडड विविड मोह अजाण तद्रूप मिथ्यात्त्वप्रथिका मिथ्यात्त्व
 गाडडी तेहनउ माहात्म्य प्रभाण जाणिवउ ॥ १५३ ॥

[मे] साप्रत प्रमु श्रीजिनवल्लभसूरिण^१ वचनिद कसंय
 चित्त खरी विधि उपरि अनइ नाचउ विप्रेक तेहनउ कसंय
 तेह ऊपरि चित्त उलमड नहीं, तेहनड निविड मोह कसंय
 वली मिथ्यात्त्वनी अयि तेहनउ गाढउ महादुष्ट मोहनउ कसंय
 जाणिवउ ॥ १५३ ॥

[मो] परमेश्वरना वचननी आगातनानु ईदू उं कसंय
 विरूड ॥

[जि] अथ चिननी आगातना करिशन^१ इउ इउ^२ ;
 वधणमरणभयाइ^३ दुहाइ तिरसाडं नैव दुक्खाइ ।
 दुक्खाणं दुहनिहाण पहुअयणासायणाकरण ॥ १५४ ॥^{२०}

[मो] उधण० वाधिवउ^१, माणिवउ^२ कसंय म्य पण्वा
 जि तीव दुख ते दुग न रहीड । ते धोडेन वेद मण्डिअ अनड

१ विरस्तु ० जाणिवुं २ भयाई ४ म कसंय ५ वि म पुण्डरिका
 सायमं करण ६ वाधिव ७ मारिवइ^१ वनी

[जि] ते मिच्छद्विष्टी मिथ्यात्वीदृष्टि जाणिञ्ज जाणित्त,
 जे पतिव धर्म हूना भए ह्या तेहनां आत्वन ओठम लिइ,
 १४१ विसमयि करइ । 'एहइ तप नथी करतउ, हउइ नही
 करउ' इत्यादि आत्वन लिइ । अथ सम्यक्ची लक्षण । जे पुण
 ५ सम्मद्विष्टी जे वरी सम्यग्दृष्टि हुइ तेसि मणो तेहना मन
 चहते पावडीया लेहु । मोय तपस्वी प्रमुग्ग पुरुष, तेहना अवष्टम
 आदरइ ॥ १४२ ॥

[मे] ते जाणिमा मिथ्यादृष्टि जे पडियालरण^१ पतितनउ
 आत्वन लिइ । जे वरी जीव सम्यग्दृष्टि छइ ते चडियालवननी पावडी
 १०५वइइ । जे रूडी क्रिया करइ तेरनी पयडीइ चइइ ॥ १४२ ॥

[सो] उत्तम संयोग दुर्लभ ए वात कहइ छइ ।

सच्च^१ पि जए सुलह सुवन्नरयणाइवत्थुवित्थार ।
 निच चिय मेलाव सुमग्गनिरयाण^१ अइदुलह ॥ १४३ ॥

[सो] सच्च पि० बीजउ सह सुवर्ण रत्न आभरणादिक
 १५वस्तु ऋद्धिनउ विस्तार सुलभ । यत उक्त—

सर्पे भावा सर्पेर्जात्रै प्राप्तपूर्वा अनंतश ।^१

बोधिर्नि जातुचित्प्राप्तो भवभ्रमणदर्शनात् ॥

राज्यऋद्धि धनकनकादिक षणीइ वार अनते भवे लाभइ, पुण सन्मार्ग
 निरत सरा उत्तम धर्मना आराधक उत्तम पुरुष तेहनउ सदैव मेलाव
 २०ते अनिदुर्लभ । तेइइ नि मणी सदैव जयत्रीअरायमाहि प्राथी
 छइ, 'सुहगुरुनोगो तत्रयणसेरणा आभनमखडा' ॥ १४३ ॥

१ आ गाथा तथा ते एवरमो धम्मिबसोय डि मी मथी २ निरुणोण

फ्रीर्गी जाइ। दुस्त्राण० पुण प्रमु तीर्थरदेवना वचननी आशातनानु
करिवु ते सर्व दुस्सनउ निधान। अनता संसारमाहि अनते भवे अनता
दुख दिइ। वीतरागना वचन जे ऊथापइ ते घणु आगलि दुस्त्रिया
याइ ॥ १५४ ॥

5 [जि] वधनमरणभयप्रमुख दुख तीरई हता पुण दुख न
कहीइ। स्वल्प गहपणातउ। जइ वधनमरणादिक दुख नही, जिन
वचन आशातना करिवउ निसउ दुख १ पहुवयणा० प्रमु स्वामी
गिन तेहनी आशातनानउ दुखनिधान दुस्स्थाक। अतिउल्लूह
पगातउ। जिअचन आशातना करिवइ तउ अणता मोटां गातां दुख
१० ऊपचइ। तेह भणी जिनवचन आशातना न करिवी। किन्तु मानिवउ
करिवउ पुण जिनचन, जिम नानाविध मनोज्ञ सुख हुइ ॥ १५४ ॥

[मे] वधनमरणभयादिक जे दुख ते तीर दुख कहीइ
ते थोडीसी बेलं सदां पठी विलइ जाइ। पणि प्रमु तीर्थरदेवना
वचननी आशातनानउ करिवउ ते सर्व दुखनउ निधान, जेह लगी
१५ अनता दुख पामीइ ॥ १५४ ॥

[सो] हिव कनि आपणी निन्दा करइ छइ।

[जि] अथ सुश्रावकत्व आजन्म पालिवउ। इसु कहइ।

पहुवयणविहिरहस्त नाऊण जाव दीसण अप्पा।

ता कह सुसावगत ज चिन्न धीरपुरिसेहि ॥ १७५ ॥

२० [सो०] पहु० प्रमु तीर्थरदेव तेहने वचने,

सुविणिच्छिअणगमई धम्ममि अनलदेवओ अ पुणो।

न य कुसमप सु रज्जइ पुञ्जावरवाहयत्थेसु ॥

दट्टण कुलिंगीण तसथावरगूअमइण विविइ।

धम्माओ न चालिज्जइ देवेहि मइइएहि पि ॥

२५

(उपदेशमाला, गा २३१ ३२)

१ फ्रीर्गी २ जि मे नाऊण वि ३ मे सुसावगत

[मे] सघलीड वस्तु पृथ्वीमादि सुवर्णगनादिक वस्तुनउ विस्तार सोहिलउ । पणि नित्य सर्ग सन्मागनड विपद् निरत, स्वरा धर्मना प्ररूपक तेहनउ मेलाउ अति दुल्म । जयवीअरायमादि 'सुगुरुनोगो तत्रयणसेना' एह जि वस्तुनी प्राथना मागी ॥ १४३ ॥

[सो] केनलाइ 'आ' माहरउ देव, आ माहरउ गुरु । ए टाली ३ बीना गुणवन काई नही । हु एह नि मानउ ।' इसिउ अभिमान बहड । तेह जाथी कहइ छइ ।

[जि] अथ देवा गुराहूइ मगर्गणः करी कमरहुलता प्रोन्द ।
'अहिमाणविसोयसमत्थय च युञ्जति देवगुरुणो अ ।
तेहिं पि जओ' माणो ही ही न पुञ्चदुच्चरिअ' ॥ १४४ ॥^{१०}

[सो] अहिमाण० अहकाररूपिआ विमना विस्तार उप शमायना देवगुरु कहीड । देवगुरु सेवता अहकारादिक विकार जाइ । तेहिं पि० तेहे जि देगुरे करी केनलाहूड' मान अहकार आवइ । ही ही० आहा । ते पूर्वदुश्चरित पाट्रिा भवना पाप तेहनू प्रमाण, ज गुणागुण काई जोतउ नथी । दृष्टिरागिइ नाहिउ 'आपणाट नि देवगुरु^{१५} रूडा' इसिइ गर्निइ गर्व्यु हीहइ छइ ॥ १४४ ॥

[जि] लोक परमाथवृत्तिइ च वली बाह्यवृत्तिइ पुण अभिमान अहकार तेहनइ वशि देवा गुरुहूइ वणमड । जउ देगुरई अहकारी छइ इसिइ म्तरइ । म्त्रिता छतउई गुण, अउतई गुण वर्णमइ । पुण तेहा देवागुराहूइ जउ भाण अहकार हउ साचउ, तउ^{२०} तेहा देवगुरुना पूर्ववृत्त दुश्चरित जाणिवउ ॥ १४४ ॥

१ आ माहरउ देव' सो नी बीनी प्रथमा नथी २ आ गाथा जि मा नथी पण ते उपरनो बालाप्रबोध छे ३ मे जाओ ४ दुच्चरिअ ५ अभिमान अहकार ६ केनलाइ

ददसीरुच्यनियमो योमहजावन्मणु अनन्मन्त्रिओ० ।

(उपदेशमाला, गा २३४)

इत्यादिके जे श्रावणत रहस्य बोलित छइ ते जाणीनइ जेनी यारइ आपणपउ जोईइ ता कह० तु त्रिहां आपणपामाहि मुश्रावरूपणु^२ ज चिह्न० जे आगति घीर पुरिपे आनद कामदेवादिक ममाचरित ३ तेहन लवनेश आपणपामाहि तयी ॥ १५५ ॥

[जि] प्रमु परमेश्वर तेहाउ बचा विधि रहस्य नाऊण विनाणई अनइ जाव जां लगइ आत्मा ब्रह्मस्वरूप दीमइ ता लगइ किमु मुश्रावरूपणउ^४ जे मुश्रावरूपणउ घीरपुम्पे आरीर्ण आचरित ॥ १५५ ॥

[मे०] प्रमुगतन वीतगगण्ये तेहनी भापी विधि तेहाउ रहस्य^{१०} जाणीनइ जउ आपणउ आन्मानउ स्वरूप जोईइ तउ त्रिहां मुश्रावरूपणउ^१ काइ^२ आगइ जे आनद कामदेवादिक घीर पुरुष श्रावरूप हआ तेहनउ तउ लवनेश मात्र आपणपामाहि नहीं दीगता ॥ १५५ ॥

[सो] हिव आपणु मनोरथ चिहुं गाहे कवि^१ कइ छइ ।

[जि०] अथ श्रीनेमिचन्द्र भडारी पावे गाथाइ आपणा^{१५} मनोरथ प्रकामइ ।

जइवि हु उत्तमभावयपयडीए चढणकरणअसमत्थो ।
तह वि पहुवयणकरणे मणोरहो मज्झ हिअअम्मि ॥१५६॥

[सो] जइ वि० यद्यपि^१ उत्तम श्रावकनी पगयीइ चढू करी न सकु, तीणठ बहिरइ^२ अममर्थ छउ तह वि० तउ प्रमु^३ तीर्थकरना वचन आराधिवानइ निपइ^४ माहरइ हिअइ मनोरथइ^५ छइ । किमइ^६ वीतरागनी आज्ञा आराधाइ तु रुडउ ॥ १५६ ॥

१ त्रिदु २ 'कवि' नदी ३ यद्यपि ४ बहरइ ५ विषय ६ मनाथ
७ किमइ

[मे] अन्तर रूपाया विमना विकार तेह्नुइ उपशमाविमानद
 फानि देग्गुही म्नुति कीणइ । काइ ? ते स्तयना अहकार जाइ ।
 अनइ तेही नि देग्गुठ हृतउ जे अभिमान उपनइ तउ ही इमिइ रोदि
 ते पूर्वदुश्चरित्र पापनउ प्रमाण जाणियउ ॥ १४४ ॥

५ [सो] लोफना आचार करतउ जे आपणपउ जिनभक्त
 कइमइ ते आथी वात कहइ छुद ।

[जि] अथ जे जैन आचारि करी बीजा जेनइ न मिलइ तेह
 जेनाइ ओम्मउ दिइ ।

जो जिणआचरणाए लोओ न मिलेइ तस्म आयारे ।

१ हा हा मूढ करतो कह अप्प भणसि जिणपणय ॥ १४५ ॥

[सो] जो जिण० निन श्रीश्रीतरागनी आचरणासिउ जे
 लोफनउ आचार न मिलइ । मूढ मूख ! ते आचार समाचरतउ हृतउ
 आपणपूँ जिनभक्त निम जिनभक्त कह छ ' अत्तम्म फडि चडिओ,
 अत्तम्म वि होइ थणपाण ' ए लोफनउ उपाणउ साचउ करे
 २३उ ॥ १४५ ॥

[जि] अथ जे लोफ निननी आचरणाइ करी तस्म तेह
 निनइ आचारि न मिलइ, जिननी आचरणा अनइ जिननउ आचार
 तेह त्रिहुइ मित्रना जाणइ । अनइ जिनाचरण चिनाचारइ भेद नही ।
 हे मूढ ! हा हा खेदे । भेद करतउ, लोफाचार करतउ हृतउ आपणपउ
 २०जिनप्रगत जिनभक्त त्रिमु भणइ, काठ कहइ ? ॥ १४५ ॥

[मे] जे जिननी आचरणाइ लोक न मिलइ ते लोफनउ

[जि०] जइमि यद्यपि हृ निश्चइ उत्तमभावयपयडीण
सुगण आदरुनइ पायन्याल्द हृतउ चरणरणि चारित्रपालनइ
विषइ जगमथ, दीक्षा पागी न सऊउ तह वि तथापिहिं, मज्झ
रिअअस्मि माइरा हियामाहं प्रभुवचन करिवाइ विपड यतिधम
१ पाणियानइ विपइ मोग्थ होज्यो ॥ १५६ ॥

[मे०] जउ निमइ उत्तम धावकनी पगथीइ चटिवानइ विषइ
अत्तमर्थ छउ, पणि सउ ही प्रभु वीतराग तेहना वचनउ करिवउ तेहनइ
विपइ मोरथ माहरइ हियउ छइ ॥ १५६ ॥

ता पहु पणमिअ चलणे इक्क पत्थेमि परमभावेण ।
१० तुह वयणरयणगण्णे अदलोणे मज्झ हुज्ज' मयाँ ॥ १५७ ॥

[सो] ता पहु० तेह भणी प्रभु परमेश्वर वीतरागनां चल्या
नमस्करीनइ एक वानउ प्राथउ भागउ माचइ भाविइ । तुह० हे
स्वामी ! ताहरा वचन रूपिया रत्न लेखनइ विपइ मूहइ सत्थेव
अतिलोभ हुज्यो । श्रीसिद्धानरचन उपरि आम्हा आदर आवियो ।
११ गनल्लं काज मरइसिँ ॥ १५७ ॥

[जि] ता तउ पठइ पहु प्रभु जिन तेहना प्रणमित
नमस्करिया चरण पदकमलि जिणइ मइ एतारता प्रभु तणा चरणकमल
नमस्करि प्रभु केहा परम भावि मोटी भक्तिइ करी एउ वस्तु प्रार्थउ ।
हे प्रभो ! ताहग वचनरूपिया रत्न तेह लेख सत्थेव मूहइ अतिलोभ
१० होज्ज हुउ ॥ १५७ ॥

[मे] सउ तेह भणी प्रभु वीतरागना चरण नमीनइ परम भावि
करीनइ एक वानू भागउ । ताहरा वचनरूपिया रत्न लेखनइ विपइ
मूहइ सत्थेव अतिलोभ हुज्यउ ॥ १५७ ॥

आचार जे लोक करड । हा हा इसिड गेदि । ते मूढ मूर्ख ते आचार करतउ आपगउ चिनमक्तगउ किन कइइ ? ॥ १४२ ॥

[सो] वीतरगदनिनु वचन मानद ते थोडा । ए' घाल कहइ छइ ।

[जि] एवइउ जैनभेठ काड ? तेहनउ कारण रहइ । 5
ज चिअ लोओ मन्नड त चिअ मन्नति सयल लोआ वि ।
ज मन्नट जिणणाहो त चिअ मन्नति किवि' विरला ॥ १४७ ॥

[सो] ज चिअ० एक लोफ जे बोल मानइ तेह जि बोल सयलइ लोक मानद । प्रगाहि पड्या प्राहि' समारामिलापी सविहु जीवना मन सरीपाइ जि हुइ । ज मन्नट० जे जिननाथ तीर्थकरदेव० जे गोरु मानद कहइ, केवलनानि करी जाणीनइ, तेह नि श्रीसर्पना' वचन जे मानइ, लोकनउ प्रगाह काई न मानद ते केनराइ विग्लट जि थोडाइ आसन्नसिद्धि हुइ ॥ १४६ ॥

[जि] जे आचार लोक मानइ तेही ज आचार सघलाई लोक मानद । पुण जे आचार चिननाथ मानइ ते आचार विरला थोडा 15
केईएक भाग्यवन मानइ ॥ १४६ ॥

[मे] जे वस्तु मिथ्यात्वादिक प्रगाहि लोक मानइ ते सकल लोकमाहि मानीइ । अनइ जे जिननाथ मानइ कहइ ते जट विग्लउ कोईएक भय्य जीव मानद ॥ १४६ ॥

[सो] निश्चय नय आश्री श्रीमम्यक'रनु स्वरूप कहइ । 20

[जि] अथ जे साट्मी उपरि गाढउ म्नेइ न करड तेह उद्दिसी कहइ ।

[जि] इमु प्रमु आगलि प्राथी आपणी मनोगत चिंती कहद ।
अडमिच्छवास^१ निक्किट्ट भावओ गलिअगुरुविवेआण ।
अम्हाण कह सुहाड सभापिज्जति सुमिणे^२ वि ॥ १५८ ॥

[सो] अति गाढउ^३ घणा कालनु मिथ्यान्वनु वाम^४ संस्कार
तीणइ कगी जे ऊरनु निक्किट्ट भाव मन्नु परिमाण तीग नरी गलिउ^५
गिउ गुरु विनेक छइ अम्हारउ ग्हाण अन्ह रहइ सुटणाडमाहि शुभ
पुण्य किहा सभावीइ^६ ? अथवा मुख मोक्षसुख किहा सभावीइ^७ ? ते
गाढउ दुर्लभ ॥ १५८ ॥

[जि] इह ससारमाहे एगहा अम्हहड सुमिणे वि सुटणाई
माहि किमु मुख सभावीइ^८ ? अपि तु न सभावीइ । अम्हे निमा छा^९
मिच्छवाम मिथ्याचनउ संस्कार तिणि नरी निक्किट्ट विरउ भाप
तेहतउ गलिउ गुरु गुरुउ विनेक तत्त्वातत्त्वापिचार जेन्नु छइ ॥ १५८ ॥

[मे] इहा घणा कालनु^{१०} मिथ्याचनगमनउ जे निक्किट्टभाप
तीणइ गलिउ गुरुउ विनेक ग्हाण अम्हे तेहाड सुटणा^{११}माहि परम
मुख मोक्षमुख किम सभावीय^{१२} ? ॥ १५८ ॥

[सो] वली करि कहइ छइ ।

[जि०] वली काई मनोगत कहइ ।

ज जीविअमित्त पि हु धरेभि नाम च सावयाण पि ।
त पि पहु महाचुज्ज अडविसमे वूसमे काले ॥ १५९ ॥

[सो] ज इसिइ अतिविषमि दुग्गमानालि वर्त्ततइ जीवित्त^{१३}
मात्रई धरीइ अनइ श्रावकनु नामउ ज धरीइ तेहइ हे प्रमु । महा
आश्चर्य । जेह भणी ए काल अपार अनथअहुल अतिधमरहित तेह
भणी ॥ १५९ ॥

१ जि मे इह मिच्छवाम^१ २ जि निक्किट्ट ३ जि मे सुमिणे ४ गाढ
५ 'वात संस्कार' अम्हारउ एहवा' ए' मे पाठ सो नी बीजी प्रतमायी पढी गयो छे

साहम्मिआओ अरिओ बधुसुआईसु' जाण अणुराओ ।
तेनि न हू सम्मत्त विनेय' समयनीईण' ॥ १४७ ॥

[सो] साहम्मि० जेहहूड साहम्मी' पाहिं बाधव पुत्र क्लत्र मित्रादिक म्वन्न उपरि अनुराग घणउ अधिकउ हुइ । साहम्मी उपरि म्नेह थोडउ अनइ आपणा सगा कुटुम उपरि घणउ स्नेह हुइ, मोह लाइ । तेसिं० सिद्धांतनी रीतिइ जोता निश्चयइ' तेहहूड सम्यक्त्व नथी दमिउ मानउ । जउ सम्यक्त्व दृढ हुइ तउ धर्मवन उपरि अनुराग गाढउ जोईइ । इह लोकना सगणण उपरि थोडउ जोईइ । इसिउ भाव ॥ १४७ ॥

० [जि] जेहा पुरुषहूड साहम्मी पाहइ वधु स्वजनादिक उपरि अधिकउ अनुराग म्नेह हुइ तेह पुरुषहूड सम्यक्त्व नही । इमु सिद्धांतनी नीतिइ विनेय जाणिवउ ॥ १४७ ॥

[मे] जेह जीवनइ साधमीं पाहति बाधव पुत्र क्लत्र मित्र उपरि अधिक अनुराग हुइ ते जीवनइ सिद्धांतनी रीतिइ जोता सम्यक्त्व नथी । इकाइ' जु सम्यक्त्व दृढ हुइ तउ साहम्मीनउ अनुराग गाढउ हुइ ॥ १४७ ॥

[सो] शुद्ध सम्यक्त्वनउ घणी लोभाचारनउ धर्म काई न गणउ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] जथ मिश्रात्वीनइ पक्षि हउ जि मानइ तिहहूड जोम्भउ दिइ ।

२० जइ जाणसि जिणणाहो ओआयारा' विपक्खण हूओ ।
ता त त मन्नतो कह मन्नसि लोअआयार' ॥ १४८ ॥

१ जि मे सयाइसु २ मन्ने ३ सिद्धतनीइए ४ साहम्म ५ निश्चयनई
६ जि मे लोआयाराण पक्खण ७ मे ता तव त ८ मे आयारे ।

। [जि] हु विश्व जे जीवितव्य मात्रई धरेमि धरउ, च वली एहि विषमि दुस्वदायकि दुपमानलि सावयाण पि श्रावई ताम धरउ, हे प्रभो जिन ! त पि तेइ महाबुद्ध महा आश्चर्य ॥ १५९ ॥

५ [मे] ईण्ड कालि जे जीवितव्यमात्र धरउ अनइ हउ वली श्रावकनउ ताममात्रइ वणउ, हे प्रभो ! हे स्वामी ! ते महाआश्चर्य जे अतिविषम दुस्वदायकालि ॥ १५९ ॥

[सो] वली गुरु प्रति कवि कहइ छइ ।

[जि] अथ तात्त्विकचिंता कहइ ।

१० परिभाविऊण एव तह गुरु करिऊ अम्ह सामित्त ।
जह सामग्गिसुजोगो जह सुलह होइ मणुअत्त ॥ १६० ॥

[सो] परिभाविऊण० इसिउ विमासीनइ - सद्गुरु अन्हारउ स्वामीपणउ तिम अन्हारी सार करिजो, जिम आगलि अंग धर्मसामग्गीनु रूडउ योग प्राप्तु अनइ जिम मनुष्यपणउ सुलभ थाइ २५ जेह भणी सिद्धातमाहे एह जि बोल गाढा दुर्लभ कहिया छइ—

चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणि अ जतुणो ।

माणुसत्त सुई सद्धा सजमग्गि अ वीरिअ ॥

(उत्तराध्ययन, अध्ययन ३, गा १

तथा—

२० धनाण विहिजोगो विहिपम्बाराहगा सया धना ।

विहिबहुमाणी धना विहिपम्बअवृसगा धना ॥ १६० ॥

[जि] देव आगलि वीनती करी गुरु आगलि वीनती करइ हे गुरो ! इसु पूर्वोक्त गाथास्वरूप परिभाविऊण परिभाणी विमासी नइ तह तिम अम्ह सामित्त अन्हारी धणीप करिऊ करिजो

१ पहु २ जि सुपग मे सजाने ३ जि सणई मे सद्धे ४ जि सम्माने ५ धमसामग्गी

जह निम पहुसामग्गि जैन मामग्री तेहनइ संयोगि हूतठ अम्हा
रहइ सम्यक्च सुलम हुइ ॥ १६० ॥

[मे] इमिउ निमासीइ हे सुगुरु ! अम्हारउ स्वामीपणउ
त्ति करउ, निम स्वामीनी मामग्रीनइ जोगिउ अम्हारउ मनुष्यपणउ
मफ्फ सुलम थाइ ॥ १६० ॥

[जि] अथ श्रीनेमिचद्र भडारी स्तनामारिन गाथा कहइ ।
एव 'भडारिअनेमिचदरउयाओ कटवि' गाहाओ ।
विहिमगरया मन्वा पढतु जाणतु जतु सिय ॥ १६१ ॥

[सो] एव० इन इसी रहिइ 'नेमिचद्र भडारी'ची कीवी
ए केतलीइ १६० गाथा जे भव्य जीव भग विधिमागनइ विपइ तत्पर^{१०}
छइ ते ए पढउ । एणु अर्थ जाणउ । सम्यग् आराधीनइ मौखपदि
जाउ । अनत सुख लउ ॥ १६१ ॥

[जि०] एर इणि प्रकारि भाडागारिक श्रीनेमिचद्रइ
रचित कीवी केतलीएक गाथा विधिमागनत भव्य जीव पढउ । तेह
गायानउ अर्थ जाणउ । किम निव मोक्षि निरुपद्रवि स्थानकि जत्तु^{१५}
जाउ । भणहार जाणहार पुरुषहइ महापुण्यप्राप्ति हुइ ॥ १६१ ॥

[मे] इसी परिइ भडारी श्रीनेमिचद्रइ केतलीएर गाथा
रची । अनइ जे विधिमाग सरी विधि तेहनइ विपइ रत जे भव्य जीव
छइ ते ए पढउ । एहनउ अर्थ जाणउ । अनइ आराधतां भणता जाणता
शिवपद पामउ । अनत सुख लहउ ॥ १६१ ॥

[सो] इति पट्टिशतकनालावबोध . समाप्तो विरचित
श्रीसोमसुन्दरस्वरिपादै सर्वजनोपकाराय ।

१ नि मे कहवि २ रहणइ ३ ते' नथी ४ सो नी कीवी प्रथमां मात्र
आग्ली ज पुणिका छे—'इति पट्टिशतकनालावबोध समाप्ता ॥ छ ॥ धी ॥
गंयाय १०९६ श्लोका ॥ श्री ॥ था ॥ छ ॥'

नम पि तम्म अमुहं	३	योम नारया ॥ जेमि	९०
निममइगुण्यारेण	१३४	वण पि सुगुजिग्वग्गइम	१०१
निक्किण्ण गभा जइ पुवि	४८	पिरयाण अविणए जीवे	१२
ना अणया पराया पुण्ण	१०७	अणा अदियणा व	८३
परिमा रउण एवं लइ गुरु	१	स वण मा उवणो म	२८
पहुवणविहिइग्ग गऊण	१४	सणे णिइ नामइ गोओ	४१
अलि किज्जामा मज्जकणास्स	१०८	सणो इइ मरण वगुरु	४२
अणुगुणविज्जानित्ता	२३	समयविक्र अमनया	५३
बंधणमरणमपाई दुहाई	१०३	सम्मत्तंतुअणे पिण्ये	८७
पीया य सत्तरहिआ	१०	मयणां वा माह गभा	२४
मज्झठिइ पुण एमा	३३	स वेगं पि हु सगठं	११६
मा मा अणह बहुअ	१२४	स १ पि जण मुहं	१४४
मि अणवहुलयाए	२२	सव्वे पि वियाणिज्जइ	२१
मि अणतमापरंत वि	७४	सव्वा मि अणिइ णो	३८
मिअणसेवगाणं विण्णयाइ	८५	सगा पि जाण अहिओ	७७
मिअणपराइ रणे लोओ	३७	मणइ दसमच्छेयनामापरिण्हि	१४२
मुदाण रंजणये अण्हिपत्तंय	६०	सणइ दुमकाणे धम्मत्थी	११३
मुवे जिणित्तादवा सव्वयणे	१०५	सणइ पहुवयणेण वि पाव	११२
रे जीव अनागाण	७३	साहम्मिआओ अहिओ	१४८
रे जीव । भवदुहाई इण्ण	६	माहीण गुणजाण जे न हु	९५
सत्ता पि खगारत्ता गुण	१८	जिरिधम्मशमगणिण रइयं	९८
सच्छी वि हयइ दुविदा	३५	मुदइ अणम्मजा अपे	९६
सज्जति आणिमा इं	५८	मुदविहिधम्मराअ वइइइ	५१
साअपवाइसनारणउटपयंवाइ		मुदां जिणआणरया कंमि	३९
लहरीण	७१	मुद मग जाया मुहेण	८४
साअपवाइ सउणममि	९	सुरतदचित्तमणिणो अण्यं	५७
गए वि इम भणिअ	१३२	सोएण कंजिण सुद्वेज्जण	१११
सायमि रायनीनाय न	१०	सा अणवठ ण विदिया	३१
		सो न गुण पुणपवरो	१५२
		हा हा गुण अण्ण सामी	४
		हिअयमि जे सग्ग	१३६

क्षमाग्नासृजुडविष्टपदिने १४९६ संवसरे श्रीनपा
गच्छेद्गुरुसोमसुन्दरवैराचार्यपुर्यैरियन् ।

वाचाभिर्निहिता हिनाय वृतिना मम्यवर्षीने सुधा
वृष्टि पट्टिशताह्वयप्रकरणन्यारया चिर नन्दतु ॥

५ ए प्रशस्तिनउ प्राय महात्माउ कीधउ । समन्दा[र] १५१३ वर्षे ।
प्रथम ९०८ श्लोका ॥ उ ॥ मडपदुर्गं

[जि] इति श्रीपट्टिशतकप्रकरणवाचार्थवृत्ति ॥ छ ।

संवत् १५०१-वष व्रावण वदि १० भौमदिने श्रीस्वरत्तरगच्छे
श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनवर्द्धनसूरिस्तपट्टे श्रीजिनचन्द्र
१०सूरिपट्टे भय्याम्भोत्तदिवामणिना सविन्नचूडामणिना वाचाचार्य (१
दानचिन्नामणिना सुनिहितगुरुचक्रवर्तिना महापरोत्कारिणा श्रीजि
सागरसूरिणा बालानामवोवाय श्रीनेमिचन्द्रभाडागारिकवृत्त
पट्टिशतकप्रकरणस्य स्वरूपा वाचार्थवृत्ति कृता । सा
श्रीसवनेन वाच्यमाना चिर नद्यात् ॥ छ ॥ शुभ भवतु ॥ कल्याणमस्तु
१५लिपित ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥

[मे.] इति श्रीनेमिचन्द्रभडारीनिरचितपट्टिशतक
विवरण । इतिरिय श्रीवृद्धस्वरत्तरगच्छीथ वाचकेन श्रीमे
सुन्दरेण ॥ छ ॥

१० शास्त्र बालानवोधाख्यमभरप्रभसूरिभि ।
लिखित निनपुण्याय शोध्यमाहाय्यहेतवे ॥
यदत्र विहित कर्ता स्वपुद्गवाथनिरूपणम् ।
प्राय प्राह्वनगोडुल्यान्न दोषोऽम्माकमत्र च ॥

शुभ भूयात् श्रीसवस्य ॥ उ ॥ द० ॥ अथसरया श्लोकशत ६०० ॥ छ
छ ॥ श्रीजन

શબ્દકોશ

સારના અર્થે ઇત્યાદિની પછી નોંધેલા અંકો અનુક્રમે પૃષ્ઠ અને પાનિ સૂચવે છે. સદાહરણ તરીકે, અણહત્તઠ શબ્દ પછી ૨ ૧૭ એ પ્રમાણે અંકનિર્દેશ છે. અર્થાત્ એ શબ્દ પૃ ૨ ઉપર ૧૭મી પાનિમાં છે. ૧૫૨ ૩ ૧૩ એ પ્રમાણે એક કરતાં વધુ અંકનો નિર્દેશ હોય ત્યાં પહેલો અંક પૃષ્ઠનો અને બીજા બધા અંક પાનિઓના સંખ્યાવાના છે. એક જ પૃષ્ઠ ઉપર કોઈ શબ્દ એક કરતાં વધુ વાર પ્રયોજાયાનો નિર્દેશ એ રીત કરેલા છે.

સ-પગ્ધિ નીચે શુભવ છે —

અ	અવ્યય
અનુ,	અનુગ
અપ	અપભ્રંશ
એ, ષ	એકવચન
અ વિ	અંગવિભક્તિ
ઘા	ઘાટિયાવામી (બોલી)
ઙ	ઙદન્ત
કિ વિ	ક્રિયાવિશેષણ
પ્રા શુજ	પ્રામ્ય શુજરાતી
ચ	ચતુર્થી વિભક્તિ
જૂ શુજ	જૂની શુજરાતી
તૃ	તૃતીયા વિભક્તિ
દે	દેશ્ય
દ્વિ	દ્વિતીયા વિભક્તિ
ન	નપુસક લિંગ
પા	પાલિ
પુ	પુષ્પ
પું	પુલિંગ
પં	પંચમી વિભક્તિ
પ્ર	પ્રથમા વિભક્તિ

परिशिष्ट १

नेमिचन्द्र भडारी-विरचित

जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन

पणमवि सामिय^१ वीर जिण,^१ गणहर गोयम सामि ।
 सुधर्म^१ मामिअ न^१ ल्गि सगणि जुगप्रधान सिवगामि ॥ १ ॥
 तित्थुधरणु^१ सु मुणिरयण, जुगप्रधान ऋमि पत्तु ।
 जिणवल्लहसूरि जुगपवरो,^६ जसु निम्मलउ चरित्तु ॥ २ ॥
 तसु सुहगुरु गुणकित्तणइ, सुरराउ वि असमत्थु^५ ।
 तो भत्तिभर^{१२} तगलियउ^{१५} क्ह^{१६} हउ क्हि^{१६} मकयत्थो^{११} ॥ ३ ॥
 क्ह भरमायर दुहपर,^{१५} क्ह पत्तउ मणयत्तु ।
 किह जिणवल्लहसूरि वयणु, जाणउ^{१८} समय पवित्तु^{१९} ॥ ४ ॥
 क्ह सबोहि^{२०} मणु^{२१} उल्लसिउ, ^{२२} क्ह सुद्धउ समत्तु^{२२} ।
 जुगममला^{२५} नाएण मइ, पत्तउ जिणविह^{२६} तत्तु ॥ ५ ॥
 जिणवल्लभसूरि सुहगुरह,^{२७} बलि वित्तिसु^{२८} गुरराय^{२८} ।
 जसु वयणेण^{२९} विजाणीयए,^{३०} तुद्धइ कुमय^{३१} कसाय ॥ ६ ॥
 मूढा मिल्हहु मूढ पहु, लगहु^{३२} सुद्धइ धम्मि ।
 जो जिणवल्लहसूरि क्हिउ,^{३३} गच्छउ^{३४} जिम सिवरमि^{३४} ॥ ७ ॥

५

१०

१ सामि ० त्तिणु ३ सुधर्म ४ तुल्लि ५ सरणु ६ तित्तु रणु
 ७ रयणु ८ जुगपवर ९ सुहगुरु १० सुरराओ ११ असमत्थो १२ भत्तिभर
 १३ तराओ १४ क्हिउ १५ क्हिसु १६ हियत्थु १७ पवर १८ जाणिउ
 १९ पवित्तओ २० सबोह २१ मण २२ जासिय २३ सामणु २४ समिला
 २५ विह २६ गुरह २७ किजउ २८ सुरगुराय २९ वयणे ३० विजा
 णियइ ३१ कुमय ३२ लगहु ३३ क्हिओ ३४ गच्छउ ३५

प्रा	प्राकृत
फा	फारसी
ब व	बहुवचन
भू कृ	भून कृदन्त
म	मराठी
मा	मारवाडी
व कृ	वर्तमान कृदन्त
वि	विशेषण
ष	षष्ठी विभक्ति
स	सप्तमी विभक्ति
सर्व	सर्वनाम
स	सम्भृत
स कृ	संबंधक कृदन्त
श्री	श्री ङिग
हि	हिन्दी
हे कृ	हेत्वर्थ कृदन्त

श निश्चयार्थ अव्यय ७-३ [स च > प्रा य > अप जू गुज इ]
 जुओ वा शब्दकोशमा इ तथा ई केग्लिक वार पादपूरक तरीके पण प्रयाजाय छे
 उदाहरण तरीके—'नयण्ण विवि विहु नीले अ टीग अ करी अ कस्तुरि
 आपु पान सयोगसु सूदी अ फोफलचूरि नैवेय आगठि नव बरी पुत्री अ गमी अ
 पाद, अफ्ला आयस भागि ज मया म छेदेसि माई' (वीरसिंहकृत 'उपाहरण,'
 पं २३ ३४) बहिनी अ करी अ सजाई अ माइ अ धू सिगगारी (एज पं
 ९७०) इत्यादि

अकसर 'बहे छे' वर्तमान प्रीओ पु ए व ४ ११ [स आख्याति >
 प्रा अकसर]

अकसर 'अपर द्वि ए व पुं ४ ११ [स अपर > प्रा अकसर]

अछेर 'अचरण' प्र ए व न १४२९ अंगरूप अछेरा १४३१
 [स आनय > प्रा अछेरय]

अनयणावळ 'जयणा विनावा' वि प्र व व पुं ११० १२ जओ
 अपणारहित

- अथिर^१ माह पिय वधनइ,^२ अथीर^३ रिद्धि गिहवासु ।
 जिगमल्लसूरि पय नमउ,^४ तोडउ^५ भउदुह पासु ॥ ८ ॥
- परमपणइ^६ ७ के वि गुरु निम्मल धम्मह हुति ।
 सवि ति मुग्गुरु^७ मन्नियहि,^८ जे जिणवयण मिलति ॥ ९ ॥
- ५ 'गुरु गुरु' गायवि^९ र्दियहि,^{१०} मूउ^{११} होउ अयाणु ।
 न गुणइ ज निण आण विणु, गुरु हुइ^{१२} सत्तु समाणु ॥ १० ॥
- निम सरणाइय^{१३} माणुसह, को^{१४} करद सिरछेउ^{१५} ।
 न गुणइ ज निणमासियउ,^{१६} तिग कुगुरह सचोउ^{१७} ॥ ११ ॥
- हुइ^{१८} विमण्णिणि^{१९} ममम गुरु,^{२०} दूमम फालु कलिडु^{२१} ।
 १० जिगमल्लसूरि भडु नमहु, जिणित^{२२} सत्तु^{२३} निसिद्ध^{२४} ॥ १२ ॥
- जा^{२५} जहि^{२६} कुलगुरु आवियउ,^{२७} ते तहि भक्ति^{२८} करत^{२९} ।
 विरल जोइवि जिणवयण,^{३०} जहि^{३१} गुण तहि^{३२} रचति^{३३} ॥ १३ ॥
- हा^{३४} हा दसम^{३५} कालल्लु, सल-वकत्तण जोइ ।
 नामेणइ^{३६} सुविहिय तणइ, मित्तु वि वयरीय^{३७} होइ ॥ १४ ॥
- १५ तहि^{३८} चेडाहिव^{३९} हउ नमउ,^{४०} सुमणिय^{४१} परमत्थाह^{४२} ।
 हीयटइ^{४३} निणवर^{४४} इक्कपर, अनु सुद्धउ गुरु^{४५} जाह^{४६} ॥ १५ ॥

१ अथीर २ वधवह ३ अथिर ४ नमओ ५ तोडइ ६ परमपणय
 ७ सव ८ दसपुर ९ मन्नियइ १० गाइवि ११ र्जियइ १२ मूडा
 १३ होइ १४ सरणाइय १५ सिरछेओ १६ जिणमासियओ १७ सचोओ
 १८ हुं १९ अवसण्णिणि २० गहु २१ किलिडु २२ जेणउ २३ सुउ
 २४ नसिद्धव २५-जो २६ जिह २७ आइयउ २८ भक्ति २९ करति
 ३० जिणवयणु ३१ जहि ३२ तहि ३३ रच्यति ३४ दूमम ३५ नामेणइ
 ३६ वयरीओ ३७ तिहि ३८ चेडाहिवि ३९ नमओ ४० सुमणिस
 ४१ परम ललाह ४२ हियटिइ ४३ नाइटाजीनी प्रतमा 'जिण विहियडु पर'
 एवो पाठ छे पण ए रुहियानी मूल ज लगे छे ४४ गुण ४५ जाह.

अजाणिरठ 'ज्ञान' प्र व व न १५२०, १५३३ १३ जुओ पाण

अणुआल् 'अनवात्' प्र ए व न १०४०१ [स उज्ज्वगणितम् >
प्रा उज्ज्वगणितम् > अप उज्ज्वगणितम् > *उज्ज्वगणितम् > जू गुज उनुयात्,
अनुयात् सर० गुन 'ऊज्ज्व']

अणलदत्तठ नहि मेळनतो व ह प्र ए व पुं २१७ अंगरूप
अणलदत्ता १४३४ [स आ + √ लम् > प्रा अणलद]

अणलद्वियठ नहि मज्जवतु ते अप्राप्ति प्र ए व न १३१५ १४९

अणठाघठ अणगण्या ' ६५२ वि प्र ए व पु जुओ लाघठ

अनद उमयावयी १६ [स अयाति > प्रा अणद > जू गुज अनद,
अम्बरित प्रथमधुतिलोवधी नद, अर्वाचीन गु अनेन]

अनीरा ११८ , जुओ अनेरा

अनेयि बीजे अ ९२० [स अयत्र > प्रा अणय्य]

अनेरठ बीजे ' वि प्र ए व पुं १४५, ४११६, ६०१३२०,
६९७ १०३११०१ १३१२ अनेरठ द्वि ए व न ४८१४ ५ ३
वडी जुओ अनेरद तृ ए व ६८ १ अनरद स ए व ४३२२ ७५११
[स अन्यतर > प्रा अणयर] अनेरठतु उत्तरकालीन अनेह द्य पण छे
प्र ए व न ४८१३ अनरे स ए व न २८७ वडी जुओ अनरा १६१०,
२६६११ ४०१, ९७-१३ १०६११ १०७-४ ११८२३ १५०१९
१५३०१, अनरानद '१२७-९ अनराना ११०३ , अर्वाचीन गुजरातीमा
अनेरो शब्दमा अनय, असाधारण' एवा अर्थ विकस्यो छे ए नोपपात्र छे

अमय्य मोशनो अनधिसारी वि प्र व व पुं ११ १७ आ जैन
धार्मिक परिभाषानो रक्ष छे

अभाणठि अभाव अणगमो द्वि ए व स्त्री १३३ १९ [स अभाव +
अप स्वार्थिक प्रथय ठि]

अमकद अमुकमा वि स ए व न ९१११ [स अमुके अप
अमुक]

अमुनित अजात भू क द्वि व व पुं १०५४ [प्रा मुण
जाणतु]

जिणि' जिणवर' पडु हीलियइ, जणु रंजियइ सहामु' ।
 सो वि मुगुरु पणमतयइ, 'पूटि न हिया' ह्यासु ॥ १६ ॥
 भिरियमने जिउ वीर जिण इफ' उसत्त' ल्वेण ।
 कोडाकोडि सागर भमिउ, 'फि न मणइ' मोहेण' ॥ १७ ॥
 तव संजम मुत्तेण सह, 'सत्तु' वि सहलउ होइ । 5
 सो वि उमुत्तल्वेण सह, 'ममदुह-ल्लखवड' देइ ॥ १८ ॥
 माया मोह चण्ण' जण, दुलहउ' जिणविइ' धम्म' ।
 जो जिगंलहसूरि-कहिउ, 'सिग' देउ' मियसमु ॥ १९ ॥
 समउ' कोइ म करहु मणि, ससइ होइ' मिच्छतु ।
 जिगंलहसूरि जुगपवर, 'नमहु सु तिजग-पविउ' ॥ २० ॥ 10
 जइ जिगंलहसूरि गुरु, नह' दिट्टउ' नयणेहि ।
 जुगपहाण तउ' जाणीयइ, 'निच्छइ' गुण-चरिणहि ॥ २१ ॥
 ते धत्ता मुक्यरथ नर, 'ते संसार' तरति ।
 जे जिगंलहसूरि तणीण, 'आण' सिरेण' धरति' ॥ २२ ॥
 तह' न रोगु, 'दोहम्मु नह' तह मगल कल्लाण' । 15
 जे जिगंलह गुरु' नमइ, 'तिजि सइ सुविहाण' ॥ २३ ॥

१ जे २ जिणवर ३ ह्यासु ४ पणमतयइ ५ कोडि ६ हियइ ७ मरिय
 ८ जिओ ९ जिण १० इफि ११ उमुत्तल्वणु १२ भमिओ १३ मुणहु
 १४ सउ १५ सत्तु १६ सउ १७ लखइ १८ चणउ १९ दुलहउ
 २० जिणविहि २१ धम्म २२ कहिओ २३ सिग २४ देइ २५ शिवसमु
 २६ संसओ २७ हुइ २८ जुगपवर २९ त्रिजग पविउ ३० जइ ३१ नय,
 ३२ टिओ ३३ जुगपहाणउ ३४ विनाणियए ३५ निच्छइ ३६ नरा ३७ संसार
 ३८ तर्णय ३ आणा ४० तिरण ४१ पइति ४२ तेहि ४३ रोगो ४४ तहु
 ४५ कणाण ४६ सूरि ४७ गुणहि ४८ सुविहाण

अजाणु 'अजाण' वि प्र ए व पुं १६२५ [सं अपानिन् > प्रा अजाणि, अजाण]

अलगड 'अलग, अलगो' वि प्र ए व पुं १४९० १३ [सं अलगक > प्रा अलगओ]

अममथु 'अममथ' वि प्र ए व पुं १६१ [सं अममथं > प्रा अममथ]

असमावि 'अशापित अम्बरपता' प्र ए व स्त्री ११४२०

अहिनाण 'एषाण' द्वि ए व न १३१३ अहिनाणि तृ ए व न १३४ [सं अहिनाण > प्रा अहिणाण]

अंधण 'अंधाणो' द्वि ए व न १०९१९ अंधण 'तु पागन्तर 'अंधपणउं' मळे छे, एग्ले एता अंधं विषे सण्हे रहनो नथी

आगि आग 'प्र ए व पु ६ १२ [सं अग्नि > प्रा अग्नि > जु गुन आगि एतुं लु प्रयान य कारवानुं रूप 'आग्य यया पट्टी अर्वाचीन शुब्रानी 'आग' घाय छे]

आचाम्ल 'अन विशेष, जेमां लखूं सूख ग्यानातुं होय छे गुन 'आबेल' द्वि ए व न १८ [प्रा आयकिउ] आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे

आणिठ 'गवेणे, गुन 'आग्यो' भू कृ द्वि ए व पुं १३८१४ [सं आनीन > प्रा आणिओ]

आधाकर्मा साधु माटे खास तैयार करेतु भोजन जे जैन साधु माटे खानुं निषिद्ध छे १३८१९ वि प्र ए व पु [आ शब्दनुं प्राकृत रूप आहाडम्मिय ए जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे]

आनद भगवान महावीरना दम सुप्रसिद्ध उपासक धारणेमानो एक प्र ए व पुं १ ११२

आपण 'पोतानुं सर्वे द्वि ए व न ८१० आपणई तृ ए व न ७५४ ७८८ वली जुओ आपणउ ६९७, ११८३४ आपणउ ७ ३ ८९ १५ १०५ ०१ ११७-१८ ११८८ आपणा ७०३ ११३७ ११४३ ११८१६ १९ १५२१ १५५१६ आपणा ११९ १२ आपणा १३५ १८, १३६ १ ११८ १६, आपणणी ७३ १३ १४, ७८ ६, आ क्षेण शब्द साथे गुन

मुनिहिय मुणिचूडारयण,^१ जिणवल्लह बहु राउ^१ ।

इष जीह किम संपुणउ,^२ मोउउ^३ मत्तिसहाउ^४ ॥ २४ ॥

संपउ ते मत्तावि^५ गुरु, उग्गइ उग्गइ सूरि^६ ।

जो जिणवल्लह पहु^७ ष्हइ,^८ गमइ उमम्मु^९ सुइरि^{१०} ॥ २५ ॥

इकि^{११} निणवल्लह जाणीयउ, सन्वु^{१२} मुणियइ धम्मु^{१३} ।

अनु^{१४} सुइगुरु^{१५} सवि मनियइ,^{१६} तित्थु जि^{१७} धरहि^{१८} सुइम्मु^{१९} ॥ २६ ॥

इय निणवल्लह थुइ भणिय, मुणियइ करइ फल्लाणु ।

देउ^{२०} बोहि चउवीस जिण, सामइ^{२१} सम्बनिहाणु^{२२} ॥ २७ ॥

जिणवल्लह^{२३} म्मि जाणियउ,^{२४} हिव मइ तासु^{२५} सुसीसु^{२६} ।

१० जिणदत्तसूरि जुगपपरो, उद्धरियउ गुरुवमो ॥ २८ ॥

तिणि निय पइ पुण ठावियउ,^{२७} बालउ^{२८} सीहक्सोरु^{२९} ।

परमइ^{३०} मइगल^{३१} बलदलणु, जिणचत्तसूरि मुणि सारु^{३२} ॥ २९ ॥

तमु^{३३} मुणट्टि हिव गुरु जयउ,^{३४} निणपत्तिमूरि^{३५} मुणिराउ^{३६} ।

जिणमय विहि उज्जोयकरु, दिणयर जिम विम्भाउ^{३७} ॥ ३० ॥

१५ पारततु विहि विमयसुहु, वीरजिणेमर वयणु ।

जिणवइसूरि गुरु हिर कहइ,^{३८} निच्छइ^{३९} अनु^{४०} न करणु ॥ ३१ ॥

१ चूडारयण २ गुरु ३ गुणराओ ४ सपुणउ ५ भाउआ ६ मत्तिसहाओ
७ मत्तामि ८ सूर ९ पउ १० ष्हइहि ११ अमग्गउ १२ इरि १३ इक्क
१४ सन्वु वि १५ धम्मु १६ अन १७ सुइगुरु १८ मनियइ १९ तित्थ
२० जिम २१ धरइ २२ सुइसु २३ देओ २४ सासय २५ सोइसु
२६ अ नाहणाजीनी वाचनामां जिणवल्लह पळी गुरु शत्त वधारानो छे
२७ जाणियइ २८ तसु २९ सुसीसु ३० ठावियआ ३१ बालओ ३२ सीह-
क्सोरु ३३ पर ३४ मयगल ३५ मुणीसइ ३६ तस ३७ जयआ
३८ जिणपत्तिमूरि ३९ मुणिराआ ४० विर्याआ ४१ कहओ ४२ निच्छइ
४३ अजुअ

आच्छी, 'अच्छिय' ('पाने) शब्द सरखायो [सं आत्मन् > प्रा
आपणो अर्थात्तु गुणरातीनां यथा आ शब्दो अर्थविस्तार नोपपाद्ये धम
क आपणु एग्ले पतानुं' तेम अ नया समेत धीनां अनेहनुं]

आपणपठ पानाना 'सत्र द्वि ए व पुं ११८ ११ आपणपठ 'पोतानी
जात द्वि ए व त ५१ १५, ६० ११ ७६-९ ११, १०६ १०, १११ २९,
११२ ६ १२६ १७ १४६ १९, १४७-२ १ ४ आपणपठं तु ए व न
६९ १२ ७३ १७, ७८ १२ यत्ती जुओ आपणपा ९७-१३, ९९ १२, आपण-
पानह १४ ११ आपणपामाहि ११५ ४ ६ १३ आपणपू १४६ १३ आपणपू
७३ ७ [सं आत्मन् + आत्मन् > प्रा आपण + अप्य अपवा सं आत्मन् >
प्रा नप्यन्]

आराधणहार 'आराधना करनार' द्वि ए व पुं ७७-१९ [सं आराधन
+ कार > प्रा आराधन + आर > 'ह ना प्रोपधी आराधणहार सर० सरजन
हार, खेवनहार तारणहार, इत्यादि 'ह'नो गोप यतां आराधनार' इत्यादि
आ न भन्नां मूठ पाठमां जुआ करणहार ६ १०, ९ १४, ६ १६, ८२ १६,
९२ १६ ११३ ९ १३ २३ इत्यादि यत्ती करहार एवं एमाधी व्युत्पन्न धयेतु
स्य पण छे (८५ २०) जेमांशी अर्वातीन गुणराती 'करनार' आवे. यत्ती जुओ
'कहणहार (= कहेनार) ४ ८, २९ ४, ८४ ९ कहणहार ३७-१२, २२ १२
साणहार (= सानार < प्रा खाअणआर < सं सादनकार) १८ ७, एमांशी अ
व्युत्पन्न धयेतु साणहार १७-१७ चाळणहार (= चाअनार) ९ १५ जाणणहार
(= जाणनार) ९३ १० जाणहार (= जानार) ४७-२० १५९ १६ द्विणहार
(= देनार) १ ३ १७ दणहार ३७-६, ८४ ९ १०-३ ९ देनहार ५७-१३
दहार २४ ४ नासणहार (= नासनार) ४१ १७ प्रकासणहार (= प्रकारानार)
१ ५ २० पाळणहार (= पाळनार) ११५ ६ पूरणहार (= पूरनार) १०-३
१३ प्रेरणहार (= प्रेरण करनार) १ ३ १८ बोलणहार (= बाअनार) २४
११, ६१ ८ भणहार (= भणनार) १५९ १६ लेणहार (= लेनार) ३७-५
सांभळणहार (= सामळनार) ३७-११ २९-१६ सेयणहार (= सेवनार)
८६ १९ हठणहार (= होनार धनार) ६० १९

आलोह 'आलोचना करे छे' वर्तमान जीओ पु ए व ६९ ४ [सं
आलोच् > प्रा आलोअ प्रायन्ति करवा माते पाताना अपराध गुणे कहेवा छे,
आलोचना] आ जैन पारिभाषिक शब्द छे

घन ति' पुरवरपट्टगइ, घन ति टेम' विचित्त ।

जिहि' विहरइ निगवइ सुगुण, देसण करइ पविच ॥ ३२ ॥

कवणु' सु होमइ दिवमडउ, कवणु' सु निहि सुमुहुचु' ।

विहि' वदिमु जिणइ सुगुरु, निमुणिसु' धम्मह त्तु' ॥ ३३ ॥

सहुद्धारु'' फरेसु हउ, पालिसु'' ण्डु संमतु'' ।

नेमिचवु' इम वी'वइ, सुद्धगुरु-गुणगण-रचु' ॥ ३४ ॥

नदउ विहि जिणमदिरइ, नदउ विहिसमुदाउ'' ।

नदउ जिगपत्तिमुरि गुर, विहि जिणधम्म-पसाउ'' ॥ ३५ ॥

जिनेधरसुरि, जिनप्रजोयसुरि, जिनचन्द्रसुरि, जिनपुद्गलसुरि, जिन
पद्मसुरि, जिनविविधसुरि, जिनचन्द्रसुरि, जिनोप्यसुरि, जिनराजसुरि,^{१०}
जिावर्द्धनसुरि, श्रीमागरचन्द्रसुरि । शुभभन्तु ॥ छ ॥

१ तई २ दंरा ३ जहि ४ कवण ५ देसणओ ६ कवण ७ समुहुच
८ जही ९ निमुणि १० तत्त ११ सहुद्धार १२ सुद्धह १३ सम्मतो
१४ नेमिचंद १५ विनवइए १६ रत्त (रत्ता) १७ मदिरहि १८ समुणओ
१९ पसाओ

આસોઝી 'આસો માસની' ષ ણ વ છી ૫૨૪ [સ અશ્વયુજ > પ્રા અસોઝ > શુઝ આસો] 'ની' અર્થે કચ્છી અને સિંધીની જેમ પઠાના પ્રયય તરીકે છે એ નોંધપાત્ર છે

આસ્તા 'આસ્થા પ્રજ્ઞા પ્ર એ વ ત્રી ૧૮૦ ૭ ૩૮૮ દ્વિ એ વ છી ૩૮૮ [મ આસ્થા]

આહનતડ 'પા કરતો વ કૃ પ્ર એ વ પુ ૧૦૦૧ [સ આહન > પ્રા આહન]

આહણિડ 'પા કરવામાં આવેલો મૂ કૃ પ્ર એ વ પુ ૧૧૨૪ [સ આહન > પ્રા આહણ]

આગ 'અંગ, જૈન આગમસાહિત્યનાં એક વિભાગ દ્વિ ણ વ ન ૫૧૧૧ [સ અગ > (અનુનાસિક કોમલ ધવાથી) આગ] આગમસાહિત્યમાં અગ' તરીકે ઓઢાસાતા ચાર પ્રયો હતા પણ અમાંનું ચારમું અગ 'દષ્ટિવાદ' હપ થયું છે અગિયાર અંગો ધિયમાન છે

આગમહ સ્વીકારે છે, માગવે છે 'વતમાન પ્રાતો પુ એ વ ૮૧૪ આગમી સ કૃ ૧૨૪૧ આંગમીનહ સં કૃ ૧૨૩૭-૮ [સ અગ + ✓ ગમ્ ઉપરથી જુઓ આંગીગમહ]

આગીગમહ સ્વીકારે છે મોગવે છે 'વતમાન પ્રીજો પુ એ વ ૮૧૧૬ આ રપ આગી' (અગમાં) અને ગમહ' (જાય છે) એવા બે શબ્દોનું બનતું છે, અને તે ઉપર સૂત્રવેદી ષ્યુપતિનું સમર્થન કરે છે જુઓ આંગમહ

આગે અંગો ઘટે 'ત્ વ વ ન ૧૧૬૬ [સ અગ > પ્રા આંગ]

હ નિઘયાર્થ અભ્યય કેટલીક વાર પાદપૂરક તરીકે પણ પ્રયોનાય છે
 ૬૭ ૭૧૬ ૮ ૧૨ ૧૩ ૧૫ ૧૧૧ ૧૭ ૧ ૧૧૫ ૧૮ ૧૯ ૨૧ ૧૧૯,
 ૧૬ ૧, ૧૭-૨ ૧૮ ૧ ૨૨, ૧૯ ૧૫ ૧૭-૧૮ ૨૦ ૧, ૨૧ ૧૫ ૧૯ ૨૨ ૩ ૧
 ૧ ૧૩ ૨૦, ૨૩ ૨ ૧૮, ૪ ૧ ૭-૧૨, ૨૬ ૧૨, ૨૭ ૧૪ ૧ ૧૮ ૨૮ ૬, ૨૯ ૩
 ૩૩ ૩ ૩૯ ૧ ૪૩ ૧૭, ૪૬ ૧૮, ૪૯ ૧૯ ૨૧ ૫૭ ૭-૨૦ ૫૯ ૮ ૬૪ ૧૨,
 ૬૧ ૨ ૧૨ ૧૯ ૬૭-૪, ૬૮ ૮, ૭૧ ૮ ૧૦ ૭૪ ૧૨૦, ૭૭ ૧૨ ૮૧ ૧ ૧૩
 ૨૦ ૮૨ ૧૬ ૮૪ ૩ ૭, ૮૫ ૪ ૮૭-૧ ૮૯ ૧૧ ૯૦ ૬ ૭ ૮ ૧૫ ૨૦ ૧૧ ૧
 ૩૪ ૧૩ ૧૪, ૯૨ ૧, ૯૩ ૯, ૯૫ ૧ ૮ ૯૬ ૧૮ ૨૩, ૯૮ ૩, ૧૦૦ ૧૧
 ૧૦૪ ૧૭, ૧૦૭ ૭, ૧૦૮ ૭ ૮, ૧૦૯ ૧ ૬, ૧૧૧ ૫ ૧૧૨ ૧૮, ૧૧૩ ૭,

परिशिष्ट २

नेमिचन्द्र भडारी-विरचित

पार्श्वनाथ स्तोत्र

भवगयनगणद्रहण दरिद्रोगारिदुरियनिद्वलण ।

मिद्धिपुरक्यनिग्रास सया वि सुमरामि जिणपासं ॥ १ ॥

इह संसारअरत्रे मीमे पडियाण गुद्धजतूण ।

तुज्झ रिणा जयनधर सरण न हु को ति दुहियाण ॥ २ ॥

५ त माया त च पिया त सामी बधवो गुब्ब देवो ।

त चिय परमनिहाण किं बहुणा मज्झ त इषो ॥ ३ ॥

न सरामि देवयाओ नो विज्जाओ ण मतमूलीओ ।

अ सामिय त पत्तो अउ अग्निप्फुरियमाहप्पो ॥ ४ ॥

तुह आणाभगाओ दुहाइ बहुयाई जाइ जायाइ ।

१० ताइ तुम चिय निहणनु अन्नो कदया वि न समत्थो ॥ ५ ॥

जइ वि पराभयठाण जइ दीणो दुच्चिओ अह देव ।

तह वि तुह पय सरतो मत्तामि न को वि अप्प समो ॥ ६ ॥

उल्लसियाइ सुहाइ दुहाइ खीणाइ ताण निब्भत ।

जाण भणम्मि तिससिओ विहिणा त पासजिणनाह ॥ ७ ॥

१५ ता हरमु मज्झ चिंता सताव माणसम्मि सकत ।

विहिजिणमुट्टगुरुजोग तिसमुदय देहि अणवरय ॥ ८ ॥

इय पासनाहदेव सरिय सज्जणमुएण अप्पहिय ।

ओ त सरइ तिसस सो पाइ वट्ठियमुडाइ ॥ ९ ॥

भा० नेमिचन्द्रमुश्वाककृत श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र ॥ :

११८३ ११५० ११७६ १२० १ ९१० १४२४ १४३ १२ १४, १४४ ३
१८ ११ १४७-१२ १४९ १४ १ ५०१ १५७२१ इत्यादि जुओ अ

इति एक नि प्र ए व पुं १०४ [स एक]

इह 'एक नि तृ ण व पुं १६३३, १६४२ [स एक]

इत्युत्त आ प्रसारणो वि प्र ए व पुं ७३१० द्वि ए व १४ २२
वली जुओ ह्यी २४० हसु ६५६, ६६३, १५७१ [स ईशिक > पा
शदम > प्रा ह स > नू गुन मित]

ह नि ग्यार्थ अयम केऽनीक वार पादपूरक तरीके पण प्रयोजाय छे
८१० १८ १४ ११ ७६४ ८१०२ ८४४ ८६१२ ८७-६ जुओ अ

ह नि ग्यार्थ अयम केऽनीक वार पादपूरक तरीके पण प्रयोजाय छे
८२२० १९८९ ११ २३ ७१६, २४८, २८१८ ३४२२ ५०५,
६४ १७ १८ ६६ १२, ६७-१७, ६९ ७ ७४ ११, ७५ १३, ७६ ८ ११,
८७ १६ ८८ १६, ९० १५ १७-१९ ९७ ९ ९८ १ १४, ९९-१९, १०१ १६,
१०३ १, १०७ २४ १०८ २, ११५ १ ११७-१२, ११८ १८, १२९ १६ १८
२० १३३ ३ १३७ १५, १३९ ९, १४१ १० १४२ १८ २१ १४५-१९,
१४७-१४ १५४ १ १५७ २१ १५८ १२, इत्यादि जुओ अ

इण 'एनाथी' सर्व तृ ए व न ९१ १४ ९९ १३, १३ १७
[स एतेन > प्रा एण > नू इण वली नू गुज मां इणई' एतु रूप पण
मले छे जेनो आ 'इण' सभेप छे अर्वाचीन गुज एणे लोरबोलीमां
(खास करी उत्तर गुजरातमां) एण 'आ छेला शब्दना अतिम 'ण'नो अकार
प्लुत छे]

इहह 'इछे छे' वतमान श्रीनो पु ए व ४ ११ [स √ ईह]

उपाणउ कहेवत द्वि ए व पुं १४६ १४ हीम ऊ' वाळु स्म
उखाणउ पण मले छे-प्र ए व १०३ १ [स उपाणान > प्रा उक्खाण
अर्वाचीन गुज 'उखाणु म उखाणा' साळमा शतकमा धयने गुजराती कवि
मांण पोतानी प्रबोधवशीसी मा प्रयानेला बहुसग्य कहेवताने 'उखाणा' कहे
छे जमके- उखाणा बहु आदर करी जोयो अर्थ विधि त्वेस्तरी (प ६४१)
वली हायप्रतमां ए काव्यनो मांण धाराना उखाणा 'तरीके निर्देश छे अर्वाचीन
गुज मां 'उखाणु'नो समस्या' एवो अथ धधारे प्रचलित छे]

'पट्टिगतक'नी प्राकृत गाथाओनी सूचि

[गाथाओना प्रतीको सामेनो अर पृष्ठक मूचवे छे]

खड्मिच्छयासनिक्किट्ट	१५७	कइया होहि दिवसा जइया	१२८
अइसयपावियपावा	३४	कट्ट करति अण दमंति	५०
अजया अट्पाविट्टा सुद्धगुरू	१३०	कदि ऽ पि सुद्धधम्म वाहि	११३
अज वि गुरुणो गुणिणो	१०	किच पि धम्मदिच्च	४९
अप्पा वि जाण वइरी	११८	दिरियाइफडावाव अहिय	१०२
अम्हाण रायरोमो कस्सुवरिं	१०६	किवि पुत्तमाम्भ रत्ता	७६
अरिई देवो सुगुरु सुद्ध	३	कि भणिमो कि करिमा	४४
अइय पुणो अइषो ता	१३६	कि सो वि जणणिजाआ	८२
अइवा सरलमहावा सुअणा	६६	कुम्महमइगाहियार्ण मूढा	१७
अहिमाणविस्सावसमत्थयं च	१४५	कुगुरु वि सत्तिमो इं	४५
आणारहिअ कोइदसत्तुअ	५९	कुच्चउत्थी नवमी बारसी	७९
आरंभजम्मि पावे जीया	१३	को अमुआणं दोसो जं	६४
इअरजणससणाए धिट्टा	६०	गयविहवा वि सविहवा सहिआ	९०
इअराण वि उवहासं तमजुत्तं	६५	गिहवावारपरिस्ममसिज्जाण	२७
इक्को वि न सदेहो जं	२०	गिहवावारविमुक्के बहुमुणिलोण	६७
इक्क पि महादुक्खं	११४	गुरुणो भट्टा जाया सहडे	३६
इयराणं ठट्टाराणं आणाभेगेण	१००	छगुनि निययजीअं तणं व	८९
इंदो वि ठाण पणमइ हीलंता	८८	जइ जाणनि जिणगाइो	१४८
उस्सुत्तमासगणं बोहीनासो	६१	जइ त वंदस्सि पुज्जति वयण	१३१
उस्सुत्तमायरंत वि ठवति	७६	जइ न कुणसि तपचरणं	५
एगा सुगुरू एगा वि सावगा	१५०	जइवि हु उत्तमसावयपयडीए	१५५
एणं पिअमरणडुइं	१११	जइ सवसावयाण एगत्ते	५५
एवं भेइरिअनेमिचंदरइयाओ	१५९	जगगुरुनिणस्स धयणं सपज्जा	-

उद्घोषक 'प्रकाश करनार' वि प्र ए व पुं १६४१४ [सं
उद्योतकर]

उदायन 'सदस्य' वि प्र ण व पुं १८११ [म उदासीन]

उपायना 'मानता, आखी प्र ब व न ६१७ [स उपायन]

उमग्य आगे मार्ग 'द्वि ए व पु १६४८ [स उमार्ग > प्र
उमग्य]

उलपी ओलखीने सं कृ १४१२ [स उपलक्षयति > प्र
उलखति उपरधी]

'उलिह' 'पेल्लमां, वा 'ओट्यामां' सर्व सं ए व १५०२० [मुद्र
निधिग यई शकी नपी] जुओ ओल्या

उकांटव 'रोमांच' द्वि ए व पु १८४-१८ [सं उल्लण्ड > प्र
उकांटव]

उकेली 'उकेरीने' सं कृ १२५४ [प्रा उकखाल < सं उकखाल]

उत्तारणव 'ऊनारणु च्छारीने फेकी देवुं व' द्वि ए व २६८२२
उत्तारणव वृ ए व १०८२२ [स उत्तारणकम्]

ऊपहरव 'अलग,' गुज 'ऊकठ' भनुय ६१८ [उपहरव-
हरव] जो एम होय तो आ 'हरव'ने चतुपी अने पदम रूप
रुपांतर गणवु जाईए]

ऊमति 'सराव भात-विग्रामण सं ए व ६१८ [सं उमति
मक्ति > प्रा ऊमति, सर० गुज 'भात्य,' 'भात']

ऊलखतव 'ओलखतो' व कृ प्र ए व पुं ११८२ [सं उलखति]

ओठम 'आलंबन' द्वि ए व न १४४२ [सं ओठम > प्र
भवठम]

ओलभउ 'उपालेभ' गुज 'ओलभ' द्वि ए व पुं ११६८ [सं
११] [स उपालेभ > प्रा उपालेभ]

ओल्या 'पेला' अंगरूप १५-२० [सं ओल्या]

जय पशुमक्षिमन्त्र्या	७८	ज. तिरुदुंगामी संगो	७९
जम्हा शिर्गई भविभं	११८	ज. त्रिभयणार् एवेभ	१४६
जयकुचयैकु भद्रदणो	६७	ज. वई सुद राम सा पम्पणा	१०३
जह भद्रुम्मि सुते	८०	ज. वई सुदगुरु	५३
जह सुवि चकारणे	८		
जह प. गुन्नाहुणे हीडे	७१	तद्या अन्माग अहमा	११०
जह जह विगेदवनी सम्म	६९	तह वि हु निवत्रहयाए	११५
जह जह हुदई धम्मो	१६	ते पव वधि अहमा छलिय	१९
ज. पदना सूरं म द्वेयणरदं	८९	त जयइ पुणिरयणे	५९
जे विभ गोआ मणइ ते	१४७	ता एणा जुगपरते	१४०
जे जीवभमिते पि हु धरमि	१५७	ता त्रिआणाररेणं धम्मो	२८
जे जे जिगभाणाए ते विव	९३	ता ज इमे पि वरने	१२३
जे न करइ अहमां	५४	ताग कइ जिगधम्मो	१२३
जे वीरजिगसु जीआ मरिडे	१२९	ता पदु पणमिअ चलो	१५६
जाण निमिदो निवगइ सम्मं	७०	त्रियमरान पूआ	९२
जाणिव मिनपुट्टी जे	१४३	तिहुअयनी मरंनं दहुण	११०
जिगभाणाए धम्मो आणारहिअण	९४	हुइ वि उअम्भरणे	२६
जिगभाणाभेगभयं	६३	त न शुद्ध नवि सहुा न	१५९
जिगभाणा वि चयणा गुरुणे	४३		
जिगगुणरयणमहानिहि	३०	घोवा महापुभावा जे	११५
जिगधम्मं दुपभे	१३५		
जिगपूअणपरभावे जइ वा	९१	दिद्धा वि वेधि गुरुणे हिअए	१२९
जिगमयअरहीलाए जे दुक्खं	७२	दुरे वरणे दूरमि साहणे	१२७
जिगमयकहापवंधो संबगकरो	२८	दुसमदंड एवे सुदुकराण्डुमि	१३३
जिगयणवियन्नुण वि जीवानं	११	दवेई दाणरहि य सुभो	७
जिगवरआणाभेणं	१४	दोसो जिगिदवयण संगोसो	६६
जिगवरआणारहिअ वद्धारता	१६		
जे अमुगिअगुणदोसा से	१०४	धम्ममि अस्त माया	४८
जे जे वीरंति गुरु	१३९		
जे मणेव जिगदं	१४९	न मुणति धम्मततं सरथं	११६
जे रजधणाईणं कारणभूआ	११९	न सयं न परं वदेवा जइ	६८

कड्डिनह 'कोड्डना ज' एव स ए व न ४१ निधयार्थ अन्वय
 जि' जही कड' सन्नाम अन 'नह' प्रत्ययनी पचमा आकेले छे ए नोधपात्र
 छे साम कनी नूना गुजराती गद्यमा आ प्रहारना संन्याबंध प्रयोगो मळे छे

कडुनिग जाणय 'प्र ए व न ८५ १४ [स कौतुक]

कडकडता शुद्ध निहाय 'व ह प्र व व पुं १०९ १४ आज अर्थनी
 तुओ कडकडा १०९ १४

काहह 'पासे,' गुण 'कने' समनीनो अनुग २५-१५, २८ १२ ११
 ५२ २२ ५३ ५५ १८ काहह २९ १५, ३० १२, १२२ ११ कन्हलि
 १११ २८ १४ १७ २९ ११ काहां १५६ १८ [सं *कर्मिन्व > अ
 कणाई > काहह क ह + ल (स्वार्थिक प्रत्यय) + इ = कन्हलि 'काहां'म
 समनीना 'आं' प्रत्यय छे अर्वाचीन गुजराती 'कने' अथवा 'कण' = पा
 स कणे > प्रा कणो उपरधी छे]

कर्महृत्तिनह 'कर्मने ज' द्वि ए व न ६५ १ कर्महृत्तिनउ 'कर्मनुं ज
 प ए व न ११० १० 'कर्म' नाम ओ एना प्रत्ययनी वचमा 'ह' क
 जि' एवा ये अव्यया आवे छे ए नोधपात्र छे तुओ कड्डिनह

कलिहु 'क्लिष्ट हावा' रि प्र ए व पुं १६२ ९ [सं त्रिष्टे >
 किन्दिह]

कह 'सुं कहे (छ) वर्तमान धीओ पु ए व १४६ १३

कादम' कादव 'स ए व पुं ८१ २ [स कदम > प्रा क
 गुजरातीनी केग्लीक बोलीओमां हजी 'कादम' बोलाय छे]

कुउण कण 'मा गुण कुण 'सर्ग प्र ए व पुं १५ ८ [स
 पुन > प्रा कउण > अर्वाचीन गुज 'कीण'] 'कउण' एतुं जू गुज
 व्यापक तीन प्रचलित रूप पण वारंवार मळे छे—४५ ७, ५६ ५९, ५७
 ६४ ५२१ १५ १२ इत्यादि कुण पण छे—१०८ २, १३५ १४, १५०
 इत्यादि.

कृत्तरउ कृतरा 'द्वि ए व पुं १८ ७ कृत्तरानह 'कृत्तरान (सुते
 स ए व पुं १८ २ [सं कृकुर > प्रा *कृकुर ओ के कृकुर शब्द ज आने
 मूळनो होय ए समवे छे अही 'क'नुं स'मां परिवर्तन धाय छे ए साथे सर
 'कृक' एतुं जेवा गुज शब्दो साहित्यिक प्राकृतमा पण 'कृत्तर' शब्द छे

कुमति 'सुराप भान-विश्रामण' द्वि. ए व स्त्री ४ १८ [सं कुमक्ति
> प्रा कुमति] जुओ कुमति

कुकर 'कृतरो' द्वि. ए व पुं १७-१७ [स कुकुर] सोमजुन्दरएरि आ
शब्दो 'भुंठीउ' (भुंठ) एवो अर्थ करे छे एन्ते ए अर्थ पण प्रचलित ह्ये एम
गणुं नईए

कुकाइवपणउ 'अनुयानीपणु' द्वि. ए व न ७५-१३ वकी जुओ
केविल्लु 'पावळनो,' द्वि. ए व पुं ७२ १२ [वेड, 'केडी' कडो' वगरे
शब्दोनी व्युत्पत्तिने स कटि साधे संबंध ह्ये]

कोटि 'करोट' द्वि. ए व स्त्री ९१ १० [सं कोटि > प्रा काटि
एमा 'र मो प्रभेप घतां वृ गुज 'कोटि' अने अर्वाचीन गुज 'कोट' अने
'करा'] वकी जुओ कोटाकोटि 'एक करोटन एक कराटे गुणवायी धाय
एनी सख्या' द्वि. ए व स्त्री १२१ २१, १२२ १३ १६, १६३ ४

क्षर 'धम' द्वि. ए व स्त्री १२६ २० क्षपइ 'खपावे छे, दूर करे छे :
वनमान श्रीओ पु ए व १२७-१५ क्षपीनइ 'खपावीने' स कृ ८७-९
[सं √ क्षप् उपरधी] जुओ क्षप

खर 'खेरु शाठ' प्र. ए. व पुं १०३ १५. [सं खरि > प्रा
खर]

खप धम, प्रयत्न 'द्वि. ए व स्त्री १२६ ८९, १३४ १८ 'खप'नो
उपयोग, 'नरु' एवो तुझाए अर्वाचीन अर्थ आमायी निभज ययेला छे
जुओ क्षप

खरड 'तृ ए व पुं ५४ १४ [मात्र एक ज प्रयोग उपरधी आ शब्दो
स्पष्ट अर्थ समजातो नही, पण सन्दर्भ जोतां 'खरड'मां निकृष्ट कोटिनी व्यक्तिनो
भाव रहेला छे]

खाणहार 'खानार. प्र. ए. व पुं १८७ [सं खान + कार > प्रा
खाणजार] जा प्रकारना अन्य प्रयोगा माटे जुओ आराधणहार शब्द नीचे.

खुट 'निर्कुशा माणस' तृ ए व पुं ५४ १३ ['खंड' ए अर्वाचीन
अर्थ लण्णाधी आव्या जणाय छे]

खेपइ 'खेके छे' वतमान श्रीओ पु व व ४७ ९ [सं क्षप > खेप
जूनी हायप्रतामा लखेग 'प'नो उच्चार घणुं खर्द 'ख' करवानो होय छे]

शिलालेखो प्रथमपुष्पिकाओ आत्मा व्यक्तियुक्ताना नामो पुत्र 'महं पत्नी
मूकेण होय छे एने अप 'महंतउ ना सज्ञेप णवी जाए]

मानत्र (तु) मान छे वनमान वीजा पु ए व १४०-१ [मर०
उतर गुजरातनी अर्वाचीन वालीमानु वीमउ अनुस्वार सहित मानै एव
उच्चारण] जुजो मकअ

मुहिआ 'व्यर्थ, निरर्थक' ज ८ १० [स मुधा > प्रा मुदा दश्च
श्रुतमा मुहिआ ('वेना मूल्य') शब्द छ, एमाथी अवातर रूप मुहिआ
राया आ वधार सारी रीउ व्युत्पन्न घइ शक]

मूलगा 'मुप्य प्र व व पु ८११ - [स मूलगत > प्रा मूलगओ
मर० 'मूलगो' शब्दना अर्वाचीन अर्थांतरा]

'रह' द्वितीया चतुर्था अने षष्ठीना अनुग जे घमाइने प्रत्ययनु रूप पाव छे
१२२१ ८७ ११ जुओ रहइ अने हइ

रहइ द्वितीया चतुर्था अने षष्ठीना अनुग न घमाइने प्रत्ययनु रूप पावै छे
४८ १० ४४ २१ ६३ ८ ६ ६६ ६ ८३ १८, १३३ १५ १३६ ८ रहइ
एव अनुस्वार सहित रूप पण मळे छे १६ ८ १५ १० २६ ९ २८ ९ ३२ १
३३ १३, ४१ १७ ४५ १८, ४७-१४ ४९ ५ १' ५१ १७ ५१ ११ ६३ ७
६४ ८ ६५ १ १८ ६६ ० ७६ १ ८२ १० ८४ ४ ८९ ८५ १६ १३३ २०,
१३५ १६ १३६ ३ १४२ ११ १५६ २३ १५७-६, १५९ २, इत्यादि [स
अपरस्मिन् > अर अवरहिं श्री टी एन २३ एनी व्युत्पत्ति स रहे > प्रा
परस्मिन् > अप घरहिं हरहिं ए प्रमाणे आपे छे 'रूनी गुजरातीमा हू ए
अनुग आ रहइ रहइ ना सज्ञेप छ सतरमा सैफाथी आ तरफना जुना गुजराती
साहित्यमा आ अनुगोनो प्रयोग भाग्ये ज नगर पडशे अर्वाचीन गुजरातीमा
'अमारे तनार जेनां साजनामिक रूपोना अवापसन गणतरीना म एए तो
आ अनुगाना अवशय रद्या नथी ज्यारे अर्वाचीन मारवाडीमा षष्ठीना 'रा' प्रत्यय
रूपे ए चालु छ आ प्रथमा ह्यापग सामिमु'दरसुरिहिन दालावबोधमा, पदरमा
शत अगला अर्वाचीन दालमा लोकरा' (= लोकना) एनु रूप मळ छे ए
नोपपात्र छ] जुआ रह अने हइ

रामति 'रमत' प्र ए व की ६३ १६ [स *रम्यति > प्रा रम्मति]

रहइ 'रहडे' वतमान प्राणा पु ए व ११८ १२० १ - रहइ
वतमान प्रीजा पु ए व १८ १८ ३' ०१ व व ३७-३ ८७-१४ षष्ठी जुओ

જાણી 'જાણી, જાણીના જાણીયા' દ્વિ ઇ વ પુ ૧૬૧૧.
[સં જાણી]

ગરુડ 'મધ્યે' ગુજ 'ગરુડો' વિ પ્ર ઇ વ પુ ૧૧૭-૧૪ ગુરુડ પ્ર
ઇ વ પુ ૧૫૭-૧૨ ગુરુડા ૧ વ વ પુ ૭૧-૨૨ ગરુડાહવા 'મોગજીના
પા પ વ વ પુ ૭૨૬ [સં ગુરુક > પ્રા ગુરુઓ, ગરુઓ]

ગરુડકિ 'મીઠાઈ' દ્વિ ઇ વ ળી ૫૬-૧૨ [સં ગુરુક > પ્રા ગરુડ +
(ભવ સ્વાર્થિક પ્રયય) ળિ]

ગાદ ગાધા દ્વિ વ વ ળી ૬૦-૩-૧ ગાદદ 'ગાધામાં' સ ઇ વ
ળી ૧૧૦ ગાદે 'ગાધાઓ મદ' ત્ વ વ ળી ૫૨-૧૨ ૧૬, ૧૫૫-૧૪
ગાદાં ગાધામાં 'સ ઇ વ ળી ૧૩૦-૧૭ [સ ગાધા > પ્રા ગાદા]

ગુણતા 'પુનરાશ્રિતિ કરતા, મળતા' અર્વાચીન ગુજ 'ગણતા' વ ક્ર
પ્ર વ વ પુ ૫-૧૨ ગુણતાં વ ક્ર પ્ર ઇ વ પુ ૩૯ ગુણિવડ 'ગણવું
મળવું' દ્વિ ઇ વ ન ૫૨૦

ગુરાં 'ગુરુઆને' દ્વિ ષ વ પુ ૧૪૫-૮-૨૦

ગ્યડ 'મયેલો મૂ, ક્ર પ્ર ઇ વ પુ ૯૦-૧૧ [સં ગત > પ્રા ગઓ >
ઘર ગિડ કા ગિયો' અર્વાચીન ગુજ 'મ્યો'] વઢી જુઓ મઓ 'મયો'
મૂ ક્ર પ્ર ઇ વ પુ ૮૨-૧૯ ગિડ મ્યો પ્ર ઇ વ પુ ૮૨-૧૩ દ્વિ ઇ
વ પુ ૮-૧૫

મહણા 'ધરાણું અઢાણું' ળ વિ ઇ વ ન ૧૬-૧૨ [સ મહણકમ્]

ઘાવદ 'નાથે છે' ગુજ 'ધાલે છે' ઘતમાન ધાઓ ગુ ષ વ ૧૭-૧૮,
૧૮૮, ૨૫-૭-૮, ૪૫-૫ ૧૧૧-૨૦ ઘાતિડ 'નાથ્યો ધાક્યો' મૂ ક્ર પ્ર ઇ
વ પુ ૭૯-૧૩ ૧૯ [પ્રા ઘત 'ધેકયુ']

વડગ્ગદ 'દેવ માનવ નારક અને તિર્યંચ એ પ્રમાણે ચાર પ્રકારની મતિ'
વ ઇ વ ળી ૪-૧૧ [સં વગુમતિ > પ્રા વડગ્ગદ]

વડવાહિત્રિની વડવાની 'વ ઇ વ ળી ૧૪૩-૧૩ 'હ' અને 'જિ' એ
બે અવ્યયો નામ અને પ્રત્યયની વચમાં આવી ગયા છે એ નોંધપાત્ર છે [પ્રા ✓ વડ
સેસ્ત્રતમાં એક વડ્ ક્રિયાપદનો પ્રયોગ છે ક્ષરો પળ એ પ્રાહત ઉપરમી લેવાયું
હોવાનો મંમવ વધારે છે]

रुग्णसिद्ध १८१३ मलिम्याह १२ १४ रलिस्वई ९१० रलिस्तु ९९ १४
रुग्णसिद्ध १००९ रतु ६३९ [स + उगति > प्रा रुग्ण]

रुग्णसिद्ध रुग्ण पण णि ए व पुं ४४९ [सं रुग्ण > प्रा रुग्ण]
रुग्णसिद्ध पण छ ४४९

हह द्वितीया गुरुधी अने पृथ्वीने अनुग ज पादुच्छमी घमईने प्रायवर्तु रूप
पाम छे ५ १ ३० १०, ३४ ० ३५ १३ ४४ ११ १ ६ ८ हह ४ १६,
५३, ६ १० १७ ८ १, ९ १ १० १० ११ १३ १७ १६ १८ १० ७-११,
१, १ १४ १४ १, १० १ १७-३ ८ १५ १७-११, १८ ३४ १९ ८ १
० ८९ ० १० १७-१ १६ ६ ७ ० ७ १० १० १३ २८ ६ १८, २९ १६,
३० १०, ३ ३३ ९ १, ३९ १९, ४१ १८ ४ ६ ११, ४६ ० ७,
४७-२ ११ ४८ १३ १० १३ १३ ६, ५ ६ ५६ ३ ६ १२, ५७ १३,
५८ ३ ६ ५९ १७ २१ ६० २० २१ २ ६१ १० ६४ १८, ६५ १६, ६६ ११
१२ १३ ६० ९ १७ १८ ६८ ९ १०, ७१ ४, ७० १८, ७३ ३, ७८ १६
८० ६ ८१ २२ ८, १७ ८ ० ८६ ० ३ १४, ८७ ७ ११ १९, ८८ ९-१३
१ १६ ८९ २ ९१-१२ ९० १८ १५ ९५ १६, ९७ १२ १३, १८ ३
८ १७, ९९ १० १० १ ९ ११ १० १२ २० १० २ १८ १८ १९, १० ४ ६ १३
१३ १७ १ १ ६ ८ १ ६ १७ १० ७-० १० ८ १२ १३ १ ९ १७-१९
११० ५ १९ १११ ३ ८ ११२ ७ ११३ ७-०, ११४ १ २ ६ ११७ ४ ११
११८ ५ ७-११ १२ १७ १२ १ १ ७-१४ १९ १२ ३ १ १ २ ४ ३ १ १९, १२ ५
५ ८ १८, १८ ५-१ १२ ८ ९ १२ १३ ० १ ८ २ १, १३ १ ३ १९ १३ २ १ ७-१
१३ ५ १९ २ १३ ६ १५ १३ ८ २०, १३ ९ १ ३ ८ ९ १० १२, १४ ३ १५
१४ ५ ८ १३ १ ८ २ १४ ६ ७ १ ८ १४ ८ ३ ६ १ ११ १ ८ १५ ० ३ १५ ३ १
१ १९ १९ १ ७-९ १५ ९ १६, इत्यादि हिह १२ ४ १२ उओ ररह अने ररह

रुग्णसिद्ध लातुबी वड 'तु ए व पुं १२१ २२ रुग्णसिद्ध 'लातुबीने
य ए व पुं ११२ १ [स रुग्ण > प्रा रुग्ण]

रुग्णसिद्ध न कारणे त्याची मांडीने पूरमर्यादासूचक अनुग ३६ १, ९
२० ६९ ३ १४ १, १४ ८ ६ रुग्ण एवो उत्तरमर्यादासूचक अर्थ पण ए
कर्मिक वार आवे छे १४० ७ १५५ ८ आनु ज रूपान्तर रुग्ण आ प्रय
वार्तवार मळ छे पण एना यथा ज प्रयोगो पूर्वमर्यादासूचक छे ११ २१, १२
१३ ८, १५ ० १, २३ ८ ३३ १ ३४ ३ ७ ३५ २० ३९ २, ५० १

बहद 'बागलाही' ए ए व न २६६ [सं जुलुकेन > अप
पुत्र]]

बाह 'दुर्जन, कपगी' प्र ए व पु ६७-१२ [दे बाह] ~ १८

बाही 'जाईने' स कृ १२८ १४ [प्रा बाह 'इच्छतु' जूनी गुजरातीमां
'बाह'नो प्रयोग 'जोवा ना अर्थमां छे— अन्ना अग्नी मदिरीमाहि विप्रसानि
पिरे परिनि बाहि' (वीरसिंहकृत उपाहरण पक्ति १३८) चतुरपगू अति
बाहवा नारि जेपिह-नाह' (ए ज, पक्ति ६००) सरखावो अर्वाचीन गुजराती
'बाहन' (सौ जुए तेम, छुनी रीने), बाहीने' (जाणी जोईने) इत्यादि
कल्पना, 'बाहपु'नो 'इच्छतु' ए अर्थ पण जूनी गुजरातीमां छे (सम वदु
सारं ए हाय, सीह न जा का दूजण बाय—वीरसिंहकृत 'उपाहरण,' एज
१०५), अने अर्वाचीन गुजरातीमां तो ए अर्थ सामान्य छे]

विणी 'बनेली (भीत) भू कृ प्र ए व छा १२५ १० [इ
विनीति > प्रा विणइ उपरधी विण > अण क्रियापद व्युत्पन्न शक्ये छे]

११ छप्रस्य अ-सर्वज्ञ प्र ए व पु ६० २१ [सं छप्रस्य कल्पना
न होय ते तथा छप्रस्य कहेताय आ जैन पारिभाषिक शब्द छे]

छाला 'बकरा' छं वि व व पु ५८ २०, ७५४ [इ छाल > इ
वाअल]

छेवहइ 'छेहे' स ए व पु १४० १ [सं छेद > इ छेव > इ
छेद स्वार्थिक प्रत्यय इ तथा सप्तमी प्रत्यय 'इ' कर्त्तृ कर्त्तृ, कर्त्तृ
छेवहइ एतुं पाठांतर छेवहइ मळे छे ए नोपपात्र छे]

छेहनउ 'सुकसाननु' व ए व न २१-१८ [सुकसान सुते सुते
छेवहइ मळे शा-दोनी व्युत्पत्ति एक ज मुळमावी हाव इत हाव इति अर्थ
विकास ध्यान संवे छे]

छोह 'बूनावी खो' स ए व की १२५० कंठ २ इ व छं
१२४ ११, १२५ ११ पाहि' व ए व की २०५६ [सं मुधा > इ
हुवा छोदा]

जमलउ 'साये' अ १ १४ [इ सल > इ जमल इ
गुजरातीमां अराधना सेवा मुषी 'जमलउ' इत्यं छे]

५१७, ६४१८ ६९१२, ९२१ १३२९ १५४१४ [स *लप्रस्मिन् > अण ल्यगहि भाषाना जूना धरमां आ अनुगना पूनमर्यादासूचक अर्थ व्यापक छे—व्युत्पत्ति पण ए ज अर्थ एखवे छे—पण जम अर्वाची काळ तरफ आवीए तेम उत्तरमर्यादासूचक अर्थ धधारे प्रचलित धनी दघाय छे त एण्छे सुधी के ध्रणेक सहायी मापामा 'लगी नो अर्थ सुधी एण्छो ज समनाय छे]

लीब लीउ 'प्र ए व न १०४२१ [स निम्बु > प्रा लिबु]

लोला 'समज विनाना अनाती 'वि द्वि व व पुं ४५११ ६०६, १०२१८ [स लोल चपळ अम्बिर जा राजमां धयेग अर्थपलगे मोधपात्र छे 'षष्टिशतक'ना बाह्यबोधकारण मुग्धजन ना अर्थ 'नेला नेक एवो आप्यो होइ ए विशेष कशो सरेह रहती नथी]

लौपड नाछे छे वतमान प्राजो पु ए व १०१९, १२५५ लौखीह 'नखाय 'कमणि वतमान श्रीओ पु ए व १२५४ [स निक्षिपति > प्रा निक्षिपवइ > जू गुन नाखइ डौ टनर एनी व्युत्पत्ति जुरी रीते आपे छे— *नक्षति > प्रा नखइ > जू गुन नाखइ न नो 'उ' धवाधी 'गखतु' न 'नुं आ प्रकारे ल'मा परिवतन ए हाय्मा दक्षिण गुणरातनी भोगनी लाभणिकना गणाय छे पण उपर निश्रोत्रा प्रयोगा स्तवि छे के एक काळे उत्तर गुणरात तथा मारवात्नी भोगीमा पण ए प्रचलित हती]

वक्रतण वक्रना, भाकापणुं 'द्वि ए व न १६२१३ [स वक्रवन् > प्रा वक्रतण आ साधे सर पुष्पातन अहेवातण, शूरातन, वीरातन (ज गुज) अदि श'दोनो अंत्य प्रथय]

वणवो (हुं) वणउं वतमान पहेगे पु ए व ९८१४

वीतरागइविनु वीतरागनुं ज 'प ए व पुं १४७७ प्रत्यय अन नामनी वच बे अययो दाखउ थइ गया छे ए ध्यान खंचे छे

विरड हल्को गुन वरवा मि प्र ए व पु १५७११ विरइ हन्दी 'प्र ए व स्त्री १८११ १९३१८ द्वि ए व स्त्री १८२० वडी जुआ विरमइ १३३१६ विरमउ ४२२४ विरूमा १११२, ११३७ विरूआ ३२२ विरूइ ८५३ विरूइ १२०२ विरूउ ४६७ ६५१३ १०६१८ विरूउ ४११३१५ ८७२, १०५१ ११७३ ११८१७ १५३ १७ विरूउ ४ १ विरूया ७८४ [स विरूप > प्रा विरूअ > अण विरूउ]

अमारुड 'अमारो' द्वि ए व पु ७-३५ [स आम + कार > प्रा
जम्मआर]

अपगारहित 'हिंसा टालवाना प्रयत्नशी रहित' वि प्र ए व पु
१३१४ [सं यतनाग्रहित] जुओ धजयणावतः

जावळं यम 'प ए व पु ८३९ स ए व पु ८३१६ [सं
यम > प्रा जकम् > अप जाख (प) + स्वार्थिक ल 'जुओ पाल्हण कवित्त
'आतुगस' (स १२८९)ने धते—'राखइ जापु जु आछइ खेइइ राखइ
मरुसति मूरेइ] जु गुज मां अयप्र थाय छे तेम, अहीं पण 'व'नो उचार 'ख
करवानो छे

जाण झानी 'प्र ए व पु ९३१० जाणनी प ए व पु ८१८
[स जानर > प्रा जाण सर० गुज 'अजाण']

जाण ('तु) जाणे छे 'वतमान बीजो पु ए व १४९१

जाणिवड 'जाणवो विष्यर्थ कृ प्र ए व पु ६९६१५ जाणिवड
विष्यर्थ कृ प्र ए व न ८०६ ८६६ [सं जानाति > प्रा जाणेइ,
जाणइ]

जान 'वाहन' द्वि ए व न ३७ [स यान सर० गुज (वरनी)
'जान' आ प्रयमां प्रयोजायेग जान' शब्दनां केरळ 'वाहन' ए अर्थ उतरात
समारंमपूर्वक समूहमां 'वाना' अर्थ पण छे ए स्पष्ट जणाय छे]

जि निश्चयार्थ अव्यय अर्वाचीन गुज ज ' ६१४ ७-३१६, ९२,
१ ९१७ १८, १५९ १६१ १८२० १९१५ २० ९, २१२ १९,
२५ १७ २६९ २७२ ११ २८७ १११२ २९४ ३११ १२२० ३४१
१११७ ४६ १८, ४९ १४ १७ १९ २० २१ ५० ८९ २१, ५३ १८ ५७ १२,
५९ ८, ६० १२ ६२ २१, ६३ १ ६५ १, ६७ ४, ७ ४७ १७ १९ ७३ ७,
७७ ४ ८१ १ ८३ १ ८४ ७ ८६ ११ ९१ १३ ९० २४ ११, ९३ ९
९४ १३ ९७ १८ १०१ ८ १ ४ १७ १०७-७९ १ ८८, १०९ १७,
११४ ३, ११७ ६, ११७-६ १२६ १, १३१ १६, १३६ ९, १३७-१७,
१३९ ११, १४० ७ १४१ १०, १४७-११ १४९ १६, १५ १३, १५१ १,
इत्यादि [स एव प्रा म्यव, जव जे अप जि]

विसममि जाऊन द्वि ए व स्त्री १४४३

वेचन व्यय करे छे वतमान त्रीजो पु ए व १६ ११ ११० ११
वेचन १ ० २० १५१ २ [प्रा वेचन व्यव करवा ' वनोमा गार्मिक परिमापाना
आ शब्द जान पण जा जधना चाउ छे]

सह सा गुन सेस ' द्वि व व न ७ ११ सह प्र व व न ८५ २१
स व व ३३ १९ [स शत > प्रा सय]

सञ्ज (तुं) शक वतमान बीजा पु ए व ५ १ १५ [सर
उत्तर गुनरातनी योगमांतुं मोमल अनुस्वार सहित्तुं ' सक एतु उच्चारण] जुओ
मानअ

सक्यथो कृता वि प्र ए पु १६१६ [स सृताई > प्रा
सक्यत्थ]

सणाजा स्त्रीजा प्र व व पु १०३ १३ [स स्निह्यक > प्रा
सिगिज्जओ सर गुज सणेजो ']

सयर ' शरीर ' प्र ए व न ९८ १ सयरना शरीरना ' प व व
न १७ २० [सं शरीर > अ, गुन सह असयुक्त र नो आ प्रकारे जो
गुन ना अयन पण थाय छे परिमड > पीमड सरिज्ज > सङ्गल > सेज्ज,
कीर > र्हर > कर न्याणि]

सहृद्दार (अर्मरुपी) शय दूर करयु से द्वि ए व पु १६५५
[स शयाद्दार]

सग सगाए स ए व स्त्री १६३ १६ [स सधा > प्रा सगा]

सुधुणउ स्तुति कठे ' वतमान पहेंगे पु ए व १६४ २ [स सस्तुनोनि
> प्रा सगुणद]

सतानीइ बंशने ' तृ ए व पु ९ २१ सतानीअइ तृ ए व पु
९ २२ [स सतानिक > प्रा सतानिअ]

सासिठ एकसा साठ (गायानाओ प्रत्य) द्वि ए व पु २ २, ३ १४
[स षट्शत > प्रा सट्टिसअ]

सासिठ सताउयु भूत त्रीजो पु ए व ९३ २३ [स ✓ सिच् उपरधी
दधे ? मांतुं (सायु) -सयु ए अयमा ? जना साहित्यमा अन्यत्र पण आ

विहित 'जीयो' भू कृ तृ ए व पुं ११२१० [सं. ४ क्रि. १०]
 नद घा विन (वीरकर)]

विहित 'जमे' वर्तमान प्रीणा पु ए व ११०१५ विहित भोजन,
 नन ' द्वि. ए व न ८३१० क्रिमिबउ भोजन जमपुं ' द्वि. ए व न
 ११९ जीमवउं प्र ए व न ७४१४ प्रीमिवा ' जमवा ' द्वि. ए व न
 ११९ क्रिमिद, जेमिद म जेवले वगलक विद्वानो आ माटे * जमति एवं संस्कृत
 १ कने हे. यन राह जाता काइ अत्राप्या मूलनो आ शब्द ' भोजन कवा न
 लना संस्कृत ✓ मुत् ने स्थानप्रप परिन प्रचलित यथा एन मानवुं कवा
 नेय हे]

जाइ, ' याव घडे तृ ए व पुं १२०२१ शाइ तृ ए व पुं १११०
 [सं न्यान]

दउडवा ' अरमान करवा माटे हे कृ १०२१४ [व्युपति अनिधित]
 डली ' लचको द्वि ए व ली १०४२२ १२ ४ प्र ए व ली
 १२५१ [दे] दयारामे आ ज अर्थमा आ शब्दनो प्रयोग कयो हे- ' मन वपुं
 मागीनी डली ' (रतिवचन ' पद ३, कमी ५)

दाहउ ' दाहो वि प्र ए व पुं ४८० ४९६ दाहपण ' दहापण
 प्र ए व न ४८२० वली जुओ दाहा ५११७, १०१२, ११११० १४२२१
 १४३३ दाहाइनइ ५२१० दाहाइनउ ५२६ दाहु ४८१० [सं दग >
 प्रा दक्खा, दाखा * दाहो श्री नरसिंहराव दिवेगिया हे दहक > द
 दाहिणउ उपरयी (' ण नो लोप करीने) दाहो नी मुद्रति कने हे नृ
 एन दव स दग > प्रा दग उपरयी सूचवे हे]

- दाहीघार दाया ' वि प्र व व पुं ११०१ [सं. ४ क्रि. १०]
 * दाइआर पुआ उपर दाहउ]

- डीलि जात घडे गुज दिले ' तृ ए व व पुं [सं. ४ क्रि. १०]
 प्राकृतमा एनो प्रयोग एक प्रकारना जळजु कने पर उर उर उर
 शब्द ' पात-शरीर ना अर्थमा सुप्रचलित हे] ।

लिग दग दगलो ' द्वि ए व पुं ११११ [सं. ४ क्रि. १०]
 दगला द्वि व व पुं १४५९ [सं. ४ क्रि. १०]

दिगारना आ न अपमा प्रयोग छे जन क कृत्त पाठ्याभटि' (स १६७७)मां
 — चय गाल्यो भोंएर कौवे दीधु तां' (प ४४८) सावता गाल्यो
 बाल्यो उ उ शांतु ओटि' (प ४५४)]

साधम्मिय समान धमना अनुयायी वि द्वि ए व पु ४१० साधर्मि
 वि व व य १४८ १३ जुओ साहम्मीनउ

साहम्मीनउ 'समान धमना अनुयायीना वि ए ए व पु १६८ १
 जुआ—साहम्मीमाहे ५३ ६ साहम्मी पाहइ १४८ १८ साहम्मी पाहि १४८ ३
 श्यादि [सं साधर्मिन् > प्रा साहम्मी तर जवाचीन गुन साध्मी (साभी)
 भाई, 'साहमीरुद्ध' (साधर्मिकवास्तव्य) आ पैन परिभाषाना शब्द छे]

सिग्घ 'जलसी' अ १६३ ८ [म शीप्र > प्रा सिग्घ]

सिष्पाइ स्वाध्याय द्वि ए व न २२४ [स स्वाध्याय एमाधी
 प्रा स्वाध्याय > गुज सन्नाय शब्द आयेगे छे]

सुलभ 'सुलभ वि द्वि ए व न १९९ [म सुलभ]

मुहेल्लउ 'सहेकुं' वि द्वि ए व न ३९९ [स √ शुम् > प्रा
 मुह उपरधी ?]

मुहेल्लउ सहेकुं गुन सग्यकुं (गद्यकुं की क्लृप्तुं) वि द्वि ए व न
 [स √ शुम् > प्रा मुह उपरधी ?] जुआ मोहिल्लउ

सेपल नागदवता स ए व पु ८३ १६ सेपलनी प ए र पु
 ८३ ९ [सं शेष + ल जूनी गुत्ररानीमा य ना ल्यार घणुखदे स्व' याय छे
 ए ध्यानभा राखवा जनु छे]

मोहिल्लउ 'सहेगे गुत्र सग्ये वि प्र ए व पु १४७ २ द्वि ए व
 पु २०९ मोहिल्लउ प्र ए व न २१ १० १, २९ ९ [स शोम् > प्रा
 सोह उपरधी ?] जुओ मुहेल्लउ

हल्लभकर्मउ जेना अप कर्म अवशिष्ट रया हाय एवो शीप्र मुक्तिगामा
 गुन हल्लकर्म वि प्र ए व पु १२७ १५. [स ह्यु > प्रा ह्यु व्यययधी
 हउ + वमा आ पण जन धार्मिक परिभाषाना शब्द छे]

हल्लपण 'हल्लवापण द्वि ए व न ५४ ५ [स ह्युवन > प्रा
 ह्युत्तण पण > हल्लपण]

'तड' पं ए व ना प्रत्यय ७-१३, ८४, १३१५१६, २ १३, ३१२१,
३८३१८१* ३६६७ ५९३ ६०२ २२ ८० १६, ११०३ ११९२,
१९२१२, १२५१७ १३२४९, १३४३, १३८२१, १३९०, १५४९
११७-१० ह्यारि [स त]

यडह यम उपर, दुनाना अमभाग उपर 'स ए व न २१८
[स सुट]

धा-उड 'बाकीना' वि द्वि ए व पुं ९४७ धाकतड 'बाकीनु'
द्वि ए व म ९३१४, ९४११, १०६१ धाकता 'बाकीना' द्वि व व पुं
१०६९, १०७-४८ [स *स्यकित > प्रा यकित, याकित]

धादि स्त्री य्, क् प्र ए व स्त्री १०५ [सं *स्यकिता > प्रा
यकित] जुओ धाकतड

मिडु पंचमीने अतुग, गुज 'धमो' २७-१८ [सं *स्यकित > प्रा
यकित] > अय यकित] जुओ धाकतड, याकी

डह 'स्तुति' प्र ए व स्त्री १६४७ [सं स्तुति]

डुहर 'डुकर' ने म ए व पुं १५१० २१ [सं डुकर]

देवा देवोने 'द्वि व व पुं १४५१८२०

देसण उपदेश 'द्वि ए व स्त्री, १६५३ [सं देसता > देसणा] -

दोहगा 'दुमाय, गुज दोहग' प्र ए व म १६३१५ [सं दोमाय
> दोहगा]

धनीय 'स्वानित्व' द्वि ए व स्त्री १५८२४ [स धनित्व > प्रा
यकित-प्]

धीरह धी' वि प्र व व पु ९५१९ वेली जुओ धीरठपणह
९५२० धीरठपणु ६३१ धीरठपणा १११४, धैठपणानह १११११ धिडा
९५१२ ९६१० धेठानह ४५७ [सं धृष्ट > प्रा *धरह > धिरह ए व
प्रमाणे स धृष्ट > प्रा धिह]

म भारदर्शक अव्यय अर्वाचीन गुज 'मे' (जेम के व्हो मे बोले ने,
इत्यादि) १२४, ५६९

नह निपेधार्थ अव्यय १६३१११५ [सं नहि]

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10

नासा सवध गुन नानरा द्वि व व १ २४२१ [स शाय आ
 धा तथा एना तदमथोना रूपान्तरा अन जपान्तरा माट 'उओ सस्कृति',
 अनुजरी १९ ० मां नारा -या नानर जन नात]

नापइ न अपये वर्तमान ज्ञाना पु व १ ६६१३ [स न + अयाने
 > न न + अपइ]

नाराधट 'न आगये वनमान ज्ञानो पु ए व ३१२ [स न +
 अराधयति]

नावड न साय वनमान ज्ञानो पु ए व १२६३ व व ६५१०,
 ७०२१ [छुग मे प्रयोगाना न वरी शय एवी जन्मजाया पण छे जन क
 धरिया नानड' एते नदी कग शयता स न + आयाति > न न + आवड]

निकाचित्त कम जयन निरि कम प्र ए व न १२५ १२१४
 वरी जुओ निकाचित्त १०६११ निकाचित्त कमनड १०४ १९०० निडावत
 कर्मो १२४५ [आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छ]

निधत्त कर्म एर प्रकारनु बगयतु कर्म ' प्र ए व न १२४०१,
 १२५०

पड वरता न ५७१० [स प्रति > प्रा पड 'स्तुत गूठ पडनु
 पाठातर पाइइ छे जापी नीचे प्रमाणे 'युत्पत्ति पण धम्य लग छे--स. पय >
 प्रा पकमे > अय पावइ-पाहइ > पाई-पई]

पहणइ नमरो प्र व व न १६५१ जुआ पायति

पणि पण, वरी अ २० ११ १२ ७० १६, ८२६ ८९१, १ ९३,
 ११३ १० १२६२ १४० १३, १४० २ १४९ ७, १९९ ० इत्यदि [सं पुन
 अपि > प्रा पुणावे > नू गुन पुणि सर० हि पुनि] जुआ पुन

परहड दर वि प्र ए व पु २४२ परहड प्र ए व न १३७९
 १० ११ परहड प्र ए व न २० १२ [स परतिव > अय परदि सर०
 गुन अरु पर]

परीखिखड परखतो 'विध्यर्थ कृ प्र ए व पु १०११० परीखिखड
 विध्यर्थ कृ प्र ए व पु १४ १ परीखड परीय करणा, परखता
 वतमान कृ प्र ए व पु १३५ १ परीय 'परखति' स ह १३६०
 १४२ १ परीपीनइ स कृ १९ ० [स परी > प्रा परिख] जुओ परीखी
 २४

પરીછી 'પરીગાધરીને, જુન ઝઘ્ઘીને, સ ક્ષ ૧૫ ૧૧ પરીછીઈ 'પરભાય
છે ' કમળિ પ્રગાગ યત્તમાન ત્રીજો પુ એ વ ૨૦ ૮ [સ પરીન્ > પ્રા પરિવ્હ]
જુઓ પરીગિવત

પ્રમ 'માલિક' પ્ર ઇ વ તું ૧૦૧૦ [સ પ્રમુ]

પ્રમુલ 'દયાળિ ઘર' ઇ ૧૭, ૩૧૨ ૪ ૫૧૧, ૬૩૧૭
૩ ૮ ૩૩૪, ૮૦ ૮ ૮૩ ૧૬ ૧૨૯ ૧૮, ૧૫૪ ૪, ઇત્યાદિ

પામ્હ નિચાય 'અ ૧૫ ૧૧ ૩૭ ૧૭ ૪૦ ૨૦, ૧૦૧૫ [સ પા
> પ્રા પક્ષે > અપ પક્ષઈ પામ્હ પાહ્હ ગુજ 'પામ્હે-પલ્હે'] જુઓ પાહ્હ

પાપ્હ સિવાય 'અ ૧૬ ૧૦, ૪૫ ૧૮ ૭ ૩ ૧૨૧૯ સ્થારણમાં
પાગ્હ અને 'પાપ્હ' અભિજ છે જુઓ પામ્હ

પાળિ 'શહેરમાં' સ એ વ ન ૨૫૭ [સ પત્તન > પ્રા પટ્ટણ
સામાય નગરવાચક આ શબ્દ પાહ્હઠ્ઠી ત્રિશિષ્ટ નગરવાચક બન્યો છે એ નોંધપાત્ર
છે] જુઓ પટ્ટણ્હ

પાહ્હ 'અશુભ' વિ પ્ર ઇ વ ક્ષી ૧૮ ૧૫ પાહ્હ પ્ર એ વ ન
૩૩૩ દ્વિ એ વ ન ૮૪ ૧૬ [સ * પાતુક્મ્ > પ્રા પાહ્હાં આ પ્રયોગ
જૂની ગુજરાતીમાં આ અર્થમાં વ્યાપક છે]

પાધરા સાદાસાધા, સામાય વિ અં વિ ષ ઘ તું ૧૫ ૧૨, ૧૦૦ ૧૧
પાધરા 'સીધાં (અવઢા ધી ક્ષત્ત્તં) દ્વિ ષ ષ ન ૫ ૧૨ પાધરી 'સીધી'
મ એ ષ ક્ષી ૧ ૧૪ [દે પદ્મર ગુજ પાધર્ સર. અદ્ધર પદ્મર']

પાપ્હજિનહ 'પાપને ન (વિષે)' સ એ વ ન ૩૪ ૧૬ 'પાપ' એ
નામ અને 'નહ' પ્રત્યયની વચ્ચે વે અવ્યયાં દાલત થઈ ગયા છે એ નોંધપાત્ર છે

પાહ્હ 'કરતા' અ ૧૦૨ ૧૧ પાહ્હ ૪૨૫ ૫૮૪, ૧૭ ૧૩
૧૪૮ ૧૦ પાહ્હિ 'કરતા' ૧૨૧૯ પાહ્હિ ૧૧૩ પાહ્હિ ૪૨૬ પાહ્હિ
પાંહે, દ્વારા ૬૧ ૧૨ ૧૦૩૪ પાહ્હિ ૧૪૮ ૩ ૧૦૦ ૧૧ પાહ્હિ ૧૪૮ ૧૩
[સ પક્ષે > પ્રા પક્ષે > અપ પક્ષઈ પામ્હ પાહ્હ 'પાહ્હિ' ઇત્યાદિ
પ્રયોગોની વ્યુત્પત્તિ સં પશ્યત > અપ પક્ષતતઢ પાહ્હતઢ પાહ્હતઢ એ રીતે સમન્વિત
છે] જુઓ પામ્હ

પ્રામ્હ 'પામે છે' વર્તમાન ત્રીજો પુ એ વ ૧૩-૧૪, ૫૩ ૧૮ ૭૨ ૧૪,
૧ ૦ ૧૮ પ્રામ્હ વર્તમાન ત્રીજો પુ ષ વ ૧૨ ૧૫ ૨૭-૬૯ ૩૮૨,

८७-१ १२ ९८-१ प्रामह वतमान प्राण पु ए व २५२० बडी जुआ
 प्रामिउ १३६८ प्रामिस्तिह ६७६ प्रामिभ्यउ ९९ १४ ११८९ प्रामी
 ९६ १७, ९७ ४ प्रामीइ १०० १५ प्रामु १+८ १४ [स प्रान्नोति > पा
 * प्राणुनि > प्रा * प्राणइ गवइ > व गुज प्रमइ] इ कार रितापु
 रूप जे अर्वाचीन मायामा व्यापक छै न पण मउे छु-पाम २६ ११ पामइ
 ५६७ ७४ १५ ९७ १९ पामठ १ ९ २० पामिउ १३२ १३ १९ पामिस्वइ
 ६७-१४, ७७ १४ पामीइ ९२ २ ११२ १४ पामीस्वइ ९८ १८ [सं
 प्रान्नोति > पा प्राणुनि > प्रा पाठगइ पावइ > ज गुज पामइ]

प्राहइ 'घुं कति मार भाग अ ४ १४ १' प्राहि १४७-९ प्राहिइ
 २२ १८ [स प्रय]

प्रियागत 'वशरंपरागत वि द्वि ए व पुं ४६ १४ [स प्रयागत
 > परजागत, परयागत सर० अर्वाचीन गुज परियागत 'गुजरातीनी केरक
 शोत्री नामां 'परिया शब्द 'प्रया'ना अर्थमां वपराय छ 'प्रजा' शब्दनां आ
 परिया अन प्रिया' रूपान्तर ना इपात्र छ]

पुण पण, बडी ' अ २३ २१ ३३ २० ४१ १६ ५ २२ ७८ २,
 ९८ २०, १०७-१७ १८९ १० १३७ ९ १३ १३९ २२ १४० १७ १४१ २१
 १४७ ३ १४७ १५ १७ -१९, १५४ १५ १६४ ११, इत्यादि. [सं पुन
 > प्रा पुणा > अप पुण] जुआ पणि

पूजइ पहोचे ' वतमान प्रीजो पु ए व १४० ५ [सं पूयते > प्रा
 पुजइ न नो ग धवाची जूनी गुज मा पूजइ अर्वाचीन गुज मा
 पूजे]

पूर्व जैन शास्त्रोनी एक विभाग द्वि व व न ५९ ११ [आयम
 साहित्यना अंगविभागनां शारमु अंग 'दृष्टिवाद नामे हनुं एमां चौद 'पूर हता
 दृष्टिवाद तेम ज पूर्वो धणा समय पहेंत्रं गुप्त धई'गयां होवानी परंपरा छे]

फलदायन 'फलदायक वि प्र ए व पुं ११६ १४

घटींग 'मूल वि, प्र ए व पु ५४ १९

बडइल गादानी घरीनी अदरनो खीलो प्र ए व खी ११६ ६ बडी
 जुओ बडहिल ११६ १३

बनोर बरीवान, बरी ' प्र व व पु ११८ १४ [स तेम ज फामा
 'बरी' शब्द 'बेरी'ना अथमा छे बदार' शब्द स बरी + वार > प्रा
 बणियार मांधी उच्चारणभेद थया हथे ? ज गुन मां अन्यत्र पण क्वचित् आ
 शब्द मळे छे जेम के बाह्मदेप्रसव (स १५१२)मा—'एक रूया वीमद्
 बंदोर (स ० वरी ७) जो क अही ए सव्यना सपात्क श्री डाडामाई
 दरामरीए 'बंदार'नो अर्थ 'बंदर' एवो थाप्या छे ए बवनेमतो नथी निन
 सागरमूरीना जागवबोधमा 'बंदी बदार वादि ज्ञाया लोफ' एवो अर्थ ममन थ्या
 छे तेम ज सप्तम उपरधी पण बदार'नो 'बरी' ए अत्र देखीनो छे]

बादि 'बरीपणामा स ए व की ११८ १८ [स बादि]

भट्ट भाट द्वि २ व पुं ८३ १० १८ [स]

भणां कहु वर्तमान पड़ेग पु ए व ४५४ ६८९ [स ✓ भण्]

'भणी' 'माटे तरफ अनुग १८, ४१७ १९ १ १५, २४ ३४,
 ४८ १६ ८३ ३ ८५ ११, ८७ १ १४, ९७-१५ १०२ १७ १ ७-२१
 १०९ ७ १४ १२, १४१ २१ २२ १४९ १५, १५६ २१, १५७-२२ ['भण'
 क्रियापदनु आ सर्वत्र कृत ३ एनो अनुग तरीकेनो प्रयोग एक विशिष्ट अर्थ
 विकासनुं उदाहरण छे 'भण' एत्ल 'बालने जयात् 'माटे खातर']

भवाडिचट 'शोभा देखान्बी स' द्वि ए व न १२७-११ [आ
 प्रयागनुं अवाचीन गुज रूपान्तर 'भवाड्यु' एवु थाय पण अवाचीन काळमा
 एनो अर्थ नीचे ऊतर्षो छे भवाडो' (पजेतो) शब्द एनुं उदाहरण छे
 बाह्मदेप्रसव'मां भवाट क्रियापद सारा अथमां छे— चहुआणनु गिरुउ
 राज रुडू अह भवाडू आन (स ०, वरी १८८) स भू (मव्) धातुमाधी
 एनी व्युत्पत्ति हथ गुजराती लोकनायका वाचक भवाड' शब्दनो व्युत्पत्तिगत
 सरर आ बथा प्रयोगो साध होय ए अस्तंगिन नथी]

भङ्गल 'हाथी प व थ पु १-४ १२ [स भङ्गल > प्रा मयगल
 सर० गुन भेगळ 'भङ्गळ' विशेष नाम पण छे धुवारवान नो यता भङ्गळ
 नाम एफ गुजराती कवि विक्रमना १७मा सरामां थई गया छे]

महुता मत्री गुज महेना अं थि व थ पु ५३ १ [स महत् प्रा
 महत् अप महंतउ 'नी गुज मा महंतउ, महतउ महतउ महितउ महितु अदि
 एता स्वरूपातग छे सर० म् मन्ता मा मुता चौपुत्र्युगीन गुजरातना